समता – स्वाध्याय स्तवन संग्रह

संग्राहक

श्री सज्जनसिंह मेहता "साथी"

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला

(श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)

समता भवन, रामपुरिया मार्ग,

बीकानेर (राज.)

प्रकाशक
श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला (ग्रंथांक-४६)
(श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण : ११०० (१९८२)

मूल्य : ९) रु०

मुद्रक—
जैन आर्ट प्रेस
(श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर (राजस्थान) 334001

प्रकाशकीय

जैन जीवन–पद्धति में पर्यूषण–पर्व का असाधारण महत्त्व है। साधना और स्वाध्याय के इन आठ दिनों में व्रती–जीवन की आराधना की जाती है। जैन साधु–साध्वियों की संख्या समाज के अपरिमित विस्तार की तुलना में अत्यल्प है। अतः पर्यूषण–पर्व के दिनों में जैन सुश्रावक अपने सुदूर ग्राम–नगरों में स्थित साधर्मी वन्धुओं को तप–व्रत और साधना तथा स्वाध्याय के कार्यों में सहयोग देने के लिए यात्राएं करते हैं। धर्म के मर्म से परिचित कराने का प्रयास इन पुनीत दिवसों में किया जाता है। जो सुश्रावक तथा सुश्राविकाएं पर्यूषण–पर्व की आराधना कराने के लिए अपना आत्म–भोग देकर अन्य गांवों–नगरों में जाकर, वहां रहकर अपने ज्ञान और आचरण से तत्रस्थ जनों को धर्माभिमुख बनाने का प्रयत्न करते हैं, समाज में उन्हें "स्वाध्यायी" कहकर पुकारा जाता है। सच भी है जो स्वाध्यायी–स्वयं के अध्ययन में निरत–नहीं है, वह अन्यों के लिए प्रेरणा स्रोत भी कैसे वन सकता है?

समाज स्वाध्यायियों के महत्त्व और भूमिका से सुपरिचित है। अतः स्वाध्यायी तैयार करने के लिए विपुल संसाधन जुटाने को सदैव उद्यत रहता है। स्वाध्यायियों के प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं। उन्हें विविध प्रकारों से ज्ञान–दर्शन–चारित्र की आराधना करने और कराने में निपुण बनाया जाता है।

स्वाध्यायियों के प्रशिक्षण और इन प्रशिक्षित स्वाध्यायियों द्वारा पर्यूषण में धर्माराधना करवाने के अवसरों के अध्ययन से इस तथ्य की निर्विवाद रूप से पुष्टि हुई है कि जन–जीवन को संस्कार–प्रदान करने हेतु काव्य सर्वाधिक सशक्त साधन है। लय–गति और भावयुक्त काव्य मानव मन पर अपना अमिट प्रभाव अंकित करता है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अन्तर्गत संचालित श्री समता प्रचार संघ उदयपुर स्वाध्याय–योजना का नियामक है। श्री समता प्रचार संघ ने अनुभव किया कि काव्य–मय संस्कार–योजना प्रदान करने के लिए स्वाध्यायी वन्धुओं व वहिनों में से प्रत्येक के पास एक अच्छा स्तवन संग्रह होना चाहिये। दीर्घ काल से ऐसे स्त संग्रह का अखरने वाला अभाव अनुभव किया जा रहा था।

अतः संघ की योजना से विभिन्न प्रचलित स्तवनों के

और प्रकाशन का निश्चय किया गया । श्री समता प्रचार संघ के सहसंयोजक कानोड़ निवासी श्री सज्जनसिंह जी मेहता 'साथी' ने अनथक श्रम करके स्वल्प समय में ही सद्य प्रस्तुत स्तवनों का संग्रह तैयार करके प्रकाशनार्थ संघ को सौंप दिया । इस पुनीत कार्य हेतु सच्ची लगन और उदात्त भाव से श्रम करके समय पर कार्य पूर्ण करने के लिए हम संग्राहक श्री सज्जनसिंह जी मेहता 'साथी' के आभारी हैं । साथ ही संयोजक श्री गणेशलालजी बया की कार्य-सिद्धि हेतु प्रदत्त विशेष प्रेरणा के लिए भी हम उनके आभारी हैं ।

इस कार्य के लिए विद्वान् श्री राममुनि जी म. सा. के मार्ग-दर्शन एवं प्रेरणा से संग्राहक को सबल सम्बल प्राप्त हुआ है । जिसके लिए संग्राहक एवं संघ मुनिश्री जी का आभारी है ।

सुविधा की दृष्टि से स्तवन संग्रह को संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के विभागों में विभक्त किया गया है । हिन्दी खंड में चुने हुए नए व पुराने, लयपूर्ण भाव प्रधान स्तवनों की प्रचुरता है । नई तर्जों पर आधारित संवादों को भी अलग से संग्रहित किया गया है, जो बालक-बालिकाओं के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होंगे । स्तवन वर्णानुक्रम में संकलित है । प्रस्तुत संग्रह में स्तवनों के अतिरिक संस्कृत एवं प्राकृत भाषा की उपयोगी सामग्री को भी स्थान दिया गया है ।

यह स्तवन संग्रह जिज्ञासु स्वाध्यायियों के साथ ही जन-साधारण की अपेक्षाओं को पूर्ण कर सकेगा, इस विश्वास के साथ समाज की सेवा में समर्पित है ।

इस पुस्तक का प्रकाशन श्री हितेच्छु श्रावक मंडल, रतलाम की निधि से, जो संघ को साहित्य प्रकाशन आदि के लिए प्राप्त हुई है, किया जा रहा है । इसके लिए मंडल के सभी सदस्यों के प्रति हम आभारी हैं ।

विनीत—

जुगराज सेठिया
अध्यक्ष

पीरदान पारख
मंत्री

सहमंत्री

समीरमल कांठेड़

चम्पालाल डागा

हस्तीमल नाहटा

विनयचन्द कांकरिया

श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

अनुक्रमणिका

विविध

संवाद-विभाग

संस्कृत – विभाग

प्राकृत – विभाग

❁ गुरु गुण गान ❁

★ प्रातःकालीन प्रार्थना ★

गुण के निधान और संघ सिरताज जी,
क्षमाशील ज्ञानसागर, पूज्य नानालाल जी ॥ टेर ॥

ज्ञान के निधान आप चारित्र भण्डार हैं,
बाल – ब्रह्मचारी आप महिमा अपार है ।
प्रभु वीर के हैं आप शासन श्रृंगार जी ॥ १ ॥ क्षमाशील० ॥
सरल स्वभावी सिंह सम ललकार है,
सदा ही व्याख्यानों में नई–नई बहार है ।
संघ रखवाले, अनुशासन कमाल जी ॥ २ ॥ क्षमाशील० ॥
दिवाकर जैन ज्योति, कीर्ति विशाल है,
प्रान्त प्रान्त में चमकती आपकी मशाल है ।
तारण तिरण भवसागर जहाज जी ॥ ३ ॥ क्षमाशील० ॥
पंचाचारी अग्र विहारी, माधुरी मुस्कान है,
अहो निश जग के उत्थान का ही ध्यान है ।
युग के प्रणेता धर्मपाल को निहाल जी ॥ ४ ॥ क्षमाशील० ॥
आत्मानन्दी ज्ञानानन्दी, आनन्दी भण्डार है,
सत्याचारी शुद्धाचारी, मोक्ष के दातार है ।
समझावट शैली ऐसो देखी है कमाल जी ॥ ५ ॥ क्षमाशील० ॥
गुण नित गाइये, दर्शन पाइये,
जहां गुरुदेव वहां, मँगल गान गाइये ।
रिद्धि और सिद्धियों से भरलो भण्डार जी ॥ ६ ॥ क्षमाशील० ॥
मोडीलाल पिता माता आपकी श्रृंगार है,
दांता गांव धन्य वीरभूमि यह मेवाड़ है ।
प्रगटे जहां हैं आप महा अणगार जी ॥ ७ ॥ क्षमाशील० ॥
चरणों का दास है, श्रीसंघ आपका,
कभी न भूलेंगे उपकार गुरुराज का ।
कृपामय सुदृष्टि बनी रहे पूज्यराज जी ॥ ८ ॥ क्षमाशील० ॥

तुमको लाखों प्रणाम

गणेश गुरु के पटधर, तुमको लाखों प्रणाम,
जैन जगत के पूज्यवर, तुमको लाखों प्रणाम ।। टेर ।।

दाँता गांव में जन्म तुम्हारा मोड़ीलाल के तुम हो दुलारा,
श्रृंगार मां के लाल तुमको लाखों प्रणाम ।। १ ।।

सूरज के सम चमक रहे हो, चन्दा के सम बरस रहे हो,
अमृत बरसाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।। २ ।।

व्याख्यान की शैली अजब निराली पिलाते जिन अमृत की प्याली
अष्टम पाट रखवाले तुमको लाखों प्रणाम ।। ३ ।।

श्रीसंघ का भाग्य बड़ा है, गुरुवर का यहां चरण पड़ा है,
मोक्षगति दातार तुमको लाखों प्रणाम ।। ४ ।।

नाना पूज्यवर

(तर्ज— जय बोलो महावीर स्वामी की·······)

जय बोलो नाना पूज्यवर की,
श्री पूज्य गणेशी के पटधर की ।। जय बोलो·······

श्री हुक्म मुनीश्वर उपकारी, इक्कीस वर्ष षट तपधारी ।
शिवलाल महामुनि गणीवर की·······।। १ ।। जय बोलो·······

श्री उदयसागर महाराज गुणी, श्री चौथमलजी पूज्यराज मुनी ।
श्रीलाल प्रतापी पूज्यवर की······· ।। २ ।। जय बोलो·······

श्री पूज्य जवाहर ज्योतिर्धर, अमृतवाणी जिनकी सुखकर ।
उपकारी गणपति गुरुवर की······· ।। ३ ।। जय बोलो·······

श्री वर्तमान आचार्य प्रवर, श्री नानालाल जी है पूज्यवर ।
इक्यासीवें पाट श्री महावीर की·······।। ४ ।। जय बोलो·······

जप तप तेज ज्ञान और दर्शन में, दिन–दिन वृद्धि हो शासन में ।
जय विजय सदा हो पूज्यवर की·······।। ५ ।। जय बोलो·······

लाखों प्रणाम

(तर्ज— तुमको लाखों प्रणाम)

पूज्य गुरु महाराज तुमको लाखों प्रणाम,
जैन जगत सिरताज तुमको लाखों प्रणाम ।। टेर ।।

अष्टम पद के हो गुरुधारी, गुरुवर तुम हो पर उपकारी,
संयम के हो तुम प्रतिहारी, जैन जगत उद्धारी ।।१।। तुमको……
सत्य धर्म को तुमने बताया, सत्य पथ को तुमने अपनाया,
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाया, ऐसे गुरु गणकारी ।।२।। तुमको……
नाम तेरा है नाना गुरुवर, गणपति के तुम पटधर,
सब जीवों पर करुणा कर, सच्चे संयम धारी ।।३।। तुमको……
कांटों को तुम फूल सजाना, कष्टों पर सीखो मुस्काना,
महावीर पथ को पहचाना, बन गये हो अवतारी ।।४।। तुमको…

मेरा हो प्रणाम

(तर्ज— देख तेरे संसार की हालत……)

वर्तमान आचार्यश्री को मेरा हो प्रणाम,
जिनका अनुशासन है आज ।
प्रगटे हैं इस जगती तल पर, जैन जगत सिरताज ।।टेर।
मोड़ीलाल जी के घर आये, शृंगार मां के मन को भाये ।
नर नारी मिल मंगल गावे, मानवता का मान बढ़ाये ।
जन्म आपका दांता गांव में, ओस वंश की शान ।।१।।जिनका…
प्रलय काल के बादल छाये, गणेश पूज्यवर स्वर्ग सिधाये ।
मुरझाये वे दीप जलाए, नव शक्ति चेतनता लाये ।
मिटा दिया है मोह तिमिर को, उज्ज्वल सूर्य समान ।।२।।जिनका…
रत्न त्रय की साधना करते, जैनाचार्य जी आप कहाते ।
राग-द्वेष को दूर हटाते, समता का सन्देश सुनाते ।
शशि सम शीतल मधु सम मीठे, क्रांतिकारी महान् ।।३।।जिनका…
सत्य आदेशों को फरमाते, दया धर्म का पाठ पढ़ाते ।
आतम ज्योति को आप जगाते, मिथ्या तम को दूर हटाते ।
त्यागी तपस्वी सरल स्वभावी, गुण रत्नों की खान ।।४।।जिनकी…
संयम से हो प्यार हमारा, असंयम से करें किनारा ।
हम सब का यह सच्चा नारा, अमर रहे यह संघ हमारा ।
कर्म शत्रु को नष्ट करें हम, पायें मोक्ष निधान ।।५।। जिनका….

नाना गुरु म्हारा रे

(तर्ज— चांदनी ढल जायेगी……)

श्रृंगार मां के लाल हो, शासन प्रतिपाल हो,
अष्टम पटधर प्यारे, नाना गुरु म्हारे ॥ टेर ॥
पिता मोड़ीलाल है, छोड़ा मोह जाल है,
गजानन्द दुलारा रे, नाना गुरु म्हारा रे…॥ १ ॥
वीर आज्ञाधारी है, बाल – ब्रह्मचारी है,
समता–दर्शन प्यारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ २ ॥
सूरत इनकी प्यारी है, छोड़ी दुनियादारी है,
दृढ़ व्रत धारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ ३ ॥
संतों में हैं श्रेष्ठ सन्त, गुणों का नहीं है अन्त,
जैन के सितारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ ४ ॥
गजानन्द के पाट पर, छत्तीस गुण धारक,
चमका सितारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ ५ ॥
तिन्नाणं और तारियाणं, पद है आयरियाणं,
वन्दन हमारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ ६ ॥
राम गुण गाता है, जीवन सजाता है,
आप ही सहारा रे, नाना गुरु म्हारा रे… ॥ ७ ॥

(तर्ज— तुमसे लागी लगन……)

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण गुरुवर नाना,
पुरो पुरो जी आश हमारा ॥ टेर ॥
निश दिन तुमको जपुं, पर से नेहा तजूं, जीवन सारा,
तेरे चरणों में बीते हमारा ॥ १ ॥ पुरो पुरो…
मोड़ीलाल जी के लाल दुलारे, श्रृंगार मां के नयन सितारे,
घर से नाता तोड़ा, जग से मुंह मोड़ा संयम धारा ॥२॥ पुरो…
श्रावक श्राविका वहुत ही आये वालक वालिका मिल जुल गाए,
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थांरा ॥३॥ पुरो....
जग के दुःख की परवाह नहीं, स्वर्ग के सुख की चाह नहीं है,
मेरो जन्म मरण होवे ऐसा यतन, गुरुवर प्यारा ॥ ४ ॥ पुरो....
लाखों वार तुम्हें शीश झुकाऊं, संघ के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं,
'गनेश' व्याकुल भया, दर्शन विन ये जिया, लागे खारा ॥५॥ पुरो…

जपो सब नर-नारी

(तर्ज— शान्तिनाथ को कीजे जाप)

हुक्मीचन्द जी अवतारी, जपो जाप सब नर नारी ॥ टेर ॥
रोग शोक सब जावे दूर, ऋद्धि सिद्धि होवे भरपूर ।
घर में लक्ष्मी रहे अपार, यह कीर्ति फैले हरबार ॥
पाट चोहत्तर पाओ आप, शिथिलता के बन गये शाप ।
सुर-नर सेवा करे ज्याँरी, जाप जपो सब नर नारी ॥ १ ॥
देश प्रदेश में शान्ति पाय, अतुल सम्पत्ति घर में आय ।
विष जहर सब जावे भाग, नहीं लागे जीवन में दाग ॥
चोर जार सब जावे भाग, जला न सकती कोई आग ।
पूज्य तपस्वी बड़ भारी, जाप जपो सब नर नारी ॥ २ ॥
भूत पिशाचन न आवे पास, बैरी दुश्मन बनते दास ।
जो नर आपका जाप करे, चिन्ता आरति सब विघन हरे ॥
फोड़ा फुन्सी मिटावे रोग, सजन मित्र का मिले संयोग ।
हुक्मी नाम है श्रेय कारी, जाप जपो सब नर नारी ॥ ३ ॥
उत्कृष्ट रसायन जो आवे, गोत्र तिर्थंकर को पावे ।
शुद्ध संयम में रमरण करे, कर्म वृन्द को दूर करें ॥
पूज्य देवलोक में जाय, फिर विदेह क्षेत्र को पाय ।
मोक्ष मिले वहां सुखकारी, जाप जपो सब नर नारी ॥ ४ ॥
श्रद्धायुक्त नित जाप करे, शुद्ध समकित को वरण करे ।
संवत् चौतिसे भादव मास, नाना गुरु के रहता पास ॥
राम मुनि ने जोड़ा छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द ।
हुक्मी नाम से कह हारी, जाप जपो सब नर नारी ॥ ५ ॥

मैं तो नित गुरण गाऊं रे

(तर्ज— मैं तो आरती उतारूं रे............)

मैं तो नित गुरण गाऊं रे, नानेश पूज्यवर का,
जय जय नानेश गुरुवर जय जय-२ ॥ टेर ॥
बहती है अमृत धार, गुरु की आंखों से-२
बरसे देखो प्यार, गुरु की आंखों से-२
शुभ दृष्टि की बहती धार, गरु की आंखों से-२

शिक्षा देते घूम घूम, जहां जावे होवे धूम, मनमें बसाऊं रे,
प्यारा २ मन में बसाऊं रे, नानेश पूज्यवर को······· ॥ १ ॥
है मोक्षमार्ग दातार, नाना गुरुवर जी – २
मेरी नैया लगाजे पार, नाना गुरुवर जी – २
मुझे तेरा ही है आधार, नाना गुरुवर जी – २
सच्चे मिले हैं सनम, हुआ सफल रे जनम, ध्यान लगाऊं रे,
प्यारा २ ध्यान लगाऊं रे नानेश पूज्यवर का······· ॥ २ ॥

नमो गुरु देवाय

(तर्ज— उमर है सतरह साल·······)

नमो गुरु देवाय नमो नानेशाय
भजले मन गुरुराज, जीवन इनसे बनता है ।
गुरुवर का बड़ा है नाम, संकट अपना टलता है ॥ टेर ॥
वृद्ध महिला जिसको था नहीं दिखता,
तेरे दर्शन से जिसको है अब दिखता ।
भंवर में तव सुमरण से प्राणी बचता है ॥ १ ॥
शृंगार है माता, पिता मोड़ी प्यारे,
दांता में जनमे हो विश्व गगन तारे ।
तेरी भक्ति से कर्मों का जाल कटता है ॥ २ ॥
हम हैं अज्ञानी, चरणों में तेरे आये,
राह बतादो समता पर चल पायें ।
'सुशील' का जीवन गुरु सम्बल से फला है ॥ ३ ॥

(तर्ज— पूर्ववत·······)

हुक्म गुरु अणगारी, बेले बेले तप धारी ।
तेरह वस्तु सारी रे, छत्तिस गुणधारी रे ॥ १ ॥
शिवलाल त्यागी ऋद्धि पायी है अनुपम सिद्धि ।
शिवपुर राही रे बने गुण ग्राही रे ॥ २ ॥
उदय सागर महाराज सारा है आतम काज ।
तोरण से फिरिया रे तज दिनी तिरिया रे ॥ ३ ॥
चौथमल जी चौथे पाट लगाया धर्म का ठाठ ।
धर्म उजागर रे, क्षमा गुण सागर रे ॥ ४ ॥

नाना नाम है गुण धाम, जिसमें छिपा विश्व महान ।
यह है अनेकान्त की शान, गुरु गुण.................. ॥ ३ ॥
मोड़ीलाल जी जनक दुलारे, शृंगार मां के नयन सितारे ।
शान्ति रस बरसाने वाले, गुरु गुण.................. ॥ ४ ॥
हम सब आये शरण तुम्हारे, अब तो करदो भव से किनारे ।
मेरी नैया के रखवाले, गुरु गुण.................. ॥ ५ ॥

(तर्ज— धरती धारी हो............)

नाना गुरु रा गुण म्हां गावां, जीवन अपणो धन्य वणावां ।
तिण सु शान्ति और सुख पावां, म्हारा गुरुवर सा, हो म्हारा गुरुवर सा ।टेर।
मुखड़ो चन्दा सु शीतल है, हिवड़ो फूलां सु कोमल है ।
मनड़ो घणो घणो निर्मल है, म्हारा गुरु.................. ॥ १ ॥
शरणे आपरे मैं आया, हिवड़े घणा घणा हुलसाया ।
जीवन में सांचो सुख पाया, म्हारा गुरु............ ॥ २ ॥
एकज आश लगी है मन में, जीवन रमजा समता रस में ।
संयम भाव रमे रग-रग में, म्हारा गुरु............ ॥ ३ ॥
आशीर्वाद मैं एकज चावां, शरण भवां २ में पावां ।
आखिर अजर अमर हो जावां, म्हारा गुरु............ ॥ ४ ॥
मोड़ीलाल जी रा नन्दा. जन जन रा हो दुःख निकन्दा ।
'शान्ति' रस रा पूरण रमन्दा, म्हारा गुरु............ ॥ ५ ॥

(तर्ज— वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया.......)

नाना गुरु की आज्ञाओं पर जीवन अर्पण हो सारा ।
जीवन के हर क्षण-क्षण में हम नाम रटें तेरा प्यारा ॥ टेर ॥
भावों से झुकती जनता है, जिसे झुकाना आता है ।
श्रद्धा से अवनत होकर के, विजित शत्रु झुक जाता है ।
दुनिया को नत मस्तक करने, हुआ जन्म तुम्हारा ॥१॥ नाना गुरु....
शांति सदन इस शान्त वदन से, शान्त सुधारस वरसाते ।
जन जन के मन मन्दिर को ये, वचनामृत से सरसाते ।
जादू सम है असर तुम्हारे वचनों का अवतम हारा ॥२॥ नाना गुरु....
योग निष्ठ यह योगी आया, जीवन सफल वना लेगा ।
इनके पावन चरण-कमल में जो निज शीश झुका देगा ।
इनके ब्रह्म तेज को लख कर, झुक जाता जनवृन्द यह सारा ॥३॥ नाना....

अष्ट सम्पदाधारी हैं ये, मातृ-पद अधिकारी हैं।
युक्त इस कलिकाल में, आप विशुद्धाचारी हैं।
चरित्र ज्योति से आलोकित है, जीवन का कण कण सारा।।४।।नाना····
नाना नाम है नाना काम है, नाना युग के अवतारी।
'शान्ति' का अघतम हरदो अब जन जन के अघतमहारी।
आज जहां में चमका है, धर्म–धुरन्धर ध्रुवतारा ।।५।। नाना गुरु····

ओ जैन जगत प्रतिपाल, गणेशीलाल, महात्मा ज्ञानी
जिनकी है अमर कहानी ।।टेर।।

अवतार उदयपुर में पाये, जहां वीर अनेकों प्रगटाये,
उस वीर भूमि की यह, अनमोल निशानी ।।१। जिनकी है·······
वे साहिबलाल के नन्दन थे, दुनियां के दुःख निकन्दन थे,
माता इन्द्रा के लाल, धर्म की शानी ।।२।। जिनकी है··········
व्याख्यान छटा कुछ न्यारी थी, बोली अमृत सम प्यारी थी,
सुनने वालों की सफल बनी, जिन्दगानी ।।३।। जिनकी है··········
शेरों सी गर्जना करते थे, पुर जोश धर्म का भरते थे,
कर दो कुरबान धर्म पे, जोश जवानी ।।४।। जिनकी है··········
कथनी करणी को एक किया, दुर्जन जन से भी प्रेम किया,
और क्षमाशील को दे गये, अमर कहानी ।।५।। जिनकी··········
पूर्व कर्म–वेदना उमड़ पड़े, तब आत्म शान्ति से जूझ पड़े,
असह्य वेदना सही शान्ति रस लानी ।।६।। जिनकी··········
रह–रह कर याद सताती है, मधुर वाणी मन भाती है,
सब विलख रहे हैं, मन ही मन मुरजानी ।।७।। जिनकी··········
स्वर्णाक्षरों में है जीवनी अमर जब तक पृथ्वी पर है सूर्य चन्द्र,
गुण गौरव गाथा गाते हैं, हिन्दुस्तानी ।।८।। जिनकी··········

(तर्ज— रेशमी सलवार कुर्ता·······)

नाना गुरु का नाम मंगल मंगल है,
लेलो गुरु का नाम मंगल मंगल है ।। टेर ।।
शृंगार मां के लाल दुलारे, मोड़ीलाल कुल उजियारे,
भक्तों के भाग्य सहारे, मेवाड़ भूमि के प्यारे,
स्थान वह मंगल है, लेलो गुरु का नाम मंगल मंगल है ।।१।। नाना····

एक चादर से बारह वर्षों तक, गर्मी सर्दी सहन किया।
जीवन भर जो तेरह वस्तु से, और वस्तु को त्याग दिया॥
धन्य धन्य है जीवन जिनका, हुक्म मुनि महान् की॥ १॥

धर्म प्रचार करने की जिसने, जीवन भर प्रयास किया।
देश देश में जाकर जिसने, धर्म–नाद गुंजाय दिया॥
मानवता का सच्चा मतलब, मानव को बतलाया था।
द्वितीय पाट पर शिवलालजी, जीवन ज्योति जगाया था॥
घर घर में जो ज्योति जलाई, सम्यग् ज्ञान महान् की॥२॥

स्वार्थ दम्भ पाखण्ड हटाकर, विश्व प्रेम पढ़वाया था।
रत्नपुरी में जिनवाणी की, झड़ियां खूब लगाया था॥
सागर सम गम्भीर घोर, निष्परिग्रही निष्कामी थे।
तृतीय पाट के नायक देखो, महागुणों के स्वामी थे॥
जय जय जय बोली थी जनता,'उदयसागर' महान् की॥ ३॥

चतुर्थ पाट पर 'चौथमलजी', चार गुणों के स्वामी थे।
सम्यक्-दर्शन, ज्ञान–चरित्र, मोक्ष–मार्ग के कामी थे॥
पथ भूले हुए पथिकों को, जो सच्चा मार्ग बताया था।
जिनवाणी का रूप बताकर, शासन खूब दिपाया था॥
जीवन भर जो की थी सेवा, जिन शासन महान् की॥ ४॥

ब्रह्मचर्य के धारी श्री, युग अवतारी 'श्रीलाल' थे।
सहन किया था परिषह भारी, अग्नि परीक्षा पास थे॥
सत्यधर्म के खातिर जिसने, जीवन का नहीं मोह किया।
नव परिणीता पत्नी को जो, क्षण भर में ही त्याग दिया।
गुण गावे जनता जो सारी, ऐसे सन्त महान् की॥ ५॥

क्रांतिकारी आचार्य 'जवाहर', सब सन्तों में श्रेष्ठ थे।
मौलिक धारा दी थी जग को, ज्ञान गुणों में ज्येष्ठ थे॥
भ्रम निवारा थली प्रान्त का, खमा–खमा कहलाते थे।
गांधी और विनोवा भी जहां सादर शीश झुकाते थे॥
धन्य–धन्य बोले थे नरवर, गुण गाऊं महान् की॥ ६॥

सरल सौम्य मुस्कान जिन्हों की, गजानन्द गुरु ज्ञानी थे।
सरताज बनाया श्रमण संघ ने, संघ हितों के कामी थे॥
अनुशासन में कठोर वज्र से, कोमल हृदय सु पाया था।

सहन किया कष्टों को भारी, कर्म उदय जब आया था ।।
अद्भुत शांति देख तुम्हारी, जनता जय की महान् की ।। ७ ।।

राणा जी के प्रांगण में जो, युवाचार्य पद पाया था ।
तीस हजार जनता ने जहां पर सादर शीश झुकाया था ।।
सकल संघ ने श्रद्धानायक, 'नाना' गुरुवर पाया है ।
आज आचार्य चरणों में तेरे, गौरव गाथा गाया है ।।
महाकौशल की अरजी पर मैं, मरजी चाहूं महान् की ।। ८ ।।

हिन्दी स्तवन खण्ड

अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर

अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करें ।
क्षमा भाव से शान्ति धर कर, मीठा ही व्यवहार करें ।।१।।
सिद्ध प्रभु का शरणा लेकर मान बड़ाई दूर करें ।
विनित भाव से छोटे बन कर, लघुता का व्यवहार करें ।।२।।
आचार्य देव का शरणा लेकर, झूठ कपट का त्याग करें ।
सीधा – सादा रहना अच्छा, जीवन अपना सरल बरें ।।३।।
उपाध्याय का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करें ।
जरूरत से जो ज्यादा लक्ष्मी, अपना क्या कल्याण करे ।४।।
मुनियों के चरणों में नम कर, अपना कुछ उद्धार करें ।
मूल कषायों को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करें ।।५।।

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय ।
साधु जीवन जय जय, जिन धर्म जय जय ।। १ ।।
अरिहन्त मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल ।
साधु जीवन मंगल, जिन धर्म मंगल ।। २ ।।
अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम ।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम ।। ३ ।।
अरिहन्त शरणा, सिद्ध प्रभु शरणा ।
साधु जीवन शरणा, जिन धर्म शरणा ।। ४ ।।
चार शरण दुःख हरण जगत में,
और न शरणा कोई होगा ।
जो भव्य प्राणी करे आराधन,
उसका अजर अमर पद होगा ।।

अरे करले रे करणी

(तर्ज— तेरे द्वार खड़ा भगवान् भगत भरदे·······)

कहना मेरा मान, न बन नादान, अरे करले रे करणी····२
तेरा होगा बड़ा रे कल्याण कि, एक दिन पायेगा तू निर्वाण ।

प्रबल पुण्य से दुःख उठाते, यह मानव तन पाया रे ।
अब चेत जरा रे इन्सान, थोड़ा तो करले धर्म और ध्यान ।
अरे करले रे.......... ॥ १ ॥

भाई–बहन, मां–बाप देख रे. तेरे ये नाति अठारा ।
मृत्यु आयेगी जब तेरे सिर, कोई न बचावन हारा रे ।
हे काल बड़ा रे बलवान, घड़ी भर भजले जरा भगवान ॥
अरे करले रे.......... ॥ २ ॥

देह महल धन–धान्य बाग में, मस्त बना मतवारा ।
मान जिसे रे कहे तू मेरा, वह झूठा जगत पसारा रे ।
ओ चार दिनों के मेहमान, झोली में भरले जरा सामान ।
अरे करले रे.......... ॥ ३ ॥

छोड़ अरे जंजाल जगत का. लेले जिनन्द सहारा ।
तीन लोक में 'पारस' कहता, धर्म ही तारण हारा रे ।
कर भाव शील, तप, दान, सुनले रे गुरु केवल फरमान ।
अरे करले रे .... ॥ ४ ॥

अब हम अमर भये ना मरेंगे

अब हम अमर भये ना मरेंगे ।
या कारण मिथ्यात दियो तज, क्यों कर देह धरेंगे ॥१॥ अब०॥
राग-द्वेष बन्ध करत हैं इनका नाश करेंगे
भ्रम्यो अनन्त काल ते प्राणी सो हम काल हरेंगे ॥२॥ अब०॥
देह विनाशी हूं अविनाशी अपनी गति पकरेंगे,
नासी जासी हम थिर वासी चोखे व्है निगरेंगे ॥३॥ अब०॥
मर्यो अनन्त वार विनु समझ्यो अव सुख दुःख बिसरेंगे,
आनन्दघन निपट निकट अक्षर दो नहीं सुमरे सो सुमरेंगे॥४॥अब.॥

अरे ईश्वर ने दुनियां को नहीं

(तर्ज– तेरे कूचे में अरमानों.......)

अरे! ईश्वर ने दुनियां को, नहीं भाइयों बनाया है ।
अनादि की है यह दुनियां, अड़ंगा क्यों लगाया है ॥ १ ॥
कहो गर कि बनाए बिन, न कोई वस्तु बन सकती ।
तो पूछेंगे हम, ईश्वर को भी किसने बनाया है ॥ २ ॥

अगर है वो बनाए बिन जगत को भी यूं ही समझो ।
जगत, ईश्वर अनादि के, जिनेश्वर ने बताया है ॥३॥
भला उसको जरूरत क्या, बनाए खामखा दुनियां ।
अमूरत वे जरूरत को मुफ्त कर्ता ठहराया है ॥४॥
जगत रचने से क्या पहले, वो परमात्मा अपूर्ण था ।
जो पूर्ण था, बना जग को, नफा क्या उसने पाया है ॥५॥
जरा सोचो विचारो तो, असल में चीज क्या जग है ।
अलावा 'जड़' व 'चेतन' के नहीं कुछ हमने पाया है ॥६॥
बनाई है अगर रूहें अमर, फिर हो नहीं सकती ।
बनी चीजें मिटे, जैसे मिटे बादल की छाया है ॥७॥
रहा मादा, बना ईश्वर, कभी उसको नहीं सकता ।
असत की सत से उत्पत्ति, बता जग क्यों हंसाया है ॥८॥
बनाया आस्मां तक जब, बताते हो उसी का तुम ।
रहा फिर खुद कहां कोई, ठिकाना न बकाया है ॥९॥
अरे भाइयो ! जरा देखो ये अपनी खोल कर आँखें ।
अन्धेरा आज तक ढो–ढो जन्म यूं गंवाया है ॥१०॥
नहीं है हाथ-मुख उसके, बनाया किस तरह जग को ।
यूं ही कहने से क्या हासल, रचाया – रचाया है ॥११॥
नफा जिद में नहीं कोई, बने हो किस लिए जिद्दी ।
कि मानों त्याग कर हठ को, जो 'चन्दन' ने सुनाया है॥१२॥

अगर जिनदेव के चरणों में

अगर जिनदेव के चरणों में तेरा जो ध्यान हो जाता ।
तो इस संसार-सागर से तेरा उद्धार हो जाता ॥ टेर ॥
न होती जगत में ख्वारी न बढ़ती कर्म बीमारी ।
जमाना पूजता सारा गले का हार हो जाता···· अगर ॥ १ ॥
रोशनी ज्ञान की खिलती, दीवाली दिल में लहलहाती ।
हृदय मन्दिर में भगवन् का, तुझे दीदार हो जाता··· अगर ॥२॥
परेशानी न हैरानी, दशा बन जाती मस्तानी ।
धर्म का प्याला पी लेता, तो बेड़ा पार हो जाता···अगर ॥३॥
जमी का बिस्तरा होता, व चादर आसमां बनता ।
मोक्ष गद्दी पै फिर प्यारे, तेरा अधिकार हो जाता···अगर ॥४॥

चढ़ाते देवता तेरे, चरण की धूल मस्तक पर ।
अगर जिनदेव की शक्ति में, मन इकतार हो जाता....अगर ॥५॥
'राम' जपता अगर माला का मनका एक भक्ति से ।
तो तेरा घर ही भक्तों के लिये दरबार हो जाता.... अगर ॥६॥

अरे सत्संग करने में

अरे सत्संग करने में तुझे क्यों शर्म आती है ?
बिना सत्संग के आयु, पशु मानिंद जाती है ॥ टेर ॥
तमाशा देखने रंडी का, महफिल बीच जाते हो ।
धर्म के स्थान के अन्दर, तुझे क्यों नींद आती है ॥ अरे. ॥१॥
करे लुच्चे की तू संगत, पिलावे वो तमाखू भंग ।
फेर परनारी का पर संग, तो वो इज्जत घटाती है ॥अरे.॥२॥
अरे सत्संग बड़ा जां में, चश्म को खोल करके देख ।
तिरे सत्संग से पापी, जिसकी गिनती न आती है ॥अरे.॥३॥
अगर लाखों, करोड़ों का, करे पुण्य दान कोई है ।
मगर लवमात्र की सत्संग, खास मुक्ति दिलाती है ॥अरे.॥४॥
कहे यों 'चौथमल' पुकार, सभी है झूठा ये संसार ।
एक सत्संग जग में सार, भव-सागर तिराती है ॥ अरे. ॥५॥

अवसर मत चूको

अवसर मत चूको, मुक्ति रो मेलो, करलो प्रेम सूं ॥ टेर ॥

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, चार तीर्थ गुणकारी ।
इनकी सेवा करो, तिरो भव-सिन्धु रहो हुशियारी रे ॥ १ ॥
॥ अवसर मत० ॥

आगम वाणी सुण हो प्राणी, मिट जावे सब सांसा ।
चारों गति में आवागमन का, होरया अजब तमासा रे ॥ २ ॥
॥ अवसर मत० ॥

दया धर्म की गोठ करो नित, भांग धर्म की पीवो ।
नियम नशा की लाली लाकर, इण विध जुग-जुग जीवो रे ॥ ३ ॥
॥ अवसर मत० ॥

होगा जो पुण्यवान जिन्हों को, यह मेला मन भावे ।
दूजा मेला मांय जायने, गांठ का दाम गमावे रे ॥ ४ ॥
॥ अवसर मत० ॥

कहे 'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य, सुण लेना सब भाया ।
करी जोड़ अजमेर शहर में, सावण महीने गाया रे ॥ ५ ॥
॥ अवसर मत० ॥

अविद्या प्रेतनी तेने द्वन्द कैसा मचाया है

(तर्ज—अगर जिनराज के चरणों में....)

अविद्या प्रेतनी तेने, द्वन्द कैसा मचाया है ।
भुला के सुपथ से चेतन, कुपथ मांही भ्रमाया है ॥ टेर ॥
सच्चिदानन्द प्रभु तज के, उपल पूजन चलाया है ।
गोरि गोबर गधा धूरा, पेड़ पानी पुजाया है ॥ अ० ॥ १ ॥
पुत्र के काज बलि देना, महिष मेंढा मुरग अज को ।
पति को छोड़ पर-पति से, पुत्र लाना बताया है ॥ अ० ॥ २ ॥
भोग - भोगी बने जोगी, दया की रीत जाने ना ।
भंग गांजा चरस पी के, कहे आनन्द आया है ॥ अ० ॥ ३ ॥
पुजाये कुगुरु ऐसे, जिन्हों के धाम धन दारा ।
तिन्हीं का मूढ़ लोगों को, प्रगट झूठा खवाया है ॥ अ० ॥ ४ ॥
पुत्र के पठन-पाठन में, खरच कौड़ी नहीं करना ।
ब्याह में वे अरथ धन को, लुटाना तो सिखाया है ॥ अ० ॥ ५ ॥
दया में धर्म सब जग जाने, मूढ़ से मूढ़ भी माने ।
धरम के हेत हिंसा भी, करो ये ते सुनाया है ॥ अ० ॥ ६ ॥
धर्म जो होय हिंसा से, फेर क्यों कर दया कीजे ।
ध्यान दे के लखो बुधजन, घोर अंधेर छाया है ॥ अ० ॥ ७ ॥
सुगुरु श्री मगनमुनि ध्याई, कहे 'माधव' अविद्या ने ।
धर्म का नाम ले लेकर, कर्म बन्धन बढ़ाया है ॥ अ० ॥ ८ ॥

अमोलक जन्म पाया है

(तर्ज—बहारों फूल बरसाओ.......)

प्रेम के गीत नित गाओ, अमोलक जन्म पाया है ।
सुमानव बन के दिखलाओ, अमोलक जन्म पाया है ।

समझते हो सिर्फ अच्छा, हमेशा पीने – खाने को ।
बने हो किस लिए नास्तिक, भुलाकर जग से जाने को ।
जरा अब होश में आओ, अमोलक जन्म पाया है ॥
कभी परलोक को दिल से, भुलाना है नहीं अच्छा ।
भलाई तज बुराई को, कमाना है नहीं अच्छा ॥
कपट–छल–लोभ बिसराओ, अमोलक जन्म पाया है ॥
स्वर्ग के देव भी जिनकी, सदा सेवा बजाते हैं ।
कहां है चक्रवर्ती वे धरा, को जो कम्पाते थे ।
न धन यौवन पे इतराओ, अमोलक जन्म पाया है ॥
रहे न कंस से जालिम, रहे रावन से न कामी ।
मगर इक रह गई उनकी, जगत के बीच बदनामी ।
समझकर सबको समझाओ, अमोलक जन्म पाया है ॥
'मुनि चन्दन' वचन मन से, बदन से व इशारे से ।
कभी भी कष्ट न कोई, किसी को हो तुम्हारे से ।
सदा आराम पहुँचाओ, अमोलक जन्म पाया है ॥

अगर पत्ते के हिलने से

अगर पत्ते के हिलने से, पता ईश्वर का मिलता है ।
उसी के हुक्म से बागों में, इक इक फूल खिलता है ।
तो जब जालिम का नश्तर, बेकसों के दिल पे चलता है ।
बता यह भी तेरे परमात्मा का, हुक्म चलता है ।
गलत है अगर तू परमात्मा, को यों समझता है ॥ १ ॥
अगर परमात्मा सब काम, दुनिया के चलाता है ।
वही दुनिया रचाता है, इसे खुद ही सजाता है ।
तो क्यों हमको सुलाता और, चोरों को बुलाता है ।
भयानक आँधियां तूफान, और भूचाल लाता है ।
मुझे ये भेद न परमात्मा, का समझ आता है ॥ २ ॥
हर इक इन्सान और हैवान, अगर उसका बनाया है ।
गरज चींटी से हाथी तक, सभी में उसकी माया है ।
तो क्यों इक दूसरे के हाथों से, उनको सताया है ।
कोई रहजन बनाया है, किसी का घर लुटाया है ।
तू ही बतला कि इसमें भेद, क्या उसने छिपाया है ॥ ३ ॥

अजब हाकम है पहले, चोर से चोरी कराता है।
न चोरों को हटाता है, न मालिक को जगाता है।
मगर जब चोर चोरी करके, घर में पहुंच जाता है।
तो फिर क्यों बाद में पुलिस, को हरकत में बुलाता है।
कहीं रिश्वत दिलाता है, कहीं कैदें कराता है ॥ ४ ॥
कसाई को छुरा देकर क्यों, नाहक खूं बहाता है।
ये क्यों हैवान को इन्सान, का खाना बनाता है।
किसी की जान जाती है, किसी को लुत्फ आता है।
कोई आंसू बहाता है, कोई खुशियां मनाता है।
मेरे परमात्मा को खेल ये, हरगिज न भाता है ॥ ५ ॥
तेरा कहना कि हर इक पल, किए करमों का पाता है।
सही है पर इसे क्यों मुफ्त, का जामन बनाता है।
मुझे ये फिलसफा तेरा, न हरगिज समझ आता है।
कराके फेल वद खुद ही, फिर उसका फल चखाता है।
तेरा परमात्मा पहले ही, क्यों न रोक पाता है ॥ ६ ॥
मगर परमात्मा को मैंने, निराकार समझा है।
उसे निर्दोष और निरपक्ष, निर आहार समझा है।
अमर, आनन्द, सतचित जलवाए अनवार समझा है।
तू क्यों दुनियां के धंधों में, उसे गिरफ्तार समझा है।
हकीकत ये है तू परमात्मा, को गलत समझा है ॥ ७ ॥

अरे सबसे खमाले रे

(तर्ज—तेरे द्वार खड़ा भगवान्·······)

यह वैर-विरोध विसार, अरे सबसे खमाले रे,
अरे दिल से खमाले रे।
है आज बड़ा त्योहार, करले रे भाई-भाई से प्यार ॥अरे॥ध्रुव॥
प्राणी मात्र है मेरे भाई, यह भाव न मन में लाया,
किन्तु सबसे नित्य झगड़ कर, उल्टा वैर जगाया रे।
उल्टा वैर जगाया।
रे यों करत व्यवहार, थोड़ा भी मन में किया न विचार ॥अरे॥१॥
दीन दुःखी इन छह कायों की, पीड़ा नहीं मिटाई

किन्तु उनका अव्रत रखाकर, पीड़ा अधिक बढ़ाई रे ।
पीड़ा अधिक बढ़ाई ।
रे समझ मूरख सरदार, कि इसका फल है नरक दरबार ॥अरे॥२॥
माता-पिता और संत-सती की, सेवा नहीं बजाई ।
किन्तु उनका हृदय दुःखाकर, करली करम कमाई रे ।
करली करम कमाई ।
अब एक यही आधार, विनय से करले क्षमा स्वीकार ॥ अरे ॥३॥
आज पुण्य से नगर कानोड़, में संवत्सरी आई,
सज्जन कहते 'लाभ' सुन रे, जीवन में ला नरमाई ।
जीवन में ला नरमाई ।
अरे सफल बना त्योहार, करले रे शत्रु-मित्र से प्यार ॥ अरे ॥४॥

अगर जीवन बनाना है

(तर्ज— अगर जिनराज के चरणों में····)

अगर जीवन बनाना है, तो सामायिक तू करता जा ।
हटाकर विषमता मन से, साम्य रस पान करता जा ॥ ध्रुवपद ॥
मिले धन-सम्पदा अथवा, कभी विपदा भी आ जावे ।
हर्ष और शोक से बचकर, सदा एक रंग रहता जा ॥ १ ॥
विजय करने विकारों को, मनोबल को बढ़ाता जा ।
हर्ष से चित्त का साधन, निरंतर तू बनाता जा ॥ २ ॥
अठारह पाप का त्यागन, ज्ञान में मन रमता जा ।
अचल आसन व मित भाषण, शांत भावों में रमता जा ॥ ३ ॥
पड़े अज्ञान के बन्धन, सदा मन को घुमाता है ॥
ज्ञान की ज्योति में आकर, अमित आनन्द बढ़ाता जा ॥ ४ ॥
पड़ा है कर्म का बन्धन, पराक्रम तू बढ़ाता जा ।
हटा आलस्य विकथा को, अमित आनन्द पाता जा ॥ ५ ॥
कहे 'गजमुनि' भरोसा कर, परम रस को मिलाता जा ।
भटक मत अन्य के दर पर, स्वयं में शान्ति लेता जा ॥ ६ ॥

अरिहन्त पेले पद जानी

(तर्ज— पार्श्व जयो श्रीजिन खड़ो·······)

अरिहन्त पेले पद जानी, प्रभु अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञानी ।
ए तीनूं ही लोक राय भाली, नित नाम जपो नवकार वाली ।।टेर।।
सुर नर ज्यांरी सेवा सारे, प्रभु आप तिरिया अवरा ने तारे ।
ज्यांरा नाम सूं टूटे कर्म जाली······· ।। १ ।।
शीव नगरी में डेरा दिधा, ज्यां आतम कारज सिध कीधा ।
आवागमन फेरा दिया टाली······· ।। २ ।।
अजर अमर पद रोग नहीं, निराकार निरंजन जोत सही ।
प्रभु कर्मों रा बीज दिया बाली······· ।। ३ ।।
गणधर ज्ञान तणा दरिया तीके, चर्ण कर्ण शुभ गुण भणीया ।
साध–साधवियों री करी प्रतिपाली······· ।। ४ ।।
मुनि उवझा बन्दू भवि जीके, सूत्र अरथ कर समझा के ।
आगम खोट देव टाली······· ।। ५ ।।
साधुजी सुध संजम पाली अतीचार देखण टाली ।
तप कर कर्म देवे गाली······· ।। ६ ।।
पांचू पद गुण एक सौ ने आठो, इतना ही भणिया नहीं घाटो ।
इण माला सुं लगावो ताली······· ।। ७ ।।
नवकार–वाली रो जाप जपो, तो क्रोड–भवों रा कर्म खपो ।
आल पंपाल देवो टाली······· ।। ८ ।।

अरे धर्म करो ओ जैनी

(तर्ज— अरे हाय हाय ये मजबूरी·······)

अरे धर्म करो ओ जैनी, जिनवर की यह कहनी ।
तेरी उमर निकलती जाये,
अब पाप छोड़दे जीवन में कुछ धर्म का नाम कमाले ।। टेर ।।
सोने में तो रात गुजारी, दिन में पाप कमाया ।
तेरे सर पर बोल रही, चढ़ पैसों को माया····३ ।।
सुबह–शाम व्यापार नौकरी, में रिश्वत को खाये ।।अब० ।।१।।
महावीर का पंथ अपनालो, सब ही तिर जाओगे ।
जो पापों को किया यहां तो, नरक गति पाओगे....३ ।
जीवों पर समभाव रखें, जीवन को सफल बनालें ।।अब०।।२।।

पर्यूषण पर सब मिल जैनी, दया धर्म को पालो ।
सामायिक कर पापी मन के, पाप सभी धो डालो····३ ।
प्रतिक्रमण कर पापों से हट, कुछ तो पुन्य कमाले ।।अब।।३।।

अनमोल जीवन

जीवन अनमोल मित्रो, सफल बनाते जाना ।
मैत्री की अमृत धारा, जग में बहाते जाना ।। टेर ।।
राग – द्वेष न करना, आत्मिक भाव रखना ।
जिनवर की ज्योति जगाकर, जिनरूप बनते जाना ।। १ ।।
कडवा न बोल कहना, करुणा के भाव रखना ।
समता का सुन्दर गहना, तन पे सजाते जाना ।। २ ।।
दुःखमयी है यह ममता, सुखकारी है यह समता ।
समता योगी बन जग में, समता बढ़ाते जाना ।। ३ ।।
ज्ञान का अमृत चखना, मानस के मन को हरना ।
जीवन का सुन्दर झरना, जग में बहाते जाना ।। ४ ।।
श्रेय और प्रेय जानो, प्रेय को दुःख ही मानो ।
श्रेयार्थी होकर जग में, श्रेयस बढ़ाते जाना ।। ५ ।।
यह जग है सेवा–साधन, साध्य निरूप आराधन ।
सच्चिदानन्दी होकर, शिवरूप बनते जाना ।। ६ ।।

आगे जाणो चैतनिया, साथे खरची ले लीजो

आगे जाणो चेतनिया ! साथे खरची ले लीज्यो !
खरची लियां पहलां हि मनड़ो वश में कर लीज्यो ।।आगे.।।१।।
साथ चाले धर्म यां, से प्रीती कर लीज्यो ।
शुभ कर्म कमाई, चेतन थैली भर लीज्यो ।।आगे।।२।।
आत्म शुद्धि रे खातिर थें तो तपस्या कर लीज्यो ।
थें तो क्षमा करी ने भाया, मद ने हर लीज्यो ।।आगे.।।३।।
पायो मनुष्य जन्म रुड़ो, म्हारी सुन लीज्यो ।
थे तो करणी करना में चेतन, देरी मत कीज्यो ।।आगे.।।४ ।
संत–वाणी इम कहे थें, तो हृदय धर लीज्यो ।
प्रभु भक्ति करीने मुक्ति, देगी ले लीज्यो ।।आगे.।।५।।

आवश्यक कर-कर कह्यो श्री जिनवर

आवश्यक कर-कर कह्यो श्री जिनवर,
अजर-अमर पद पावो रे भवि! भाव-आवश्यक अति सुखदायी।
इण में आतम जोड़ी, संचिया है कर्म कोड़ी,
अनन्ती रो भूल मिटावो रे। भवि०॥१॥
जन्म-मरण जरा, खरा-खोटा रूप धर्या,
अब तो संसार घटाओ रे ॥भवि०।२॥
पुण्य खजानो लायो, श्रावक जी रो कुल पायो,
कोड़ी सेट केम गमावो रे ॥भवि०॥३॥
हीरा री कीमत मांहीं कूंजड़ो तो जाणो नहीं,
जौहरीजी सूं जांच कराओ रे ॥भवि०॥४॥
अनन्तानुबन्धी चौकड़ी, मोटी आ लागी खोटी,
पापिणी सूं पिण्ड छुड़ाओ रे ॥भवि०॥५॥
कितना उधार लिया, भला भूंडा काम किया,
करमा रो करज चुकाओ रे ॥भवि०॥६॥
द्रव्य आवश्यक किया बहु, गया वृथा सहु
अनुयोगद्वार देखी जाओ रे, ॥भवि०॥७॥
शुद्ध भाव आवश्यक, राई समो हुओ अब मेरू जितरो,
भव भ्रमण घटाओ रे ॥भवि०॥८॥
संशय में अलूझ रह्या अन्तर में वैराग्य दया,
सो ही भवि आगम पुराओ रे ॥भवि०॥९॥
स्वर्गा रो सुख चाहो, स्थानक मांही वेगा आओ,
दोनों ही काल आवश्यक ठाओ रे ॥भवि०॥१०॥
करत-करत रसायन आवे, प्रभुजी भाव वखाणे रे,
प्रभु तीर्थङ्कर पदवी भाओ रे ॥ भवि०॥११॥
सोलह अने बाईस बोल देखता नजर खोल,
लोकोत्तर रतन कमाओ रे ॥भवि०॥१२॥
अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार ए वर्जनहार,
आत्मा से ए सब दूर भगाओ रे ॥भवि०॥१३॥
सूत्र अनुयोगद्वार जिनमें चाल्यो है विस्तार,
अहो निशि अन्तर मांही ठाओ रे ॥भवि०॥१४।
सामायिक चौवीसथा वन्दना पडिक्कमण काउसग्ग,

पच्चक्खाण थुई-थुई मंगल मनाओ रे ॥भवि०॥१५॥
कहत मेवाड़ी मुनि ज्ञानी गुरु पासे सुणि कर विनय,
आवश्यक में रम जाओ रे ॥भवि०॥१६॥
श्रमण हजारीमल्ल, ज्ञानी-वचनों के बल तू संभल,
आवश्यक में चित्त लगाओ रे ॥भवि०॥१७॥

आरम्भ विषय कषायवश (आलोयणा)

आरम्भ-विषय-कषायवश, भमियो काल अनन्त ।
लख चौरासी योनि में, अब तारो भगवन्त ॥ १ ॥
करुणा-निधि कृपा करी, कठिन कर्म मम छेद ।
मो अज्ञान मिथ्यात्व को, करिये ग्रन्थी भेद ॥ २ ॥
पतित उद्धारण नाथ जी, अपनो विरूद विचार ।
भूल - चूक सब माहरी, खमिये बारं - बार ॥ ३ ॥
क्षमा करो सब माहरा, आज तलक रा दोष ।
दीन-दयाल देवो मुझे, श्रद्धा, शील, संतोष ॥ ४ ॥
देव, गुरु धर्म सूत्र ये, नव तत्त्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जो कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय ॥ ५ ॥
जो मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार ।
प्रभु तुम्हारी साख से, बारं-बार धिक्कार ॥ ६ ॥
कहने में आवे कहां, अवगुण भरे अनन्त ।
घट-घट अन्तरयामी तुम, जानो सब भगवन्त ॥ ७ ॥
बुरा-बुरा सब को कहे, बुरा न दीसे कोय ।
जो घट सोधूं आपना, मुझ सा बुरा न कोय ॥ ८ ॥
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वन्दन भाव ।
राग-द्वेष पतला करी, सबसे खिमत खिमाव ॥ ९ ॥
छूटूं पिछला पाप से, नवा न बांधू कोय ।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥ १० ॥
घड़ी-घड़ी पल-पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव ।
नर भव सफलो जो करे, दान शील तप भाव ॥ ११ ॥
अरिहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म ।
केवलि भापित शास्त्र यह, जैन धर्म का मर्म ॥ १२ ॥

आनन्द मंगल करु आरती

आनन्द मंगल करु आरती, सन्त चरण की सेवा ।
शिव सुख कारण विघ्न निवारण, पंच परमेष्ठी देवा ॥टेर॥
प्रथम आरती अरिहन्त देवा, कर्म खपे तत् खेवा ।
चौसठ इन्द्र करे तस सेवा, वाणी अमृत मेवा ॥ १ ॥
बीजी आरती सिद्ध निरंजन, भजन भव-भव फेरा ।
चिदानन्द सुख मिले अखण्डा, मिटे भवो भव फेरा ॥ २ ॥
तीजी आरती श्री आचार्य जी, छत्तीस गुण गम्भीरा ।
संघ शिरोमणि सोहे दिनमणि, दे हित बोध अनेरा ॥ ३ ॥
चौथी आरती उपाध्याय जी, भणे भणावे एहवा ।
सूत्र अर्थ करे तत् खेवा, सेवा करे तस देवा ॥ ४ ॥
पंचम आरती सर्व साधु जी, भारण्ड पंखी जेवा ।
महाव्रत पाले दूषण टाले, अविचल शिव सुख लेवा ॥ ५ ॥
भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्ठी देवा ।
विजयचन्द मुनि गुण गावे, लेवा शिव सुख मेवा ॥ ६ ॥
गावे सीखे वे सुणे आरती, भविजन भाखे एहवा ।
तेह पणा पातिक टल जावे, नित उठ मंगल मेवा ॥ ७ ॥

आये गुरुवर के द्वार

(तर्ज— मेरे नयना सावन भादो..........)

आया गुरुवर द्वार तिहारे, लेकर तीव्र पिपासा—२ ॥ टेर ॥
जीवन सुमन हम तुमसे सजाते प्रफुल्लित हो अंग मोह से भरा मन ।
देख जीवन अपना, झूठा जग का सपना ।
करते नत हो यही अर्ज हैं पूर्ण करो यह आशा ॥ १ ॥
प्रभु तुम ही हो समता नागर, मेरी यह है खाली गागर ।
भरदो इसे संयम से, उज्ज्वल आत्म नियम से ।
नैना देखे तुमको नगर में ना मिलेगी निराशा ॥ २ ॥
लौ को जलाए अपनी भगवान हर वाधों की तन्त्री की लय से ।
गीत खुशी के गाये जन-जन तक पहुँचाये ।
छोड़के गुरुवर कहां जाते हो "सुशील" को दे दो दिलासा ॥ ३ ॥

★

आता आता ही श्वास रुक जाएगा

जरा धर्म की गठरी बांधो, मौत मस्तक पर हो रही सवार है ।
आता-आता ही श्वास रुक जाएगा, इसका न कुछ एतबार है ।।
आने के बाद मौत कुछ भी न होगा, यों ही तड़फ मर जाओगे ।
मन की मुरादें मन में रहेगी, पूरी न करने पावोगे ।
बांधो पानी से पहले पाल हे, सुखी बनने का यदि खयाल है ।। १
कल पर धरम को बिल्कुल न छोड़ो, कल क्या पता क्या हो जाए ।
बदले में राज्य के वनवास हो गया, रघु भी समझने नहीं पाये ।
औरों का फिर क्या सवाल हैं, प्रभु भक्ति जग में सार है ।। २
जीवन की जो पल है बीत जाती, वापिस न फिर वह आ सकती ।
आती को पकड़ो जाने लगेगी, फिर तो न पकड़ी जा सकती ।
धर्म करने का अवसर उदार हैं, प्यारे प्रभुजी ही तारण हार है ।। ३
माता के तुल्य पर नारी को समझो, मिट्टी सा समझो तुम परधन ।
आत्मा तुल्य सब जीवों को समझो, शिक्षा सुनाता है "मुनि धन" ।
ज्ञान सुनने का फिर यही सार है, कुछ ले लो तो बेड़ा पार हैं ।। ४

आतमा रे दाग लगाइजे मती

आतमा रे दाग लगाईजे मती, उजलीने मेली बनाइजे मति ।। टेर
आतमा है थारी असली सोनो, सोने में खोट मिलाइजे मति ।। १
आतमा है थारी अमृत कूंपी, अमृत में जहर मिलाइजे मति ।। २
आतमा है थारी ज्ञान री दीवड़ी फूंक मार इनने बुजाइजे मति ।। ३
आतमा है थारी ज्ञान री गुदड़ी, पाप री खोरी तु चढ़ाइजे मति ।। ४
आतमा है थारी ज्ञान री पावड़ी मुक्ति चढ़ी पाछो आइजे मति ।। ५

आछो आनंद रंग बरसायो

(तर्ज— अवधु सो जोगी गुरु मेरा)

आछो आनन्द रंग वरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ।। टेर ।।
अरिहंत नमूं पद पहले, भव्य जीवां ने शिवपुर मेले ।
लोका–लोक को रूप वताओ ।। १ ।।
दूजे पद श्री सिद्ध ध्याऊं, कर जोड़ी ने शीश नमाऊं ।
जनम–मरण को दुःख मिटाओ ।। २ ।।

आचारज पद तीजे सोहे, चारों तीरथ के मन मोहें ।
ज्ञान ध्यान में चित्त रमायो ।। ३ ।।
उपाध्याय मेरे मन भावे, कई सन्तों को ज्ञान भणावे ।
जां की बुद्धि को पार न पायो ।। ४ ।।
सर्व साधुजी गुण का दरिया जाने पाप सहु पर हरिया ।
मोंकु मुक्ति को पंथ बतायो ।। ५ ।।
ये तो पांचों ही पद भज भाई, नित एक चित्त ध्यान लगाई ।
कारज सिद्ध हुवे मन चायो ।। ६ ।।
"नन्दलाल" मुनि गुणधारी, तस शिष्य कहे हितकारी ।
मैं तो मांगलिक आज मनायो ।। ७ ।।

आओ जैनों तुम्हें बताएं झांकी जैनिस्तान की

(तर्ज—आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं……)

आओ, जैनो ! तुम्हें बताएं, झांकी जैनिस्तान की,
भाव सहित सब मिल गुण गाओ, गाथा है महान् की ।
वन्दे शासनम्, वन्दे शासनम् ।। टेर ।।
कौशिक नाग डसा पग में, फिर भी प्रभु बांबी से न टले ।
केवल करुणा खातिर नेमी, तोरण से मुंह मोड़ चले ।।
संकट में भी चन्दनबाला, प्रभु को पा हर्षाई थी ।
दीक्षा लेकर सती राजुल ने, सच्ची प्रीत निभाई थी ।।
आन न झुकने दी सीता ने, अपने शील महान् की ।। १ ।।
मेघ मुनि ने कष्ट सहन कर, भी जीवों को शरण दिया ।
गजसुकुमाल मुनि ने जलते, अंगारे को सहन किया ।।
धर्मरुची ने विष जैसे, कड़वे तुम्बे को खाया था ।
जम्बू ने आठों रमणी, वैभव सब ठुकराया था ।।
मुनि बन कर धन्ना ने कर दी, कथनी सत्य जबान की ।। २ ।।
रक्षा हेतु शान्ति प्रभु ने, सारा तन भी तोल दिया ।
सत्य हेतु अर्हन्तक श्रावक, मरने को भी तैयार हुआ ।।
केवल न्याय निभाने खातिर, पद्मनाभ से कृष्ण लड़े ।
ब्रह्मचर्य के लिए सुदर्शन, हंसते-हंसते शूली चढ़े ।।
खेमाशाह ने श्री संघ हित, सारी सम्पत्ति दान की ।। ३ ।।
धर्म-क्रान्ति हित धर्मसिंह ने, कब्रों में निवास किया ।
शासनयश हित धर्मदास ने, अनशन तक स्वीकार किया ।।

लोंकाशाह ने ज्ञान बाण ले, यतियों का भ्रम जाल हना ।
केवल कहते पारस तू भी, अपना जीवन धन्य बना ।
आओ जैनों ! हम सब मिल कर नाद करे जयगान की ।। ४ ।।

आँसूड़ा ढलकावे म्हारी आँखड़ली

म्हारे आंगण आया, मत जावो महावीर ।
आँसूड़ा ढलकावें, म्हारी आँखड़ली ।। टेर ।।
चंपा लुटगी मैं बिकयोड़ी, पग बन्धन बंधियोड़ा ।
म्हारी कौन सुणेला, दुनियां मांये महावीर ।। १ ।।
मात-पिता सब सखियां छुटी, छुटयो सब परिवार ।
थे तो दुखिया ने, मत ठुकरावो महावीर ।। २ ।।
आप पधारया मनड़ो हरख्यो, पण कांई पड़ गई चूक ।
म्हारे पगल्यां धरता ही पाछा फिरिया महावीर ।। ३ ।।
उड़द बाकला देख आप क्यों, पाछा फिर गया नाथ ।
मैं तो दुखियारी और, कांई लाऊं महावीर ।। ४ ।।
थां बिन दुखियां की सुणवाई, कौन करेला नाथ ।
मैं तो पलकासूं पूजूं भगवान महावीर ।। ५ ।।
जोधाणे में कियो चौमासो, कुमद मुनि गुण गावे ।
सती चन्दना रा कारज, थे तो सारया महावीर ।। ६ ।।

आशाओं का हुआ खातमा

आशाओं का हुवा खातमा दिल की तमन्ना धरी रही ।
बस परदेशी हुआ रवाना, प्यारी काया पड़ी रही ।। ध्रुव ।।
करना-करना आठ प्रहर ही, मूरख कूक लगाता है ।
मरना-मरना मुझे कभी ना, लब्ज जबां पर लाता है ।
लेकिन मरना ही होगा, नहीं झंडी किसी की गड़ी रही ।। १ ।।
एक पंडितजी पत्री लेकर, गणित हिसाब लगाते थे ।
सभी काल तेजी मंदी का, होनहार बतलाते थे ।।
आया काल चले पंडितजी, कर में पत्री पढ़ी रही ।। २ ।।
एक वकील ऑफिस में बैठे, सोच रहे थे अपने दिल ।
फलां दफा पर बहस करूंगा, पाईन्ट मेरा अति प्रबल ।
इधर कटा वारन्ट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही ।। ३ ।।
एक सेठ भी बैठे दुकान, जमा खर्च खद जोड़ रहे ।

कितना लेना कितना देना, यही तो हरदम सोच रहे ।
कालबली की लगी चोट जब, क़लम कान में टंगी रही ।। ४ ।।

जेन्टलमेन एक घूमने को, वक्त शाम को जाता था ।
पांच–सात थे मित्र साथ में, बातें बड़ी बनाता था ।
ठोकर लगी पड़े बाबूजी, बांधि हाथ में घड़ी रही ।। ५ ।।

एक राजा का इलाज करनें, डाक्टरजी तैयार हुए ।
विविध दवा औज़ार इन्जेक्शन, मोटरकार सवार हुए ।
आया काल उलट गई मोटर, बक्स दवा से भरी रही ।। ६ ।।

हां हां ! कितनी और सुनाऊं, दुनियां की है अजब गति ।
'चन्दन' आना ही जाना है, फर्क नहीं है पाव रत्ती ।।
नेक कमाई की है जिसने, उसको ही बस खरी रही ।। ७ ।।

आए भगवान हैं

(तर्ज— चुप-चुप खड़े हो..........)

दर्शन पाएं चलो आए भगवान हैं ।
करुणा निधान हैं जी करुणा निधान हैं ।। ध्रुव ।।

तेज पुञ्ज दिव्य भव्य मनोहर काया है ।
नरेन्द्रों देवेन्द्रों के भी रूप मन भाया है ।।
दर्शन अनन्त है,, अनन्त ज्ञानवान हैं ।। १ ।।
अरुण कमल जैसे आनन है नैन हैं ।
मधुर सुन्दर मृदु अमृत से बैन हैं ।।
अद्‌भुत अलौकिक अतिशय वान हैं ।। २ ।।
मंद-मंद पुष्प वृष्टि दिव्य ध्वनी सुहावन ।
दुंदभि चंवर छत्र भामण्डल सिंहासन ।।
सुरभित अशोक वृक्ष करे छाया दान हैं ।। ३ ।।
सागर सदृश प्रभु महान् गम्भीर हैं ।
निर्मल शशि से भी शीतल हैं धीर हैं ।।
दिनकर से भी वे अधिक ज्योतिमान हैं ।। ४ ।।
शारदा सुरेश गणपति गीत गाते है ।
भक्ति से वन्दन का वलि वलि जाते हैं ।।
शान्त दान्त वीतराग महा गुण खान हैं ।। ५ ।।

सौभाग्य से सेवा पाए चरण कमल की ।
आनन्द सदन वर मंगल विमल की ।।
धन्य है "केवलि मुनि" बड़े पुण्यवान हैं ।। ६ ।।

आज खमाईजो

(तर्ज— मारो छेल भंवर कसुंबो)

मेरे प्यारे भाइयो प्यारी बहिनो, शुद्ध मन आज खमाईजो ।
कलह कषाय का कीचड़ धोकर, जीवन उच्च बनाईजो ।।ध्रुव।।
भूलें की हो यदि कभी, माया मद में फूल ।
उन भूलों को याद कर, भूलें गैर की भूल ।।
वैर–विरोध मिटाकर दिल से, पांवों में पड़ जाईजो ।। १ ।।
आज खमाते जो नहीं, वे नहीं जाने तत्त्व ।
नहीं टूटे भाव शृंखला, नहीं मिले अमरत्व ।।
महावीर की वाणी सुनकर, आराधिक बन जाईजो ।। २ ।।
जिनके संग में नित्य रहे, काम पड़े दिन रैन ।
जिनसे कभी किसी समय, कहे होय कटु बैन ।।
उनसे भीख क्षमा की लेने, झोली आज फैलाईजो ।। ३ ।।
मंगल–मय दिन आज है, करो ज्ञान रस पान ।
मंगल–मय महावीर का, करो प्रेम से ध्यान ।।
यथा–तथ्य कर पर्वाराधन "केवल मुनि" सुख पाईजो ।। ४ ।।

आत्मा की आवाज

(तर्ज— जरा सामने तो आओ छलिये····)

जरा ज्ञान तो तूं पा ओ बन्दे, जिन्दगी का यही एक राज है ।
यूं मिल न सकेगा परमात्मा, मेरी आत्मा की यह आवाज है ।।टेर।।
भटक–भटक कर नर तन रतन, यह तूने अमोलक है पाया ।
लेना हो सो ले ले मुसाफिर, हाथ यह मौका अब आया ।।
तेरी जग में बड़ी औकात है, तू तो देवों का भी सरताज है ।। १ ।।
कीड़े–मकोड़ों की तरह घिसटना, इन्सान तेरा काम नहीं ।
रंग–रंगीली इस दुनिया में, पल भर को आराम नहीं ।।
फिर नीचे को क्यों तेरा ध्यान है, जब ऊंची तेरी परवाज है ।। २ ।।

चार दिनों की चमक–चांदनी, फिर अन्धेरी रात यहाँ ।
आज चलो चाहे काल चलो, बस रहने की झूठी बात यहां ।
फिर सोया क्यों लम्बी तान है, अब मौत रही सिर गाज है ।। ३ ।।

कोरी बात से बात बनेगी, ऐसा कभी ना हो सकता ।
जो आम खाना चाहेगा, वो तो पेड़ बबूल ना बो सकता ।।
सीधी–सादी खरी यह बात है, बस हाथ में तेरे तेरी लाज है ।। ४ ।।

धर्म की करनी से तू है गाफिल, इधर कहें और उधर चले ।
जीवन की मंजिल मिलती वहां, पर ज्ञान का दीपक जहां जले ।।
जब माया पे तेरा हाथ है, फिर काहे पे तुझको नाज है ।। ५ ।।

आज का संसार

(तर्ज— देख तेरे संसार की हालत·······)

अरे भाइयो देखो दिलमें करके जरा विचार ।
कितना बदल गया संसार, कितना बदल गया संसार ।।
न्याय बदल गया, नीति बदल गई बदल गया व्यवहार ।
कितना बदल गया संसार ।।ध्रुव।।

हाथ–हाथ को खाना चाहता, किसी ही पर न भरोसा आता ।
प्यारा भी दुश्मन बन जाता, लालच में फंस दगा दिखाता ।।
धर्म–कर्म की लाज–शर्म तो, गई समुद्रों पार ।। कितना·······।। १ ।।

गुरुओं की परवाह नहीं करते, चेले खुद गुरू बनके फिरते ।
पुत्र पिता से लड़ते – भिड़ते भाई–भाई खूब झगड़ते ।।
सास–बहू की तकरारों के, दर्शन घर–घर द्वार ।। कितना·······।। २ ।।

लिये न्याय की बनो कचेड़ी, किन्तु झूठ की हो रही पेड़ी ।
रिश्वत बिना न टिकती एड़ी, सच्चों के पड़ती है बेड़ी ।।
जीत रहे हैं झूठे देकर, चाँदी के कलदार ।। कितना·······।। ३ ।।

इस टाइम में है यदि तरना, तो कष्टों से होगा लड़ना ।
लिए धर्म के हो चाहे मरना, पीछे कदम न होगा धरना ।।
"धनमुनि" कहता सदाचार से, होगा बेड़ा पार ।।कितना·······।। ४ ।।

★

आ उग्रसेन री लाड़ली

(तर्ज— आ बाबा सा री लाड़ली······)

आ उग्रसेन री लाड़ली, गिरनारों चाली रे ।
जिण मार्ग चाल्या नेम पिया, उण मार्ग चाली रे ।। ध्रुव ।।
आठों भव थे रह्या साथ में, नव में भव री प्यासी रे ।
तोरण से रथ फेर लिया सुन, पशुओं की करुणा खासी रे ।।
रही कुंआरी राजुल दुल्हन उमर सारी रे ।। १ ।।
जा गिरनार वनों को शोध्या, भटकी अनेक देश रे ।
पिया ढूंढ़ण चाली राजुल, कर जोगण रो भेष रे ।। २ ।।
अमर रहे यह जुग-जुग ताई नेम-राजुल री जोड़ी रे ।
सम्पत अर्ज करत है करियो करुणा मुझ पर थोड़ी रे ।
देखो पहले सती हुई केवल अधिकारी रे ।। ३ ।।

आया अकेला जाये अकेला

(तर्ज— मेरा जीवन कोरा कागज·······)

आया अकेला जाये अकेला, जीवन एक सपना ।
अन्त में पछतायेगा तूं, सोचले अपना··········
क्या लेना है, क्या देना है, तेरा न कोई जहां—२
क्यों पसरता है यहां पे, जाना है तुझको कहां—२
जोगी वाला है ये फेरा, मान तूं कहना ।। १ ।। आया अकेला····
सुख में साथी सब मिलेंगे, दुःख में कोई नहीं—२
दुनिया सारी झूठी है, भूल न जाना कहीं—२
हर कदम पे लुट रहा है, सोच कर चलना ।। २ ।। आया अकेला····
मरघट तक के ये नाते, बझे जब बाती—२
पंच अगनी बेटा देवे, देख ले साथी—२
ये अनोखी प्रीति जग की, कहें किसे अपना ।।३।।आया, अकेला····

आत्म भावना भावतां जीव लहे केवल ज्ञान रे

आतम भावना भावतां, जीव लहे केवल ज्ञान रे ।। टेर ।।
आतमता परमातमता शुद्ध नय भेद न एक रे ।
अवर आरोपित धर्म छे, तेहना भेद अनेक रे ।। आतम. ।। १ ।।

धर्मी धर्मथी एकता, ते मुझ रूप अभेद रे।
एक सत्ता लखि एकता, तेह मूढ़ मति खेद रे ।। आतम. ।। २ ।।
निज स्वभाव स्थिर करी धरे, न करे पुद्गल ने खेचरे।
साखी हुई वरते सदा न कदी पर भाव प्रपंच रे ।। आतम. ।। ३ ।।
निज गुण सब निज मां लखे, न चखे परगुणनी रेख रे।
खिर निर विवरो करे, ऐ अनुभव इसशु पेख रे ।। आतम. ।। ४ ।।
झील्या जे गंगा जले ते, छिल्लर जब नवि पैसे रे।
जे मालती फूले मोहीआ, ते बावल जई नवि वेसे रे ।। आतम. ।। ५ ।।
अवसर पामी आलस करशे, ते मूरख मां पहेलो रे।
भूख्या ने जेम घेवर देतां, हाथ न मांडे घेलो रे ।। आतम. ।। ६ ।।
दुःख–सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनन्दो रे।
चेतनता परिमाण न चूके, चेतन कहे जिन चंदो रे ।। आतम. ।। ७ ।।
परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल भावी रे।
ज्ञान करम फल चेतना कहिये, ले जो तेह भनावी रे ।। आतम. ।। ८ ।।
शुद्धातम अनुभव सदा स्व-समच अहे विसाल रे।
पखड़ी छांयड़ी जेह पड़े, तेपर संयम निवास रे ।। आतम. ।। ९ ।।
दरसन ज्ञान चरण चकी, अलख सरूप अनेक रे।
निर्विकल्प रस पीजिए, शुद्ध निरंजन एक रे ।। आतम. ।। १० ।।
परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत रे।
व्यवहारे लख जे रहे, तेहना भेद अनन्त रे ।। आतम. ।। ११ ।।
व्यवहारे लखे दोहिला, कोई न आवे हाथ रे।
शुद्ध नय थापना सेवतां, नवि रहे दुविधा साथ रे ।। आतम ।। १२ ।।
एक पखी लखी प्रिविनी, तुम साथे जगनाथ रे।
कृपा करी ने राखजो, चरण तले ग्रही हाथ रे ।। आतम. ।। १३ ।।
चक्री धर्म तीर्थ तणो, तीरथ सफल तत सार रे।
तीर्थ सेवे ते लहे, आनन्द धन निर्धार रे ।। आतम. ।। १४ ।।

आंखें खोलो

(तर्ज— जरा सामने तो आओ छलिये……)

जरा ज्ञान की आंखें खोलो ! आँखें मीच के सोने में क्या सार है।
ज्ञानी बनते हैं अन्त परमात्मा, इस आत्मा का ज्ञान ही आधार है ।। ध्रुव ।।
चक्कर चौरासी में कितने लगाये, गिनती न उनकी हो सकती।

आगे लगाने कितने पड़ेंगे, गिनती न उनकी भी हो सकती।
मोह माया का कारोबार है, बिना ज्ञान के न बेड़ा पार है।।ज्ञानी।।१।।
हरएक रोग के डाक्टर जगत में, आला से आला पाते हैं।
लेकिन अज्ञान की हरने बीमारी, डाक्टर नजर नहीं आते हैं।
यदि हैं तो सुगुरु गणधार हैं, करते फिरते जो पर उपकार हैं।।ज्ञानी।।२।।
शास्त्रों के माफिक असली दवाई बनाकर दयालु देते हैं।
जन्मों के रोग की करते सफाई पाई न फीस फिर लेते हैं।
मौका फिर फिरके यह दुश्वार है लेलो-लेलो दवा सुखकार है।।ज्ञानी।।३।
बन जाओ ज्ञानी, आवागमन से छुट्टी तुम्हें मिल जायेगी।
मुक्ति महल में मौजें करोगे, विपदा न पास कभी आयेगी।
सच्चे ये "धन" के विचार हैं, ज्ञान भव जल से तारन हार है।।ज्ञानी।।४।

इण काल रो भरोसो भाई रे को नहीं

इण काल रो भरोसो भाई रे को नहीं,
ओ किण विरियां माहे आव ए।
बाल जवान गिणे नहीं,
ओ सर्व भखी गटकावे ए .... इण० ।। १ ।।
बाप–दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावे ए।
तो पिण धेठा जीव ने, धरमरी बात न सुहावे ए....इ० ।। २ ।।
महल मंदिर अने मालिया, नदीए निवाणने नालो ए।
स्वर्ग अने मृत्यु पाताल में, कठे न छोड़े कालो ए....इ० ।। ३ ।।
घर नायक जाणी करी, रक्ष्या करी मन गमती ए।
काल अचानक ले चाल्यो, चोक्या रेह गई झिलती ए–इ० ।। ४ ।।
रोगी उपचारण कारणे, बेद विचक्षण आवे ए।
रोगी ने ताजो करे आपरी खबर न पावे ए .... इ० ।। ५ ।।
सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महल रसालो ए।
पोढ्या ढोलिये प्रेम सुं, जठे आय पहुंचो कालो ए....इ० ।। ६ ।।
राज करे रलियामणो, इन्द्र अनोपम दीसे ए।
वैरी पकड़ पछाड़ियो, टांग पकड़ने घीसे ए .... इ० ।। ७ ।।
वल्लभ बालक देखने, मांडी मोटी आसो ए।
छिनक माहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो ए.... इ० ।। ८ ।।
नार निरखने परणीयो, अपछर रे उणिहार ए।

शूल उठ चलतो रह्यो, श्रा ऊभी हेला मारे ए ''' इ० ॥ ६ ॥
चजारे चित्त चूपसुं, करी इमारत मोटी ए ।
पावड़ीए चढतो पडयो, खाय न सकीयो रोटी ए.... ई० ॥१०॥
सुर नर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहे नीसंको ए ।
मुनिवर काल ने जीतिया, जिण दीया मुगति मांही डंको ए-इ.॥११॥
किशनगढ़ मांहे सड़सठे, आया सेखे कालो ए ।
रतन कहे भव जीव ने, कीजो धर्म रसालो ए''' इ० ॥ १२ ॥

इजाजत दे माता

जम्बू—इजाजत दे माता, लेसूं संजम भार ॥ टेर ॥
माता—इस्यो कांई दुःख व्याप्यो, जम्बू राजकुंवार ॥ टेर ॥
जम्बू—भगवान सुधर्मा स्वामी, आया बाग मांय जी ।
माता—धन्य अहो भाग्य जो, कीनो पावन आय जी ॥
जम्बू—सुन के शुभागमन, गयो दरश तांय जी ।
माता—धन्य ऐसे लाल को, जो धर्म को दिपाय जी ॥
जम्बू—सुना वहां धर्म प्रचार ॥ इजाजत ॥ १ ॥
माता—चित्त क्यों उदास जम्बू ! कहो समभाय जी ।
जम्बू—सुन के उपदेश माता ! वैराग्य मन भाय जी ॥
माता—ऐसो कांई क्यों ? चित्त को दुखाय जी ।
जम्बू—झूंठा है संसार माता ! संगी कोई नाय जी ॥
माता—श्रो कांई करियो विचार ॥ इस्यो कांई० ॥ २ ॥
जम्बू—ममता को छोड़ के, आज्ञा देवो माय जी ।
माता—इस्यो कांई दियो ज्ञान, गयो भरमाय जी ॥
जम्बू—वीतराग वाणी सुनी, संजम मन भाय जी ।
माता—छोटा सूं मोटो कियो, क्यों अब छिटकाय जी ॥
जम्बू—है मतलब का संसार ॥ इजाजत ॥ ३ ॥
माता—राज-पाट, धन-धाम, कभी कोई नाय जी ।
जम्बू—है सब बेकार माता, संग चले नाय जी ॥
माता—संग आठ नार थारें, महलां के मांय जी ।
जम्बू—दियो ज्ञान एक रात, दीनी समझाय जी ॥
माता—संजम को छोड़, विचार ॥ इस्यो कांई ॥ ४ ॥
जम्बू—निश्चय लीना धार माता ! संयम की मन माय जी ।

माता—एकाएकी लाल बेटा ! छोड़ कठे जाय जी ।।
जम्बू—छोड़ मोह जाल, किणरा बेटा, किणरी माय जी ।
माता—राज सुख भोग पीछे, लीजो संयम जाय जी ।।
जम्बू—नहीं इण बातों में सार ।। इजाजत ।। ५ ।।
माता—संजम खांडे की धार, कहूं समझाय जी ।
जम्बू—आज्ञा देवो प्रेम सूं, तो मुश्किल कुछ नाय जी ।।
माता—पंच महाव्रत पालणो, चलणो जीव बचाय जी ।
जम्बू—पांचों सुख समान, माता लेस्यूं निभाय जी ।।
माता— मैं भी हूं तैयार ।। इस्यो कांई ।। ६ ।।
जम्बू—पांच सो अरु सताईस, संग लागे आय जी ।
माता—पिता पुत्र मांय, संग, आठों नर धाय जी ।
जम्बू—संसार असार जाण, लीनी दीक्षा जाय जी ।।
माता—'जीतमल' धन्य जम्बू, धन्य थांरी माय जी ।
जम्बू—समझ झूठा संसार, लीनो संयम भार ।। इजाजत० ।।७।।

इण शील व्रत रो लावो जग में

इण शीलव्रत रो लावो जग में, सतियां ले गई रे ।। टेर ।।
ब्राह्मी सुन्दरी दोनूं बहना, दोनों ही अखंड कंवारी रे ।
आदिनाथ घर संयम लीनो, पहुँची मोक्ष भुजारी रे ।।इण.।। १ ।।
चंदनबाला चोहटे बिकती, धन्ना सेठ घर लाया रे ।
महावीर ने आहार वेरायो फिर बैरागण बनगई रे ।।इण.।। २ ।।
गुफा मांहे सिंह धड़ुक्यो, वन में हनुमत जायो रे ।
सती अंजना कष्ट सह्यो, पर शील निभायो रे ।।इण.।। ३ ।।
रामचन्द्र वनवास सिधाया, सीता ने रावण ले गयो रे ।
धीज करी सति संयम लीनो, अग्नि पानी हो गई रे ।।इण.।। ४ ।।
सति सुभद्रा कांटों काड़्यो, सासूं कलंक लगायो रे ।
काचा ताणा नीर निकाल्यो, खुल गई चंपा पोला रे ।।इण.।। ५ ।।
धात्री खण्ड का राय (पदमोत्तर), ले गया द्रौपदी नारी रे ।
रंग में राची शील में सांची, पांच पांडव की नारी रे ।।इण.।। ६ ।।
नेम कंवर तोरण पर आया, राजुल लारे ले गया रे ।
पशुवां की पुकार सुणी ने, चढ़ गया मोक्ष भुजारो रे ।। इण ।। ७ ।।
कष्ट पड़्यां सती शील जो राख्यो नाम अमर वो कर गई रे ।।इण.।।

इस घर से नाता तोड़

(तर्ज— जब तुम्हीं चले परदेश....)

इस घर से नाता तोड़, चली तूं छोड़ ।
भूल मत जाना, वहां जाकर यश कमाना ॥ टेर ॥
सासू से कभी न लड़ना तूं, मुंह चढ़ा मौन मत रहना तूं ।
है सामायिक अनमोल, तूं कर हर्षाना ॥ वहां० ॥ १ ॥
ससुरे का मान सदा रखना, पतिदेव का नित्य विनय करना ।
दासीवत् रह कर, उनका हुक्म उठाना ॥ वहां० ॥ २ ॥
अभिमान न दिल में लाना तूं, सब को साता उपजाना तूं ।
नौकर–चाकर पर नहीं तूं, आँख दिखाना ॥ वहां० ॥ ३ ॥
हे शांति ! शांति से तू रहना, नहीं कभी क्रोध न आने देना ।
आगे पीछे की सोच के, कदम उठाना ॥ वहां० ॥ ४ ॥
वहाँ जाकर नहीं लजाना तूं कुल के नहीं दाग लगाना तूं ।
बस इसीलिये है, बार–बार समझाना ॥ वहां० ॥ ५ ॥
माँ–बाप ने उनको जितलाया, रहना तूं धर्म पर सिखलाया ।
कहे 'नाथूराम' मुनि कर्त्तव्य सदा निभाया ॥ वहाँ० ॥ ६ ॥

इम झूरे देवकी राणी

इम झूरे देवकी राणी, या तो पुत्र बिना बिलखाणी रे ॥ टेर ॥
मैं तो सातों नन्दन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे ॥ १ ॥
घर पालणों नहीं बंधायो, नहीं मधुर हालरिया गायो रे ॥ २ ॥
घुघरा चुखनी न बसाई, झूमर पिण नाहि बंधाई रे ॥ ३ ॥
नहीं गहणा कपड़ा पहीराया, नहीं झगल्या टोपी सिवाया रे ॥ ४ ॥
नहीं काजल आँख लगायो, नहीं स्नान करी ने जीमायो रे ॥ ५ ॥
नहीं गले दामणा दीधा, वली चाँद सूरज नहीं कीधा रे ॥ ६ ॥
नहीं स्तन पान करायो, रूठा ने नहीं मनायो रे ॥ ७ ॥
मैं तो कडिया नाहि उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे ॥ ८ ॥
घू घू कहि नाहिं डरायो, नहीं गुद गुल्या से हंसायो रे ॥ ९ ॥
नहीं मुख पे चूम्बा दीधा, नहीं हरष वारणा लीधा रे ॥ १० ॥
नहीं चक्री भँवरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद बसाया रे ॥ ११ ॥
मैं जन्म तणा दुःख देख्या, गया निर्फल जन्म अलेख्या रे ॥ १२

मैं पूरी पुण्य नहीं कीधा, तिण थी सूत विछड़ा लीधा रे ॥ १३ ॥
गले बे हाथ नजर है धरती, आँखे आँसू भर भूरती रे ॥ १४ ॥
पग वन्दन कृष्ण पधारे; माजी ने उदास निहारे रे ॥ १५ ॥
कहे अमी रिख किम दुःख पावो, माताजी मुझ फरमावो रे ॥ १६ ॥

ईश है पूर्ण गुण भण्डार

ईश है पूर्ण गुण भण्डार ।
राग, द्वेष, मोह, मद मत्सर ।
काम, कपट, छल, कोप, अहितकर ।
लालच, चिन्ता, निर्बलता भय ।
उस में नहीं है बाकी तिलभर ।
अजर–अमर पद अक्षय धार....
सृष्टि रचे न वो संहारे ।
जग – प्रपंच से रहे किनारे ।
देता नहीं कर्म के फल को ।
देखो गीता साफ पुकारे ।
पंचम लो अध्याय विचार....
अग – पावन में नहीं थल में ।
पर्वत पे न कहीं है जल में ।
दूर है बस्ती जंगल उससे ।
रहता नहीं किसी महफिल में ।
सर्व शुद्ध वह अपरम्पार...
मृगों में गर ईश्वर रहता ।
झपट सिंह की कभी न सहता ।
खाता खौफ अगर वो फिर भी ।
कौन वली तब उसको कहता ।
निर्बल वनता जग मंजार....
सर्व व्यापी ईश्वर गर है ।
वेश्या के भी तब तो घर है ।
रोके क्यों न पाप वहां वो ।
मान रहा क्या उसका डर है ।
वैठा देख रहा व्यभिचार....

बात वास्तव में नहीं ऐसी ।
लोग समझते उसको जैसी ।
सर्व व्यापक उसे जो कहते ।
वाकफियत है उनको कैसी ।
मगज रहे हैं यूं ही मार....

यह तो जाने सब संसारी ।
जनम – मरण में है दुःख भारी ।
उसे जरूरत क्या जो आये ।
बीच गर्भ के वो अधिकारी ।
लेता कभी नहीं अवतार....

नहीं जगत का वो संचालक ।
क्या मतलब वो बने जो मालिक ।
इच्छा रहित है जब कि इकदम ।
खेल करे क्यों बन कर बालक ।
सोचो दिल में करो विचार...

सर्व शक्ति का गर है धारी ।
क्यों नहीं रोके चोरी – यारी ।
फल भुगताने में ही गर वो ।
खर्च करे हैं शक्ति सारी ।
कर्माधीन कहे सब सार....

पापों का गर देवे माफी ।
फैले तब तो बेइनसाफी ।
जुल्म करे ख्वाह जितना कोई ।
क्षमा मांगना बस है काफी ।
किन्तु नहीं वो बक्षन-हार....

जैसा जो कोई कर्म कमावे ।
वैसा उसका फल वो पावे ।
मूरख बन्दा महा अज्ञानी ।
दोषी ईश्वर को ठहराये ।
भूला फिरता ये संसार....

परम पवित्र है वो प्यारा ।
जग से 'चन्दन' है वो न्यारा ।

दया भाव है उसकी भक्ति ।
पाप कटे जिससे सारा है ।
दुनियां को कहदो ललकार.... ।

उठ भोर भई टुक जाग सही

उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।
अब नींद अविद्या त्याग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। १ ।।
जग जाग उठा, तू सोता है, अनमोल समय यह खोता है ।
तू काहे प्रमादी होता है, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। २ ।।
यह समय नहीं है सोने का, है वक्त पाप मल धोने का ।
अरू सावधान चित्त होने का, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। ३ ।।
तू कौन कहां से आया है, अब गमन कहां मन लाया है ।
टुक सोच यह अवसर पाया है भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। ४ ।।
रे चेतन चतुर हिसाब लगा, क्या खाया–खरचा लाभ हुआ ।
निज ज्ञान जमा तू संभाल सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। ५ ।।
गति चार चौरासी लाख रुला, यह कठिन २ शिव राह मिला ।
अब भूल कुमार्ग विषे मत जा, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ।। ६ ।।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई ।
अब रैन कहां जो सोवत है ।। ध्रु व ।।
जो सोवत है सो खोवत है ।
जो जागत है वो पावत है ।। १ ।।
टुक नींद से अँखिया खोल जरा ।
ओ गाफिल, प्रभु से ध्यान लगा ।।
यह प्रीत करम की रीत नहीं ।
प्रभु जागत है तू सोवत है ।। २ ।।
अनजान ! भुगत करणी अपनी ।
ओ पापी ! पाप में चैन कहाँ ?
जब पाप की गठड़ी शीश धरी ।
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है ।। ३ ।।

जो काल करे सो आज ही कर।
जो आज करे सो अब कर ले॥
जब चिड़ियन खेती चुगि डारी।
फिर पछताये क्या होवतहै? ॥ ४ ॥

उसी को मिलता है निर्वाण

(तर्ज—कितना बदल गया इन्सान)

सम्यग-ज्ञानी, सम्यग-दर्शी, सम्यग संयमवान,
उसी को मिलता है निर्वाण।
शास्त्र-शास्त्र में स्थान-स्थान पर बोल गये भगवान,
उसी को मिलता है निर्वाण ॥ टेर ॥

जीव तत्त्व है, जड़ से निराला, पुण्य शुभ्र है पाप है काला।
संवर बांधा है, आश्रव नाला, बंध-बंध निर्जरा उजाला॥
मोक्ष-मुक्ति है, यों जो हो इन, नव तत्त्वों का ज्ञान ॥उसीको.॥ १ ॥
देव वही जो अरिहंत हो, गुरु वही जो निरग्रन्थ हो।
धर्म वही जो दयापूर्ण हो, शास्त्र वही जो जिन-भाषित हो।
जिस प्राणी को नस-नस में यों अटल भरी श्रद्धान ॥उसीको.॥ २ ॥
पंच महाव्रत को स्वीकारे, या अणुव्रत ही अंगीकारे।
जैसी शक्ति वैसा धारे, पर प्रमाद को दूर निवारे।
सिद्ध साक्षी से निरतिचार, जो पाले प्रत्याख्यान ॥उसीको. ॥ ३ ॥
केवल कहते 'पारस' सुन रे. सच्ची सीख हृदय में धर रे।
ज्ञाता दृष्टा व्रतधर बन रे, जिससे तेरा नरभव सुधरे।
पूर्व पुण्य से तुझे मिला यह, मानव-जन्म महान ॥उसीको. ॥ ४ ॥

उठ परदेसी प्रभात हो गई

(तर्ज— इक परदेसी मेरा दिल……)

उठ परदेसी! प्रभात हो गई।
सोते-सोते तुझे, सारी रात हो गई ॥ १ ॥
सोया क्यों तू निन्दिया में, पांव को पसार के।
देख जरा एक बार, अंखियां उघाड़ के।
विदा तेरे साथ की, जमात हो गई ॥ २ ॥
झूमते हैं फूल ये जो, खिली गुलजार है।
चन्द रोज दुनिया, रौनक बहार है।
कहके ये रवाना, बरसात हो गई ॥ ३

सत्य ही में सदा सुख, असत्य में ख्वार है ।।एक० । ३ ।।
राग और द्वेष दो ही शत्रु कठोर हैं ।
समभाव प्रेम पर तो, इनका नहीं जोर है—२
कलह से खार है संप मांही सार है ।।एक० ।। ४ ।।
'जीव' अब तो जीत, केवल नाम से क्या जीत है,
तन धन जन सब स्वार्थ के मीत है—२
धर्म से प्रीत कर, निश्चय बेड़ा पार है ।।एक० ।। ५ ।।

ऐवन्ता मुनिवर, नाव तिराई बहता नीर में

ऐवन्ता मुनिवर, नाव तिराई बहता नीर में ।।टेर ।।
पोलासपुरी नगरी के राजा, विजयसेन भूपाल ।
श्रीदेवी के अंग ऊपना, अयवन्ता कुमार ।।ऐवन्ता० ।। १ ।।
बेले—बेले करे पारणो, गणधर पदवी पाया ।
महावीर जी की आज्ञा लेकर, गौतम गोचरी आया जी ।ऐ० ।२।।
खेल रहे थे खेल कुंवर जी, देखा गौतम आला ।
घर घर मांही फिरे हिंडता पूछे दूजी बाता जी ।।ऐवन्ता० ।।३।।
असनादिक लेने के काजे, निर्दोषज हम बहेरां ।
अंगुली पकड़ी कुंवर ऐवंता, लायो गौतम लारे जी ।।ऐवं० ।।४।।
माता देखी कहे पुण्यवंता भली जहाज घर आणी ।
हर्ष भाव धर निज हाथन से, बहराया अन्न पाणी जी।।ऐवं.।।५।।
लारे—लारे चल्या कुंवर जी, भेट्या मोटा भाग ।
भगवन्ता की वाणी सुणने, उपजा मन वैराग्य जी ।।ऐवं० ।।६।।
घर आवी माता सूं कीनी, अनुमति की अरदास ।
बात सुनी माता पुत्र की मन में आई हांस जी ।। ऐवं० ।। ७ ।।
तू क्या जाणे साधुपणा में, बाल अवस्था थारी ।
ऐसे उत्तर दियो कुंवर जी, मात कहे बलिहारी जी ।। ऐवं० ।।८।।
महोत्सव करी ने संजम लीनो हुआ बाल अणगार ।
भगवंता का चरण भेंटिया धन ज्यांरा अवतार जी ।। ऐवं.।।९।।
वर्षा काल बरसियां पीछे, मुनिवर थंडिल जावे ।
पाल बांध पानी में पातरा नावां जाण तिरावे जी ।।ऐवं० ।।१०।।
नाव तिरे म्हारी नाव तिरे यों, मुख से शब्द उच्चारे ।
साधा के मन शंका उपनी, किरियालागे थांरे जी ।।ऐवं.।।११।।

भगवत भाखे सब साधो ने, भक्ति करो तहे दिल से ।
हीला निंदा मती करो कोई, चरम शरीरी जीव जी ।।ऐवं.।।१२।।
शासन पति का वचन सुणी ने, सब ही शीश चढ़ाया ।
ऐवंता की हुण्डी सिकरी आगम मांही गाया जी ।। ऐवं०।।१३।।
संवत उन्नीसे साल छेपालिस, भीलाडा सेखे काल ।
रतनचन्द्र जी गुरु प्रसादे, गाई 'हीरालाल' जी ।।ऐवं० ।।१४।।

ओम् शांति शांति शांति सब मिल शांति कहो

ओम् शान्ति, शान्ति, शान्ति, सब मिल शान्ति कहो ।। टेर ।।
विश्वसेन अचिरा के नन्दन, सुमिरन है सव दुःख निकन्दन ।
अहोरात्रि वन्दन हो, सब मिल शान्ति कहो ।। ॐ शान्ति. ।। १ ।।
भीतर शान्ति, बाहर शान्ति, तुझ में शान्ति, मुझ में शान्ति ।
सबमें शान्ति बसाओ, सब मिल शान्ति कहो ।। ॐ शान्ति. ।। २ ।।
विषय कषाय को दूर निवारो, काम, क्रोध से करो किनारो ।
शान्ति साधना यों हो, सब मिल शान्ति कहो ।। ॐ शान्ति. ।। ३ ।।
शान्ति नाम जो जपते भाई, मन विशुद्धिये धीरज लाई ।
अतुल शान्ति उसमें हो; सब मिल शान्ति कहो ।।ॐ शान्ति.।। ४ ।।
प्रातः समय जो धर्म स्थान में; शान्ति पाठ करते मृदु स्वर में ।
उनको दुःख नहीं हो सब मिल शान्ति कहो ।। ॐ शान्ति.।। ५ ।।
शान्ति प्रभु सम समदर्शी हो, करें विश्व हित जो शक्ति हो ।
'गज मुनि' सदा विजय हो सव मिल शान्ति कहो ।।ॐ शान्ति.।। ६ ।।

ओम् जय जय गुरुदेवा

(तर्ज – आरती·······)

ओम् जय जय गुरुदेवा, स्वामी जय जय गुरुदेवा ।
जो ध्यावे तिर जावे, पावे शिव सुख मेवा ।। टेर ।।
पंच महाव्रत धारे, जग वैभव छोड़ा, स्वामी ।
संयम शुद्ध अराधे, प्रभु से नेह जोड़ा ।। ओम्. ।। १ ।।
सकल जीव प्रति वोधे, राग-द्वेष टारे, स्वामी ।
अखण्ड वाल-ब्रह्मचारी, सुर सेवा सारे ।। ओम्. ।। २ ।।
पाखण्ड दूर हटावे, सुपथ दिखलावे, स्वामी ।
धन्य-धन्य जिन मुनिवर, तारे तिर जावे ।। ओम्. ।। ३ ।।

आठों याम एक काय जिनों का, प्रभु में ध्यान लगे स्वामी ।
गुरुवर के गुण गाता सोते भाग्य जगे ।। ओम्. ।। ४ ।।
'जीत" शरण में आपो, महर नजर कीजे स्वामी ।
सेवक ने अब स्वामी, तुम सम कर लीजे ।। ओम्. ।। ५ ।।

ओम् गुरु ओम् गुरु ओम् गुरु देव

ओम् गुरु ओम् गुरु ओम् गुरुदेव, जय गरु जय गरु जय गरुदेव ।।
देव हमारे श्री अरिहंत, गुरु हमारे गुणी जन संत ।
सूत्र हमारा सत्य–निधान, धर्म हमारा दया–प्रधान ।। १ ।।
श्रमण भगवन्त श्री महावीर, त्रिशला नन्दन हरियो पीर ।
अधम उद्धारण श्री अरिहंत, पतित–पावन भज भगवंत ।। २ ।।
गुरु गौतम सुमरो हर बार, घर–घर वरते मंगलाचार ।
बोलो सब मिल जय जयकार, होवे अपना भी उद्धार ।। ३ ।।

ओ पार्श्व स्वामी अन्तर्यामी

ओ पारस स्वामी अन्तरयामी, पारसनाथ ।। टेर ।।
अश्वसेन जी का लाड़ला, वामा देवी का नन्द ।
श्याम वर्ण सुहावणा रे, मुखड़ो पूनम चन्द ।। ओ. ।। १ ।।
आगे भक्त अनेक उबारे, अब प्रभु मोहे तार ।
तारक नाम धरायो स्वामी अपना विरुद सम्हार ।।ओ.।।२।।
मैं अपराधी औगुण भरियो, माफ करो महाराज ।
दीन दयाल दया कर मोपे सारो बांछित काज ।।ओ.।।३।।
अरजी लीज्यो दरस दीज्यो, मुजरो लीज्यो मान ।
करुणा सागर करुणा कीज्यो, अर्ज करे छै 'कान' ।।ओ.।।४।।

।। ॐ शांति ।।

(तर्ज— मन डोले मेरा तन डोले·······)

ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति ।
ॐ शान्ति की उठे पुकार रे ।।
ॐ शान्ति की वाजे वांसुरियां ।। ध्रुव.।।

राष्ट्र–राष्ट्र में युद्ध द्वेष की कभी न धधके ज्
रणचण्डी अब पहन न पाये, नर–मुण्डों की मा
अरे हाँ नर–मुण्डों की माला—
ॐ शान्ति की हो झंकार रे ।। ।।

हिरोशिमा नागासाकी का, घ्वंश भूल मत जाना ।
उद्जन, अणुबम कभी न फूटे, ऐसा राग जमाना ।।
अरे रे ऐसा राग जमाना—
मन–मन के मिल जाय तार रे ।। २ ।।

मानव – मानव रहें मित्र बन, बैर लड़ाई भूलें ।
'केवल मुनि' सब सुखी रहें, और प्रेम के झूले झूलें ।।
अरे हाँ प्रेम के झूले झूलें—
ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति
घर – घर हो मंगलाचार रे ।। ३

ओ मिनख जमारो

ओ मिनख जमारो पाय लावो मैं लेसांजी मैं लेसां ।। टेर ।।
मैं भी आवां, थे भी आवो, धर्म–ध्यान का झुण्ड जमावो ।
धर्म जगत में सार लावो, मैं लेसाँजी. मैं लेसाँ ।। १ ।।
या तो म्हारी है पुण्यवानी, सत् गुरु मिलीया कैसा ज्ञानी ।
यांरी आज्ञा ने सिर धार, लावो मैं लेसांजी मैं लेसां । २ ।
अनुकम्पा दिल में लावालां दुनिया ने सुखी बनावालां ।
धनमाया को यो सार, लावो मैं लेसांजी मैं लेसां ।। ३ ।
निंद्रा विकथा चुगली चोरी, करणी हैं जग में आ फोरी ।
दुरगुण ने दूर निवार. लावो मैं लेसांजी, मैं लेसां । ४ ।
दौलत दिल आनन्द आवेला, संसार सुखी बन जावेला ।
वरतेला जै जै कार, लावो मैं लेसांजी, मैं लेसां ।। ५ ।।

ओ दहेज लेने वालों

(तर्ज— ओ दूर जाने वाले·······)

ओ दहेज लेने वालों, मानवता क्यों भलाओ ।
क्यों कौम को बिगाड़ो, क्यों देश को डुबाओ ।। ध्रु व।।

सौ तोला सोना मांगे, कोई मांगता है मोटर।
कोई कहता रेड़ियो की, कोई कहता नगद लाओ ॥ १ ॥
कोई कहता जा रहा है, पढ़ने को बेटा लन्दन।
तुम उसका खर्चा देकर, दामाद को पढ़ाओ ॥ २ ॥
दो-चार लड़कियां हों, थोड़ी-सी होवे पूंजी।
मुंह मांगा तुमको दे दे, क्या खायेगा बताओ ॥ ३ ॥
दब जयेगा कर्ज से ना जाने कब छुटेगा।
अपने सम्बन्ध का तुम, दण्ड ऐसा ना दिलाओ ॥ ४ ॥
बहू सोने जैसी देखो, सोने के स्वप्न छोड़ो।
एक लाख भी मिले तो, फूहड़ बहू न लाओ ॥ ५ ॥
कन्या कई कुंवारी, अठारह बीस तक की।
मां बाप रो रहे हैं, उनके न दुःख बढ़ाओ ॥ ६ ॥
लाते गरीब कन्या, देते गरीब के भी।
"केवल" समाज ऐसा, कहां आज है बताओ ॥ ७ ॥

कर लो सामायिक रो साधन

करलो सामायिक रो साधन जीवन उज्ज्वल होवेला ॥ टेर
तन का मैल हटाने खातिर नित प्रति नहावेला।
मन पर मैल चहूं ओर जमा है, कैसे धोवेला ॥करलो. ॥ १ ॥
बाल्य-काल में जीवन देखो दोष न पावेला।
महामाया का संग कियां से दाग लगावेला ॥ करलो. ॥ २ ॥
ज्ञान-गंगा ने क्रिया धुलाई जो कोई धोवेला।
काम क्रोध मद लोभ दाग को दूर हटावेला ॥ करलो. ॥ ३ ॥
सत्संगत और शान्त स्थान दोष बचावेला।
फिर सामायिक साधन करने शुद्धि मिलावेला ॥करलो. ॥ ४ ॥
दोय खड़ी निज रूप रमणकर जग विसरावेला।
धर्म-ध्यान में लीन होय, चेतन सुख पावेला ॥करलो. ॥ ५ ॥
सामायिक से जीवन सुधरे जो अपनावेला।
निज सुधार से देश जाति सुधरी हो जावेला ॥ करलो.॥ ६ ॥
गिरत-गिरत प्रतिदिन रस्सी भी शिला घिसावेला।
करत-करत अभ्यास मोह का जोर मिटावेला ॥ करलो.॥ ७ ॥

✲ ✲

कब होगा प्रभु कब होगा

कब होगा प्रभु ! कब होगा, वह दिवस हमारा कब होगा ।। टेर ।।
हम पतितों से अति प्रेम करें, दुश्मन जन पर भी रहम करें ।
हम सब जीवों का क्षेम करें, वह दिवस हमारा कब होगा ।। १ ।।
कब ऊंच-नीच का भेद मिटे, धन जन खोने का खेद मिटे ।
मद् मत्सर मिथ्या भेद मिटे, वह दिवस हमारा कब होगा ।। २ ।।
प्राणी को निज सम पेखेंगे, स्त्री को माता सम देखेंगे ।
लक्ष्मी को मिट्टी-वत् लेखेंगे, वह दिवस हमारा कब होगा ।। ३ ।।
जग-व्यवहारों को छोड़ेंगे, तृष्णा के बन्धन तोड़ेंगे ।
जीवन प्रभु संग ही जोड़ेंगे, वह दिवस हमारा कब होगा ।। ४ ।।
सुख देकर के सुख मानेंगे, दुःख सहकर के सेवा देंगे ।
सेवामय जीवन कर लेंगे, वह दिवस हमारा कब होगा ।। ५ ।।

क्या तन मांजता रे ?

क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना ।। टेर ।।
माटी ओढ़न माटी पेरन, माटी का सिरहाना ।
माटी का तो महल बनाया, जिसमें भमर लुभाना ।। १ ।।
माटी मांही जीव लुभाया, ज्यों दीवा में वाती ।
बसती नगरी छोड़ चलेगा, कोई न होगा साथी ।। २ ।।
धन भी जायगा, तन भी जायगा, जावे मुल-मुल खासा ।
लाख मोहर की सूरत जायगा, जंगल होगा बासा ।। ३ ।।
दस भी जीना, बीस भी जीना, जीना वरस पचासा ।
अन्त काल का क्या विश्वासा, पण मरने की आसा ।। ४ ।।
दस भी जोड़िया तीस भी जोड़िया, जोड़िया लाख पचासा ।
अरब खरब बहुतेरा जोड़िया, संग चले नहीं मासा ।। ५ ।।
दमड़ी सेती महल बनाया, तू जाने घर मेरा ।
पकड़ काल जब झपट देयगा, होगा वन का डेरा ।। ६ ।।
कंठी डोरी मोती पेरया, पेरी रेशम चोली ।
कंदोरी सोने का पेरचो, लेगा अन्त में खोली ।। ७ ।।

★

कर्म गति भारी रे

कर्म गति भारी रे-२ नहीं टले कभी, सुणजो नर-नारी रे ॥ टेर

कर्म रेख पर मेख धरे नहीं, देख कोई बलकारी रे ।
शाह को रंक, रंक को करदे छत्रधारी रे ॥ १ ॥
राजा राम को राज तिलक, मिलने की हो रही त्यारी रे ।
कर्मों ने ऐसी करी भेजे विपिन मंझारी रे ॥ २ ॥
शीलवती थी सीता माता, जनक राज दुलारी रे ।
कर्मों ने बनवास दिया, फिरे मारी-मारी रे ॥ ३ ॥
सत्यधारी राजा हरिशचन्द्र ने, बेची तारा नारी रे ।
आप रहे नित भंगी के घर, भरते बारी रे ॥ ४ ॥
सती अंजना को पीहर में, राखी नहीं लिगारी रे ।
हनुमान सा पुत्र हुआ जिनके बलकारी रे ॥ ५ ॥
खंदक जैसे मुनिराज की, देखो खाल उतारी रे ।
गजसुकमाल सहा खीरा समता उर धारी रे ॥ ६ ॥

काली ओ राणी सफल कियो

काली ओ राणी सफल कियो अवतार ।
थे तो पामी छै, भलोदधी पार हो ॥ टेर ॥

कोणिक राय नी छोटी ही माता ।
श्रेणिक नृप की नार ।
वीर जिनन्दन की वाणी सुनी ने,
लीनो संयम धार हो ॥ १ ॥
चन्दनबाला जी वैसी मिली हो
गुराणी के नित-नित नमी चरणार ।
विनय करी ने भणी अंग इग्यारे,
तेहनी निर्मल बुद्धी अपार हो ॥ २ ॥
सुमती गुप्ति शुद्ध संयम पालत,
चढ़ी हो प्रणाम की धार ।
आज्ञा लेइने सती निज गुरुणी की,
मांडो है तपस्या सार हो ॥ ३ ॥
शरीर शक्ति जाणी सती ने,
आराध्यो रत्नावली तपनो हार ।

चार लड़ी सम्पूर्ण कीनी,
तेतो आठ में अंग अधिकार हो ॥ ४ ॥
पांच वर्ष तीन मास दो दिन,
कम लागो इतनो काल ।
धन्य महासती तप आराध्यो,
तेहने वन्दना छै बारम्बार हो ॥ ५ ॥
आठ वर्ष कुल संयम पाल्यो,
कर्म किया सब छार ।
जन्म जरा और मरण मिटायो,
पहुँची मोक्ष मुझार हो ॥ ६ ॥
"मुनि नन्दलाल" तणा शिष्य गायो,
शहर बिलाड़ा मुझार ।
ऐसी सती का सुमिरन सेती,
मुझ वरते मंगलाचार हो ॥ ७ ।

काया काची रे कर धर्म

(तर्ज— वाह-वाह धुनसो बाजे रे)

काया काची री, कर धर्म-ध्यान मैं कहूं छूं सांची री ॥ टेर ॥
देखी सुन्दर काया काची, इसमें तू रह्यो रांची रे ।
भीतर तो भंगार भरा है, लीजे जांची रे ॥ काया. ॥ १ ॥
इस काया रा लाड़ लड़ावे, मल-मल स्नान करावे रे ।
निरखे कांच में पेच झुका, पर-नारी ताके रे ॥ काया. ॥ २ ॥
अतर फुलेल गुलाव री फेरी, मुंछ्या वट लगावे रे ।
केसर चन्दन इतर लगा, मेला में जावे रे ॥ काया ॥ ३ ॥
कंठी डोरा गोप गला में, काना मोती सोहे रे ।
तन की हालत देख रीझ कर, मन में मोहे रे ॥ काय. ॥ ४ ।
सियाला में सीरा वदाम का, गरमी में भांग ठंड़ाई रे ।
चौमासा में माल मिठाई, खावे वागा जाई रे ॥ काया. ॥ ५ ॥
इष्ठ कंठ रतन करंड़िया, जिम रखे शीत लग जावे रे ।
चाहों जितना करो जापता, नहीं रहावे रे । काया. ॥ ६ ॥
सतन कुमार चक्रवति की, देखो देह पलटावे रे ।
काया के वस वन काहे को, कष्ट उठावे रे ॥ काया. ॥ ७ ॥

इस काया का क्या विश्वासा, पाणी बीच पताशा रे।
होली जैसे देवे फूंक, जावे जब सांसा रे ।। काया. ।। ८ ।।
उत्तम नर की काया पाई, फेर मिले नहीं पाछी रे ।
दया दान तप करनी करले, याही आछी रे ।। काया. ।। ९ ।।
उनीसे बहोतर वसंत पंचमी, बालोतरा के माई रे ।
गुरु प्रसादे 'चौथमल', यह जोड़ बनाई रे ।। काया. ।। १० ।।

कितना बदल गया इन्सान

देख तेरे संसार की हालत, क्या हो गई भगवान. ।
कितना बदल गया इन्सान ।
सूरज न बदला चांद न बदला ना बदला रे आसमान ।
कितना बदल गया इन्सान ।। टेर ।।
आया समय बड़ा बेढंगा, आज आदमी बना लफंगा ।
कहीं पे झगड़ा कहीं पे दंगा। नाच रहा नर होकर नंगा ।
छल और कपट के हाथों अपना बेच रहा ईमान ।। १ ।।
राम के भक्त रहीम के बंदे रचते आज फरेब के फंदे ।
कितने है मक्कार ये अन्धे, देख लिये इनके भी धन्धे ।
इन्हीं की काली करतूतों से, हुआ यह मुल्क मसान ।। २ ।।
जो हम आपस में न झगड़ते, क्यों बने ये खेल बिगड़ते ।
काहे लाखों घर ये उजड़ते, क्यों ये बच्चे मां से बिछुड़ते ।
फूट-फूट क्यों रोते प्यारे, बापू के ये प्राण ।। ३ ।।

कुमति संग छोड़ो

(तर्ज—हो थांने जाणो-२ जाणो जरूरी)

कुमति संग छोड़ो, छोड़ो छोड़ो छोड़ो छोड़ो रे ।
सुमति संग जोड़ो, जोड़ो जोड़ो जोड़ो जोड़ो रे ।। टेर ।।
मानुष को भव दुर्लभ पायो, देव करे तेहनी आश ।
मांग्यो मिले नहीं, मोल मिले नहीं मिले तो करिये तलाश हो ।।१।।
रतन जड़ित की सुवर्ण चर्वी, चूल्हे दीनी चढ़ाय ।
चन्दन वाले मांही खल रांधे, एहवो तू मत थाय हो ।। २ ।।
करजदार पहले होई बैठो, फिर लावे करज उधार ।
चुकाया विन सूत्र सम्भालो, नहीं होगा छुटकार हो ।। ३ ।।

जन-जन सेती बैर बसावे, होय रह्यो अल मस्त ।
पीपल पान ज्यों भान संध्या को आखिर होवे अस्त हो ।। ४ ।।
अब के जोग मिल्यो मत चूको याद करोला फेर ।
'मुनि नन्दलाल' तथा शिष्य गावे, जोड़ करी अजमेर हो ।। ५ ।।

कुव्यसन सात दुखदाई

कुव्यसन सात दुखदाई, सब त्यागो जी ! नर-नार·······
जो जुआ खेल रचावे, नल-पाण्डव सम पछतावे ।
जब जावे सब कुछ हार·······
जो चोरी के दीवाने, हैं जाते बन्दी खाने ।
दे चमड़ी पुलिस उतार·······
बेतरस मांस जो खावें, खा-खा के पेट फुलावें ।
मर, जाते यम के द्वार·······
क्यों नरक गति न पावें, क्यों मार न यम की खावें ।
है जिनका शौक शिकार·······
बन मदिरा के मतवाले, जो भर-भर पीते प्याले ।
हो नर्कों में सतकार·······
पर - पुरुष, पराई - नारी, जो तकते दुष्टाचारी ।
फिर लानत दे संसार·······
घर गणिका के जो जावे, नर नर्क गति वो पावे ।
सिर पड़ती यम की मार·······
इन सातों से अय प्यारे ! जब तक न रहो किनारे ।
है जप-तप सब वेकार·······
जो प्राणी हो बड़भागी, वही बनता इनका त्यागी ।
ओ स्वर्ग-मुक्त हकदार·······
जो इनसे करे किनारा, हो उनका ही निस्तार ।
यो 'चन्दन' कहे पुकार·······

कैसे-कैसे श्री महावीर जिनके मुनिवर

कैसे-कैसे श्री महावीर जिन के, मुनिवर हुए महान ।। ध्रुव ।।
स्कंदक ने मिथ्या भव भ्रामक, सन्यासी पन डारा ।
जैन मार्ग में रंग गये ऐसे, फिर पीछे न निहारा ।।कैसे-२।। १ ।

हित-शिक्षा पर गोशालक ने, तेजू लेश्या डाली।
धन्य क्षमा दोनों मुनियों की, मृत्यु तक भी निभाली ।।कैसे-२।।२।।
हाथी भव की करुणा सुनकर, वह गई आंसू धारा।
तज दो नयन मेघ ने सारा, देह विनय पर वारा ।। कैसे-२ ।।३।।
घातक अनपढ़ अर्जुन मन में, ऐसी समता लाए।
छह महीनों में कर्म क्षय कर, अविचल शिव पद पाए ।।कैसे-२ ।।४।।
बालक एवन्ता ने मुनि वन, ऐसी करणी ठाई।
द्रव्य भाव दोनों ही नैय्या, अपनी पार लगाई ।। कैसे-२ ।।५।।
भोगी धन्ना ने दीक्षित बन, देह सुखाया सारा।
स्वयं वीर ने करी प्रशंसा, सर्व श्रेष्ठ अणगारा ।। कैसे-२ ।।६।।
सुपात्र दान दे मुनि सुबाहु ने, सुख विपाक फल पाया।
'पारस' ने यों अणगारों का, स्तुति मंगल गाया ।। कैसे-२ ।।७।।

क्रोध मत कीजो रे

(तर्ज— वाह-२ धुनसो बाजे रे)

क्रोध मत कीजो रे-२, इण न्याय सुजान क्षमा कर लीजो रे।
परदेशी नृप को रानी विष, मिश्रित आहार जिमायो रे।
सबर करी समभाव पणे, सुर लोक सिधायो रे ।। १ ।।
गज सुखमाल मनिशमशाने, नेम ध्यान को लीनो रे।
सिर पर आग सही, सोमिल पर कोप न कीनो रे।। २ ।।
खन्दक मनि की खाल उतारण, भूप हुकम फरमायो रे।
सञ्चित वैर चुकाय आप, मुक्ति पद पायो रे ।। ३ ।।
कामदेव जी श्रावक गण, उपसर्ग से चलिया नाहीं रे।
दृढ़ताई सुर देख गयो अपराध खमाई रे ।। ४ ।।
मेतारज मुनि गुणी आप, शुद्ध संजम में चित्त राख्यो रे।
या काज मर मिटया, कुकट को नाम न दाख्यो रे ।। ५ ।।
वीर प्रभु सुरनर तिर्यञ्च का, सह्या परषीह भारी रे।
मेरु जिम रह्या अचल आप समता दिल धारी रे।। ६ ।।
मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की यही सिखामण खासा रे।
उगणीसे अस्सी के साला, अजमेर चौमासा रे ।। ७ ।।

❀❀

करलो करलो ए प्यारे

(तर्ज— जावो–जावो ए मेरे साधु रहो गुरु के संग)

रलो–करलो अय प्यारे सजनों, जिनवाणी का ज्ञान ।। टेर ।।
सके पढ़ने से मति निर्मल, जगे त्याग तप भाव ।
क्षमा दया मृदु भाव विश्व में फैले करे कल्याण ।। १ ।।
थ्या–रीति अनीति घटे जग, पावे सच्चा ज्ञान ।
देव गुरु के भक्त बने सब, हट जावे अज्ञान ।। २ ।।
प–पुण्य का भेद समझ कर, विधि युक्त देवो दान ।
कर्म–बन्ध का मार्ग घटा कर, कर लेओ उत्थान ।। ३ ।।
रु–वाणी में रमने वाला, पावे निज गुण भान ।
राय प्रदेशी क्षमाशील बन, पाया देव विमान ।। ४ ।।
र–घर में स्वाध्याय बढ़ाओ, तज कर आरत ध्यान ।
जन–जन की आचार शुद्धि हो बना रहे शुभ ध्यान ।। ५ ।।
ातृ–दिवस में जोड़ बनाई (या) घर आदीश्वर ध्यान ।
दो हजार अष्टादश के दिन 'गजमुनि' करता गान ।। ६ ।।

कभी भोगों से इस दिल को

कभी भोगों से इस दिल को, सबर हरगिज नहीं आता ।
शहनशाह जो बने क्योंनी, सबर हरगिज नहीं आता ।। टेर ।।
चाहे हो महल रत्नों का, सजी हो सेज फूलों की ।
अप्सरा भी अजब सुन्दर, सबर हरगिज नहीं आता ।। १ ।।
होवे चक्री भले राजा, रखा सर ताज भारत का ।
चले भी हुक्म लाखों पे, सबर हरगिज नहीं आता ।। २ ।।
सजी पोशाक लगा इत्तर, बैठ कुर्सी पे सुन्दर संग ।
गले हो हार मोत्यों का, सबर हरगिज नहीं आता ।। ३ ।।
दुल्हा दुल्हिन के संग में, मिला के दस्त आपस में ।
घूमे कल्प–वृक्ष की छाया, सबर हरगिज नहीं आता ।। ४ ।।
त्रिखंडी नाथ भी कहला, हो मंडलिक राज्य अधिकारी ।
स्वर्ग के भोग भी भोगे, सबर हरगिज नहीं आता ।। ५ ।।
जवाहिर काम भोगों से, गया कोई न तरपत ।
निजातम ज्ञान के प्यारों, सबर हरगिज नहीं आता ।। ६ ।।

किसको आता है

(तर्ज— यहां दिल का लगाना·······)

यहां जन्म लेकर जीवन, बिताना किसको आता है।
पुजारी सत्य का बन कर, दिखाना किसको आता है॥
कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन है।
मगर ईमानदारी से, कमाना किसको आता है॥
मिटाते गैर की हस्ती, हज़ारों हमने देखे हैं।
अहिंसा-सत्य पर ख़ुद को, मिटाना किसको आता है॥
अरे! मन के पे मनका तो, गिराते हैं बहुत बन्दे।
महा चंचल मगर मन का, टिकाना किसको आता है॥
हजारों हमने देखे हैं, मुहब्बत करते मतलब से।
बिना मतलब मुहब्बत का, लगाना किसको आता है॥
खिलाने के लिए छत्तीस, पदार्थ भी खिला देते।
विदुर बन प्रेम से, किन्तु खिलाना किसको आता है॥
गिरा करके गिरी दुःख के, गरीबों को रुलाते हैं।
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन', हंसाना किसको आता है॥

कैसा यह जमाना

(तर्ज— यह मर्द बड़े दिल-दर्द बड़े)

पुण्य-धर्म नहीं, शुभ-कर्म नहीं, कुछ शर्म का नहीं ठिकाना।
रामा रामा आया कैसा यह जमाना ॥ ध्रुव॥
भाई के लिए जीते, भाई के लिए मरते।
अब तो भाई से भाई, मुकद्दमे - बाजी करते।
भाई से लड़ने को, ढूंढ़े, भाई कोई बहाना··········॥ १ ॥
सास को पूज्य समझकर, बहू करती थी कहना।
बहू है सास आज - कल, बहू से डरते रहना।
कहां चली गई पूछ लिया, तो आज गुन्हा है माना·······॥ २ ॥
आज सिनेमा बन गया, मन्दिर मस्जिद से बढ़कर।
होटल या रेस्टोरेन्ट है, नए बाबुओं का घर।
सिने जगत के कलाकारों को, देवी-देवता माना·······॥ ३ ॥
मिस्टर बेकार समझते, प्रभु का नाम जपना।

काम है बातें करना, जासूसी नोविल पढ़ना ।
भूल गये हैं भजन भक्ति के, याद है फिल्मी गाना.........॥ ४ ॥
उगती पौध में ही, आज लगी है रोली ।
'केवल' है बाहर दिवाली, अन्दर जलती है होली ।
पश्चिम के रंग में रंग गए हैं, किसको बात सुनाना ....॥ ५ ॥

कर्त्तव्य प्रेरणा

अरिहन्त के अनुयायी हैं, अहिंसा धर्म हमारा है ।
सब जीवों से प्रेम करें हम, ईर्षा द्वेष निवारा है ॥१॥
सिद्ध प्रभु के अनुयायी हैं, सत्य धर्म मन भाया है ।
सत्य ही बोलें सत्य ही तोलें, जीवन में सत्य समाया है॥२॥
आचार्य के अनुयायी हैं, अचौर्य-व्रत को धारा है ।
पर-धन को हम कभी न छुएं, चौर्य कर्म नहीं प्यारा है ॥३॥
उपाध्याय के अनुयायी हैं, जीवन उच्च बनावेंगे ।
पर वनिता 'माता अरु भगिनी, जग में सुशील कहावेंगे ॥४॥
मुनियों की सेवा करते हैं, दौलत जिनने ठुकराई है ।
हम लोभ लालच में फंसे हुए हैं, आयु व्यर्थ गुमाई है ॥५॥
इस शुभ दिन से हम करें प्रतिज्ञा, संतोष जीवन में लावेंगे ।
नीति न्याय मय जीवन होकर, सुखी सफल बन जावेंगे ॥६॥

क्यों पाप कमावे रे

(तर्ज— पनजी मुंड़े बोल.........)

क्यों पाप कमावे रे-२ वरजे सतगुरु, नहीं ध्यान में लावे रे ॥ टेर ॥
पाप कर्म कर धन थे जोड़यो, कुटम्ब मिली खा जावे रे ।
भोगे परभव एकलो ज्ञानी फरमावे रे ॥ १ ॥
छाने-छाने कर्म करे ज्यूं रुई में आग छिपाये रे ।
फूटे पाप को घड़ो प्रकट, आखिर पछतावे रे ॥ २ ॥
इकाई रो ठोड़ भव पाप किया, मरगा लोढ़ा दुःख को पावे रे ।
वीर वचन से इन्द्रभूति, देखन को जावे रे ॥ ३ ॥
धर्म रुची ने नाग श्री, कड़वो तूंबो वहरावे रे ।
सोलह रोग हुआ तन में, मर नर्क सिधावे रे ॥

कीड़ी सहित फल डाल्यो आग में, भागवत वतलावे रे।
चित्र–केतू के लाल ने राणियाँ, जहर पिलावे रे ॥५॥
अस्सी साल इन्दौर चौमासा, दितवारिया में ठावे रे।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' उपदेश सुनावे रे। ६

खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा

खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा जाया,
थांरी आज जयन्ती मनाऊ जी ओ।
चरण में ले लो म्हाने पार लगा दो,
मैं थांरा ही गुण गावां जी ओ ॥ १ ॥
कुन्डलपुर में जन्मिया प्रभु जी,
मात तात हुलसाया जी ओ ॥ २ ॥
चेत सुदी तेरस ने प्रभु जी,
सब जग खुशियाँ मनावे जी ओ ॥ ३ ॥
तीस वर्ष आयु में प्रभु जी,
राज पाट सब त्याग्या जी ओ ॥ ४ ॥
खुदरा करम काटण ने प्रभु जी,
जंगल में ध्यान लगाया जी ओ ॥ ५
वार बरस बाद केवल ज्ञानी हुआ जी ओ
अन्तरयामी हुआ प्रभु जी तीन लोक पहचानिया जी ओ ॥ ६
तीस बरस लग घूम – घूम कर,
जिनवाणी बरसाई जी ओ ॥ ७
पावापुरी तो हो गई पवित्र,
प्रभुजी मोक्ष सिद्धाया जी ओ ॥ ८
याद रे वेग अशोक मुनि की मति जाइजो।
पुष्कर पुकार आपरे आगे,
मानेई पार लगाईजो जी ओ ॥ खम्मा.॥

खोवे रे उमरिया

(तर्ज— नगरी–नगरी द्वारे–द्वारे·······)

मेरा मेरा करते करते, खोवे रे उमरिया।
फूला–फूला फिरे क्यों नहीं, वोले रे सांवरिया ॥ ध्रुव ॥

आया था, जब क्या लाया था, क्या लेकर के जायेगा।
जिसको मेरा - मेरा कहता, यहीं पड़ा रह जायेगा।
पुण्य पाप की तेरे संग में जायेगी गठरिया……………॥ १ ॥
कठपुतली सा नाच रहा है, बंधा मोह के तार में।
अपने को भी भूल रहा है, झूठे जग के प्यार में।
सब कुछ छोड़ के जाना होगा, एक दिन नई नगरिया……॥ २ ॥
बहार बीतेगी आएगी, पतझड़ तेरे बाग में।
संगमरमर सा सुन्दर मुखड़ा, जल जायेगा आग में।
मत कर तू अभिमान तेरा मन, माटी की गगरिया……॥ ३ ॥
करुणा सत्य दूर है तुझ से, झूठ गले का हार है।
आकृती का मानव प्रकृती में, दानव का व्यवहार है।
करती रहे शिकार नित्य नई, तेरी बुरी नजरिया……॥ ४ ॥
दान-पुण्य शुभ कर्म कमाई, जो संग में ले जायेगा।
'केवल मुनि' जहां भी जायगा, आनन्द मंगल पायेगा।
खोटी राह छोड़ कर चल तूं, मुक्ति की डगरिया……॥ ५ ॥

गुरुदेव तुम्हे नमस्कार बार-बार है

गुरुदेव तुम्हे नमस्कार बार - बार है।
श्री चरण शरण से हुआ, जीवन सुधार है ॥गुरु.॥ १ ॥
अज्ञान-तम हटा के, ज्ञान ज्योति जगा दी।
दृढ़ आत्म-ध्यान (ज्ञान) में अखण्ड शक्ति लगा दी ॥
उपदेश सदाचार सकल शास्त्र सार है ॥ गुरु. ॥ २ ॥
विधियुक्त सिर झुका के कर रहे हैं वन्दना।
अब हो रही मंगलमयी, सद्भाव स्पन्दना।
माधुर्य से मिटा रही, मन का विकार है ॥ गुरु. ॥ ३ ॥
यह है मनोरथ नित्य रहें, सन्त चरण में।
अन्तिम समय समाधी-मरण, चार शरण में।
यह "सूर्यचन्द्र" मोक्ष-मार्ग में विहार है ॥गुरु.॥ ४ ॥

ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना

ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना, करो तुम अच्छी तरह निरना ॥टे
ज्ञान दया का मूल रूल यह, फरमाया वीतराग।
ज्ञान बिना सोहे नहीं, ज्यूं हंस सभा में काग ॥ १ ॥

गृहस्थ-धर्म और मुनि-धर्म ये, दोनों ज्ञान आधार ।
ज्ञान बिना संसार का सरे, चले नहीं व्यवहार ॥ २ ॥
पहिले सीखते ज्ञान गुरु से, देखो सूत्र का न्याय ।
फिर शक्ति अनुसार तपस्या, करते वो मुनिराय ॥ ३ ॥
विद्या है धन मित्र सभा में, आदर देवे भूप ।
विद्या बिन नर पशु सरीखा, फक्त मनुष्य का रूप ॥ ४ ॥
ज्ञानी रहे पाप से बचकर, ज्ञान पढ़ो दिन रैन ।
मेरे गुरु नानालाल जी की, यही हमेशा केन ॥ ५ ॥

गुरुदेव मेरे सच्चे

गुरुदेव मेरे सच्चे, क्रिया में सबसे ऊंचे ।
ज्ञान-ध्यान में रत रहते हैं, करते नहीं प्रपंचे ॥ १ ॥
मेरे गुरु स्थानक वासी, जैन मुनि अरु सतियां ।
पंच-महाव्रत को शुद्ध पाले, पाले सुमति गुप्तियां ॥ २ ॥
जैन-मुनि हिंसा नहीं करते, बोल बोलते सच्चे ।
बिना दिया ये कभी न लेते, ब्रह्मचर्य के पक्के ॥ ३ ॥
पैसा कौड़ी को नहीं रखते, हैं ममता के कच्चे ।
अपना बोझा खुद उठावें, पैदल ही ये चलते ॥ ४ ॥
क्रोध तो ये कभी न करते, मान के बहुत ही कच्चे ।
सरलतरल व निर्लोभी, ये महावीर के बच्चे ॥ ५ ॥
ज्ञान-दान देते रहते हैं, अभयदानी ये पक्के ।
इनके सम दानी नहीं जग में, ये दानी हैं सच्चे ॥ ६ ॥
जड़ पूजा को ये नहीं माने, गुण पूजा बतलाते ।
जीवादि नव तत्त्वों का, सच्चा स्वरूप बतलाते ॥ ७ ॥
धर्माचरण के लिए कभी ये, मिथ्या रास नहीं रचते ।
नर-नारी सबको ही ये, मुक्ति गामी बतलाते ॥ ८ ॥
'भंवरलाल' के गुरु, बचाने में ही धर्म बताते ।
जो मरते प्राणी को बचाते, वे ही सद्गति पाते ॥ ९ ॥

卐

गंगा और जमना

(तर्ज— मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमुना······)

ज्ञान की निर्मल गंगा और जप–तप की यह जमुना····
मानव बोल, मानव बोल, संगम होगा कि नहीं ॥ टेर ॥
तन उजला और मन मैला है, कैसी यह तेरी माया है ।
दिल में नफरत मुंह का मीठा दोहरा रंग बनाया है ।
तन मन का रंग एक तेरा कभी होगा कि नहीं····॥१॥
इस मिट्टी के तन को सजाकर, क्यों तू अकड़ा जाता है ।
मन में तेरे पाप घने रे क्यों, उनको तू छिपाता है ।
मन का मैल यह दूर, तेरा कभी होगा कि नहीं···· ॥२॥
मौका यह नायाब मिला है, इससे लाभ उठा लेना ।
जनम–जनम की अपनी बिगड़ी अब तो बात बना लेना ।
दिल का कांटा दूर तेरा कभी होगा कि नहीं····॥३॥
आन–बान और शान सभी तू समझा अभिमान बढ़ाने में ।
तेरे जैसा नादान भला फिर, होगा कौन जमाने में ।
जीवन का यह बोझा हल्का होगा कि नहीं····॥४॥

गीत प्रभु के गाते चलो

(तर्ज— जोत से जोत जगाते चलो····)

गीत प्रभु के गाते चलो ।
डूबती नैया तिराते चलो ॥
सत्य की धूनी रमाके यहां ।
चैन की बंशी बजाते चलो ॥ टेर ॥

भटक–भटक कर लाख चौरासी, नर का यह चोला पाया ।
जग के इस जंजाल में फंस कर, क्यों इसको है गंवाया ।
अपनी बिगड़ी को बनाते चलो······· ॥ १ ॥
कदम – कदम पर रंग सुनहरा माया ने बिखराया ।
माया के झूठे सपनों में है मानव भरमाया ।
अपने मन को जगाते चलो······· ॥ २ ॥
बीते दिनों की भूल कहानी, मंजिल को पहचानो ।
मंजिल पर जो कदम बढ़ाये, राही उसी को जानो ।
मंजिल पे कदम बढ़ाते चलो······· ॥ ३ ॥

गृहस्थ-धर्म और मुनि-धर्म ये, दोनों ज्ञान आधार ।
ज्ञान बिना संसार का सरे, चले नहीं व्यवहार ॥ २ ॥
पहिले सीखते ज्ञान गुरु से, देखो सूत्र का न्याय ।
फिर शक्ति अनुसार तपस्या, करते वो मुनिराय ॥ ३ ॥
विद्या है धन मित्र सभा में, आदर देवे भूप ।
विद्या बिन नर पशु सरीखा, फक्त मनुष्य का रूप ॥ ४ ॥
ज्ञानी रहे पाप से बचकर, ज्ञान पढ़ो दिन रैन ।
मेरे गुरु नानालाल जी की, यही हमेशा केन ॥ ५ ॥

गुरुदेव मेरे सच्चे

गुरुदेव मेरे सच्चे, क्रिया में सबसे ऊंचे ।
ज्ञान-ध्यान में रत रहते हैं, करते नहीं प्रपंचे ॥ १ ॥
मेरे गुरु स्थानक वासी, जैन मुनि अरु सतियां ।
पंच-महाव्रत को शुद्ध पाले, पाले सुमति गुप्तियां ॥ २ ॥
जैन-मुनि हिंसा नहीं करते, बोल बोलते सच्चे ।
बिना दिया ये कभी न लेते, ब्रह्मचर्य के पक्के ॥ ३ ॥
पैसा कौड़ी को नहीं रखते, हैं ममता के कच्चे ।
अपना बोझा खुद उठावें, पैदल ही ये चलते ॥ ४ ॥
क्रोध तो ये कभी न करते, मान के बहुत ही कच्चे ।
सरलतरल व निर्लोभी, ये महावीर के बच्चे ॥ ५ ॥
ज्ञान-दान देते रहते हैं, अभयदानी ये पक्के ।
इनके सम दानी नहीं जग में, ये दानी हैं सच्चे ॥ ६ ॥
जड़ पूजा को ये नहीं माने, गुण पूजा बतलाते ।
जीवादि नव तत्त्वों का, सच्चा स्वरूप बतलाते ॥ ७ ॥
धर्माचरण के लिए कभी ये, मिथ्या रास नहीं रचते ।
नर-नारी सबको ही ये, मुक्ति गामी बतलाते ॥ ८ ॥
'भंवरलाल' के गुरु, बचाने में ही धर्म बताते ।
जो मरते प्राणी को बचाते, वे ही सद्‌गति पाते ॥ ९ ॥

卐

गंगा और जमना

(तर्ज— मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमुना······)

ज्ञान की निर्मल गंगा और जप–तप की यह जमुना···
मानव बोल, मानव बोल, संगम होगा कि नहीं ॥ टेर ॥
तन उजला और मन मैला है, कैसी यह तेरी माया है।
दिल में नफरत मुंह का मीठा दोहरा रंग वनाया है।
तन मन का रंग एक तेरा कभी होगा कि नहीं···॥१॥
इस मिट्टी के तन को सजाकर, क्यों तूं अकड़ा जाता है।
मन में तेरे पाप घने रे क्यों, उनको तू छिपाता है।
मन का मैल यह दूर, तेरा कभी होगा कि नहीं··· ॥२॥
मौका यह नायाब मिला है, इससे लाभ उठा लेना।
जनम–जनम की अपनी बिगड़ी अब तो बात बना लेना।
दिल का कांटा दूर तेरा कभी होगा कि नहीं···॥३॥
आन–बान और शान सभी तू समझा अभिमान बढ़ाने में।
तेरे जैसा नादान भला फिर, होगा कौन जमाने में।
जीवन का यह बोझा हल्का होगा कि नहीं···॥४॥

गीत प्रभु के गाते चलो

(तर्ज— जोत से जोत जगाते चलो···)

गीत प्रभु के गाते चलो।
डूबती नैया तिराते चलो॥
सत्य की धूनी रमाके यहां।
चैन की बंशी बजाते चलो ॥ टेर ॥

भटक–भटक कर लाख चौरासी, नर का यह चोला पाया।
जग के इस जंजाल में फंस कर, क्यों इसको है गंवाया।
अपनी बिगड़ी को बनाते चलो······ ॥ १ ॥
कदम – कदम पर रंग सुनहरा माया ने बिखराया।
माया के झूठे सपनों में है मानव भरमाया।
अपने मन को जगाते चलो······ ॥ २ ॥
बीते दिनों की भूल कहानी, मंजिल को पहचानो।
मंजिल पर जो कदम बढ़ाये, राही उसी को जानो।
मंजिल पे कदम बढ़ाते चलो······ ॥ ३ ॥

गृहस्थ धर्म

(तर्ज— दिल लूटने वाले जादुगर····)

जो दम्पति गृहस्थ धर्म पाले जो गीत प्रभु के गाते हैं ।
संसार में वही सुखी रहते, वही जीवन सफल बनाते हैं ।।ध्रुव.।।
शारीरिक वैषयीक सम्बन्ध तो, पशु-पक्षी भी करते हैं ।
संयोग में हंसते खुश होते, वियोग में रोते मरते हैं ।।
जो धर्म के रंग में रमते हैं, वही धन्य-धन्य कहलाते हैं·····।। १ ।।
उस महल में होली जलती है, जहां कटुता है जहां अनबन है ।
वह कुटिया स्वर्ग का कोना है, जहां दम्पति दो तन एक मन है ।।
वहीं रमा के पायल बजते हैं शान्ति के पुष्प मुस्काते हैं····।। २ ।।
जहां पत्नि-पति को देव तुल्य, आज्ञा का पालन करती है ।
पति को नाराज नहीं करती, अप्रसन्नता से डरती है ।।
आई जो लहर तो चली गई, गांठें जहाँ नहीं लगाते हैं····।। ३ ।।
जहां पति पत्नी को देवी समझ, हृदय से आदर देता है ।
जिसका पत्नी की सुख-सुविधा की ओर ध्यान भी रहता है ।।
जहां दोनों परस्पर एक दूसरे के मन में छा जाते हैं····।। ४ ।।
रंग - राग में साथ रहते वही साथ जहां वैराग में हों ।
धन्ना जी और सुभद्रा से सच्चे साथी तप - त्याग में हों ।।
जीवन-यात्रा को "केवल मुनि" वही मुक्ति तक ले जाते हैं····।। ५ ।।

गुण गाले प्रभु गुण गाले

(तन डोले मेरा मन डोले··········)

गुण गाले प्रभु गुण गाले, कर प्रभु चरणों से प्यार रे ।
तेरी पार लगेगी नावड़िया ।। टेर ।।
कदम-कदम पर माया ठगिनी, कैसा जाल फैलाया ।
पिला पिलाकर मोह के प्याले, पागल तुझे बनाया ।।
अरे रे ! पागल तुझे बनाया,
मतवाले ! मन समझाले तू अपने नैन उघाड़ रे ।। १ ।।
कभी नहीं सत्संग में आया, कभी न प्रभु गुण गाया ।
दुनियां के धन्धों में फंसकर, हीरा जनम गंवाया ।।
रे चेतन ! हीरा जनम गंवाया,
मतवाले ! ज्योति जगाले "मुनि केवल" कर उपकार रे ।। २ ।।

गुणी – जन – वंदना

इन मुनियों को इन गुणियों को, वन्दन होवे हो हो वन्दन होवे ।।टेर।।

धर्म–धुरंधर तीर्थंकर श्री चौबीसों जिनराज जी ।
मोक्षमार्ग बतलाने वाले तारण तिरण जहाज जी ।
अरिहन्त प्रभु को, भगवन्त प्रभु को, वन्दन होवे हो हो ।। १ ।।

लब्धिधारी पूरवधारी विश्रुत पण्डितराज जी ।
त्रिपदीधारी परउपकारी, मुनिमण्डल के ताज जी ।
गणधर प्रभु को गुणधर प्रभु को, वन्दन होवे हो हो ।। २ ।।

कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष का, नियम जिन्होंने धारा था ।
प्रथम रात को खबर पड़ी तो जीवन भर मन को मारा था ।
सेठ विजय को, उस विजया को, वन्दन होवे हो हो ।। ३ ।।

सुहाग रात में आठ नार को, त्याग का पाठ पढ़ाया था ।
सुभद्रा के वचन–मात्र से, संयम पाल दिखाया था ।
जम्बू कुंवर को, धन्य कुंवर को, वन्दन होवे हो हो ।। ४ ।।

बत्तीस बत्तीस कंचन–वर्णी, कामिनियां ठुकराई थीं ।
राजग्रही और काकन्दी की, 'भद्रा" जिनकी माँई थीं ।
शाली मुनि को, धन्ना मुनि को, वन्दन होवे हो हो ।। ५ ।।

बाल–ब्रह्मचारिणी ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दनबाला जी ।
कई सतियों ने संकट में भी, शील धर्म को पाला जी ।
राजमती को सीता सती को, वन्दन होवे हो हो ।। ६ ।।

महा भयंकर राक्षस बन कर देव डिगाने आया था ।
अर्हन्तक और कामदेव ने, निर्भय धर्म निभाया था ।
दृढ़ धर्मी को, प्रिय धर्मी को, वन्दन होवे हो हो ।। ७ ।।

लोका लवजी धर्मसिंह जी, धर्मदास महान थे ।
धर्म क्रान्ति के करने वाले, जिन शासन की शान थे ।
बड़े पुरुषों को महापुरुषों को, वन्दन होवे हो हो ।। ८ ।।

राजसी वैभव भरी जवानी, मैट्रिक तक अभ्यास किया ।
विदेशों में जन्में घूमे, फिर भी मन विरक्त हुआ ।
विनोद मुनि को, वीरागी मुनि को वन्दन होवे हो हो ।। ९ ।।

जो सम्यग् ज्ञानी, सम्यग् दर्शी सम्यक् संयम धारी हैं ।
त्यागी तपस्वी सुव्रतधारी, उन पर भक्ति हमारी है ।
श्री मुनियों को, महासतियों को, वन्दन होवे हो हो ।। १० ।

घणो सुख पावेला

घणो सुख पावेला, जो गुरु वचनों पर प्रीति बढ़ावेला ।। टेर
विनयशील की कैसी महिमा, मूल सूत्र बतावेला ।
वचन प्रमाण करे सो जन, सुख सम्पत्ति पावेला ।। १ ।।
गुरु-सेवा और आज्ञाधारी शिक्षा खूब मिलावेला ।
जल पाये तरुवर सम वे जग में सरसावेला ।। २ ।।
वचन प्रमाणे जो नर चाले, चिंता दूर भगावेला ।
आपमती आरति नित भोगे, धोखा खावेला ।। ३ ।।
एकलव्य लखि चकित पांडुसुत, मन में सोच करावेला ।
कहा गुरु से हाल भील की भक्ति बतावेला ।। ४ ।।
देख भक्ति उस भील युवा की वन देवी खुश होवेला ।
बिना अंगूठे बाण चले यो वर दे जावेला ।। ५ ।।
गुरु कारीगर के सम जग में वचन टंक जो खावेला ।
पत्थर से प्रतिमा जिम वो नर महिमा पावेला ।। ६ ।।
कृपा दृष्टि गुरुदेव की मुझ पर ज्ञान शांति बरसावेला ।
'गजेन्द्र' गुरु महिमा का नहीं कोई पार मिलावेला ।। ७ ।।

चेतन ! तू ध्यान आरत क्यूं ध्यावे

चेतन तू ध्यान आरत क्यूं ध्यावे, हांरे नाहक कर्म संचावे ।।टेर
जो जो भगवन्त भाव देखिया सौ सौ बरतावै ।
घटै बढै नहीं रंचहु तामे, तो काहे तू मन डोलावे ।।चे. ।।१
आरत ध्यान ज्यों चिन्ता अग्नि, उपजत सहू विणसावै ।
शोकातुर बीते दिनरेणी, तो धर्म-ध्यान घट जावे ।। चे. ।।२।
सुख सूं निद्रा आत न रात न, अन्न उदक नहिं भावै ।
पहिरन ओढ़न चित्त न चाले, तो राग न रंग सुहावे ।।चे.।।३।
भुगत्यां विन छूटै नहिं कवहूं अशुभ उदय जब आवै ।
साहूकार शिरोमणी सो ही, जो हर्ष सुं कर्ज चुकावै ।।चे.।।४।।
सुख न रहे तो दुःख किम रहसी यह भी श्यात् गुजर जावै ।
कर्म-वन्ध भुगतण सही पड़सी, तो आतम ने डंडावै ।।चे.।।५।।
प्रभु सुमरण अरु तपस्या करतां, दुकृत राज झड़ जावें ।
'सज्जन' कहे समता-रस पीतां, तुरत ही आनन्द पावै ।।चे.।।६।।

चलो शिवपुर रेल खड़ी

चलो शिवपुर रेल खड़ी रे तैयारी हाँ हाँ हाजर तैयारी ॥टेर॥
सीधी सड़क चाली शिवपुर को, देव मनुष्य दो आड़ा ।
जहाँ जावे वहां ही ले जावे, पवन चली रेल गाड़ी ॥ १ ॥
सत्तावन संवर का डिब्बा, बोलो अमृत वाणी ।
सतरह संयम माल भरियो है, बारह व्रत की भड़ी रे किवाड़ी ॥२॥
तीन योग का चौकी पहरा, चार कषाय कटारी ।
अठारा स्टेशन लगिया, श्वासों की मिल लगाई ॥ ३ ॥
रात दिवस दोय इञ्जन जुतिया, उमर अग्नि लगाई ।
कर्म कोयला माशी भोंको, चरण करण की कुंजी लगाई ॥ ४ ॥
ब्रह्म ज्योति की चिराग लगाई, नहीं पवन संचाना ।
केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिक समकित ज्योति उजवारी ॥ ५ ॥
दया-धर्म का टिकट कटाया, सतगुरु जी उपकारी ।
कोई एक उत्तम पास कटावे, मोक्ष कैलाश की ऐश है भारी ॥६॥
शील संयम की सीटी लगाई, आगे होत हुशियारी ।
पंच-महाव्रत चोखा पालो, खर्ची ले लोनी खर्च विचारी ॥७॥
राग-द्वेष दोय चोर लुटेरा, करत बिखरा भारी ।
सरकारी में धाड़ो पाड़े, चेतन बाबू खड़ा अगाड़ी-पिछाड़ी ॥८॥
नाड़ी तार जवाबी पक्का, आगे होत होशियारी ।
सावध के संग तू तो सूतो, चेतरे मूर्ख होत खराबी ॥९॥
दर्शन की दूरबीन लगाई, जल थल दोय सिपाही ।
प्रभु नाम की तोप चलाई, मोह मिथ्यात्व को दूर भगाई ॥१०॥
धर्मी – धर्मी गया मोक्ष में, पापी – पापी संवारी ।
मोह नींद में सूतो मूरख, चूको स्टेशन रहियो नरक मंझारी ॥११॥
आओ भाई करो बिछायत, बैठन की चवि न्यारी ।
कहत 'जड़ाव' जयपुर मांही, भव्य जीवों थे राखो हुशियारी ॥१२॥

चार दिनों की जिन्दगानी

(तर्ज— घर आया मेरा परदेशी)

जीवन सफल बना प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥टेर॥
भटकत-भटकत आया है, मुश्किल नर तन पाया है ।
कुछ तो सोच-समझ प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ १ ॥

जग ये मुसाफिर खाना है, सब कुछ छोड़ के जाना है।
गफलत मतकर नादानी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ २ ॥
मुट्ठी बांध कर आया है, सुकृत का फल पाया है।
खाली हाथ न जा प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ३ ॥
माता-पिता भगनि भ्राता, मरते को नहीं रख पाता।
मूरख मन अपना जानी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ४ ॥
धन दौलत सब सपना है, किया धर्म जो अपना है।
कर-कर कुछ तो प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ५ ॥
चार कोष जब जाता है, खर्ची ख्याल में लाता है।
पर भव दूर घणा प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ६ ॥
करना-करना बस करता है, काम भोग चित्त धरता है।
अजब लगन तेरी जानी, चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ७ ॥
सुन कर के मत रह जाना, कुछ निश्चय करके जाना।
"धन्न" वक्त फिर नहीं आनी चार दिनों की जिन्दगानी ॥ ८ ॥

चेतन रे या कर्मन की गत

चेतन रे या कर्मन की गति न्यारी, कर सुकृत एम विचारी ॥टेर॥
रावण राय त्रिखंड को नायक, ले गयो राम की नारी।
लक्ष्मण हाथे परभव पहुंचो, जाने दुनिया सारी ॥ १ ॥
अयोध्या नगरी को हरिशचन्द राजा, तारादे तस नारी।
माथे पुरी लेय हाट में कियो, कुंवर रोहित दास लारी ॥ २ ॥
कृष्ण नरेश्वर त्रिखंड भुगता, यादव कुल अवतारी।
अन्त समय जाय मुआ अकेला, वन कोशम्बी मंझार ॥ ३ ॥
कुण्डरीक राय वैराग्य धरीने, लीनो संयम भारी।
कायर होय पीछा घर मांही आया, पहुंचे नरक मंझारी ॥ ४ ॥
चन्दनराय मलयागिरी रानी, पुत्र सायर नीर भारी।
कर्म जोगे विछुड़ो पड़यो जाके, पुण्य से सम्पती पाया सारी ॥ ५ ॥
'खूबचन्द कहे या कर्मो की रचना, सुण लीजो नर नारी।
इम जाणो ने धर्म आराधी, सुख मिले आगे त्यारी ॥ ६ ॥

★

चेतन चेतो रे

चेतन चेतो रे, दस बोल जीव ने दुर्लभ मिलियो रे ।। टेर ।।
चार गति में गेंद दड़ी ज्यूं, गोता बहुला खाया रे ।
दुर्लभ लादो मनुष्य जमारो, गुरु समझाया रे ।।चेतन।। १ ।।
स्वार्थ केरी यारी प्यारी, सब ही के मन भावे रे ।
निज करतब तेरे कर्म कमाई, संगज आवे रे ।।चेतन.।। २ ।।
आरम्भ परिग्रह मांहि सूतो सुध निज गुण की भूल्यो रे ।
तन-धन जीवन मांही राच्यो, गर्व में भूल्यो रे ।।चेतन.।। ३ ।।
घेवर चोरिया घर का खाया, कुटाणो कंदोई रे ।
आपरा बांध्या आप भोगवे, इम ल्यों जोई रे ।।चेतन.।। ४ ।।
धर्म जहाज निरजाम गुरु चढ़ आया सुकरत जागे रे ।
अविचल सुख की सेल करावे, फिर क्यों चूके रे ।।चेतन.।। ५ ।।
जंबू जी तो विश्व वंदिता, छती रिद्ध छिटकोई रे ।
करणी कर गजसुकमाल मुनिश्वर मुक्ति पाई रे ।।चेतन.।। ६ ।।
काम भोग पुद्गल विनाशे, महता भाव मिटावे रे ।
'मगन' कहे धन महंत पुरुष ने, महिमा गावे रे ।।चेतन.।। ७ ।।

चन्दना पुकारे

(तर्ज— टिमटिम करते तारे)

भक्तों के सहारे त्रिशला के दुलारे ।
आओ प्रभु आओ तुम्हें, चन्दना पुकारे ।।ध्रुव।।
स्वर्ग में बैठी माता-पिता कहीं दूर ।
राजकुमारी बिकी होके मजबूर ।।
सोच-सोच बातें चले, दिल पे दुधारे ।। १ ।।
तो भी कर्मों को जरा दया नहीं आई ।
सर मुंड़ा हथकड़ी-बेड़ी पहनाई ।।
तीन दिन तहखाने में भूखे ही गुजारे ।। २ ।।
सौभाग्य से प्रभु मेरे, द्वार तुम आये ।
धन्य घड़ी धन्य-धन्य दर्शन पाये ।।
लौट गये बह रही आंसुओं की धारें ।। ३ ।।
पारणा न लो तो, मैं न करूं पारणा ।

दान लेके देव दुखिया को तारना ॥
करुणा करो हे नाथ शरण तुम्हारे ॥ ४ ॥
हृदय की पुकार सुन प्रभु लौट आये ।
पारणा लिया कि रोम वरोम हर्षाये ॥
"केवल मुनि" झूम उठी खशीं वहारे ॥ ५ ॥

चेतन चार शरण

(तर्ज—पूर्ववत्)

चेतन चारों शरणा धारा, पार होय जावणा रे ।
चोखे चित हमेशा, उठ प्रभाते धारना रे ॥ टेर ॥
पहिलो शरणों श्री अरिहन्त तोड़या चार कर्म दुरदन्त ।
प्रभु के गुण का नहीं है अन्त, ज्यांका शरणा से वर—
केवलज्ञान उपजावणारे ॥ चेतन ॥ १ ॥
दूजो शरणों सिद्ध सदाई, प्रभुजी गति पंचमी पाई ।
जाके रंग रूप नहीं राई, जाके शरणा से आठों ही—
कर्म खपावणा रे ॥ चेतन. ॥ २ ॥
तीजो शरणों साधु सुजाण, माने अरिहन्तों की आण ।
भारी बांचे सरस वखाण, जांका शरणा से मुक्ति की—
मौजों पावणा रे ॥ चेतन. ॥ ३ ॥
चौथो शरणों धर्म को धारो, चार गति का दुःख निवारो ।
चेतन जल्दी मोक्ष पधारो, समण हजारीमल गुण गावे—
जीत बधावणा रे ॥ चेतन. ॥ ४ ॥

चार शरण

जग में चार मंगल, जग में चार उत्तम चार शरणा ।
धार – धार भवसागर तिरना ॥ टेर ॥
तीर्थ स्थापे पंचम ज्ञान पाई, मुक्ति–मार्ग दिया सुखदाई ।
भगवन् धर्म आदिकर अप्रतिहत, ज्ञानधार अरिहन्त शरणा ॥ १ ॥
आधी व्याधी उपाधी मिटाई, जरा जन्म मरण मुक्ति पाई ।
० कर्म कर क्षय शाश्वत अनन्त सुखधर, सिद्ध प्रभ शरणा ॥ २ ॥

पाले महाव्रत प्रवचन माता, तप संयम संवर व्याख्याता ।
दस विध मुनिधर्म, गुण सतावीस कर साधु शरणा ।। ३ ।।
अठारा पाप इन्द्रिय विषयों से, जलते जगत की लाल लपटों से।
बचना चाहो अगर ले लो निर्भय बन, जिनधर्म शरणा ।। ४ ।।
ये हैं अनुपम मंगल कारी, सवसे उत्तम शरणा चारी ।
करो सदा सुमिरण बनो तारण तिरण, इतना कहना ।। ५ ।।

चेत अरे देवाणुप्पिया

(तर्ज— नगरी नगरी द्वारे द्वारे....)

पल पल समय बीतता जाए, चेत अरे देवाणुप्पिया ।
फिर–फिर ऐसा समय न आये, हाथ अरे देवाणुप्पिया ।। टेर ।।
पृथ्वी जल अगनी वायु में, जब यह जीव चला जाता ।
लगातार वहां एक–एक में, भव असंख्य तक भ्रम जाता ।।
वनस्पति में तो अनन्त भव, भ्रमता है देवाणुप्पिया ।।पल.।। १ ।।
द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय में, जब यह जीव चल जाता ।
लगातार वहां एक-एक में, लाखों भव तक भ्रम जाता ।।
त्रियंच पञ्चेन्द्रिय में भ्रमता है आठ जन्म देवाणुप्पिया।।पल.।। २ ।।
देव नरक में एक–एक भव, यों यह जीव भ्रमण करता ।
किन्तु दुर्लभ मानव भव को, प्राणी प्राप्त नहीं कर पाता ।।
क्योंकि इन्ही ग्यारह में फिर फिर, भ्रमता है देवाणुप्पिया। पल.।।३।।
कभी योग से इस भव चक्कर से, प्राणी जब है छुट पाता ।
तब यह मोक्ष प्रदायी मानव, भव को एक बार पाता ।।
जिसमें भी सबको नहीं मिलता, आर्य क्षेत्र देवाणुप्पिया ।।पल.।।४।।
कइयों को सतकुल नहीं मिलता, इन्द्रिय सभी न मिल पाती।
कइयों को सद्धर्म न मिलता, श्रद्धा रुचि न जग पाती ।।
सभी योग तू पाया फिर क्यों, अलसाया देवाणुप्पिया ।।पल.।। ५ ।।
तिस में एक वायु से जैसे, पका पान झड़ जाता है ।
या तृण भाग पर ठहरा, जब बिन्दु गिर जाता है ।।
त्यों नर आयु अति अस्थिर है, समझ-समझ देवाणुप्पिया।।पल.।।६।।
जब तक इन्द्रिय हानि व्याधि, जरा मृत्यु नहीं आती है ।
समय तभी तक धर्म क्रिया का, धर्म मोक्ष सुखदायी है ।।
केवल कहते 'पारस' झटपट, पहुंच मोक्ष देवाणुप्पिया ।।पल.

छोटी साधु वन्दना

साधुजी ने वन्दना नित-नित कीजे, प्रातः उगन्ते सूर रे प्राणी ।।टेर।।
नीच गति मां ले नहीं जावे, पाये ऋद्धि भरपूर रे प्राणी ।।साधु.।।१।।
मोटा ले पंच महाव्रत पाले, छह काया रा प्रतिपाल रे प्राणी ।
अमर-दिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बयालिस टाल रे प्राणी ।।साधु.।।२।।
ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणि दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी ।
एक पुरुषानी सेवा करता, आठ कर्म जाय टूट रे प्राणी ।। साधु. ।।३।।
एक-एक मुनिवर रसना त्यागी एक-एक ज्ञान भण्डार रे प्राणी ।
एक-एक वैयावचिया वैरागी जेना गुणानों न आवे पार रे प्राणी।सा.।।४।।
गुण सत्तावीस करी ने दीपे जीत्या परीषह बावीस रे प्राणी ।
बावन तो अनाचोरण टालें, तेने नमावूं मारूं शीश रे प्राणी ।साधु.।।५।।
जहाज समान ले सन्त मुनिश्वर, भक्त जीव बेसे आप रे प्राणी ।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुंचाय रे प्राणी ।। साधु.।।६।
साधु-चरणे जीव साता पावे, पावे ते लील विलास रे प्राणी ।
जन्म जरा अने मरण मिटावे नावे फरी गर्भावास रे प्राणी ।। साधु.।।७।।
एक वचन श्री सत्गुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी ।
नरक गतियां ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी ।। साधु.।।८।।
प्रातः उठी ने उत्तम प्राणी, सुणों साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी ।
एवा पुरुषा नी सेवा करतां, पावे अमर विमान रे प्राणी ।। साधु. ।।९।।
संवत् अठारह ने वर्ष उड़तीसे, बूसी गांव चौमास रे प्राणी ।
'मुनी आसकरणजी' इण पर जपे, हूं तो उत्तम साधां रो दास रे प्राणी ।
।। साधुजी. ।। १० ।।

जय जय जय भगवान

जय जय जय भगवान ।
अजर अमर अखिलेश निरंजन जयति सिद्ध भगवान ।। टेर ।।
अगम अगोचर तूं अविनाशी, निरंकार निर्भय सुख राशी ।
निर्विकल्प निर्लेप निरामय निष्कलंक निष्काम । जय. । १ ।।
कर्म न काया मोह न माया, भूख न तिरखा रंक न राया ।
एक स्वरूप अरूप अगुरु लघु निर्मल ज्योति महान् ।।जय. ।। २ ।।
हे अनन्त! हे अन्तरयामी! अष्ट गुणों के धारक स्वामी ।
तुम बिन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम ।.जय.।। ३ ।।

गुरु निर्ग्रन्थों ने समझाया, सच्चा प्रभु का रूप बताया।
अब तुम में ही मिल जाऊं मैं, ऐसा दो वरदान ॥ जय.॥ ४ ॥
सूर्य चन्द्र हैं शरण तुम्हारी, प्रभु मेरी करना रखवारी।
तुझ में मुझ में भेद न पाऊं, ऐसा हो संधान ॥ जय. ॥ ५ ॥

जग उठ रे मारा चतुर पांवणा

जग उठ रे मारा चतुर पांवणा अब थारी गाड़ी हंकवा में।
पल–पल में थारी उमर जावे–मौत भागती आवे जीवड़ा ॥अब.॥ १ ॥
मोह नींद रे वश में सोग्यो भूल आपणो पथ जीवड़ला।
बचपन खेलण मांही गंवायो जोवन में मद छोड़ जीवड़ा ॥अब.॥ २ ॥
पर की निन्दा कर–कर आपणा घर में कचरो लायो जीवड़ा।
मुनियारो उपदेश न मान्यो धरम स्थान नहीं आयो जीवड़ा ॥अब.॥ ३ ॥
मुनियां रो उपदेश न मान्यो धरम–ध्यान नहीं ध्यायो जीवड़ा।
बीती सो तो बीत गई रे, अब तू चेत – चेत जीवड़ा ॥ अब. ॥ ४ ॥
पाप करम सब भरम छोड़कर धर्म सु नेह लड़ा जीवड़ा।
प्रभु सुमिरन है सब दुःख नासो 'कुमद' सदा सुख छाई जीवड़ा ॥अब.॥५॥

जय बोलो महावीर स्वामी की

जय बोलो महावीर स्वामी की,
घट – घट के अन्तरयामी की,
जय बोलो महावीर स्वामी की ॥ टेर ॥

जिस जगती का उद्धार किया
जो आया शरण वह पार किया,
जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की ॥ जय. ॥ १ ॥

जो पाप मिटाने आया था,
जिन भारत आन जगाया था,
उस त्रिशला-नन्दन ज्ञानी की ॥जय.॥ २ ॥

जिसने राज–पाट को छोड़ दिया,
बारह वर्ष तप घोर किया,
उस शान्त वीर रसगामी की ॥जय.॥ ३ ॥

जिन स्याद्‌वाद सिद्धान्त दिया,
जिसने सब झगड़ा मेट दिया
है देन सभी उस नामी की ॥ जय. ॥ ४ ॥
जिस जीव अजीव को तोल दिया,
फिर तत्त्व–ज्ञान अनमोल दिया,
उस महामोक्ष–पदगामी की ॥ जय. ॥ ५ ॥
हो लाख बार प्रणाम तुम्हें,
है वीर प्रभु ! भगवान तुम्हें,
मुनि दर्शन मुक्ति – गामी की ॥ जय. ॥ ६ ॥
जय बोलो महावीर स्वामी की ।

जगत में नवपद जयकारी

(तर्ज— नेमजी की जान बनी भारी)

जगत में नवपद जयकारी, सेवतां रोग टरे भारी ॥ टेर ॥
प्रथम पद तीर्थपति राजे, दोष अष्टादश को त्याजे ।
आठ प्रतिहारज नित छाजे, जगत प्रभु गुण वारे साजे ॥
अष्ट कर्मदल जीत के, सकल सिद्ध ले थाय ।
सिद्ध अनन्त भजो बीजे पद एक समय शिव जाय ॥
प्रकट भयो निज स्वरूप भारी ॥जगत में.॥ १ ॥
सूरी पद में गौतम केशी, ओपमा सूरज चन्द्र जैसी ।
उद्धार्यो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिव लेसी ॥
चौथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवज्झाय ।
सर्व साधु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥
वखाण्यो वीर जिनन्द भारी ॥जगत में.॥ २ ॥
द्रव्य पट की श्रद्धा आवे, और सम सम्वेगादिक पावे ।
विना शुद्ध ज्ञान नहीं किरिया, जैन दर्शन में सव तिरिया ॥
ज्ञान पदारथ सातमें. पद में आतम राम ।
रमता रम्य अध्यातम में, निज पद साधे काम ॥
देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत में. ॥ ३ ॥
जोग की महिमा वहु जाणी, चक्रधर छोड़ी सव राणी ।
सती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक मन मोहे ॥
कर्म निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ।

क्षमा सहित नवमां पद धारे, कर्म मूल कट जाय ॥
भजो तुम नवपद सुखकारी ॥जगत में. ॥ ४ ॥
श्री सिद्ध चक्र भजो भाई, आचाम्ल तप विधि से पाई ।
पाप तिहूं जोगे परिहर जो, भाव श्रीपाल तणो करजो ॥
संवत उगणीस सतरा समे, जैपुर श्री जिन पास ।
चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आस ॥
बाल कहे नवपद छवि प्यारी ॥जगत में.॥ ५ ॥

जय महावीर प्रभो स्वामी जय महावीर प्रभो

(तर्ज— आरती)

जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो ।
जगनायक सुखदायक, अति गम्भीर प्रभो ॥ १ ॥
कुण्डलपुर में जन्मे, त्रिशला के जाए ! माता त्रिशला—
पिता सिद्धार्थ राजा, सुरनर हर्षाए, ॐ जय० ॥ २ ॥
दीनानाथ दयानिधि, है मंगलकारी, स्वामी है मंगल—
जगहित संयम धारा, प्रभु पर उपकारी, ॐ जय० ॥ ३ ॥
पापाचार मिटाया, सत्पथ दिखलाया, स्वामी सत्पथ—
दयाधर्म का झण्डा, जग में लहराया, ॐ जय० ॥ ४ ॥
अर्जुन माली गौतम, श्री चन्दनबाला, स्वामी श्री—
पार जगत से बेड़ा, इनका कर डाला, ॐ जय० ॥ ५ ॥
पावन नाम तुम्हारा, जग तारण हारा, स्वामी जग—
निश-दिन जो नर ध्यावे, कष्ट मिटे सारा, ॐ जय. ॥ ६ ॥
करुणा सागर तेरी, महिमा है न्यारी स्वामी महिमा—
'ज्ञान मुनि' गुण गावे, चरणन बलिहारी, ॐ जय. ॥ ७ ॥

जिनजी पहला ऋषभदेव वांदसां जी

जिनजी पहला ऋषभदेव वांदसां जी,
जिनजी दूजा अजितनाथ देव, पक्खी रा खमत खामणा जी ।
जिनजी तीजा संभवनाथ वांदसां जी,
जिनजी चौथा अभिनन्दन दे,व पक्खी रा खमत खामणा जी ।
जिनजी पन्द्रह दिनारो पाप आलोचियो जी,
श्रावक शुद्ध मन लीजो रे खमाय —पक्खी रा० ॥ १ ॥

जिनजी पांचवा सुमतिनाथ वांदसां जी,
जिनजी छट्ठा पदमप्रभु देव ।। पक्खी०,
जिनजी सातवाँ सुपार्श्वनाथ वांदसां जी,
जिनजी आठवां चन्दाप्रभु देव—पक्खी० ।। २ ।।
जिनजी नवमां सुविधिनाथ वांदसां जी,
जिनजी दसवां शीतलनाथ देव—पक्खी० ।
जिनजी इग्यारवां श्रेयांसनाथ वांदसाँ,
जिनजी बारवां श्री वासुपूज्य देव–पक्खी०. ।। ३ ।।
जिनजी तेरवां विमलनाथ वांदसां जी,
जिनजी चवदवां अनन्तनाथ देव–पक्खी० ।
जिनजी पन्द्रवां धरमनाथ वांदसाँ जी,
जिनजी सोलवां शान्तिनाथ देव– पक्खी० ।। ४ ।।
जिनजी सत्तरवां कुंथुनाथ वांदसां जी,
जिनजी अठारहवां अरहनाथ देव–पक्खी० ।
जिनजी उगणिसवां मल्लिनाथ वांदसां जी,
जिनजी बीसवां मुनि सुव्रत देव–पक्खी० ।। ५ ।।
जिनजी इक्कीसवाँ नमिनाथ वांदसाँ जी,
जिनजी बाइसवां अरिष्ठनेमी देव–पक्खी० ।
जिनजी तेइसवां पारसनाथ वांदसाँ जी,
जिनजी चौबिसवां महावीर देव – पक्खी० ।। ६ ।।
जिनजी इग्यारा ही गणधर वांदसाँ जी,
जिनजी बीस विहरमान देव— पक्खी० ।
जिनजी अनन्त चौवोसी ने वांदसाँ जी,
जिनजी तीरण–तारण गुरुदेव–पक्खी रा० ।। ७ ।।

जिनन्द माय दीठा सपना सार

जिनन्द माय दीठा सपना सार ।। टेर ।।
पहले गयवर देखियोजी, सूण्डा दण्ड–प्रचण्ड ।
दूजे वृषभ देखियोजी, धोरी धोलो सण्ड जिनन्द० ।। १ ।।
तीजे सिंह सुलक्षणोजी, करतो मुख वगास ।
चौथे लक्ष्मी देवताजी, कर रह्या लीला विलास—जिन० ।। २ ।।
पंचवरण फूलां तणीजी, मोटा देखी सुवास ।
छट्ठे चन्द्र उजासियोजी, अमीय झरे आकाश—जिन० ।। ३ ।।

दिनकर ऊगो तेज सूंजी, किरण झांक झमाल ।
फरकती देखी धजाजी, ऊंची अति असराल— जिन० ॥ ४ ॥
कुम्भ कलश रतना जड्योजी, उदकभर्यो सुविशाल ।
कमल फूलां को ढाकणोंजी, नवमें स्वप्न रसाल–जिन० ॥ ५ ॥
पद्म सरोवर जल भर्योजी कमला करी सुसोभाय ।
देव देवी रंग में रमेजी, देख्यां आवे दाय— जिन० ॥ ६ ॥
क्षीर समुद्र चारों दिशाजी, जेनो मीठो नीर ।
दूध जैसो पानी भर्योजी, कठिन पावणो तीर— जिन० ॥ ७ ॥
मोत्या केश झूंबकाजी, देख्या देव विमान ।
देव देवी कौतुक करेजी आवतां असमान— जिन० ॥ ८ ॥
रत्ना की राशि निरमलीजी देख्यो स्वप्न उदार ।
स्वप्नो देख्यो तेरमोजी, हिवड़े हर्ष अपार— जिन० ॥ ९ ॥
ज्वाला देखी दीपतीजी, अगन शिखा बहु तेज ।
इतने जाग्या पदमनीजी, धरतां स्वप्ना से हेज – जिन० ॥१०॥
गजगति चाल्या मलकताजी, आया राजन् पास ।
भद्रासन आसन दियोजी, राय पूछे हुल्लास— जिन० ॥ ११ ॥
कहो किण कारण आवियाजी कहो थांरा मननी बात ।
चवदे स्वप्न देखियाजी, अर्थ कहो साक्षात्— जिन० ॥ १२ ॥
स्वप्ना सुनी राय हर्षियाजी कीनों स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर चक्रवरती हुसीजी, तीन लोक आधार - जिन०॥ १३ ॥
प्रभाते पंडित तेड़ियाजी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर चक्रवरत हुसीजी तीन लोक करतार जिन०॥ १४ ॥
पंडित ने बहु धन दियोजी, वस्तर ने फूलमाल ।
गर्भवास पूरा थया जद्, जनम्या पुन्यवंत बाल–जिन०॥ १५ ॥
चौसठ इन्द्र आवियाजी, छप्पन दिशा कंवार ।
अशुचि कर्म निवारने जी, गावे मंगलचार— जिन० ॥ १६ ॥
प्रतिबिम्ब घर में धर्योजी. माता जी ने विश्वास ।
शक्र इन्द्र लीधा हाथ में जी, पंच रूप प्रकाश जिन० ॥ १७ ॥
मेरु शिखर न्हवावियाजी, तेहनो बहु विस्तार ।
इन्द्रादिक सुर नाचियाजी, नाची अपसरा नार–जिन०॥ १८ ॥
उठाई महोत्सव सुर करेजी, दीप नन्दीश्वर जाय ।
गुण गावे प्रभुजी तणाजी, हिवड़े हरष न माय–जिन०॥ १९ ॥

परभाते सुपनो जो भरोजी, भणतां आनन्द थाय।
रोग-शोक दूर टले जी, अशुभ कर्म सब जाय-जिन०॥ २०॥

जीवन उन्नत करना चाहो तो सामायिक साधन करलो

जीवन उन्नत करना चाहो तो सामायिक साधन कर लो।
आकुलता से बचना चाहो तो— सा० ॥ १ ॥
तन धन परिजन सब सुपने हैं, नश्वर जग में नहीं अपने हैं।
अविनाशी सद्गुण पाना हो तो— सा० ॥ २ ॥
चेतन निज घर को भूल रहा, पर घर माया में झूल रहा।
सत् चित् आनन्द को पाना हो तो- सा० ॥ ३ ॥
विषयों में निजगुण भूलो मत, अब काम क्रोध में मत झूलो।
समता के सर में नहाना हो तो— सा० ॥ ४ ॥
तन पुष्टि हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ ध्यान भला।
आध्यात्मिक बल पाना चाहो तो— सा० ॥ ५ ॥
सब जग जीवों में बन्धु-भाव, अपनालो तज के वैर-भाव।
सब जन के हित में सुख मानो तो— सा० ॥ ६ ॥
निर्व्यसनी हो प्रामाणिक हो धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो— सा० ॥ ७ ॥
स्वाध्याय सामायिक संघ बने, सब जन सुनीति के भक्त बनें।
नर लोक में स्वर्ग बसाना हो तो— सा० ॥ ८ ॥

जिन देव तेरे चरणों में

जिनदेव ! तेरे चरणों में मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास हो।
जीवन-समर में हे प्रभो ! मुझे एक तेरी आस हो ॥ १ ॥
कर्त्तव्य-पथ से जो डिगाने विघ्न-गण आवे मुझे।
सन्तोष, भक्ति और दया का मन्त्र मेरे पास हो ॥ २ ॥
संसार-सागर में बहा दूं प्रेम की मन्दाकिनी।
दिल में तड़प हो प्रेम की और प्रेम जल की प्यास हो॥ ३ ॥
निज भाव-भापा दे[illegible] [illegible] रव [illegible] -रात हो।
निज धर्म हित यह [illegible] राण हो ॥ ४ ॥
संसार सागर में [illegible] भो।
मैं खुद खिवैया बन [illegible]

मैं बालपन में ब्रह्मचारी, रह सभी विद्या पढ़ूं ।
यौवन दशा में वन के श्रावक अन्त में सन्यास हो ॥ ६ ॥
यह आत्मा ही वन सके ऐ राम ! खुद परमात्मा ।
हे नाथ ! मेरी आत्मा का अन्त मोक्ष निवास हो ॥ ७ ॥

आनन्द मंगल चाहो रे मनावो महावीर

जो आनन्द मंगल चाहो रे मनावो महावीर ॥ टेर ॥
प्रभु त्रिशलाजी के जाया, है कंचन–वरणी काया ।
ज्याँ के चरण शीश नमावो रे— मना० ॥ १ ॥
प्रभु अनन्त ज्ञान गुणधारी, ज्यांरी सूरत मोहनगारी ।
ज्यां का दर्शन कर सुख पावो रे— मना० ॥ २ ॥
प्रभु जी की मीठी वाणी, है अनन्त सुखों की खानी ।
थें धार – धार तिर जावो रे — मना० ॥ ३ ॥
ज्यांके शिष्य बड़ा है नामी, सदा सेवो गौतम स्वामी ।
जो रिद्ध सिद्ध थें चावो रे— ॥ मना० ॥ ४ ॥
थांरा सर्व विघ्न टल जावे, मन वांछित प्रगटावे ।
फिर आवागमन मिटावो रे — मना० ॥ ५ ॥
है साल गुण्यासी भाई, देवास नगर के मांही ।
कहै चौथमल गुण गावो रे — मना० ॥ ६ ॥

जो भगवती त्रिशला तनय, सिद्धार्थ कुल के भान हैं

जो भगवती त्रिशला तनय, सिद्धार्थ कुल के भान हैं,
लिया जन्म क्षत्रिय कुण्ड में, प्रिय नाम श्री वर्द्धमान हैं ॥ १ ॥
जो स्वर्ण–वर्ण प्रलम्बभुज, सरसिज नयन अभिराम हैं,
करुणा सदन मर्दन मदन, आनन्द मय गुण धाम हैं ॥ २ ॥
जो अनन्त ज्ञानी हैं प्रभो ! और अनन्त शक्ति धाम हैं,
किस मुख से गुण वर्णन करु, मेरी तो एक जबान है ॥ ३ ॥
'योगिन्द्र मुनि' चिन्तन करत, जिनका कि आठों याम हैं,
उन वर्द्धमान जिनेश को मेरे अनेक प्रणाम हैं ॥ ४ ॥

卐

जैन विश्व गान

शिवपुर पथ–परिचायक जय हे, सन्मति युग–निर्माता ।
गंगा कल–कल स्वर में गाती, तव गुण गौरव–गाथा ।।
सुर नर–किन्नर तव पद–युग में, नित नत करते माथा ।
सब तेरे गुण गाते, सादर शीश झुकाते ।।
हे सद्बुद्धि प्रदाता ।
दुःख-हारक, सुख–दायक जय हे, सन्मति युग-निर्माता ।
जय हे जय हे जय हे, जय जय जय जय हे ।। १ ।।
मंगल–कारक, दया–प्रचारक, खग–पशु–नर–उपकारी ।
भविजन–तारक, कर्म–विदारक सब जग तव आभारी ।।
जब तक रवि शशि तारे, तब तक गीत तुम्हारे ।
विश्व रहेगा गाता चिर सुख शांति–विधायक जय हे ।।
सन्मति युग–निर्माता ।
जय हे, जय हे, जय हे जय जय जय जय हे ।। २ ।।
भ्रातृ – भावना भुला परस्पर, लड़ते हैं जो प्राणी ।।
उनके उर में प्रेम बसाती, तेरी मीठी वाणी ।
सब में करुणा जागे, जग से हिंसा भागे ।।
पावे सब सुख–साता ।
हे दुर्जय, दुःख–त्रायक जय हे, सन्मति युग–निर्माता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे ।। ३ ।।

जीवड़ा जग में कौन धणी

(तर्ज– बटाऊ आयो लेवा ने)

योतो स्वार्थ को सारो है संसार, जीवड़ा जग में कौन धणी ।।टेर।।
जिण बालक ने गोद खिलावे, लाड़ लड़ावे मात ।
बापूजी भी मोह में फंसिया, पाप कमारे दिन रात ।।जीवड़ा.।। १ ।।
आई मुंछ्या कुण ने पूंछ्या, दूजी मिल गई नार ।
माया रा भूखा पापीड़ा, जिन्दा ने देवे लड़–लड़ मार ।।जीवड़ा.।। २ ।।
बाल पणां में साथ खेलिया, जामण जाया वीर ।
एक पलक दूरा नहीं रहता, भाई की भाई चढ़तो भीड़ ।।जीवड़ा.।। ३ ।।
कनक–कामनी के संग लाग्या, भूल गया वा बात ।
आज कचैड्या जोर जमावे, भाई की भाई करतो बात।।जीवड़ा.।। ४ ।।

प्राणां सूं प्यारी ही ज्यांरे, राणी पिंगला एक ।
महावत पर हो गई दीवानी, त्रिया चरित्र लेवो देख ।।जीवड़.।। ५ ।।
देख अमर फल आंख खुल गई, मानी गुरु की सीख ।
राजा भरतरी जोग रमायो, घर घर में मांगी जाके भीख ।।जीवड़.।।६।।
महल छोड़ कर भी दमयन्ती, आई पति के साथ ।
सुख दुःख की परवा नहीं कीनी, वन में बिताया दिन रात।।जीवड़.।।७।।
विकट बनी में आया दोनों जद कियो एक अकाज ।
निद्रा में जद सोई अकेली, छोड़ गयो रे नल राज ।।जीवड़.।। ८ ।।
स्वार्थ वश कैकयी भी रुठी, राम गया वनवास ।
स्वार्थ वश सीता ने लायो, रावण को हुयो रे विनाश ।। जीवड़.।। ९ ।।
स्वार्थ हो तो सब बण जावे, भाई बहन परिवार ।
वरना सब दूरा रह जावे, मरता की पूछे नहीं सार।।जीवड़.।। १० ।।
धाय खिलावे ज्यूं बालक ने, तूं कर जग से प्यार ।
अन्तर 'जीत' रहीजे न्यारो, मोह मत करजे रे गिंवार।।जीवड़.।। ११ ।।

जैनों सब मिलकर

(तर्ज— वो दिन धन होसी)

पालो दृढ़ आचार जैनो ! सब मिलकर ।। ध्रुव. ।
प्रातः काल सदा उठ जाओ, अपने निज स्थानक में आवो ।
आलस दूर निवार जैनों सब.......।। १ ।।
संतों को पंचांग नमाओ, देव धर्म को मन में ध्याओ ।
जपो मन्त्र नवकार, जैनों सब.......।। २ ।।
सामायीक का लाभ उठाओ, प्रभु प्रार्थना विधि से गाओ ।
करो मधुर उच्चार, जैनों सब.......।। ३ ।
नित नियम चौदह चितारो, व्रत पच्चखाण नया कुछ धारो ।
रोको आश्रव द्वार, जैनों सब....... ।। ४ ।।
करो मनोरथ त्रय का चिन्तन, अरु विश्राम चार का सुमिरन ।
भावो भावना बार, जैनों सब.......।। ५ ।।
सुनो सदा मुनियों का भाषण पूछो प्रश्न करो हल धारण ।
सीखो ज्ञान अपार, जैनों सब.......।। ६ ।।
छाने बिना न पानी पीयो, अशुद्ध भोजन कभी न खाओ ।
पालो नित चौविहार, जैनों सब.......।। ७ ।।

अष्टम पाक्षिक पौषध धारो, प्रतिक्रमण कर दोष निवारो।
प्रायश्चित लो धार, जैनों सब.......॥ ८ ॥
सोते समय करो संथारा, आयुष्य का रक्खो आगारा।
उठने पर लो पार, जैनों सब.......॥ ९ ॥
महामन्त्र को कभी न भूलो, हर कामों में पहले बोलो।
अथवा लोगस्स चार, जैनों सब.......॥१०॥
जैन–धर्म पर रक्खो श्रद्धा, करो न झूठी परमत निंदा।
रहो सदा होशियार, जैनों सब.......॥११॥
रहो परस्पर हिलमिलजुल कर, कलंक निन्दा चुगली तजकर।
करो संघ जयकार, जैनों सब.......॥१२॥
जो जिन धर्म लजावे कोई, उनको साथ न देना कोई।
कर दो बहिष्कार, जैनों सब.......॥१३॥
सात व्यसन को दूर निवारो, बारह श्रावक व्रत स्वीकारो।
लो इक्कीस गुणधार, जैनों सब.......॥१४॥
जीवन जीवो ऐसा सुन्दर, लगे सभी को प्यारा सुखकर।
'पारस' करे पुकार, जैनों सब.......॥१५॥

जब हम ही छोड़ संसार

जब हम ही छोड़ संसार,
सकल परिवार बने अनगारा, वो दिन धन है हमारा ॥टेर
आरम्भ परिग्रह हैं जो इतने,
जिसमें हम फंस रहे हैं कितने।
जिस दिन पायेंगे, इससे ही छुटकारा ॥ १
दुनियां यह सारी झूठी है,
भ्रमकारक पोली मुट्ठी है।
तन धन यौवन है, इन्द्र–जाल अनुहारा ॥ २
ये मात पिता पुनि नन्दन है,
स्त्री का जो मोह वन्धन है।
जिस दिन टूटेगा, ये ही जाल पसारा ॥ ३
खाने से न तृप्ति हो पाई,
चीजें तो हमने सब खाई।
तृप्ति होगी जब कर देंगे संथारा ॥ ४

ये तीन मनोरथ हैं प्यारे,
हर रोज हृदय से ही धारे ।
श्रावक लोगों का, यह है नेम इसारा ।। ५ ।।

जम्बू कयो मानले रे जाया

राजगृहीना वासियाजी, 'जम्बू' नाम कंवार,
'ऋषभदत्त' रा डीकराजी 'भद्रा' ज्यारी मांय ।
जम्बू कह्यो मान ले जाया, मत ले संजम भार ।।जम्बू.।। १ ।।
सुधर्मा स्वामी पधारिया जी, राजगृही रे मांय ।
'कोणक' वंदन चालियो जी, जम्बू वंदन जाय ।।जम्बू.।। २ ।।
भगवंत वाणी वागरी जी, वरसै अमृत धार ।
वाणी सणी वैरागिया जी, जाण्यो अथिर संसार ।।जम्बू.।। ३ ।।
घर आया माता कने जी, विनवे बारम्बार ।
अनुमति दीजो मोरी मात जी, माता लेसूं संजम भार ।
माता मोरो सांभलो, जननी लेसूं संजम भार ।। जम्बू. ।। ४ ।।
ये आठूं ही कामनी जम्बू, अपछर रे उणीहार ।
ए[illegible]णी ने किम परिहारो, ज्यांरो किम निकले जमार ।।जंबू.।। ५ ।।
[illegible]े कामणी जम्बू, तुझ बिन विलखी थाय ।
[illegible] नीसरे, ज्यांरा बदन कमल बिलखाय।।जंबू.।। ६ ।।
[illegible]णी माता, मिथ्या मत भरपूर ।
[illegible] ज्यांरा नहीं हुवे दुरगत दूर ।।जंबू.।। ७ ।।
[illegible]ा जम्बू, इम किम दो छिटकाय ।
[illegible]रता थांने, दया नहीं आवें दिल माय।।मा.।। ८ ।।
[illegible]पियो माता, माय ने वाप अनेक ।
पालसूं माता, आणी ने चित्त विवेक ।।मा.।। ९ ।।
[illegible] लाकड़ी जम्बू, तूं म्हारे प्राण आधार ।
म्हारे जग सूनो, जाया जननी जीतव राख। जंबू.।। १० ।।
[illegible]ड़त रो पींजरो माता, सूओ जाणे फंद ।
काम भोग संसारना माता, ज्ञानी वताया झूठा फंद ।।मा.।। ११ ।।
पंच महाव्रत पालणा जम्बू, पाँचु ही मेरु समान ।
दोष बयालीस टालना जम्बू, लेणो सूझतो आहार ।।जंबू.।।१२।।
पंच महाव्रत पालसूं माता, पांचु ही सुख समान ।
दोष बयालीस टालसूं माता, लेसूं सूझतो आहार ।। मा. ।।१३।।

संजम मारग दोहिलो जंबू , चलणो खाण्डे री धार ।
नदी किनारे रूंखड़ो जंबू , जद–तद होय विनाश ।। जंबू ।।१४।
चाँद बिना किसी चाँदणी जम्बू तारा विना किसी रात ।
वीर बिना किसी वेनड़ी जम्बू, झुरसी वार–तिवार ।।जम्बू ।।१५
दीपक विना मन्दिर सूनो जम्बू, पुत्र विना परिवार ।
कंत बिना किसी कामनी जम्बू झूरसी वारू मास ।।जम्बू ।।१६
मात–पिता मेलो मिल्यो, माता मिल्यो अनन्ती वार ।
तारण समरथ कोई नहीं माता पुत्र पिता परिवार । माता ।।१७
मोह मतकर मोरी माताजी, माता मोह कियो बंधे कर्म ।
हाल हूलर कई करो माता, करजो जिनजी रो धर्म ।।माता ।।१८
ये आठूं ही कामणी जम्बू, सुख – बिलसो संसार ।
दिन पाछा पड़िया पछे, थे तो लीजो संजम भार ।।जम्बू ।।१
ए आठूं ही कामनी माता समझाई एकण रात ।
जिनजी रो धर्म पिछाणियो माता, संजम लेसी म्हारे साथ।मा।।२
माता–पिता ने तारिया जम्बू तारी छै आठूं ही नार ।
सासू–सुसरा ने तारिया जम्बू, पांच से प्रभव परिवार ।
जम्बू भलो चेतियो जाया, लीना संजम भार ।।जम्बू ।।२
पांच से सत्ताइस जणा सूं, जम्बू लीनो संजम भार ।
इग्यारे जीव मुगते गया साधु, बाकी स्वर्ग मंझार ।जम्बू ।।२

जो दस बीस पचास भये

जो दस वीस पचास भये, शत होय हजार तो लाख मंगेगी
कोटी अरव खरब असंख, धरापति होने की चाह जगेगी
स्वर्ग पाताल को राज मिले, तृष्णा तबहूं अति आग लगेगी
'लाभ' इक संतोष विना, शठ तेरी भूख कभी न भगेगी

जब तेरी डोली निकाली जायेगी

(तर्ज— चन्द रोज........)

जब तेरी डोली निकाली जायेगी ।
विन मुहूरत के उठाली जायगी ।। टेर ।।
उन हकीमों से यों कहदो बोलकर,
करते थे दावा कितावें खोल कर ।
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ।। १

जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया ।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी ॥ २ ॥
होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,
कैसे मुकरोगे वहां पर तुम जनाब ।
जब बही तेरी निकाली जायगी ॥ ३ ॥
ए मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ,
है किराये पर मिला तुझको मकां ।
कोठड़ी खाली कराली जायेगी ॥ ४ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार,
है खड़ा पीछे व माली खबरदार ।
मार कर गोली गिरा दी जायेगी ॥ ५ ॥
चेत भय्यालाल अब जिनवर भजो,
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो ।
तो आत्मा परमात्मा बन जायेगी ॥ ६ ॥

जपो–जपो नवकार

(तर्ज– लेके पहला–पहला प्यार)

जपो–जपो नवकार, जासे होवे मंगलाचार ।
महामन्त्र की महिमा है अपरम्पार ॥ टेर ॥
नमो अरिहंत सिद्ध नमूं आयरिय ।
नमो उवज्झाय सव्व साहू वन्दीय ।
चवदह पूरब का है सार ।
भव्य जीवों का आधार ॥ महामंत्र ॥ १ ॥
इसी नाम से तरी चन्दनबाला ।
श्रीमती के सर्प हुआ पुष्पों की माला ।
सुनो सुनो नर नार ।
हुवा जय जयकार ॥ महामंत्र ॥ २ ॥
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा है,
सीता के अग्नि का नीर बना है ।
सुभद्रा की सुनी पुकार ।
खुल गये खट–खट चंपा द्वार ॥ महामंत्र

श्रीपाल मैना ने ध्यान लगाया ।
कष्ट मिटे हुई कंचन काया ।
आई जीवन में वहार ।
छाया हर्ष अपार ॥ महामंत्र. ॥ ४ ॥
इसो मन्त्र से कई रोते हंसे हैं ।
बिगड़े बन कई उजड़े बसे हैं ।
जपो जपो जपो वारम्वार ।
'केवल मुनि' हो बेड़ा पार । महामंत्र.॥ ५ ॥

जय जय जय पार्श्व जिनन्दा

जय जय जय प्रभु पार्श्व जिनन्दा,
दुष्ट कर्म सब दूर निकन्दा ॥ जय जय० ॥ १ ॥
दीनदयाल दया के सागर ।
जगतारक प्रकटे प्रभु चन्दा ॥ जय जय० ॥ २ ॥
नाग नागिन जलत बचाये ।
गुन गावत सूर नर मुनि वृन्दा ॥ जय जय० ॥ ३ ॥
निश दिश घड़ी छिन जो नर ध्यावे ।
विघ्न हरत सुख करत आनन्दा ॥ जय जय० ॥ ४ ॥
"शिवदयाल" सुमरो प्रभु पारस ।
जन्म – जन्म के कट जाय फन्दा ॥ जय जय० ॥ ५ ॥

जै श्री पार्श्व प्रभु

जै श्री पार्श्व प्रभु, स्वामी जै श्री पार्श्व प्रभो ।
आशा पूरण करिये, हरिये कष्ट विभो ॥ ओम जय० ॥ टेर ॥
'पारस" पुरुषादानी शरण पड़ा तेरी ।
धरणेन्दर पद्मावती, सहाय करो मेरी ॥ ओम जय० ॥ १ ॥
प्रति दिन तुम्हें मनाऊं, वांछित फल पाऊं ।
पाकर पारस स्वामी, मैं वलिवलि जाऊं ॥ ओम जय. ॥ २ ॥
मम गृह कमला आवे, सुख में दिन जाये ।
दास तुम्हारा निशदिन जय कीरति पावे ॥ ओम जय. ॥ ३ ॥
सव विध अव तो मुझ पर दया करो स्वामी ।
पाहि त्राहि माम् दिन है अन्तरयामी ॥ ओम जय० ॥ ४ ॥

कामधेनु सुर तरु से, मुझ को फल दाता ।
चिन्तामणि सम तुमसे, सब कुछ मैं पाता ।। ओम जय. ।। ५ ।।
परम दिव्य शिव सम्पति, 'केवल' को दीजे ।
पुत्र समझ कर अपना, जल्दी सुध लीजे ।। ओम जय. ।। ६ ।।

जीवन सफल बनाना

जीवन सफल बनाना, बनाना प्रभु वीर जिनराज जी ।। टेर ।
मन मन्दिर में घुप अन्धेरा, ज्ञान की ज्योति जगाना-जगाना प्रभु. ।। १ ।।
धधक रहा है द्वेष दावानल, प्रेम पयोधि बहाना-बहाना प्रभु. । २ ।।
बीच भंवर में नैया फंसी है झटपट पार लगाना लगाना प्रभु. ।। ३ ।।
त्याग मार्ग का पक्ष न छोड़ूं, चाहे दुश्मन हो सारा जमाना२ प्रभु. ।। ४ ।।
प्राणी मात्र को सुख उपजाऊं, चाहूं न चित दुखाना-दुखाना प्रभु. ।। ५ ।।
मैं भी तुम-सा जिन बन जाऊं, परदा दुई का हटाना-हटाना प्रभु. ।। ६ ।।
'अमर' निरन्तर आगे बढ़ूं मैं, कर्तव्य वीर बनाना-बनाना प्रभु. ।। ७ ।।

जिनवाणी

शिक्षा दे रही जी हमको, जिन देवों की वाणी ।। टेर ।।
सेठ सुदर्शन धर्म न छोड़ा पच पच हारी रानी ।
सूली बन गई राज सिंहासन, यह है धर्म निशानी ।। १ ।।
सच्चा प्रेम करो तुम जग में, सुख पावे सब प्राणी ।
दुनिया में मशहूर है, जैसे मित्र दूध और पानी ।। २ ।।
जैसा बोया वैसा काटे, बात यह सबने मानी ।
नेक कर्म का फल है मीठा, कह गये केवली, ज्ञानी ।। ३ ।।
अभय-दान सा दान न कोई जैन धर्म सम वानी ।
मुक्ति सा कोई धाम नहीं, और क्षमा जैसी कुर्वानी ।। ४ ।।
धन दौलत सब धरा रहेगा, संग न पाई जानी ।
धर्म छोड़ धन पर ललचावे, होगी सख्त हैरानी ।। ५ ।।
धन के पीछे फिरे भटकती, है दुनिया दीवानी ।
दया-धर्म बिन सफल न होगी, कभी 'रतन' जिन्दगानी ।। ६ ।।

★

जीना क्या

(तर्ज— जब प्यार किया तो·······)

प्रभु नाम लिए बिन जीना क्या !
नाम लिया नहीं, भक्ति करी नहीं तो फिर बन्धु कीना क्या ॥टेर॥
जिनवर का गुणगान किया नहीं, प्रभु प्रेमामृत पान किया नहीं ।
मोह मदिरा का प्याला पिया, तो ऐसा भी पीना पीना क्या···· ॥ १ ॥
धन्धों में खोई सारी उमरियाँ, पापों की बांधी तूने गठरिया ।
मोती न बीने, हीरे न बोनें, कंकर बोने तो बीना क्या······· ॥ २ ॥
मानव हो करुणा नहीं लाया, दुखिया का यदि दुःख न मिटाया ।
हीना होकर रंग न हो तो, गोबर है तो हीना क्या······· ॥ ३ ॥
जग में कोई अमर नहीं आया, हरएक रिटन टिकट संग लाया ।
स्वर्ग मुक्ति के द्वार में आकर, कुछ न लिया तो लीना क्या······· ॥ ४ ॥
'केवल मुनि' कुछ लाभ उठाना पुण्य बढ़ाना धर्म कमाना ।
आत्मानन्द में भीना नहीं तो, विषयों के रस में भीना क्या······· ॥ ५ ॥

जाना ही पड़ेगा

(तर्ज— दुनिया में हम आये हैं तो)

संसार में आया उसे जाना ही पड़ेगा ।
घर और कहीं जाके बसाना ही पड़ेगा ॥ ध्रुव ॥
उड़ते हुए पंछी ने, लिया रैन बसेरा ।
उड़ना ही पड़ेगा, उसे होते ही सबेरा ॥
कल रात कहीं और बिताना ही पड़ेगा ॥ १ ॥
बबूल बोयेगा तो उसे कांटे गड़ेंगे ।
और आम बोएगा तो उसे आम मिलेंगे ॥
सुख चाहे उसे कांटे बचाना ही पड़ेगा ॥ २ ॥
भिखारी से लेकर बड़े से बड़े मर गये ।
लाखों यहां पे जल गए लाखों ही गड़ गये ।
तेरे लिए भी कफन मंगाना ही पड़ेगा ॥ ३ ॥
'केवल मुनि' चमकेगा, जो शुभ काम करेगा ।
गायेगी गीत दुनिया, जो तू नाम करेगा ॥
तू मान या न मान, सुनाना ही पड़ेगा ॥ ४ ॥

जिनवाणी

लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ।
पतितों को पकड़ उठाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ टेर ॥
लो मुक्ति अर्जुन पाता है, परदेशी भी तिर जाता है ।
पापों से उन्हें छुड़ाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥लाखों. ॥ १ ॥
अधर्मों का भी उद्धार किया, भव-भव के वन्द काट दिया ।
सहों को शान्त वनाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥लाखों.॥ २ ॥
बन गये कई राजा साधु, संसार का वैभव ठुकरा कर ।
निर्वेद का पाठ पढ़ाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ लाखों. ॥ ३ ॥
केवल मुनि' ज्ञान के दीप जगे, अज्ञान अंधेरा बीत गया ।
मोह का पर्दा खिसकाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥लाखों. ॥ ४ ॥

जाली हुंडी

(तर्ज— रेशमी सलवार कुर्ता·······)

कैसे हो कल्याण, करनी काली है ।
नहीं होगा भुगतान, हुण्डी जाली है ॥ ध्रुव ॥
तू तन का काला धब्बा, धोता ले फोरन पानी ।
तेरे मन पर कितने काले, धब्बों की पड़ी निशानी ॥
क्यों न निहाली है? नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है ॥ १ ॥
तेरा बिगड़ रहा है इंजिन, गाड़ी किस तरह चलेगी ।
दीपक में तेल खतम है, बत्ती किस तरह जलेगी ॥
बुझने वाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है ॥ २ ॥
तेरे अन्दर जान नहीं है, कैसे फिर देह चलेगी ।
तेरी नैया फूट रही है, कैसे फिर पार लेगेगी ।
डूबने वाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है ॥ ३ ॥
जाली हुण्डी को जला दे ! इस मन को शुद्ध वनाले ।
'धन' ज्ञानमृत है हाजिर, क्यों मरता प्यास वुझाले ॥
सुगुरु गुणशाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है ॥ ४ ॥

卐

जैन धर्म के १४ गुण

जय वीर धर्म की बोलो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ टेर ॥
१. जैन धर्म ही सत्य अनुत्तर २. धर्म न इससे कोई बढ़कर।
श्रद्धा सुदृढ़ करलो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ १ ॥
३. अरिहन्तों ने इसे बताया, अद्वितीय सब में कहलाया।
पूरी प्राप्ति जमालो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ २ ॥
४. जैन धर्म में कमी न कुछ है, ५. स्याद्वाद सिद्धान्त सहित है।
गहरी रुचि बनालो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ ३ ॥
६. है शत प्रतिशत शुद्धि वाला, ७. तीनों शल्य मिटाने वाला।
शीघ्र—स्पर्शना करलो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ ४ ॥
८. अविचल सिद्धि देने वाला, ९. आगे कर्म खपाने वाला।
मन, वच, तन, से पालो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ ५ ॥
१०. यही मोक्ष तक पहुंचायेगा, ११. सच्ची शान्ति दिखलायेगा।
इसके पीछे हो लो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ ६ ॥
१२. इसमें विकृति कभी न आती, १३. इसकी संधि टूट न पाती।
'पारस' १४. सब दुःख टालो, जय जैन धर्म की बोलो ॥ ७ ॥

जिनेश्वर वीर और उनके शिष्य

(तर्ज— कभी सुख है कभी दुःख है………)

जिनेश्वर वीर और उनके, शिष्य अब याद आते हैं।
हरष करते भजन गाते, बड़ों को सिर झुकाते हैं ॥ टेर ॥
जिनेश्वर— डसा कौशिक अंगूठे में, बहाई दूध की धारा।
क्षमा का बोध दे तारा, 'प्रभु' वे याद आते हैं ॥ १ ॥
क्षमण— गये आनन्द श्रावक घर, भूल तत्क्षण क्षमाने को।
जो चौदह पूर्वी होकर, भी वे 'गौतम' याद आते हैं ॥ २ ॥
श्रमणी— पिता बिछुड़े सिधाई मां, बिकी और भोंयरी डाली।
न फिर भी धैर्य त्यागा, वे 'चन्दना' याद आती है ॥ ३ ॥
श्रावक— देव मिथ्यात्वधारी के, कठिन परिषह सहे तीनों।
तथापि व्रत न खण्डा, वे 'कामदेव' याद आते हैं ॥ ४ ॥
श्राविका—जो स्त्री जाति की होकर, भी विलक्षण प्रश्न करती थी।
ज्ञान चर्चा की रसिका, वे 'जयन्ती' याद आती हैं ॥ ५ ॥
कहे केवल अरे 'पारस' बना अपना जीवन इनसा।
यही है सार सुनने का, कि हम भी याद बनते हैं ॥ ६ ॥

जैनी यूं कई सूताजी भरिया नींद

कई सूताजी भरिया नींद, जमानो सारो बदल गयो ।। टेर ।।
मं री जड़ां खोखली, हाथ करीने कोधी ।
स रे चारे लागा; धरम री ज्योति नहीं लीधी ।। जमानो ।। १ ।।
कार मंत्र नहीं आवे; गड़-गड़ करतां बोलो ।
द नहीं तीर्थंकर का; बोलो तो पोल सारी खोलो ।।जमानो ।। २ ।।
गाता आवे थकेलो, माला फेरत मोत ।
ो नों नहीं आवे; वान्दो पापांरी मोटी पोट ।जमानो ।। ३ ।।
पतो नहीं है; सामायिक नहीं आवे ।
हपत्ति तो, केवे के जीव घबरावे ।।जमानो ।। ४ ।।
र्यादा छोड़ी, रात घटाघट खावो ।
पतो नहीं है, कन्द सभी घटकावो । जमानो ।। ५ ।।
, तीन मनोरथ, चिन्तो नहीं हर रोज ।
ा गुरु दर्शन में, जातां लागे भारी बोझ ।। जमानो ।। ६ ।।
त है, कांई कांई केवां; अनरथ हुआ अनेक ।
रु कहे चेतो जैनों; कुछ तो निभावो थांरी टेक ।।जमानो ।। ७ ।।

जय बोलो भगवान की

(तर्ज— जय बोलो बईमान की......)

ा मार्ग पर चलना; कुछ सीखो बातें ज्ञान की ।
जय बोलो भगवान की, जय बोलो ।। टेर ।।
ु की भक्ति प्रवचन सुनमा; भजन भी हमने छोड़ा ।
ीं सिनेमा जाना भूला; स्थानक से मुंह मोड़ा ।।
तपस्या की शक्ति को, हम अपने में नहीं पाते ।
ा-कथा भी नहीं सुहाती; नोविल पढ़ते जाते ।।
भव में क्या ले जाना, कुछ फिकर करो सामान की । जय बोलो ।।१।।
ीं देश की सच्ची सेवा, झूठे रौब जमाते ।
फिस में जाकर रिश्वत से, जेब गर्म कर लाते ।।
दुकान पे कम तोलें हम, झूठी बात बनाते ।
ीं अपनी झूठी कमाई, रोकड़ रोज मिलाते ।।
य-पाप है कितना; इसका भी करो अनुमानजी ।।जय बोलो ।। २ ।

जग के दुःख की परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की चाह नहीं है।
मेटो जन्म मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ॥ मेटो ॥ ५ ॥
लाखों बार तुम्हें शीश नमाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं।
'पंकज' व्याकुल भया, दरशन बिना यह जीया लागे खारा॥मेटो॥६॥

तेरी महिमा बड़ी महान

वर्द्धमान श्री महावीर को, मेरा हो प्रणाम ।
तेरी महिमा बड़ी महान, तेरी······ ॥
करुणासागर दीनदयालु, तारा सकल जहान,
तेरी महिमा बड़ी महान, तेरी······॥टेर॥
पिता सिद्धार्थ त्रिशला जाया, घर-घर में आनन्द था छाया।
देव – देवियां मंगल गाया, धर्म का तू अवतार कहाया।
कुण्डलपुर में जन्म लिया था, वीर प्रभु भगवान, तेरी······॥ १ ॥
दीन दुःखी का तू रखवाला, तूने तारी चन्दनबाला,
फेरी जिसने तेरी माला, उसका संकट तूने टाला।
चण्डकौशिया जैसे तारे, बड़े-बड़े शैतान ॥ तेरी······॥
यज्ञ बलि को दूर हटाया, दया धर्म का नाद बजाया,
छुआ – छूत का भूत भगाया, मानवता का मान ब...
'ज्ञान मुनि' जिनधर्म का जग में, खिला खूब उद्यान तेरी ······

तन कोई छूता नहीं

तन कोई छूता नहीं, चेतन निकल जाने के बाद ।
फेंक देते फूल को, खुशबू निकल जाने के
आज जो करते किलोलें, खेलते हैं साथ में
कल डरेंगे देख कर तन निर्जीव हो जाने
बोलते जब तक सगे हैं चार पैसे पास में
नाम भी पूछे नहीं, पैसा निकल जाने
स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत उठ गई
भूल जाता मां को बच्चा, पर निकल जाने
इस अस्थिर संसार में तू, क्यों घमण्डी हो रहा
देख फिर पछतायगा, समय निकल जाने
कैसा सुखिया होयगा, जो नहीं करता धर्म ।
नरक में जाना पड़ेगा, पुण्य निकल जाने के

तप बड़ो रे संसार में

तप बड़ो रे संसार में, जीवा उज्जल थावे रे ।
कर्म रूप ईंधन जले, शिव रमणी सिधावे रे ।। टेर ।।
तपसूं रूप पावे घणो, पावे सुर अवतारो रे ।
रिद्धि सिद्धि सुख संपदा, पामे लील भंडारो रे ।। १ ।।
तप सूं रोग दूरा टले, विघ्न सहू मिट जावे रे ।
तप सू देवता सेवा करे, वली लक्ष्मी घर आवे रे ।। २ ।।
खरो खज़ानों तप माल रो, कोइक पुण्यवंत पावे रे ।
दुर्गति जाता ने पाले सही, शिव रमणी सिधावे रे ।। ३ ।।
राजा आदर देवे घणों, ज्यांरो सगला नर धीरो रे ।
लोक भाषा ऐसी कहै, ज्यांरो तपस्या में सीरो रे । ४ ।।
पोते जो तपस्या करे, ज्यांरी आन बहु माने रे ।
सेवक आन लोपे नहीं, आवागमन सूं छूटे रे ।। ५ ।।
अज्ञान पणे जो तपस्या करे, तो भी निष्फल नहीं जावे रे ।
ज्ञान सहित तपस्या करे, वे तो शिव रमणी सिधावे रे।। ६ ।।
करता एक नवकारसी सो वरस नरका सूं छूटे रे ।
इस पच्चखान में नफो घणों, जन्म मरण सूं छूटे रे ।। ७ ।।
तपस्या कीधी महावीरजी, कर्मा ना दल काटिया रे ।
धन्ना मुनिश्वर तप तपियो, स्वार्थ सिद्ध जाय लागा रे।। ८ ।।
बेले-बेले कियो पारणो, गणधर गौतम स्वामी रे ।
खंधक मुनि तप तपियो, हुआ मुगत का गामी रे ।। ९ ।।
अर्जुन माली तप तापियो, मुनिवर मेघ कुमारो रे ।
परदेशी राजा तपस्या करी, पाया अमर विमानो रे ।।१०।।
आठ राणी श्रीकृष्ण की, ब्राह्मी चन्दनबाला रे ।
तेइस श्रेणिक नी सुन्दरी, काटिया कर्म ना जाला रे ।।११।।
तोड़िया कर्म चण्डाल ने रे, काया सूं तपस्या करी करी रे ।
आसौज त्रेपन चौमासो रे, 'जेठ मुनि' कहे तप सारो रे।।१२।।

तुम माल खरीदो

त्रिशला नन्दन की खुली दुकान जी, तुम माल खरीदो ।।टेर।।
सूत्र रूप भरी वहु पेटी, मुनिवर वने वजाजी ।
वजेह-वजेह का माल देखलो, कर अपना मन राजी जी ।। १ ।।

जिनवाणी को गज है सांचो, जरा फरक मत जान ।
नाप-नाप ने देवे सत गुरु, मत करो खेंचा तान जी ॥ २ ॥
जीव-दया की मलमल भारी, शुद्ध मन मशरू लीजे ।
डबल जीण समता तणो सरे, चावे सो कह दीजे ज़ी ॥ ३ ॥
तपस्या को वन्दागार भारी साड़ी ले सन्तोप ।
ऐसा कर व्यापार जिनों से चेतन पावे मोक्ष ज़ी ॥ ४ ॥
खुशी होवे तो सौदा लेना, नहीं जवरी का काम ।
मन माने सो माल ले जावो, मैं नहीं मांगां दाम जी ॥ ५ ॥
माल बिके छै थोड़ी जिण से, खरच पूरो नहीं चाले ।
आवेगा कोई उत्तम प्राणी माल हमारे पल्ले जी ॥ ६ ॥
माल बिके तो रहनो होसी, सुन जो भवियन वात ।
भरिया खजाना कदिय न खूटे, सत गुरु दीना हाथ जी ॥ ७ ॥
उन्नीसे छतीस साल में, अम्बाले चौमास ।
'करण मुनि' उपदेश सुनाया, मोक्ष जाने की आस ज़ी ॥ ८ ॥

तेरा ही आधार

(तर्ज— चुप चुप खड़े हो…….)

डगमग डगमग नाव मझधार है ।
तेरा ही आधार प्रभु तेरा ही आधार है । ध्रुव॥
झंझा के झकोरे प्रभु झूलने सी झूलती ।
छोटी बड़ी लहरियों पै. उतराती डूबती ॥
आशा की किरण तूं ही तूं ही पतवार है ॥ १ ॥
करुणा क्रन्दन सुन चन्दना को तार दी ।
अर्जुन माली की नाथ बिगड़ी सुधार दी ॥
दयाशील देव क्यों देर मेरी बार है ॥ २ ॥
माता तूं ही पिता तूं ही, तू ही मेरा प्राण है ।
तेरे हाथ लाज अब मेरी भगवान है ॥
दीनवन्धु दीन की छोटी-सी पुकार है ॥ ३ ॥
मंगल करण तू ही तारण तरण है ।
पतित पावन "मुनि केवल" शरण है ॥
तेरी दया – दृष्टि से वेड़ा मेरा पार है ॥ ४ ॥

卐

तारो, तारो, तारो निज आत्मा

तरो, तारो, तारो निज आतमा ने तारो रे ।
मिनख जमारो आयो हाथ में ॥ टेर ॥
हिंसा भूठ चोरी जारी लोभ लालच छोड़ो रे ।
मनड़ा ने मोड़ो माया मोह सूं ॥तारो तारो ॥ १ ॥
वैर जहर झगड़ा राड़ आप-सी मिटावो रे ।
जिन गुण गावां चित चाव सूं ॥तारो तारो ॥ २ ॥
ध्यान जिनराज में थे स्नेह लगाओ रे ।
लाभ कमाओ सत संघ सूं ॥तारो तारो ॥ ३ ॥
मीठा-मीठा ज्ञान ध्यान आतम में रमावो रे ।
संकट सिधावो शिव लोक में ॥तारो तारो ॥ ४ ॥
ज्ञानी बण मायली आँखियां सूं जोवो रे ।
सोवो मती भव नींद में ॥तारो तारो ॥ ५ ॥
जागण रो मौको आयो सुगुरु जगावें रे ।
धर्म सुनावे जिनराज रो ॥तारो तारो ॥ ६ ॥
अमृत समान मीठो धर्म सुणावे रे ।
अमर बणावे इण जीव ने ॥तारो तारो ॥ ७ ॥
अमर बता गुरु सिखड़ी खुणावे रे ।
जोधाणें में छाई रंगरलो रे ॥ तारो तारो ॥ ८ ॥

तुम हो तीन जगत के स्वामी

तुम हो तीन जगत के स्वामी, तुम हो घटघट अन्तर्यामी ।
अर्हन्त ! चौबीसी भगवान, विनय से बार-बार वन्दामी ॥ टेर ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपासा-२ ।
चन्द्र सुविधि शीतल श्रेयांस, बासु विमल शिव वासा-२ ।
मुझ में बहुत भरी है स्वामी, करदो मुझको सत्पथगामी ॥ १ ॥
अनन्त धर्म शान्ति, कुन्थु अर मल्लि सुव्रत नेमि नेमा-२ ।
पारस महावीर ग्यारा गुणधर बीस विहर जिन खेमा-२ ।
कहता "पारस" चरणे नामी, करना कृपा कृपानिधानी ॥ २ ॥

सुर नर जिनकी भक्ति करत हैं, जिनवर सूं लिव लिया है।
सेवा कियां मिले सुख संपत, सब जीवन सुख पाया है।।देखो.।।
देवी देव मिले बहु तेरे, भविजन मंगल गाया है।
तीन लोक में महिमा प्रभु की, 'चंद्रकुशल' गुण गाया है।।देखो.।।
देखो रे आदेश्वर बावा, कैसा ध्यान लगाया है।
कैसा ध्यान लगाया रे बावा, कैसा मन समझाया है।।देखो.।। ५।।

दया सुखों नो बेलड़ी दया सुखों नी खान

दया सुखों नी बेलड़ी, दया सुखों नी खान।
अनंता जीव मुक्ति गया, दया तणा फल जान।। १।।
हिंसा दुःखों नी बेलड़ी, हिंसा दुःखों नी खान।
अनंता जीव नरके गया, हिंसा तणा फल जान।। २।।
चेतो रे भवी प्राणियां, ओ संसार असार।
स्थिरता कोई दीसे नहीं, धन जोवन परिवार।। ३।।
धर्म करो तमे प्राणियां, धर्म थकी सुख होय।
धर्म करंता जीव ने, दुखिया न दीठा कोय।। ४।।
जीव-दया पाली सही, पाली सही छः काय।
वस्ता घरनो पाहुणो, मीठा भोजन खाय।। ५।।
जीव-दया पाली नहीं, पाली नहीं छ काय।
सूना घरनो पाहुणो, जिम आयो तिम जाय।। ६।।
रत्न पड्यु छे बाजारमा, रह्यो गरद लपटाय।।
मूरख जाणे कांकरो, चतुरां लियो उठाय।। ७।।
चोहटा केरा बजारमां, लांबा पान खजूर।
चढ़े सो चाखे प्रेमरस, पड़े सो चकना चूर।। ८।।
ए शिखामण सांची कही, सर्व ने हितकार।
कांइक दया करुणा राखजो, थांने सांभल्या नु परिमाण। ९।।
खरो मारग वीतरागनो, सूक्ष्म जेहना भेद।
शाणा थईने श्रद्धजो, मनमां राखि उमेद।। १०।।
डिगाव्या डिगजो मती, निश्चल राखजो मन।
हिंसायी रहेजो वेगला, कहें वासो धन धन।। ११।।
ढील न कीजे धर्मनी, तप जप लीजे लूट।
जैसी सीसी कांच की, जाय पलकमों फूट।। १२।।

दुषम आरो पंचमो, निश्चल राखजो मन ।
थोड़ामां नफो घणो, जेम कूड़ा मांही रतन ॥ १३ ॥
साधु चंदन बावना, शीतल जाको अंग ।
लहर उतारें भुजंग की, देवे ज्ञान को रंग ॥ १४ ॥
साधु बड़े परमारथी, मोटो जिनको मन ।
भर-भर मुष्टी देत है धर्म रूपी यो धन । १५ ॥
हलु करमी जीव ने रुचे ए उपदेश ।
खरो मारग वीतरागनो जेमा कड़ नहीं लवलेश ॥ १६ ॥

दुनिया एक बाजार है

एक बाजार है, सौदे सब तैयार हैं ।
जी चाहे सो लीजिये, नहीं इनकार है । ध्रुव ॥
यया के बाजार में प्यारे, लाखों लोग ठगाए जी ।
एसी वस्तु लेना मित्र तू यहां वहाँ सुख पाए जी ॥ १ ॥
लिया किसी ने रत्न जवाहर, किसी ने सोना चाँदी जी ।
किसी ने मादक वस्तु जहर में पूंजी सभी गुमा दी जी ॥ २ ॥
राम ने अपना जन्म सफल कर, जग में नाम कमाया जी ।
जीवन रत्न के बदले मूरख, रावण अपयश पाया जी ॥ ३ ॥
शेर शिवा राणा प्रताप ने शौर्य तेज अपनाया जी ।
पन्ना ने स्वामी भक्ति में, प्यारा लाल कटाया जी ॥ ४ ॥
शूल भी हैं फूल भी हैं, दुनिया एक बगीचा जी ।
'केवल' आनन्द पाया जिसने पुण्य का पौधा सींचा जी ॥ ५ ॥

दे मस्त फकीरी वह मुझको

दे मस्त फकीरी वह मुझको, साहों की भी परवाह न हो ।
मैं खुद न किसी का शाह बनूं, मेरा भी कोई शाह न हो ॥ टेर ॥
दुनिया दौलत में मस्त रहे, मैं मस्त रहूं तुझको पाकर ।
मैं रहूं अकिंचन-सा बनकर, पर कण भर मन में चाह न हो ॥ १ ॥
पर पीड़ा मेटूं जी भर, पर निज पीड़ा न रुला पाये ।
पर सुख को अपना सुख समझूं सुखियां से मन में डाह न हो ॥ २ ॥
पर घर में पाऊं पूजा और स्व घर में अपमान मिले ।
दोनों में ही मुस्कान रहे, मन के भीतर भी आह न हो ॥ ३ ॥

रंग रहें इस जीवन में पर पाप न मन में आ पावे ।
वन वन का वनचर बनकर घूमे मन पर गुमराह न हो ॥ ४ ॥

दुःख है ज्ञान की खान

दुःख है ज्ञान की खान मनवा दुःख है ज्ञान की खान ।
दुःख में ज्ञान-ध्यान बहु उपजे, सुख में करत प्रयाण ॥ टेर ॥
दुःख ही शिक्षक है इस जग में, प्रभु का शुभ वरदान ।
अति उत्तम यह पाठ पढ़ावे, छूट जाय सब बान ॥ १ ॥
जिसने जगमें दुःख नहीं देखा, वह कैसा इन्सान ।
उन्नत पद पर कबहूं न पहुंचे, दुनिया के दरम्यान ॥ २ ॥
ज्यों ज्यों स्वर्ण अग्नि में डाले, रूप धरे छविमान ।
तैसे ही दुःख की अग्नि में तप कर हो मति मान ॥ ३ ॥
कौन बिगाना कौन है अपना, दुःख में पड़त पिछान ।
दुनिया के कसने की कसौटी, खोने का अभिमान ॥ ४ ॥

दया को लेवे दिल में धार

(तर्ज—म्हारा श्याम करेला अवधार. घनश्याम री महिमा अपार)

दया को लेवे दिल में धार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ टेर ॥
दया-धर्म सब में प्रधान, सब मजहब करते फ़रमान ।
देखो सूत्र दरम्यान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ १ ॥
देखो नेमनाथ भगवान, त्यागी राजुल महा गुणवान ।
पशुओं पर करुणा आन, वो भव सिन्धु तिरे ॥ २ ॥
धर्म रुचि तपस्वी अणगार, कीड़ियां की दया दिल धार ।
कड़वा तुम्बा को कीनो आहार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ३ ॥
मेघरथ राजा हुआ भूपाल, शरण परे वो रख्यो दयाल ।
कीनो है काम कमाल, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ४ ॥
फेर हुआ शिवी राजन, कबूतर की बचाई जान ।
है विष्णु में लिखा बयान, वो भव सिन्धु तिरे । ५ ॥
नबी मुहम्मद हुआ हुजूर, तन को देना किया मंजूर ।
फाक़ता पै कीनी दया पूर, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ६ ॥
[illegible]ा-हीन मत तजो तमाम, सब मजहब में वही निकाम ।
मानो यह सच्चा कलाम, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ७ ॥

बैठ दया की जहाज मंझार, भव सिन्धु दे पार उतार ।
यही है तप जप सार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ८ ॥
'चौथमल' कहे सुनो सुजान, दया धर्म महा सुख की खान ।
यही है वीर फरमान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ९ ॥

दुनिया पइसे री पुजारी

दुनिया पइसे री पुजारी, पूजा करते नर और नारी ।
जग में पाप कमावे भारी रे, माया पइसे की ॥ १ ॥
पइसे बिन माता मुख मोड़े, पिता देख कर्म ने फोड़े ।
घर में झगड़ो टंटो होवे, माया पइसे की ॥ २ ॥
पइसो मां बापां ने प्यारो, नहीं तो लागे बेटो खारो ।
उणने करदे घर सूं न्यारो, माया पइसे की ॥ ३ ॥
पइसो पास में पत्नी राजी, नहीं तो ताना देवे न्यारी ।
केवे पीहर में सुख भारी, माया पइसे की ॥ ४ ॥
पइसो परदेशां ले जावे, नहीं तो गलियां गोता खावे ।
उणने पागल के बतलावे रे, माया पइसे की ॥ ५ ॥
पइसो छप्पन भोग बनावे, नहीं तो भूखा ही सो जावे ।
उणने कोई नहीं जगावे, माया पइसे की ॥ ६ ॥
पइसो बुढ़ा ने परड़ावे, पइसो कन्या ने बिकवावे ।
नहीं तो कुंवारा ही मर जावे, माया पइसे की ॥ ७ ॥
पइसा सूं नर पूज्यो जावे, नहीं तो याद कभी नहीं आवे ।
उणने सगलो जग ठुकरावे, माया पइसे की ॥ ८ ॥

दुनिया में कौन हमारा

(तर्ज— जब तुम्हीं चले परदेश·······)

तू भूल के अपने आप, रहा कर पाप ओ चेतन प्यारा ।
दुनिया में कौन हमारा ॥ टेर ॥
जब मौत शिश पर आवेगी, कोई चीज साथ नहीं जावेगी ।
मां बाप भाई न देगा कोई सहारा ॥ १ ॥
ये जितने रिश्ते नाते हैं, बस मरघट तक ही जाते हैं ।
फिर हंस अकेला करता, कच्च किनारा ॥ २ ॥

बस धर्म-ध्यान संग आयेगा जो शान्ति सुख पहुंचायेगा ।
ले जैन-धर्म की शरण मिले शिव द्वारा ॥ ३ ॥
नित वीतराग गुणगाया कर, निज जीवन सफल बनाया कर ।
मोह माया है, जग 'चन्दन' झूठ पसारा ॥ ४ ॥

देखो विषयों ने मणिरथ भूप को

देखो विषयों ने मणिरथ भूप को नीचा दिखलाया ।
आया न कुछ भी उसके हाथ आखिर में पछताया ॥ टेर ॥
छोटे भाई की नारी, मेणरया पे नीत विगाड़ी ।
करने को अपनी रानी, दुष्ट ने प्रपन्च रचाया ॥देखो॥ १ ॥
करके कपट मिलने काज, रजनी में वो आया ।
लीने भाई के प्यारे प्राण, नहीं वह करुणा लाया ॥देखो॥ २ ॥
महलों में जाते उसको आनकर, विषधर ने खाया ।
मरके पहुंचा है नरक द्वार, करणी का फल पाया ॥देखो॥ ३ ॥
गुरु प्रसादे "चौथमल', मुनि ने समझाया ।
धन्य पुरुष वही काम के, वश में नहीं आया ॥देखो॥ ४ ॥

देव गुरु धर्म तत्त्व

(तर्ज— चुप-चुप खड़े……)

देव गुरु धर्म तत्त्व तीन ये महान हैं ।
इन्हें पहिचाने वह, सच्चा बुद्धिमान है ॥ टेर ॥
करुणा के मेघ वीर, अमृत बहा गये ।
सर्व जग जीव हित, देशना सुना गये जी-२
तू भी मीठा घूंट पीले, जीवन रसाल है ॥ १ ॥
वीर पुत्र महामुनि, कर्मों से झूझते,
भौतिक सुखों को छोड़, आत्म सुख ढूंढ़तेजी-२
षट्काय प्रतिपाल गुण के निधान हैं ॥ २ ॥
सम्यक्त्व मूल धर्म, वीर ने बताया है,
तेरी पुण्यवानी महा, जो कि हाथ आया है जी—२
प्रेम से जो पाले वह, पावे निर्वाण है ॥ ३ ॥
तत्त्व क्या है? रत्न है ये मूल्य न अंकात है,
संकट में सुख में ये, जन्म, जन्म साथ है जी-२
केवल यों 'पारस' को देत ज्ञान दान है ॥ ४ ॥

दान की महिमा गाते चलो

(तर्ज— जोत से जोत जगाते चलो)

दान की महिमा गाते चलो,
नेक कमाई कमाते चलो,
देने वाला ही पाता सदा,
गीत यह सबको सुनाते चलो ।। टेर ।।
खुश किस्मती से दौलत पाई दिल को बड़ा बनाना ।
दीन-दुखी जो राह में आए उसका दुःख मिटाना ।।
रोते हुओं को हंसाते चलो……… ।। १ ।।
ना कुछ अपने साथ में लाए, ना कुछ लेकर जाना ।
खुद खाना औरों को खिलाना माया का लुत्फ उठाना ।।
दान की गंगा बहाते चलो……… ।। २ ।।
जोड़—जोड़ कर जो रख जाते वो पीछे पछताते ।
पाप की गठरी सिर ले जाते माल जमाई खाते ।।
अपने मन को जगाते चलो……… ।। ३ ।।

दीप से दीप जलाते चलो

(तर्ज— जोत से जोत जगाते चलो)

जो सीखो किसी को सिखाते चलो,
दीप से दीप जलाते चलो ।
भूला भटका जो कोई मिले,
सच्चाई का रास्ता बताते चलो ।। टेर ।।
छाया हुआ है इस दुनिया में चारों ओर अन्धेरा ।
अज्ञान अन्धेरे ने जन मन को बुरी तरह से घेरा ।।
ज्ञान की जोत जगाते चलो……… ।। १ ।।
ज्ञान का दान बड़ा है जग में इसको ना कभी भुलाना ।
दीन दुखी जो भी मिल जाए, धीरज उसे बंधाना ।।
जग के फंदे छुड़ाते चलो……… ।। २ ।।
जीवन की उलझन में उलझा, गर कोई द्वारे आए ।
सुलझा मन लेकर के जाए, जीवन में मुसकाए ।
मन की दुविधा मिटाते चलो……… ।। ३ ।।

दस श्रावक स्तुति

(तर्ज— जाओ जाओ ऐ मेरे साधु······)

कैसे कैसे श्री महावीर जिन के श्रावक हुए महान ।। टेर ।।
पहले आनन्द श्रावक जिनके, विनय भरा अङ्ग अङ्ग ।
सत्य निष्ठ भी पुरे-पूरे रखा न्याय अभंग ।।कैसे कैसे······।।
कामदेव व्रत दृढ़ ऐसे कि, शक्र इन्द्र गुण गाया ।
पिशाच हाथी सर्प रूप धर, सुर भी डिगा न पाया।।कैसे कैसे···
चूलणी पिया और सुरादेव और चुल्ल शतक भी भारी ।
अपने व्रत के लिए जिन्हों ने, प्रीति सुतो की वारी ।।कैसे कैसे···
महावादी थे श्री कुण्डकोलिक, क्षण में देव हराया ।
पुरुसारथ मत ही है सच्चा करके सिद्ध दिखाया ।। कैसे कैसे···
श्रावक श्री सकडाल पुत्र ने, जिन मत अति दृढ़ धारा ।
चाल अनेक चला गौशालक, किन्तु अन्त में हारा ।।कैसे कैसे···
धन्य-धन्य श्री महाशतक जी, निज अपराध निहारा ।
सत्य वचन भी कटु क्यों बोला ? सविनय दण्ड स्वीकारा।।कैसे कैसे
पिया नंदिनी पिया सालिही, को उपसर्ग न आया ।
आराधक बनकर सबने ही, प्रथम स्वर्ग को पाया ।।कैसे कैसे.
वहां से कर नर भव विदेह में, होंगे शिवपुर राया ।
'पारस' ने यों उपासकों का, स्तव स्तुति मंगल गाया ।।कैसे कैसे.

धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसो

धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसा, प्यारो प्राण समान ।
कबहूं न विसरू हो चितारू नहीं, सदा अखंडित ध्यान ।।
ज्यु पनिहारी हो कुम्भ ने विसरे नटवो वरत निदान ।
पलक न विसरे हो पदमनी पियुभणी, चकवीन विसरे रे भान।।
ज्यु लोभी मन धन की लालसा, भोगी के मन भोग ।
रोगी के मन माने औषधी, जोगी के मन जोग ।।
इण पर लागी हो पूरण प्रीतड़ी, जाव जीव परियन्त ।
भव-भव चाहूं हो न पड़े आँतरो, भय भंजन भगवंत ।।
काम-क्रोध मद मत्सर लोभ थी, कपटी कुटिल कठोर ।
इत्यादिक अवगुण कर हूं भरयो, उदय कर्म के जोर ।।

तेज प्रताप तुम्हारो प्रगटे, मुझ हिवड़ा में आय ॥
तो हूं आतम निज गुण संभाल ने, अनन्त बली कहवाय ॥ ६ ॥
'भान' नृप सुव्रता जननी तणो अंगजात अभिराम ॥
विनयचन्द ने वल्लभ तू प्रभु, सुध चेतन गुण धाम ॥ ७ ॥

धीरे-धीरे अपने को गुणवान करलो

अवगुण छोड़ो गुणों का अब ज्ञान करलो ।
धीरे-धीरे अपने को गुणवान करलो ॥ टेर ॥
एक दिन में गुणी, न बना जाता ।
बीज बोते ही फल, कब लग जाता ।
धीरता का सुधारस, पान करलो ॥ धीरे-धीरे....... ॥ १ ॥
संग छोड़ो जो, दुर्गुण सिखलाते ।
सीधे रास्ते से, सबको भटकाते ।
गुण अवगुण की अब पहिचान करलो॥धीरे-धीरे.......॥ २ ॥
आप सुधरे तो, जग सुधरा करता ।
दीप खुद हो प्राकाशित तम हरता ।
दीप हो तुम औरों को दीपीमान कर दो॥धीरे-धीरे.... ॥ ३ ॥
गहरे उतरोगे, मोती पावोगे ।
तट से कंकर, उठा घर लावोगे ।
बुद्ध हो तुम औरों को बुद्धिमान करलो ॥धीरे-धीरे.......॥ ४ ॥

नमो सिद्ध निरंजनम्

तरण-तारण, दुःख निवारण, भविक जीव आराधनम् ।
नाभिनन्दन, जगत-वन्दन, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ १ ॥
-भूषण, विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकम् ।
-रूपं अनूप उपमं, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ २ ॥
-मण्डल मुक्ति-पदवी, सर्व-ऊर्ध्व-निवासनम् ।
ज्योति अनन्त राजे, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ३ ॥
न-निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुषम् ।
-गोत्र-निरंतरायं, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ४ ॥
ट क्रोधा, मान योधा, माया लोभ विसर्जनम् ।
-द्वेष-विमर्द अंकुर, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ५ ॥

विमल केवलज्ञान – लोचन, ध्यान शुक्ल–समीरितम् ।
योगिनां अतिगम्य रूपं, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ६ ॥
योग ने समोसरण मुद्रा, परिपल्यकं – आसनम् ।
सर्व दीसे तेज रूपं, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ७ ॥
जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासनम् ।
चन्द्र पै परमानन्द रूपं, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ८ ॥
स्व-समय समकित दृष्टि जिनकी, सोय योगी अयोगिकम् ।
देखता मां लीन होवे, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ९ ॥
चन्द्र सूर्य दीप मणि की, ज्योति येन उल्लंघितम ।
ते ज्योति थी परम ज्योति, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ १० ॥
तीर्थ–सिद्धा, अतीर्थ–सिद्धा भेद पंच दशाधिकम् ।
सर्व कर्म विमुक्त चेतन, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ११ ॥
एक मांहीं अनेक राजे, अनेक मांहीं एककम् ।
एक अनेक की नाहीं संख्या, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ १२ ॥
अजर – अमर अलख अनन्त, निराकार निरंजनम् ।
पर–ब्रह्म ज्ञान अनन्त दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ १३ ॥
अतुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे निरंतहम् ।
धर्म–ध्यान थी सिद्ध दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ १४ ॥
ध्यान, धूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय – हुताशनम् ।
क्षमा जाप सन्तोष पूजा पूजो देव निरंजनम् ॥ १५ ॥
तुम मुक्ति–दाता, कर्म–घाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थ–नन्दन, जगत वन्दन, महावीर जिनेश्वरम् ॥ १६ ॥

नेमजी की जान बणी भारी

नेमजी की जात बणी भारी, देखण को आवे नर–नारी ॥ टेर ॥

हींसता घोड़ा रथ हाथी, मनुष्य की गिणति नहीं आती ।
ऊंट पे ध्वजा जो फर्राती, धमक से धरती थर्राती ॥
समुद्र विजयजी का लाड़ला, नेम कुंवर जी नाम ।
राजुल दे को आया परणवा, उग्रसेन घर धाम ॥
प्रसन्न भई नगरी सब सारी ॥नेमजी ॥
कसुंबल वागा अति भारी, कानन कुण्डल की छवि न्यारी ।
किलंगी तुर्रा सुखकारी, माल मोतियन की गल डारी ॥

कानै कुण्डल झिलमिगे, शीश मुकुट सुखकार ।
कोटि भानु की बनी ओपमा, शोभा अधिक अपार ॥
बाज रया बाजा टक सारी ॥नेमजी. ॥ २ ॥
छूट रही हुक्का सरणाई, ब्याह मे आये बड़े भाई ।
झरोखे राजल दे आई, जान को देखत सुख पाई ॥
उग्रसेन जी देख के, मन में कियो विचार ।
बहुत जीव को करी एकठा, बाड़ो भरचो तिवार ॥
करी जब भोजन की त्यारी ॥नेमजी. ॥ ३ ॥
नेमजी तोरण पर आये, पशु सब मिलकर कुर्राये ।
नेमजी वचन यूं उच्चारे, पशु ये काहे को लाए ॥
इण को भोजन होवसी, जान वास्ते त्यार ।
एह वचन सुण नेमजी, थर-थर कांपी काय ॥
भाव से चढ़ गये गिरनारी ॥नेमजी. ॥ ४ ॥
पीछे से राजुल दे आई, हाथ जब पकड़यो छिन माही ।
कहां तू जावे मोरी जाई, और वर हेरु सुखरायी ॥
मेरे तो वर एक ही, हो गये नेम कुमार ।
और भुवन में वर नहीं, चाहे करो क्रोड उपचार ॥
झूरती छोड़ी माँ प्यारी ॥ नेमजी. ॥ ५ ॥
सहेल्यां सब ही समझावे, दाय नहीं राजुल के आवे ।
जगत सब झूठो दर्शावे, मेरे मन नेमकुंवर भावे ॥
तोड़चा कांकण डोरडा, तोडचो नवसर हार ।
काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥
करी अब संयम की त्यारी ॥ नेमजी. ॥ ६ ॥
तज्या सब सोले सिणगारा, आभूषण रत्न जड़ित सारा ।
लगे मोय सबही सुख खारा, छोड़कर चाली परिवारा ॥
मात-पिता परिवार को, तजता न लागी वार ।
रहनेमी समझाय के, जाय चढ़ी गिरनार ॥
दीक्षा फिर राजुल ने धारी । नेमजी. ॥ ७ ॥
दया दिल पशुअन की आयी, त्याग जब कीनो छिन माही ।
नेमजिन गिरनारे जाई, पशु के बंधन छुड़वाई ॥
नेम राजुल गिरनार पे, कीनो अविचल ध्यान ।
"नवलमल" यह करी लावणी, ऊपजो केवल ज्ञान ॥
जिनों की किरिया शुद्ध सारी ॥नेमजी.॥ ८ ॥

नर नारायण बन जायेगा

नर नारायण बन जायेगा, जो आत्म ज्योति जगायेगा ।। टेर ।।
पापों के बन्ध टूटेंगे, विषयों के नाते छूटेंगे ।
जो सोया सिंह जगायेगा, नर नारायण बन जायेगा ।। १ ।।
घट में बैठा इक ईश्वर है, जाने माने ज्ञानेश्वर हैं ।
सब जन्म मरण मिट जायेगा ।। नर नारायण········ ।। २ ।।
बादल के पीछे दिनकर है, कर्मों के पीछे ईश्वर है ।
जो सर्व ही ज्योति जगायेगा ।। नर नारायण········ ।। ३ ।।
गुरु के चरणों में जाकर के, श्रद्धा के सुमन चढ़ा करके ।
मुनि 'कुमुद' जो आनन्द पायेगा ।। नर नारायण········ ।। ४ ।।

नमन श्रमण भगवान

(तर्ज— सुनो–सुनो ऐ दुनिया वालों बापू········)

नमन श्रमण भगवान् ज्ञात–सुत, महावीर स्वामी को ।
त्रिशला जननी सिद्ध जनक, देवाधिदेव नामी को ।। टेर ।।
जिनके जन्म समय से नारक, भी अपना दुःख भूले ।
दिव्य सौख्य तज सब सुरपति भी, धर्म भाव में झूले ।।
जन्म पूर्व ही वृद्धि कारक, वर्धमान नामी को ।।नमन.।। १ ।।
जग ममता तज कर्म क्षय हित, जिनने समय धारा ।
तोड़ दिये घनघाती बन्धन, दीर्घ उग्र तप द्वारा ।।
हुए स्वयं सम्बुद्ध केवली, श्री सन्मति नामी को ।।नमन.।। २ ।।
नव तत्त्व और षट्द्रव्य आदि, त्रिविध श्रुत धर्म प्ररूपा ।
अनगार और आगार द्विविध यों, चारित्र धर्म निरूपा ।
करी चतुर्विध संघ प्रतिष्ठा, जैन संघ स्वामी को ।।नमन.।। ३ ।।
द्वितीय देशना में ही लखकर, अतिशय अपरम्पारा ।
गौतमादि ने शीश झुका, सर्वज्ञ तुम्हें स्वीकारा ।।
हूं सभी ग्यारह गणधर, भविजन अभरामी को ।।नमन.।। ४ ।।
वैदिक बौद्धादिक धर्मों का, मिथ्यापन समझाया ।
जैन – धर्म ही सत्य अनुत्तर, अद्वितीय बतलाया ।।
गौशालक से सहे परीषह, धन्य क्षमाधामी को ।।नमन.।। ५ ।।
जैसा श्रमण तुम्हारे, श्रमणी चन्दनबाला ।

शंख पुष्कली से श्रावक, श्राविका जयन्ति बाला ॥
श्रेणिक रेवती, लाखों ने ही, धारा शुभ कामी को ॥नमन॥ ६ ॥
दीपावली को दीप अलौकिक, तुम लोकाग्र पधारे ।
अब आगमन ही है, अवलम्बन, भवदधि तारन हारे ॥
'पारस' मन वचन तन से चाहे, मिलूं मोक्षगामी को ॥नमन॥७॥

नर कर उस दिन की याद

नर कर उस दिन की याद, कि जिस दिन चल, चल-चल होगी॥टेर॥
तू जोड़–जोड़ कर धरे वस्तु, कोई नहीं तेरी होगी ।
जब आयें यम के दूत, नगर में खलबल खल होगी ॥ १ ॥
सब भरे रहे भण्डार, नार तेरी संगी नहीं होगी ।
काठी के लिए दो बांस, ओढ़ने को मलमल होगी ॥ २ ॥
ले जायेंगे शमशान, चिता सोने के लिए होगी ।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जलजल कर होगी ॥ ३ ॥
तू भली बूरी जो करे, पूछ तेरी परभव में होगी ।
यूं कहता है 'भूदेव', कर्म गति पल, पल, पल होगी ॥ ४ ॥

नवकार मन्त्र है महामन्त्र

नवकार मन्त्र है महामन्त्र, इस मन्त्र की महिमा भारी है ।
आगम में कथी गुरुवर से सुनी, अनुभव में जिसे उतारी है ॥टेर॥
अरिहंताणं पद पहिला है, अरि आरति दूर भगाता है ।
सिद्धाणं सुमिरण करने से, मन इच्छित सिद्धि पाता है ।
आयरियाणं तो अष्ट सिद्धि, और नवनिधि के भंडारी है ॥ १ ॥
उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है ।
सव्वसाहुणं सब सुखदाता, तन–मन को स्वस्थ बनाता है ।
पद पांच के सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बिमारी है ॥ २ ॥
श्रीपाल सुदर्शन मेणरया, जिसने भी जपा आनन्द पाया ।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया ।
मन नन्दन वन में रमण करे यह ऐसा मंगलकारी है ॥ ॥
नित्य नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहिनाती
'अशोक मुनि' जय विजय मिले, शांति प्रसन्नता बढ़ जाती
सम्मान मिले सतकार मिले, भव–जल से नैया तारी

नरतन का चोला पाया

(तर्ज— दिल लूटने वाले जादूगर)

नरतन का चोला पाया है, इन्सान नहीं बन पाया है।
काया के संग माया है, माया में तू भरमाया है ।।नर.।। टेर ।।
माया और लोभ की जोड़ी है, ममता इसके संग दौड़ी है।
तृष्णा की सफर ये चौड़ी है, नहीं पार किसी ने पाया है ।। १ ।।
नर-नर को देखकर जलना है पैरों तले उसे कुचलता है।
इर्षा में खून उबलता है, अभिमान का पर्दा छाया है ।। २ ।।
खान पान मन माना है, भोगों में हुआ दिवाना है।
विषयों में आनन्द माना है, नहीं चैन किसी ने पाया है ।। ३ ।।
क्रोध से तेरा ज्ञान घटा, स्वार्थ से तो सम्मान हटा।
कपट से तुझे लगा बट्टा, यो मुफत में माल गंवाया है ।। ४ ।।
तन से किसका है घाव भरा, धन से किसका उपकार करा।
मन में तो सोच–विचार जरा, अनमोल समय यह पाया है।। ५ ।।
सत संगत में जो आता है, वह ज्ञान की ज्योति जगाता है।
'अनराज' प्रभु गुण गाता है, इन्सान वही कहलाता है ।। ६ ।।

नहीं बचा सकेगा परमात्मा

(तर्ज— जरा सामने तो आओ छलिये)

जरा कर्म देख कर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है ।। टेर।
बारह घड़ी तक बैंलो को बांधा, छीका लगा दिया खाने को,
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं दाने का।
इस युग के प्रथम अवतार है, बिन भोग्यां न छूटे लार है ।।नहीं ।१।
त्रिपुष्ट वासुदेव के भव में, दास के कानों में शीशा डाला,
कर्म निकाचित बांधा वीर ने, तिर्थङ्कर थे पर न टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार है दिये कानों में कीले डार है। नहीं।।२।
सौतेली मां वन सौक के सुत सिर, पाटिया चढ़ा के प्राण हरा,
निन्नाणु लाख भवों के बाद में, गजसुखमाल बन कर्ज भरा।
चढ़ा सोमिल को क्रोध अपार है, डाले सिर पे धधकते अंगार है।नहीं।।१।
किसी को मारे किसी को लूटे, काम करे अन्याई का,

जैसा करेगा वैसा भरेगा, लेखा है राई-राई का !
नहीं छोटे बड़े की दरकार है, चाहे करले तू जतन हजार है नहीं॥४॥
पग-पग पे संयम रख तू वचन पे, बोले तो बोल भलाई का।
धर्म से प्रीतकर कर्मों को 'जीत' कर, बन जा पथिक शिव राही का।
ये सुख-दुःख भरा संसार है यहां कर्मों का ही व्यापार है ॥नहीं॥५॥

नहीं है भरोसा जरा जिन्दगी का

नहीं है भरोसा, जरा जिन्दगी का
मजा लूट बन्दे ! प्रभु-बन्दगी का ॥ १ ॥
निकलता है, सड़कों पे, फैशन लगा कर।
अकड़ता है, तन को बड़ा तू सजा कर।
पिटारा है, इक ये भरा गन्दगी का ॥ २ ॥
लगाए मुहब्बत से सुन्दर सुन्दर बगीचे।
सजाए भवन जो, बिछा कर गलीचे।
सदा साथ देते, नहीं आदमी का ॥ ३ ॥
चला कर के दिल में दया का फव्वारा।
दिया दीन-दुखियों को जिसने सहारा।
उसी का है जीवन, हंसी का-खुशी का॥ ४ ॥
उमर देख पल-पल घटी, जा रही है।
निकट मौत छिन-छिन, चली आ रही है।
समझ ले तू 'चन्दन' इशारा घड़ी का ॥ ५ ॥

नेम तोरण पर आये

नेम तोरण पर आये, भारी भीड़ हो गई।
पशु क्युं रोए क्युं दौड़े, होय क्या बात हो गई॥ नेम........॥१॥
वरात वड़ी भारी, देखे नर-नारी, घोड़ा और हाथी वराती।
देखो कानों में कुण्डल अति प्यारे थे।
गले मोतियन की माला के नजारे थे।
बैण्ड वाजा वाजे को आगे, होय क्या वात हो गई॥ नेम........॥२॥
पशु कुलराये की नेम फरमाए, क्यूं वाड़ा भरवाए वताए।
सारे पशुओं का भोजन वनाया जायेगा।

जो बराती आए उनको जिमाया जाएगा ।
रथ को मोड़ो की दौड़ो, होय क्या बात हो गई ।। नेमी......।
सुन नेम पिया, क्या जुलम मैंने किया राजुल का दुखे जीया हो पिया।
नेम राजुल को छोड़ कर मत जाइए, मेरा कोई नहीं मत ठुकराईए।।
मैं भी दिक्षा लूंगी चलूंगी, होय क्या बात हो गई ।। नेमी......।
राजुल ने समझाए, सहेलिया सारी आवे ।
समझ नहीं आवे मनावे, कांकड़ डोरा राजुल ने अब तोड़ दिया ।।
काजल टीकी, सोलह सिंगार छोड़ दिया ।
महल में न रहना यह कहना, होय क्या बात हो गई ।।नेम......।
सुनो राजुल प्यारी यह झूठी दुनियादारी ।
गिरनार की तैयारी, हमारे जोड़ी विछड़ रही है ।।
छोड़ चले परवार, आशा पुरी करूंगा, लूंगा संयम भार ।
झूठी दुनियादारी तुम्हारी, होय क्या बात हो गई ।।नेम......
दया दिल आई बंधन छुड़वाई, की गिरनार जाई सुन भाई ।
नेम राजुल गिरनार पर संयम लिया ।
पीव से पहले, राजुल ने मोक्ष पा ही लिया ।
'चुन्नू मुन्नू' गावे सुणावे, होय क्या बात हो गई ।। नेम......।

नवकार की महिमा

नवकार की महिमा क्या कहिये, इस जैसा प्यारा कोई नहीं ।
बिना इसके बन्धु ! भवजल से बस तारनहारा कोई नहीं ।। १ ।।
नौ लाख बार जो ध्याता है, नहीं नर्क गति में जाता है ।
जीवन नैया जो पार करे, वो और सहारा कोई नहीं ।। २ ।।
स्वार्थ की है सारी दुनिया हमने सारा जग छान लिया ।
इक महा-मन्त्र नवकार बिना, दुःखहर्ता जग का कोई नहीं ।। ३ ।।
नवकार सदा सुखकारी है, गुण इकसो आठ का धारी है ।
इस मन में चन्दन' अति रोशन, रविचन्द्र सितारा कोई नहीं ।। ४ ।।

नम्र बन जा रे प्राणी

(तर्ज— भगत भर दे रे झोली)

मेरो मान छोड़ अभिमान, नम्र बन जा रे प्राणी ।
यह मान है अवगुण खान, मान से मिले नहीं सम्मान ।। टेर ।

मैं हूं पैसे वाला मैं हूं मोटर बंगले वाला ।
मैं मैं करता रहे रात दिन बना फिर मतवाला रे,
बना फिर मतवाला रे,
है दो दिन का महमान, मान रे मत कर तू तूफान.......॥१॥
कोटी पति कंगाल बने रे, पृथ्वी पति भिखारी ।
रति–पति बने राख की ढेरी महारानी पनिहारी रे,
महारानी पनिहारी रे,
तू क्यों करता है तान समय नहीं रहता एक समान.......॥२॥
नर्क लोक में बनके नारकी, सही तू असह्य पीड़ा ।
कुत्ता बिल्ली गधा बना तू, बना नाली का कीड़ा रे,
बना नाली का किड़ा रे,
तब कहां रही तेरी शान बड़प्पन की झूठी कुल कान.......॥३॥
महा घमण्डी लंकापति को लक्ष्मण ने संहारा ।
क्रूर कुचाली कुटिल कंस को श्री कृष्ण ने मारा रे,
श्री कृष्ण ने मारा रे ।
बन विनयी सीख ले ज्ञान, ज्ञान देगा 'केवल' निर्वाण.......॥४॥

पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो

(तर्ज— श्याम कैसे गज को वन्ध छुड़ायो)

पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो, पतित उद्धारन हारो ॥ टेर ॥
जदपि धीवर, भील, कसाई, अति पापिष्ठ जमारो ।
तदपि जीव-हिंसा तज प्रभु भज, पावै भवनिधि पारो ॥पद्म.॥१॥
गो ब्राह्मण प्रमदा बालक की, मोटी हत्था चारों ।
तेहनी करणहार प्रभु भजने, होत हत्या सूं न्यारो ॥पद्म. ॥२॥
वेश्या चुंगल छिनाल जुवारी, चोर महा वटमारो ।
जो इत्यादि भजे प्रभु तोने, तो निवृत्ते संसारो ॥पद्म ॥३॥
पाप पराल को पुंज वन्यो अति, मानो मेरू आकारो ।
ते तुम नाम हुताशन सेती, सहने प्रज्वलत सारो ॥पद्म. ॥४॥
परम धरम को मरम महारस, सो तुम नाम उच्चारो ।
या सम मंत्र नहीं कोई दूजो, त्रिभुवन मोहन गारो ॥पद्म. । ५॥
तो सुमिरण विन इण कलयुग में अवर न कोई आधारो ।
मैं वारी जाऊं तो सुमिरण पर, दिन-दिन प्रीत वधारो॥पद्म.॥६॥

भवसागर संसार में, दीपा श्री जिनराज ।
उद्यम करी पहुंचे तीरे, बैठ धर्म की जहाज ॥ २२ ॥
निज आतम कूं दमन कर, पर आतम कूं चीन्ह ।
परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन ॥ २३ ॥
समझ शंके पाप से, अण समझू हरषंत ।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म वधंत ॥ २४ ॥
समझ सार संसार में, समझ टाले दोष ।
समझ समझ कर जीव ही, गया अनंता मोक्ष ॥ २५ ॥
उपशम विषय कषाय नो, संवर तीनूं योग ।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दुःख रोग ॥ २६ ॥
रोग मिटे समता वधे, समकित व्रत आराध ।
निर्वैरी सब जीव का, पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥

— इति भूल–चूक मिच्छामि दुक्कडं —

प्रातः उठ श्री शान्ति जिनन्द को

प्रातः ऊठ श्री शान्ति जिनन्द को सुमिरण कीजे घड़ी–घड़ी ।
संकट कोटी कटे भव संचित, जो ध्यावे मन भाव धरी ॥टेर॥
जनमत पाण जगत दुःख टलियो, गलियो रोग असाध्य मरी ।
घट–घट अन्तर आनन्द प्रगटचो, हुलस्यो हिवड़ो हर्ष भरी ॥१॥प्रातः॥
आपद मंतर पिशुन भय भाजे, जैसे पैखत मिरगी हरी ।
एकण चित्त शुद्ध मन ध्यातां, प्रकटे परिचय परमसिरी ॥२॥प्रातः॥
गये बिलाप भरम के बादल, परमनाथ–पद–पवन करी ।
अवर देव एरंड कुन रोपे, जो निज मन्दिर केल फली ॥३॥प्रातः॥
प्रभु तुम नाम जागे घट अन्तर, तो शुं करिए कर्म अरी ।
"रतनचन्द्र" शीतलता व्यापो, पातक जाय कषाय टरी ।४॥प्रातः॥

प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो

प्रभु ! मोरे अवगुण चित्त न धरो ।
सम–दरशी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो ॥१॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो ही नीर भरो ।
जब मिलकर के इक वरन भये सुरसरि नाम परचो ॥२॥
इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परचो ।
पारस गुण अवगुण नहीं चितवत कंचन करत खरो ॥३॥
यह माया भ्रम–जाल कहावत सूरदास सगरो ।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो, नहिं प्रण जात टरो ॥४॥

प्रभु भज प्रभु भज, प्रभु भज प्राणीड़ा

प्रभु भज. प्रभु भज, प्रभु भज प्राणीड़ा, एक दिन पिंजरा पड़ जासी ।
करना होय सो करले रे प्राणी, फेर करण ने कब आसी ।। टेर ।।
बन की बकरी बन में रहती, आयो कसाईड़ो लेजासी ।
छोकी-छोकी पत्तियां चुगले बकरड़ी, फेर चुगण ने कब आसी ।। १ ।।
लकड़ी काटतां लकड़ी बोली, तू ही खातीड़ा म्हारो संग साथी ।
छोकी-छोकी लकड़ी काटले खातीड़ा, एक दिन म्हारे संग जल जासी।।२।।
खोदता माटी बोली, तू ही रे कुम्हार म्हारो संग साथी ।
छोकी माटी खोदले कुम्हारणा, एक दिन माटी में मिल जासी।।३।।
कलियां तोड़ता कलियां बोली, तू ही मालीड़ा म्हारो संग साथी ।
छोकी-छोकी कलियां तोड़ले मालीड़ा, एक दिन मारे ज्यूं खिरजासी।।४।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अपनी करणी आप जासी ।
प्रभु नाम को सुमिरण करलो, कट जावे जम की फांसी ।। ५ ।।

प्रभु भजन तू करले प्राणी

(तर्ज—भला घरां परनाई मोरा बालम—मारवाड़ी)

प्रभु भजन तू करले रे प्राणी, भव-भव सूं तिर जावेला ।
नहीं रे भजेला बड़ो दुःख पावेला, सीधो नरक में जावेला ।। टेर ।।
ओ जग है मुसाफिर खानो, कोई नहीं टिक पाया ।
जो भी भजेला सुखी हुवेला, नाम अमर कर जावेला ।
बातां मारे लम्बी चौड़ी, करे एक नहीं पूरी रे ।। नहीं रे० ।। १ ।।
केड़ो जमानो आयो रे लोगां पापी रौब जमावे ।
चोर बाजारी रिश्वतखोरी, नित नया सांग रचावे ।
समझदार है तो समझावां, कोई समझावा इन मनड़ाने।।नहीं रे.।। २ ।।
सुणोरे भाया बातां मांणी, भजन करो थे क्यूं नहीं ।
थे नहीं मानो बातां मांणी, दुःख पावेला भारी ।
स्वाध्याय मण्डल रो केणो है, भजन प्रभुरा करलो रे ।।नहीं रे.।। ३ ।।

प्रातः उठ चौबीस जिनन्द को

प्रातः उठ चौवीस जिनन्द को, सुमिरण कीजे भाव धरी ।। टेर ।।
रिखभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति कुमति सब दूर हरी ।
पद्म सुपास चन्दा प्रभ ध्यावो, पुष्प दन्त हण्या कर्म अरी ।। १

शीतल जिन श्रेयांस वासु पूज्य, विमल–विमल बुद्ध देत खरी।
अनन्त धर्म श्री शान्ति जिनेश्वर हरियो रोग असाध्य मरी ॥ २॥

कुन्थु अर मल्ली मुनि सुव्रत जो, नमो नेमो शिव रमणी वरी।
पार्श्वनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लहीं भव ओघ तरी ॥ ३॥

तुम सम नहीं कोई तारक दूजो इम निश्चय मन मांही धरी।
त्रिलोक रिख कहै जिमतिम, करिने मुक्ति श्री दो मेहर करी ॥ ४॥

प्रेमी बनकर प्रेम से

प्रेमी बन कर प्रेम से, जिनवर के गुण गाया कर।
मन मंदिर में गाफिले, झाडू रोज लगाया कर ॥ टेर ॥
सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा।
प्रातः काल उठ प्रेम से, सत्संगत में आया कर ॥ १ ॥
नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म–जन्म के शुभ कर्मों का, मिलता जब तक मेल नहीं।
नर–तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर ॥ २ ॥
भूखा–प्यासा पड़ा पड़ोसी, तेने रोटी खाई क्या।
दुखियां पास पड़ा है तेरे तेने भोज उड़ाई क्या।
सबसे पहिले पूछ कर, भोजन तू फिर खाया कर ॥ ३ ॥
देख दया उस वीर प्रभु की, जिनशासन का ज्ञान दिया।
जरा सोचले अपने मन में कितनों का कल्याण किया।
सब कर्मों को छोड़कर, उसको ही तू ध्याया कर ॥ ४ ॥

पंच परमेष्ठि की स्तुति

आछो आनन्द रंग बरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ॥टेर॥
अरिहन्त नमूं पद पहले, भवी जीवां ने शिवपुर मेले,
लोकालोक को स्वरूप बतायो। आछो.। १ ॥
दूजे पद श्री सिद्धजी ने ध्याऊं, कर जोड़ी ने शीश नमाऊं,
जनम–मरण का दुःख मिटाओ ॥ आछो. ॥ २ ॥
आचारज जी तीजे पद सोहे, चारों तीर्थ के मन मोहे,
ज्ञान – ध्यान में चित रमायो ॥ आछो. ॥ ३ ॥

उपाध्याय जी सबके मन भावे साधु-सतियां ने ज्ञान भणावे ।
जारी बुद्धि को पार न पायो ।। आछो. ।। ४ ।।
सर्व साधु जी गुणां की दरिया, जाने पाप सहूं परहरिया ।
मोकूं मुक्ति को पंथ बतायो ।। आछो. ।। ५ ।।
ये पांचों ही पद भज भाई, नित्य एक चित ध्यान लगाई ।
होवे सब ही कारज मन चायो ।। आछो. ।। ६ ।।
मेरे गुरु नन्दलाल जी गुणधारी, तप शिष्य कहे हितकारी ।
मैं मांगलिक आज मनायो ।। आछो. ।। ७ ।।

प्रभु से विनती

डगमग, डगमग नाव मझधार है ।
तेरा ही आधार प्रभु तेरा ही आधार है ।। टेर ।।
झांका के झलोके प्रभु झूलने में झुलाती ।
छोटी बड़ी लहरियो से उत्तरती डूबती ।
आशा की किरण तू ही तू ही पतवार है ।। तेरा ही० ।। १ ।।
करुणा क्रन्दन सुन चन्दना को तार दी ।
अर्जुन माली की नाथ बिगड़ी सुधार दी ।
दयाशील देव क्यों देर मेरी बार है ।। तेरा ही० ।। २ ।।
माता तू ही पिता तू ही तू ही मेरा प्राण है ।
तेरे हाथ लाज अब मेरी भगवान है ।
दीनबन्धु दीन की छोटी-सी पुकार है ।। तेरा ही० ।। ३ ।।
मंगल किरण तू ही तारण – तिरण है ।
पतित पावन मुनि "केवल" शरण है ।
तेरी दया दृष्टि से मेरा बेड़ा पार है ।। तेरा ही० ।। ४ ।।

पंच परमेष्टी स्तवन

जय जय जय जयकार परमेष्टी – २
जय जय भविजन बोध विधाता, जय भाव भंजन हार परमेष्टी ।जय.।।१।।
जय सब संकट चूरण करता जय सब आशा पूरण करता ।
जय जग मंगलकार परमेष्टी ।।जय...... ।। २ ।।
तेरा जाप जिन्होंने कीना, परमानन्द उन्होंने लीना ।
कर गये खेवा पार परमेष्टी ।।जय.......

सेठ सुदर्शन खूब बचाया, सूली सिंहासन खूब बनाया ।
जय जय करे नर-नार परमेष्टी ।।जय.......।।४
द्रौपदी चीर सभा में हरना, तब तेरी ही लीनी शरणा ।
बढ़ गया चीर अपार परमेष्टी ।। जय....... ।।५
सोमा सती ने सुमिरन कीना, विषधर हार तुम्ही कर दीना ।
जय बोले नर-नार परमेष्टी ।। जय....... ।।६
तेरी शरण में विजय भी आये, कर्मों के दुःख से घबराये ।
करो अमर उद्धार परमेष्टी ।। जय....... ।।७

प्रेम रस झरने दो

(तर्ज— जय बोलो महावीर स्वामी की)

संगठन की वीणा बजने दो मोहे मधुर-मधुर धुन सुनने दो ।। टेर
अब नया जमाना आया है, सन्देश प्रेम का लाया है ।
टूटे हुए दिल को मिलने दो ।। संगठन. ।। १
वीणा यह तान सुनाती है, संगठन का पाठ पढ़ाती है ।
मुरझी हुई कलियां खिलने दो ।। संगठन. ।। २
अभिनव क्रान्ति ऐसी लाओ, जागे मानस मंजिल पाओ ।
इतिहास के पन्ने लिखने दो ।। संगठन. ।। ३ ।
सबको एक राह दिखाना है, बाधाएं दूर हटाना है ।
यह विमल भावना भरने दो ।। संगठन. ।। ४ ।
दुनिया यश गाथा गाएगी, इस पथ कदम बढ़ायेगा ।
आशा के दीपक जलने दो ।। संगठन. ।। ५ ।
आओ आनन्द के आंगन में, बन्ध जाओ एक ही बन्धन में ।
गंगा जमुना को मिलने दो ।। संगठन. ।। ६ ।
वीणा के तार मधुर बोले, अन्दर के पट झट से खोले ।
अब 'रसीक' प्रेम रस झरने दो ।। संगठन. ।। ७ ।

पर्व पर्युषण मनाना

(तर्ज— भैया मेरे राखी के बन्धन को)

भाईयों मेरे ! पर्व पर्युषण मनाना,
बहिनों मेरी ! धन्धों में पर्व न भूलाना,
पर्वाधिराज बधाना-२ .... ।। टेर ।।

अष्ट मंगल से अष्ट सिद्धि से, पर्व के आनन्दमय दिन आए ।
इनका प्रेम से स्वागत करिये ये पावन संदेशा लाये ॥
प्रभु से प्रीत बढ़ाना–२ ·········· ॥ १ ॥
मोह अन्धियारा दूर हटाने, ज्ञान की जगमग ज्योति जगाने ।
निजानन्द का अमृत लाया, लोकोत्तर त्यौहार पिलाने ॥
छक करके पीना पिलाना–२········ ॥ २ ॥
अनमोल दिन ये अनमोल घड़ियां, अनमोल अवसर चूक न जाना ।
बारह में से यदि दो घटाएं, बाकी रहेगा क्या वह बताना ॥
समय न व्यर्थ गंवाना–२ ·········· ॥ ३ ॥
सम्यक दर्शन–ज्ञान चरित्र की, त्रिवेणी में भजन करिए ।
मल मिटाइये उज्ज्वल होइये, जन्म-जन्म के पातक हरिये ॥
धर्म का लाभ कमाना–२ ·········· ॥ ४ ॥
तृप्ति हुई नहीं जिया भरा नहीं, अनन्त सुमेरन खाई मिठाई ।
वल मुनि' कम से कम करलो, एक बार तो तेला भाई ॥
तप कर कर्म खपाना–२ ·········· ॥ ५ ॥

प्यारे प्रभु का ध्यान लगा

प्यारे प्रभु का ध्यान लगातो सही,
इन पापों को दूर हटा तो सही ॥ टेर ॥
सो रहा किस नींद में, जिसका न तुझको ज्ञान है ।
आया था यहां किस लिए, क्या कर रहा नादान है ।
ऐसी निद्रा को वेग उड़ातो सही ॥ १ ॥
चार दिन की चाँदनी है, फिर अन्धेरी आयेगी ।
साथ कुछ चलता नहीं, दौलत पड़ी रह जायेगी ।
ऐसी ममता को दूर हटातो सही ॥ २ ॥
मतलब के साथी हैं सभी, नहीं साथ तेरे आयेंगे ।
जब मौत तेरी आयेगी, जंगल में घर कर जायेगी ।
जिन धर्म से प्रेम बढ़ातो सही ॥ ३ ॥
फिक्र को अब त्याग दे, दिल को लगाले ज्ञान में ।
आनन्द चित्त हो जायेगा, ऐसा मजा है ध्यान में ।
शिव रमणी से नेह लगातो सही ॥ ४ ॥
हंस कहता यही नित पाप से डरते रहो ।

चलते रहो शुभ मार्ग में, उपकार भी करते रहो ।
ऐसी बातों को दिल में जमा तो सही ॥ ५ ॥

प्रभुजी ने भजले

(तर्ज — उड़-उड़ रे म्हारा काला रे कागला.......)

भजभज रे ! भज भज रे !
भज भज रे म्हारा भोला रे जीवड़ा ।
प्रभुजी ने भजले भाव धरी ॥ प्रभुजी ॥ टेर ॥

भावधरी भजियां तर जासी, मिल जासी तने अमरपुरी ।
आंगणिये सुरु-तरु फल जासी हो जासी थारी सफल घड़ी ॥१॥
भाव बिना धन्धा में धाये, चाहे चलावे कोई हाटां वड़ी ।
भाव बिना रो भोजन खारो, चाहे परोसे कोई सीरा-पूरी ॥२॥
भाव बिना री माला फीकी लूण बिना री जिम दाल-कढ़ी ।
भाव बिना री भक्ति सूनी, स्वामी बिना री जिम सूनी नगरी ॥३॥
भावना सांची चित्रा बेली, भावना सांची अमर जड़ी ।
निर्मल भावे मोरादेवी, मुक्ति सिधाई हाथी-हौदे चढ़ी ॥ ४ ॥
कांच महल में केवल आयो, पायो सुजश भरत चकरी ।
'आसोतरा' में 'धनमुनि' गावे, भावना भावे प्रभु भक्ति-भरी ॥५॥

पर्व पर्युषण

(तर्ज— तोता मैना की कहानी ......)

आया पर्वों का यह राजा, महाराजा पर्युषण आ गया ।
आओ हिल-मिल मनायें, करुणा स्रोत बहायें दिव्य जीवन-
सहारा आगया ॥ टे

होगा विशुद्ध यह तन हमारा, वने स्वर्ण-सा निर्मल सारा ।
तप अग्नि में तपता ही जाय, लगा कर्मों का कुमल सारा ।
लेलो इसका आधार, करे भव सागर पार, सव पर्वों में पावन आगय

तीर्थेश्वर जिसे अपनाए, महिमा देव मुनिवर भी गाऐ ।
अर्चना करे आज इसकी, सद्भावों के पुष्प चढ़ाऐ ।
द्धि का यह त्यौहार करे इसे स्वीकार यह समय संयम का आगय

'नाना गुरुवर'' हमें दरसाते, प्रभु समता की सरिता बहाते।
गुण गरिमा इन्हीं की गाकर, भवसागर से हम तिर जाते।
'सुशील'तू अपना ध्येय इन पे लगा यह पर्व सभी मन भागया ॥३॥

पंछी यह गीत गाता है

(तर्ज—फूलों का तारों का सब का कहना है)

सुबह सुहानी में पंछी यह गाता है ।
जागो रे जागो रे जीवन यह जाता है ॥
गया समय फिर नहीं आता है ॥ ध्रुव ॥
कभी लौट कर नहीं आती जवानी ।
उल्टा कभी बहता है गंगा का पानी ॥
पानी जो बहता है बहता ही जाता है ॥१॥
कली फिर बनती नहीं है कभी फूल ।
फूल – फूल करके मिलता है अन्त धूल ॥
जीवन के रूप का वह नाटक दिखाता है ॥२॥
खोई हुई घड़ी कभी मिल भी जाती है ।
जीवन की घड़ी न फिर मिलने पाती है ।
पागल घड़ी गवां कर रोता पछताता है ॥३॥
जीवन धर्म करने से होता है सफल ।
जैसे प्यासी खेती में वर्षा का जल ।
'केवल मुनि' ये तुम को गीत सुनाता है ॥४॥

फैशन छोड़ दो

फैशन छोड़ दो, फैशन में पूरा फोड़ा पड़सी रे ॥ टेर ॥
मूंछारा मरदां थे थांरी, मूंछा कठे गमाई रे,
सूता बैठा आ कांई थारे, मन में आई रे ॥ फैशन. ॥ १ ॥
कोट पेन्ट और टोप लगा कर, हिन्दू धर्म डुबायो रे,
धोती की एक लांग खोल कर धर्म गमायो रे। फैशन. ॥ २ ॥
घर में तो भोजन नहीं भावे आही आदत खोटी रे,
होटल में जाकर तू खावे, डब्बल रोटी रे ॥ फैशन. ॥ ३ ॥
माँ बाप को कारण–कायदो, ऊंचो मेल्यो खूंट्या रे
सिगरेंटां मुंडा में राखे, भाग फूटा रे ॥ फैशन. ॥

गिरदानों तो नहीं सुहावे, वड़ो अचम्भो आवे रे,
हेयर कटिंग में जाकर वावू, वाल कटावे रे ।। फैशन. ।। ५ ।।
बायां में फैशन ऐड़ी सूं, चोटी तांई चढ़गी रे,
फैशन बुरी वलाय हाय, भारत में वसगी रे ।। फैशन. ।। ६ ।।
मुनिया का व्याख्यान भी अव, फैशन वणग्या रे,
फैशनियां श्रोता लोगां के, मन मांही रमग्या रे।। फैशन.।। ७ ।।
ओधा और मुखपति मांहे, वेरण जाकर वसगी रे,
खादीरा कपड़ा में भी पीण, फैशन धसगी रे ।। फैशन.।। ८ ।।
सादगी सूं जीवन बितावे, तो सुधरे जिन्दगानी रे,
फैशन छांड़ सादगी धारो, केहे जिन वाणी रे।। फैशन. ।। ९ ।।

फेरो एक माला

सुबह और शाम की,
प्रभुजी के नाम की,
फेरो एक माला,
हो हो फेरो एक माला ।।

सकल सार नवकार मन्त्र है, परमेष्ठी की माला ।
नरकादिक दुर्गति का सचमुच, जड़ देती है ताला ।
कर्मों का जाला, मिटे तत्काला ।। फेरो एक माला ।। १ ।।

सुदर्शन और सीताजी ने, फेरी थी यह माला ।
शूली का सिंहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला ।
शील जिसने पाला, सच्चा है रखवाला ।।फेरो एक माला।। २ ।।

सुमिरण करके श्रीमती ने नाग उठाया काला ।
महा भयंकर विषधर था, वह वनी पुष्प की माला ।
धर्म का प्याला, पियो प्यारे लाला । फेरो एक माला ।। ३ ।।

द्रौपदी का चीर वढ़ाया, दुःशासन मद गाला ।
मैना सुन्दरी श्रीपाल का, जीवन वना विशाला ।
सुभद्रा ने वोला, चम्पा द्वार खोला ।।फेरो एक माला ।। ४ ।।

राजदुलारी वाल कुमारी, देखो चन्दन वाला ।
महा भयंकर कष्ट उठाया, सिर मुंड़ा था मूला ।
तपस्या का तेला, सब दुःख ठेला ।। फेरो एक माला ।। ५ ।।

समय बीतता जाये, मित्रों जीवन सफल बनालो ।
सद्गुरु के चरणों में, आ परमेष्ठी ध्यान लगालो ।
गुण गावे भोला, हरि ऋषि बोला ।।फेरो एक माला ।। ६ ।।

बृहदालोयणा

(रणजीतसिंह कृत)

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत ।
इष्ट देव वंदूं सदा, भय भंजन भगवंत ।। १ ।।
अरिहंत सिद्ध सुमरूं सदा, आचारज उवज्झाय ।
साधु सकल के चरण कूं, वंदूं शीश नमाय ।। २ ।।
शासन नायक सुमरिये, भगवन्त वीर जिनन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ।। ३ ।।
अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार ।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ।। ४ ।।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यों जल बरसत वेलि तरु, फूल फलन की वृद्धि।। ५ ।।
पंच परमेष्ठी देव को, भजन पूर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण ।। ३ ।।
श्री जिनयुगपद कमल में, मुझ मन भमर बसाय ।
कब ऊगे वो दिन करूं, श्रीमुख दर्शन पाय ।। ७ ।।
प्रणामी पद पंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत ।
कथन करूं अब जीव को, किंचित मुझ विरतंत ।। ८ ।।
आरंभ विषय कषाय वश, भमियो काल अनंत ।
लख चौरासी योनि से, अब तारो भगवन्त ।। ९ ।।
देवगुरु धर्म सूत्र में, नव तत्त्वदिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय ।। १० ।।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग ।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग ।। ११ ।।
जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार ।
प्रभो ! तुमारी साख से, वारम्वार धिक्कार ।। १२ ।।
वुरा – वुरा सबको कहूं, वुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधं आपणो, तो मोसूं वुरा न कोय ।। १३ ।।

कहवा में आवे नहीं, अवगुण भरया अनन्त ।
लिखवा में क्यों कर लिखूं, जानो श्री भगवन्त ।। १४ ।।
करुणा निधि करुणा करी, कठि कर्म मोय छेद ।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रन्थि भेद ।। १५ ।।
माफ करो सब माहरां आज तलक ना दोष ।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष ।। १६ ।।
पतित उधारण नाथजी, अपनो विरूद विचार ।
भूल–चूक सब म्हारी, खमिये वारम्वार ।। १७ ।।
आत्म–निंदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वंदन भाव ।
राग–द्वेष पतला करी, सब से खिमत खिमाव ।। १८ ।।
छूटूं पिछला पाप से, नवा न वांधू कोय ।
श्री गुरु देव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ।। १९ ।।
परिग्रह ममता तजि करी, पंच महाव्रत धार ।
अन्त समय आलोयणा, करूं संथारो सार ।। २० ।।
तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ।। २१ ।।
अरिहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा का धर्म ।
केवलि भाषित शासतर, यही जैन मत का मर्म ।। २२ ।।
आरंभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार ।
निज आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार ।। २३ ।।
खिण निकमो रहणो नहीं, करणो आतम काम ।
भणणो गुणणो सीखणो, रमणो ज्ञान आराम ।। २४ ।।
अरिहंत सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार ।
मंगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार ।। २५ ।।
घड़ी–घड़ी पल–पल सदा, प्रभु सुमिरण को चाव ।
नर–भव सफलो जो करे, दान शील तप भाव ।। २६ ।।

वालो पाँखा बाहिर आयो

वालो पाँखा वाहिर आयो, माता वेण सुणावे यूं ।
म्हारी कोख सराहिजे वाला मैं थने सरकरी घूंटी दूं ।।माता.।।१

तेज कटारी नाड़ो मोड़यो, नाड़ो मोड़त वोली यूं ।
वेरयांरी फौजां में जाईने, सत्य विजय कर आइजे तू ।।माता. ।।२

ढ़कर थाल बजायो, थाल बजावत बोली यूं ।
ंट चौखण्ड रे बाला नौपतड़ी धमकाइजे तू ।। माता. ।। ३ ।।
पूजकर फलसे आई, फलसे बढ़ताँ बोली यूं ।
में ढोला रे ढमके आरतड़ी करवाई जे तू ।। माता. ।। ४ ।।
ां सूतो वालो चूंखे माता बेण सुणावे यूं ।
दूध में कायरता रो कालो दाग न लगाइजे तू ।। माता. ।। ५ ।।
मांँ छाती से चेप्यो छाती चेपत बोली यूं ।
दुःखी असहाय जणां ने, छाती से चिपकाजे तू ।। माता. ।। ६ ।।
ी मांय भुजा हर लीन्हो, भार वहन्ती बोली यूं ।
ती मां को भय हटाइजे, मत ना भार बढ़ाइजे तू ।। माता. ।। ७ ।।
हन पालने बालो झूले झोटत झोटत बोली यूं ।
तनी वार हिलाइजे धरती, मैं थने जितरा झोटा दूं ।। नाता. ।। ८ ।।
ड़न खटोले बालो सूतो, माता बोल सूनावे यूं ।
रचांरी चतुरंगणी सेना गाढ़ी नींद सुलाइजे तू ।। माता. ।। ९ ।।

भज मानव अरिहन्ताणं

भज मानव अरिहन्ताणं सिद्धाणं अरिहन्ताणं ।
भज मानव अरिहन्ताणं, सिद्धाणं अरिहन्ताणं ।। टेर ।।
पाप कर्म से डरो, सत्य कर्म कुछ करो ।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभु का भजो रे ।।मानव.।। १ ।।
भज करके सेठ सुदर्शन जो न अपने पथ से डिगा है ।
शूली के वदले लोगों सिंहासन उसको मिला है ।।
वही काम तुम करो सत्य कर्म कुछ करो ।
छोड़ जगत के गोरख धन्धे, नाम प्रभु का भजो रे ।।मानव.।।२।
पावन यह मंत्र जपे जो, पावन फल है वो पाता ।
माया का वन्धन टूटे मुक्ति फल है वो पाता ।
वही काम तुम करो, सत्य कर्म कुछ करो ।
छोड़ जगत के गोरख धंधे, नाम प्रभु का भजो रे ।।मानव.।। ३ ।।
बस एक बात पते की स्वाध्याय मण्डल है कहता ।
तन मन न्यौछावर करके प्रभु का जो सुमिरन करता ।।
ज्ञान से मन को भरो सत्य कर्म कुछ करो ।
छोड़ जगत के गोरख धंधे, नाम प्रभु का भजो रे ।।मानव.।।

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ॥ टेर ॥
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ॥
खरचे न खुटे वाको, चोर न लूटे, दिन, दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो ॥

प्यारे त्यागी बनो

(तर्ज—तुमको लाखों प्रणाम)

शिव सुख पाना होतो प्यारे त्यागी बनो—२ ॥टेर॥
त्याग बिना कोई मोक्ष न पावे, त्याग कियां पातक रुक जावें ।
पद निरंजन पाना होतो त्यागी बनो ॥१॥
त्यागी को सुर-नर नमते हैं, धरते चरण विघ्न टलते हैं ।
गर्भ बीच नहीं आना होतो त्यागी बनो ॥२॥
चक्रवृती की रिद्धि भारी, त्याग सामने तुच्छ हैं सारी ।
आत्मा उच्च बनाना चाहो तो त्यागी बनो ॥३॥
जहां वैराग्य त्याग वहीं पावे, शूरवीर नर पार लगावें ।
जग से मोह हटाना होतो त्यागी बनो ॥४॥
दो हजार दो निमच आया गुरु प्रसादे "चौथमल" गाया ।
कर्म क्षपाना होतो प्यारे त्यागी बनो ॥५॥

पर्यूषण पर्व आज आया

पर्यूषण पर्व आज आया, के सज्जनों पर्व आज आया,
मित्रों पर्व आज आया, सब जीवों की करो दया यह सन्देशा लाया ।टेर।
आठों दिन तुम प्रेम धरी ने, वायाँ और भायाँ ।
खूब करो धर्म ध्यान खास सद्गुरु ने फरमाया ॥१॥
त्योंहार सिरोमणी यह जगत में तज दीजे प्रमाद ।
देव गुरु और धर्म अराधो, अनुभव रस आस्वाद ॥२॥

ज्ञान दर्शन चारित्र पोसवा पोसा करो जरूर ।
षट आवश्यक संवर समाई, करे पाप को दूर ॥३॥
रात्री भोजन और नसा सब, छोड़ो विणज व्यापार ।
हरी लीलोती मिथ्यात्व त्यागी, शील रतन लो धार ॥४॥
उत्तम करणी कीजे पुण्य से मनुष्य जन्म पाया ।
बेला तेला करो पंचोल, पच्छ खो अगयां ॥५॥
रतलाम शहर में पूज्य समीपे चौमासा आया ।
साल पच्चासी सभा बीच में चौथमल गाया ॥६॥

पल २ बीते उमरिया

(तर्ज—रुमझुम बरसे बादरवा 'रतन')

पल–२ बीते उमरिया, मस्त जवानी जाये ।
प्रभु गीत गाले गाले, प्रभु गीत गाले ॥ टेर ॥
प्यारा प्यारा बचपन पीछे, खो गया–खो गया ।
यौवन पाके तू मतवाला, हो गया हो गया ॥
बार–बार नहीं पावे रे–गंगा वहती है प्यारे, मौका है न्हाले गाले ॥१॥
कैसे कैसे बांके जग में, हो–गये–हो–गये ।
खेल खेलकर अन्त जमी, पर सो गये–सो गये ॥
कोई अमर नहीं आया रे पंछी ये फूल रंगीले मुर्झाने वाले गाले ॥२॥
तेरे घर में माल मसाले, होते हैं–होते हैं ।
भूख के मारे कई बेचारे, रोते हैं- रोते हैं ॥
उनकी कौन खबर लेरे, जिनके नहीं तन पर कपड़े ।
रोटियों के लाले गाले ॥३॥
गोरा गोरा देख वदन क्यूं फूला है—फुला है ।
चार दिनों की जिन्दगानी पर, भूला है–भूला है ॥
जीवन सफल बनाले रे, 'केवल मुनि' समझाये ।
ओ जाने वाले गाले ॥४॥

पाक्षिक सम्बन्धी सुश्रावक करो

पाक्षिक सम्वन्धी सुश्रावक, करो क्षमापना रे ॥ टेर ॥
ऋषभ अजित संभव सुखदाई, अभिनन्द प्रभु त्रिभुवन राई ।
सुमति पद्म प्रभु हरे, दुःख त्रय तापना रे ॥ १ ॥

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।। टेर ।।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ।।
खरचे न खुटे वाको, चोर न लूटे,दिन, दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ।।२।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो ।।

प्यारे त्यागी बनो

(तर्ज—तुमको लाखों प्रणाम)

शिव सुख पाना होतो प्यारे त्यागी बनो—२ ।।टेर।।
त्याग बिना कोई मोक्ष न पावे, त्याग किया पातक रुक जावें ।
पद निरंजन पाना होतो त्यागी बनो ।।१।।
त्यागी को सुर-नर नमते हैं, धरते चरण विघ्न टलते हैं ।
गर्भ बीच नहीं आना होतो त्यागी बनो ।।२।।
चक्रवृती की रिद्धि भारी, त्याग सामने तुच्छ हैं सारी ।
आतमा उच्च बनाना चाहो तो त्यागी बनो ।।३।।
जहां वैराग्य त्याग वहीं पावे, शूरवीर नर पार लगावें ।
जग से मोह हटाना होतो त्यागी बनो ।।४।।
दो हजार दो निमच आया गुरु प्रसादे "चौथमल" गाया ।
कर्म क्षपाना होतो प्यारे त्यागी बनो ।।५।।

पर्यूषण पर्व आज आया

पर्यूषण पर्व आज आया, के सज्जनों पर्व आज आया,
मित्रों पर्व आज आया, सब जीवों की करो दया यह सन्देशा लाया ।टे
आठों दिन तुम प्रेम धरी ने, बायाँ और भायाँ ।
खूब करो धर्म ध्यान खास सद्गुरु ने फरमाया ।।१
पर्व सिरोमणी यह जगत में तज दीजे प्रमाद ।
देव गुरु और धर्म अराधो, अनुभव रस आस्वाद ।।२

ज्ञान दर्शन चारित्र पोसवा पोसा करो जरूर ।
पट आवश्यक संवर समाई, करे पाप को दूर ॥३॥
रात्री भोजन और नसा सब, छोड़ो विणज व्यापार ।
हरी लीलोती मिथ्यात्व त्यागी, शील रतन लो धार ॥४॥
उत्तम करणी कीजे पुण्य से मनुष्य जन्म पाया ।
वेला तेला करो पंचोल, पच्छ खो अगयां ॥५॥
रतलाम शहर में पूज्य समीपे चौमासा आया ।
साल पच्चासी सभा वीच में चौथमल गाया ॥६॥

पल २ बीते उमरिया

(तर्ज—रुमझुम वरसे वादरवा 'रतन')

पल–२ वीते उमरिया, मस्त जवानी जाये ।
प्रभु गीत गाले गाले, प्रभु गीत गाले ॥ टेर ॥
प्यारा प्यारा वचपन पीछे, खो गया–खो गया ।
यौवन पाके तू मतवाला, हो गया हो गया ॥
बार–बार नहीं पावे रे–गंगा वहती है प्यारे, मौका है न्हाले गाले ॥१॥
कैसे कैसे बांके जग में, हो–गये–हो–गये ।
खेल खेलकर अन्त जमी, पर सो गये–सो गये ॥
कोई अमर नहीं आया रे पंछी ये फूल रंगीले मुर्झाने वाले गाले ॥२॥
तेरे घर में माल मसाले, होते हैं–होते हैं ।
भूख के मारे कई वेचारे, रोते हैं- रोते हैं ॥
उनकी कौन खवर लेरे, जिनके नहीं तन पर कपड़े ।
रोटियों के लाले गाले ॥३॥
गोरा गोरा देख वदन क्यूं फूला है—फुला है ।
चार दिनों की जिन्दगानी पर, भूला है–भूला है ॥
जीवन सफल बनाले रे, 'केवल मुनि' समझाये ।
ओ जाने वाले गाले ॥४॥

पाक्षिक सम्बन्धी सुश्रावक करो

पाक्षिक सम्बन्धी सुश्रावक, करो क्षमापना रे ॥ टेर ॥
ऋषभ अजित संभव सुखदाई, अभिनन्द प्रभु त्रिभुवन राई ।
सुमति पद्म प्रभु हरे, दुःख त्रय तापना रे ॥ १ ॥

श्री सुपार्श्व चन्द्र प्रभु ध्यावो, सुविधि शीतल श्रेयांस मनावो।
वासपूज्य के चरणन में, चित स्थापना रे ॥ २॥
विमल अनन्त धर्म पद दूजो, शान्ति नाथ सो देव न दूजो।
कुंथु और अर को जाप, करे क्षय पायना रे ॥३॥
मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी, श्री नमि नेम पार्श्वशिवगामी।
हे अगणित कर महावीर, जिन जापना रे ॥ ४
विहरमान प्रभु बीस जिनेशा पुंडरीक सौ आदि गणेशा।
सब मुनिराज महोदय, दिव शिव आपना रे ॥ ५
प्रेम युक्त सब क्षमो क्षमाओ, पारस्परिक विरोध मिटाओ।
मैत्री भाव बढ़ाय, कर्म वचन कापना रे ॥ ६
"माधव" मुनि मन मोद बढ़ा के. उत्तम क्षमा भाव मन लाके।
भव्यो भक्ति से सब हिलमिल, छन्द अलापना रे ॥

पार्श्वनाथ सहाई जाके

पार्श्वनाथ सहाई जाके, कमी रहे नहीं काँई ॥ पा० ॥
वन में मंगल रण में रक्षा, अग्नि हो सितलाई ॥ १ ॥
जहाँ जहाँ जाऊं वहाँ वहाँ आदर आनन्द रंग बधाई।
कहा करे द्वेषी जन कोई, बाल न बाँका न होई ॥ २ ॥
भजन करे सो नवनिधि पावे, विष अमृत हो जाई।
'रूप चन्द्र' प्रभु के गुण गावे, जन्म जन्म सुखदाई ॥ ३ ॥

पुण्य की महिमा सब गावे

(तर्ज—नेम जी की जान)

पुण्य की महिमा सब गावे, पुण्य से वांछित फल पावे।
पुण्य से मनुष्य जन्म पावे. पुण्य से उत्तम कुल पावे।
दोहा—पुण्य उदय सदगुरु मिले, मिले सूत्र के वैन।
जीवादिक नवतत्व पिछाने खुले जिगर के नैन।
पुण्य से धर्म हाथ आवे ॥ १ ॥
पुण्य से नरेन्द्र पद पावे, पुण्य से सुरेन्द्र पद पावे।
पुण्य से अति आदर पावे, पुण्य से विन श्रम धन आवे।

दोहा—विपिन पहाड़ जल अग्नि में, मिले पुण्य से साज ।
दसो दिशा नर जिनके मुख से, जिसकी सुने आवाज ।
पुण्य से सरस शब्द पावे ॥ २ ॥
पुण्य से सुर आते दौड़ी, हुकम में रहते कर जोड़ी ।
पुण्य से ढ़ले विघन कोडी, पुण्य से देसे वन्धन तोड़ी ।
दोहा—मेरे गुरु नन्दलालजी, कहते साफ सुनाय ।
रामपुरा में जोड़ वनाई, सवके पुण्य सहाय ।
सज्जन सुनके यकीन लावे ॥ ३ ॥

पैसो प्यारो रे

पैसो प्यारो रे, दुनिय में लागे मोहन गारो रे ॥ टेर ॥
पैसा से नर प्यारो लागे. जो काजल से कारो रे ।
अजव चीज दुनियां में पैसो, कहे जग सारो रे ॥ पैसो ॥ १ ॥
पैसा खातिर परमेश्वर की, सौ–सौ सौगन्ध खावे रे ।
प्राण प्यारी ने छोड़ पुरुष, प्रदेश सिधावे रे ॥ पैसो ॥ २ ॥
पैसा से दुनियां दे आदर. आगे आप पधारो रे ।
निर्धन ऊवो टुक टुक जोवे, लागे खारो रे ॥ पैसो ॥ ३ ॥
पैसा आगे पतो न लागे, जो परमेश्वर आवे रे ।
महादेव ने पार्वती आ, वाहर कढ़ावे रे ॥ पैसो ॥ ४ ॥
काणा, खोड़ा, लूला ने ओ, पैसो तो परनावे रे ।
बिन पैसा छैल छबीलो, नार न पावे रे ॥ पैसो ॥ ५ ॥
पैसा ने जो धूल बरोबर, समझे वो नर ज्ञानी रे ।
'नाथु मुनि' शिष्य चौथमल कहे, भविहित आणी रे ॥पैसो॥ ६ ॥

भविजन मंगलिक शरणा चार

प्रातः उठी ने सुमरिये हो, भविजन ! मंगलिक शरणा चार ।
आपदा मिटे सम्पदा हुवे, भविजन ! दौलतनां दातार ॥
हिरदे राखिये हो, भविजन ! मंगलिक शरणा चार ॥ टेर ॥
अरिहंत सिद्ध साधु तणां हो, भविजन ! केवलि भाषित धर्म ।
ये शरणां नित ध्यावतां हो, भविजन ! टूटे आठों कर्म ॥ २ ॥
वाटे घाटे चालता हो, भविजन ! रात दिवस मंझार ।
ग्राम नगर पुर विचरता हो, भविजन ! कष्ट निवारण हार ॥ ३ ॥

ये चारों सुखकारिया हो, भविजन ! ये चारों जग सार ।
ये चारों उत्तम कह्या हो, भविजन ! ये चारों हित कार ॥ ४ ॥
डायरा सायरा भूतड़ा हो, भविजन ! सिंह वाघ ने सूर ।
वैरी दुश्मन चोरटा हो, भविजन ! रहे ते सगला दूर ॥ ५ ॥
राखो शरणा री आसथा हो, भविजन ! नेड़ो नहिं आवे रोग ।
आनन्द बरसे इरा नामथी हो, भविजन! व्हाल तणो संयोग ॥ ६ ॥
सुख साता बरते घणी हो, भविजन ! जो ध्यावे नर–नार ।
परभव जातां जीव ने हो, भविजन ! एह तणो आधार ॥ ७ ॥
मन चिन्तित मनोरथ फले हो, भविजन ! बरते कोड कल्याण ।
शुद्ध मने नित धावतां हो, भविजन ! निश्चय कर निरवाण ॥ ८ ॥
इण सरीखो शरणो नहीं हो, भविजन ! इण सरीखो नहिं नाम ।
इण सरीखो मित्र नहीं हो, भविजन ! गाँव नगर पुर ठाम ॥ ९ ॥
दान–शील तप भावना हो, भविजन ! ए जग में तत्त्व सार ।
करो आराधो भाव से हो, भविजन ! णमो मोक्ष द्वार ॥ १० ॥
जोड़ कीधी छै जुगति से हो, भविजन ! 'पाली' शेखे काल ।
'ऋषि चौथमल' इम भणे हो, भविजन! सुण जो वाल गोपाल ॥ ११ ॥

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का, प्रचार घर–घर द्वार हो ॥ १ ॥
शांति अरु आनन्द का, हर एक घर में वास हो ।
वीर–वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो ॥ २ ॥
रोग अरु भय शोक होवे, दूर सब परमात्मा ।
कर सके कल्याण ज्योति, सब जगत की आत्मा ॥ ३ ॥
गुरुजनों के चरण में दृढ़ प्रीति अरु उल्लास हो ।
काम अरु क्रोधादि दुष्टों, का सर्व संहार हो ॥ ४ ॥
ज्ञान अरु विज्ञान का, सब विश्व में प्रचार हो ।
सब जगत के प्राणियों का, धर्म में संचार हो ॥ ५ ॥
आचार्य देवों के विचारों, का जगत में मान हो ।
'दास लाभ' को गुरु की शान पर अभिमान हो ॥ ६ ॥

卐

भज मन भक्ति युक्त भगवान

भज मन भक्ति युक्त भगवान, भरोसा क्या जिन्दगानी का ।। टेर ।।
चंचल अमल कमल दल ऊपर, ज्यों कण पानी का ।
जान तरल त्यों तन क्षण भंगुर, जग में प्राणी का ।। १ ।।
शरद जरद वून्द-वून्द सम जाहिर, जोर जवानी का ।
मत कर गर्व गुमान मान, कहना गुरु ज्ञानी का ।। २ ।।
था जग में कहो कौन दैत्य, दस मुख की शानी का ।
वता पता है कहां उसी, रावण अभिमानी का ।। ३ ।।
उदय अस्त लो राज हुआ था, पति इन्द्राणी का ।
वना तदपि रहा लोभ तोय हा कोड़ी काणी का ।। ४ ।।
है दुर्गति दातार प्रेम, दूजी दिल जानी का ।
को नहीं पाया क्लेश प्रेम कर, त्रिया विरानी का ।। ५ ।।
क्या विश्वास स्वास का पुनि इस, दुनिया फानी का ।
ले ले सम्बल संग नहीं, घर आगे नानी का ।। ६ ।।
जयपुर का श्री संघ रसिक है, श्री जिनवानी का ।
'माधव मुनि' कहे कथन मान मन सुमति सयानी का ।। ७ ।।

भाव भीनी वन्दना

भाव भीनी वन्दना, भगवान चरणों में चढ़ायें ।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय, रूप अपना आप पायें ।। टेर ।।
ज्ञान से निज को निहारें दृष्टि से निज को निखारें ।
आचरण की उरवरा में, लक्ष तरुवर लहलहाये ।। १ ।।
सत्य में आस्था अटल हो, चित्त संयम से न चल हो ।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गायें ।। २ ।।
बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी, भगवान भी हैं ।
छिन्नकर सब ग्रन्थियों को, सुप्त मानस को जगायें ।। ३ ।।
धर्म है समता हमारा, कर्म समता मय हमारा ।
साम्य योगी वन हृदय से, श्रोत समता का बहायें ।। ४ ।।

भर यौवन में पाल्यो शील

श्री विजय कंवर और विजया कंवरी नारी,
भर योवन में पाल्यो शील के ममता मारी ॥ टेर ॥
ये कच्छ देश और कसूम्वी नामा नगरी ।
जहां बाग–बगीचा शहर की शोभा सगरी ।
ये धन्ना नामा सेठ रास है धनरी ।
श्री विजय कंवर के धर्म करषरी लगरी ।
पुण्यवन्त मिली है विजया कंवरी नारी ॥भर.॥ १ ॥
सोले करके सिंगार, पिऊ घर जाती ।
गहणा पहिर्या है खूव घूंघर घमकाती ।
बालम से सुन्दर प्रेम धरी बतलाती ।
कामी की छाती थर्र – थर्र थर्राती ।
हित करके बोले विजयकंवर सुन प्यारी ॥भर.॥ २ ॥
क्यों मदन दीपन हो ऐसी बातां करती ।
मैं कृष्ण पक्ष का त्याग लिया मुनिवर थी ।
यों सुनके सुम्दर बोली नयना झरती ।
करें बेन भाई ज्यों मित्र, वातां इकराती ॥भर.॥ ३ ॥
श्री विमल केवली बखान इनका कीधा ।
जिनदास सु श्रावक सुनकर आया सीधा ।
कर भाव मुनि का दर्शन हिरदा भीजा ।
अरु खूब हुआ मन खुश के अमृत पोधा ।
तब माता–पिता ने सुनी हुई बात जारी । भर. ॥ ४ ॥
यों सकल जगत जाण्यो कुंवर कुंवरो को ।
घर प्रच्छन्न पणे में शील पाल रजनी को ।
जाने जगत सब फंद जान सब फीको ।
लेकर के आज्ञा पंथ लियो मुनिजी को ।
जाने शुद्ध पाल के शील आतमा तारी ॥ भर. ॥ ५ ॥

भाया प्रभु भजले रे भाया

प्रभु भजले रे भाया, प्रभु भजले ।
जरासो केणो मारों मानले, तू प्रभु भजले ॥ टेर ॥
इह माया में झूम रचो तू, कर रचो थारी म्हारी ।
धर्म की वातां केवे, लागे थाने खारी रे ॥भाया प्रभु ॥ १ ॥

मुट्ठी बांधियो आयो रे जग में, हाथ पसारियो जासी।
दया–धर्म की करले कमाई, आही आड़ी आसी रे भाया.॥ २ ॥
जवानी री अकड़ाई में टेड़ो – टेड़ो चाले ।
पर थने नहीं इतरी मालूम, कांई होसी काले रे ।।भाया प्रभु.॥ ३ ॥
छोटी–मोटी बरणी रे हवेलियां, अठे पड़ी रह जासी ।
दो गज कफन रो टुकड़ो आखिर, थारो साथ निभासी रे।।भाया.।।४॥
तू है पावरणो भूल मतीना, चार दिना रो भाई ।
काल काकाजी आवेला थारो, कंठ पकड़ ले जासी रे । भाया. । ५ ॥
'बाल मण्डल' केवे रे भायला, यो मोको नहीं आसी रे ।
प्रभु भजन नहीं कियो बावला, फिर पीछे पछतासी रे। भाया.॥ ६ ॥

भोला भूल मतीना जाजे रे

भोला भूल मतीना जा जे रे ।
मद भरियो जोवनिया थारो, ढलतो लाजे रे ॥ध्रुव॥
नीच ठिकाने उपज्यो रे, कियो सूघला आहार ।
हाड़–मांस रा डील रो थूं, करतो रहे सिरणगार ॥ १ ॥
गोरी – गोरो चामड़ी रे, थारा मन में ऐंठे ।
पतो नहीं है थोड़ा दिन में, व्हेला अगनी भेजे ॥ २ ॥
तरह–तरह सिरणगार करे तू, धोवे साफ शरीर ।
ऐंठ बाजारां निकले ज्यूं सबसे बड़ो अमीर ॥ ३ ॥
थोड़ा दिनारी पावरणी या जीवन री झलकार ।
इरण में आंधो व्हे जासी तो, ज़ासी जमारो हार ॥ ४ ॥
जीव देह दोई भिन्न है रे, कर आतम रो ज्ञान ।
देह नष्ट हो जासी फिर क्यों करता अभिमान ॥ ५ ॥
सतगुरु रो शरणो पकड़ रे, सीख हिया में मान ।
सांची–सांची 'कुमुद' कहे तू, भजले रे भगवान ॥ ६ ॥

महावीर शूरवीर महाबली महाधीर

महावीर शूरवीर महाबली महाधीर ।
वाणी मीठी खांड खीर, सिद्धारथ नन्द है ॥
नागणी–सी नारी जाण, घट में वैराग्य आन ।
जोग लियो जग भान, छोड़्या मोह फन्द है ॥ १ ॥

चौदह हजार सन्त तार दिया भगवन्त ।
कर्मों को कियो अन्त पाम्या सुख कन्द है ।
भणे मुनि "चन्द्रभान" सुनो हो विवेकवान ।
महावीर धरिया ध्यान उपजे आनन्द है ।
वर्धमान जपे जाप सदा ही आनन्द है ॥ २ ।
पाप पन्थ परिहार मोक्ष पन्थ पग धार ।
अभिमान दूर टार निन्दा को निवारी है ॥
संसारियों का छोड़ा संग आलस न आवे अंग ।
ज्ञान सेती राखे रंग मोटा उपकारी है ॥ ३ ॥
मन मांही निरमल, जाणे है गंगा जल ।
काटे ते करम–दल नव तत्त्व धारी है ॥
संयम की करे खप, बारे मेडे करे तप ।
ऐसे अणगार वांको "वन्दना" हमारी है ॥ ४ ॥

मानवता की भव्य भूमि से

मानवता की भव्य भूमि से बोल गये भगवान ।
मानव – मानव एक समान । टेर ॥
यही शान्ति का राजमार्ग है महावीर फरमान—मानव. ।
विषम वर्ग की आग बुझाना, अबन ज्यादा लोभ बढ़ाना ।
गिरा पड़ौसी दौड़ उठाना, पढ़ना समता पाठ पढ़ाना ।
तभी विश्व प्रेम के होंगे सफल सभी अरमान ॥मानव.॥१
भूखा पेट और फटी लंगोटी मांगे तुम से कपड़ा रोटी,
बोलो कितनी मांग है छोटी आज तुम्हारी खरी कसौटी ।
दुखियाओं का करुणा क्रन्दन गाता क्रांति गान ।।मानव.।२
अब नहीं उल्टी हवा बहेगी, दुःखी आत्मा साफ कहेगी,
भूखी जनता अब ना सहेगी धन और धरती बंटके रहेगी ।
खूनी क्रांतियां रोकन हो तो दे दो झटपट दान ।मानव.॥३
धरती किसकी बनी रही है, किसी एक के बन्धी नहीं है,
माया बादल छाया कहीं है, बोलो किसके साथ गई है ।
धन–धरती का गर्व न करना यह तो है महमान।।मानव.॥४
प्राणीमात्र से प्रेम बढ़ाओ मानवता के फूल खिलाओ,
अपनी अच्छी याद बसाओ सुख चाहो तो सुख पहुंचाओ ।
'लाभ'(सुरेश)मानव जीवन से करलो परम उत्थान।मानव.॥५।

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥ १ ॥
विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य-भाव धन रखते हैं ।
निज-पर के हित साधन में जो, निशि दिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, विना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ॥ २ ॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूं ।
पर धन वनिता पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूं ॥ ३ ॥
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं ।
बनें जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं ॥ ४ ॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-स्रोत बहे ॥
दुर्जन-क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे ।
साम्य भाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे ॥ ५ ॥
गुणी-जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बनें जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥ ६ ॥
कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥ ७
होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावें ।
पर्वत नदी श्मशान भयानक अटवी से नहीं भय खावें
रहै अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे

अर्धमागधी वाणी जाकी, योजन इक पर्यन्त ।
सुनत अमर नर पशु हिलमिल के, समझ सुबोध लहन्त ।।म. ।। २ ।।
मुनि मन सम चित चमर अमर गण, प्रमुदित व्है दारन्त ।
स्फटिक रत्न के सिंहासन पर, त्रिजगत पति राजन्त ।।म. ।। ३ ।।
प्रभावलय तम प्रलय करन हित, दिनकर सम दमवन्त ।
पृष्ट भाग रहि प्रभुजी के सो, प्रवल प्रकाश करन्त ।।म. ।। ४ ।।
गगन मांहि घन गर्जारव सम, दुन्दुभि नाद बजन्त ।
तीन छत्र शिर सोहे ताके, तू त्रिभुवन को कन्त ।।म. ।। ५ ।।
तव सुमिरे सुख सम्पति पावे, नर सुर पथ प्रणमन्त ।
अष्ट-सिद्धि नव-निधि घर प्रकटे, तेरो जो जाप जपंत ।।म. ।। ६ ।।
'माधव' मुनि कर जोड़ विनवें, विनय सुनो भगवन्त ।
ऋद्धि वृद्धि, बुद्धि वैभव देवो, अरु सुखसादि अनन्त ।।म. ।। ७ ।।

मनुष्यों क्यों मुझे जबरन

मनुष्यों क्यों मुझे जबरन, अपन जैसा बनाते हो ।
नमस्ते है तुम्हें, तुम तो मेरी प्रभुता घटाते हो ।। १ ।।
पिता हूं विश्व का फिर भी, समझते बाल नन्हा-सा ।
लिटा कर पालकी में लोरियां, दे दे सुलाते हो ।। २ ।।
नहीं लगती मुझे सर्दी, नहीं लगती मुझे गर्मी ।
उढ़ाते क्यों दुशाले और, पंखे क्यों ढुलाते हो ।। ३ ।।
स्वयं मैं शुद्ध निर्मल हूं तथा औरों को करता हूं ।
समझ का फेर है प्रतिदिन, कैसे मलमल नहलाते हो ।। ४ ।।
भला मुझ निर्विकारी का, विवाह क्यों रंग लायेगा ।
बिछा कर पुष्प शैया प्रेम, से किसको सुलाते हो ।। ५ ।।
नहीं मैं हूं तुम्हारे मिष्ट, मोहन भोग का भूखा ।
वृथा ही नाम ले मेरा, स्वयं मौजें उड़ाते हो ।। ६ ।।
दया करके मुझे नीचे, गिराना छोड़ दो भक्तों ।
'अमर' मम तुल्य बनकर क्यों, न मेरे पास आते हो ।। ७ ।।

मनोरथ तीन उत्तम

मनोरथ तीन उत्तम ये, जिनेश्वर ! नित्य भाता हूं,
कृपा की आश रखता हूं सफल हो शीघ्र चाहता हूं ।।टेर।।

परिग्रह पाप का दलदल, फंसा हूं फंसता जाता हूं ।
घटे थोड़ा–वहुत प्रतिदिन, वड़ा ही कष्ट पाता हूं ।। १ ।।
प्रमादी गृहस्थ जीवन है, अधूरी धर्म करणी है,
वनूंगा कव मुनिमुझ में, हो ऐसी शक्ति चाहता हूं ।। २ ।।
मोक्ष की है लगन पूरी, न कोई अन्य आशा है,
देह छूटे समाधी से, अन्त शुभ भाव चाहता हूं ।। ३ ।।
दीन हूं दीनता करना, देवता ! दान तू करना,
मनोरथ पूर्ण सब करना, चरण तेरे पकड़ता हूं ।। ४ ।।
कहे 'पारस' सुनो केवल, विरुद अपना निभाना तुम,
कहूं अव और आगे क्या ! न खोजे शब्द पाता हूं ।। ५ ।।

मानो सतगुरु की सीख

क का कर अरिहंत को ध्यान, ख खा खोटा तज अभिमान ।
ग गा गुरु अपना पहिचान,
घ घा घट अन्तर में जोय के आखिर जावणो रे ।
मानो सदगुरु की तुम सीख, हिये में धारणा रे ।।
सुणिये नित्य उठ आप बखाण, मोक्ष पद पावणा रे ।।मानो....।। १ ।।
च् च् चा चेतो रे भव प्राणी, छ छ् छा छोड़ो मत जिनवाणी ।
ज ज् जा जैन की आ ही निशाणी ।
झ झा झूठ कबहुं मत बोल, चाहे दुःख पावणा रे ।। मानो....।। २ ।।
ट टा टहल संतो की कीजे, ठ ठा ठाली दुःख मत दीजे ।
ड डा डर पर भव को कीजे,
ढ़ ढ़ा ढ़ील करो मत भाई, फेर पछतावणां रे ।। मानो....।। ३ ।।
त ता तू क्या लेकर आया, थ था स्थिर नहीं रहसी काया ।
द दा दूर हटा दे माया, ध धा धारो समकित रत्न ।
सिद्ध गति पावणा रे ।। मानो....।। ४ ।।
प पा पाप कूं पीछे हटावो, फ फा फेर नहीं पछतावो ।
ब बा वचनों को खूब निभावो, भ भा भक्ति बिना हरगिज ही ।
फल नहीं चावणां रे ।। मानो....।। ५ ।।
य या याद करो भगवंत को, ल ला लोभ करो मत धन को ।
व वा विनय करो सतगुरु को, लाभ उठावणा रे ।। मानो....।। ६ ।

श शा शास्त्र सुणो तुम सारो, ष षा षट् दर्शन को धारो।
स सा समकित हिये विचारो, ह हा हंसराज का केना।
हिरदे धारणा रे ॥ मानो....॥ ७

मीठे–मीठे काम भोग में फंसना मत

मीठे–मीठे काम भोग में फंसना मत देवाणु पिया।
बहुत–बहुत कड़वे फल पीछे होते हैं देवाणु पिया॥ टेर

जो वीणा के मधुर स्वर में, मुग्ध हरिण हो जाता है।
फंस जाता है व्याघ्र जाल में, चर्म उधेड़ा जाता है।
तुझको प्रिय संगीत है कितना कर चिंतन देवाणु पिया॥ १॥

जो ज्योति के स्वर्ण दृष्य में, मुग्ध पतंगा होता है।
जल जाता है अग्निचिता में, तड़फ-तड़फ कर मरता है।
तुझको प्रिय नाटक है कितना, कर मन्थन देवाणु पिया॥ २॥

जो केतकी की सुरभि गंध में, मुग्ध सर्प हो जाता है।
पीटा जाता लठ पत्थर से, बुरी तरह मर जाता है।
तुझको प्रिय तैलादिक कितने, करो ध्यान देवाणु पिया॥ ३

जो पाकर एक मांस खण्ड को, मच्छ मुग्ध हो जाता है।
छिद जाता वह तिक्षण शस्त्र से, फिर चूल्हे पर पकता है।
तुझको प्रिय भोजन है कितना, करो मनन देवाणु पिया।

जो पानी की शीत स्पर्श में, मोहित भैंसा होता है।
खिच जाता वह मगर आंत से, दाढ़ बीच में आता है।
तुझको प्रिय प्रसाद है कितना, कर विचार देवाणु पिया।

जो हथिनी के काम भोग में, मोहित हाथी होता है।
गिर जाता गहरे गड्ढे में, सांकल में बंध जाता है।
तुझको प्रिय नारी है कितनी, पूर्ण सोच देवाणु पिया॥

एक–एक विषय, गृद्धी का भी जव यह फल होता है।
जो सव में आसक्त वना वह, कितना कटु फल पाता है।
केवल कहते 'पारस' सुनरे हो विरक्त देवाणु पिया।

卐

मुक्ति का मार्ग ज्ञानी देव फरमाया

ये दान शील तप भाव सार बतलाया ।
मुक्ति का मार्ग ज्ञानी देव फरमाया ।। टेर ।।
ये छः काया का जीव दया जो पारे ।
वो अभय दान दातार जन्म सुधारे ।।
और देवे सुपात्र को दान पात्र अणगारे ।
वो पावेगा बहु रिध भरया भंडारे ।।
दोहा— गवल्या का भव माय, दीनो दान चितलाय ।
शालिभद्र सुख पाय, भण्डार भरया ।
कुंवर सुबाहु सूं जान, हुआ रूप का निदान ।
पनरा भव के दरम्यान, कारज सिद्ध किया ।
जाने जिन मारग में, बहुत जोर लगाया ।। १ ।।
यो शील बड़ो संसार, करो कोई करणी ।
या नव वाड़ी निर्मल, चित्त शुद्ध धरणी ।
है विषय रूप नी लाय, जगत में तरणी ।
केई डूब गया संसार नार संग वरणी ।
दोहा— देखो जम्बू कुंवर, परणया राते आठो नार ।
लारे लीदो परिवार, गुरु पासे जाई ।
सुभद्रा सीता नार, और घणा है संसार ।
पालो शील को आचार छती जोग बाई ।
यो अष्ट महा भय मिटे शील सुखदायी ।। २ ।।
जो करे तपस्या, जोर जबर लगावे ।
करे कर्म को चूर, मोक्ष में जावे ।
कोई बेला तेला, मास खमण जो ठावे ।
सब बारा भेद के मांहि, गणित गिणावे ।
दोहा— गौतम नामा अणगार, धन धन्नो अणगार ।
चाल्यो सूत्र में अधिकार भांत-भांत करी ।
पाले श्रावक आचार, पडिमा इग्यारह का धार ।
गुणवन्ता नर नार, ही थें हरस धरी ।
कई रिद्ध सिद्ध तपस्या से लब्धि पाया ।। ३ ।।
जो भावे भावना चित्त, मन शुद्ध लाई ।
भावां से सिद्धि होवे, वस्तु के मांहि ।

भावां से करणी करे तो, वो फल पावे ।
'विन भावां से करियां, कष्ट वृथा ही जावे ।
दोहा— भावे भरत महाराज, सारा आतम का काज ।
मरू देवी गज राज, चढ़ी मोक्ष गयी ।
ऐला पुत्र अणगार, प्रसन्नचन्द्र खेवा पार ।
भावा हुवा जै जैकार, अटल सुख लिया ।
"हीरालाल" कहे ऐसी बात सुणो रे भाया ॥ ४ ॥

मुझ म्हेर करो चन्द्र प्रभु

जय जय जगत सिरोमणी, हूं सेवक ने तू धणी ।
अब तो सूं गाढ़ी बणी, प्रभु आशा पूरो हम तणी ॥ टेर ।
मुझ म्हेर करो, चन्द्र प्रभु, जग जीवन अन्तर्यामी ।
भव दुःख हरो, सुणिये अरज हमारी हो त्रिभुवन स्वामी ॥ १ ।
"चन्द्रपुरी नगरी" हती, "महासेन" नामा नरपति ।
राणी "श्री लखमा" सती, तस नन्दन तू चढ़ती रती ॥ २ ।
तू सर्वज्ञ महाज्ञाता आतम अनुभव को दाता ।
तो तूं ठा लहिये साता, धन्य-धन्य जग में तुम ध्याता ॥ ३ ।
शिव सुख प्रार्थना करसूं, उज्ज्वल ध्यान हिये धरसूं ।
रसना तुम महिमा करसूं, प्रभु इन विध भवसागर तिरसूं ॥ ४ ।
चन्द्र चकोरन के मन में, गाज आवाज होवे घन में ।
प्रिय अभिलाषा त्रियतन में, त्यूं बसियो मोरे चितवन में ॥ ५ ।
जो सुनजर साहिब तेरी, तो मानो विनती मेरी ।
काटो करम भरम बेरी प्रभु पुनरपि नहीं परूं भव फेरी ॥ ६ ।
आत्म-ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती लव लागी ।
अन्य देव भ्रमना भागी, विनयचन्द्र' तिहारो अनुरागी ॥ ७ ।

मेरी क्या करेगा पालना

(तर्ज— जरा सामने तो आओ छलिये)

ओ मगध देश के राजा, क्या मौत भी तेरे हाथ है ।
मेरी क्या करेगा पालना, तू खुद ही हे राजन अनाथ है ॥ टेर ।
माना कि तेरे हाथी हैं घोड़े, रम्भा-सी हैं पटरानियां ।
लक्ष्मी का लाल है, राज्य विशाल वैभव में वीते जवानियां ।

पर एक सुनाऊ तुझे बात है,
जरा सुनना तू ध्यान के साथ है ।।मेरी. ।। १ ।।
न का भण्डार था मेरे परिवार था, सेठ का लाल कहाता था ।
ाई-बहन थे सब सुख-चैन थे. पत्नी का प्यार भी पाता था ।
बीते आनन्द में दिन रात है,
रहते मित्र भी हरदम साथ है । मेरी. ।। २ ।।
क दिवस हुई वेदना भारी, रोग ने आकर घेर लिया ।
ाग दौड़ मच गई, कतारें लग गई, वैद्यों ने आ उपचार किया ।
ोई अंग दबाते दिन रात हैं, कोई देवों को जोड़ते हाथ हैं ।।मेरी.।। ३ ।।
न भी धरा रहा घर भी भरा रहा, मिटा सका नहीं रोग कोई ।
ाजर-हजार थे, पर सब बेकार थे, दूर खड़ा रहा आया जोई ।
हुई चला चली की बात है,
छोड़ी आशा सभी ने एक साथ है । मेरी.।। ४ ।।
तने में ही एक भावना जागी, प्रभु को मैंने याद किया ।
ाग को निवारदे बिगड़ी को संवारदे, साथ में प्रण भी यह धार लिया।
सब छोड़ूंगा जग का साथ है ।
अब तू ही प्रभु मन नाथ है । मेरी. ।। ५ ।।
ाजली सी चमकी, रोग पे दमकी, वेदना सारी भाग गई ।
सी क्षण छोड़ा, जग नेह तोड़ा. आत्मा मेरी जाग गई ।
जरा समझ भेद भारी बात है ।
बोल कौन अनाथ सनाथ है ।। मेरी. ।। ६ ।।
ान ज्योति जागी श्रेणिक सौभागी, समकित व्रत आराध लिया ।
ावों की दया धर धर्म दलाली कर, गौत्र तीर्थंकर बांध लिया ।
ले अनाथों जैसे गुरुनाथ है, 'जीत' जागना तेरे हाथ है ।। मेरी. ।। ७ ।।

मेरे गुरुवर जी

मैंने लीना धार, मेरे गुरुवर जी ।
हां मेरे प्राण आधार मेरे गुरुवर जी ।।टेर।।
पांच महाव्रत पालन करते, पांच समिति धारण करते ।
श्वेत वस्त्र के धार, मेरे गुरुवर जी····।। १ ।।
मुख ऊपर जो मुहपत्ति बांधे, खुले मुख से कभी न बोले ।
बोले बोल विचार, मेरे गुरुवर जी····।। २ ।।

नीचे देखी दिन में चाले, पुंज पुंज कर रात में चाले।
करे न रात बिहार, मेरे गुरुवर जी""॥ ३॥
अपना बोझा, आप उठावे, गृहस्थों से नहीं काम करावे।
पाले दृढ़ आचार, मेरे गुरुवर जी""॥ ४॥
साधु निमित्त किया नहीं लेवे, धोवण पानी लेते रहते।
लेते शुद्ध आहार, मेरे गुरुवर जी""॥ ५॥
जड़ पूजा को कभी न मानो, गुण पूजा को उत्तम जानो।
कहते बात विचार, मेरे गुरुवर जी""॥ ६॥
नहीं किसी की हिंसा करना प्राणि मात्र की रक्षा करना।
शिक्षा दे हितकार, मेरे गुरुवर जी""॥ ७॥
छः काया की रक्षा करते, 'दया पालो' हरदम कहते।
सच्चे श्री अणगार, मेरे गुरुवर जी""॥ ८॥

मैंने बहुत किये अपराध

मैंने बहुत किये अपराध, नाथ मोहे कैसे तारोगे।
कैसे तारोगे जिनन्द मोहे कैसे तारोगे ॥मैंने.॥ टेर।
श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन।
सुमती पदम सुपास।
चन्दा प्रभु जी ने सुविधि जिनेश्वर।
शीतल दो शिववास ॥ मैंने.॥ १।
श्री श्रेयांस वासू पूज्य शिवरूं।
विमल–विमल मति वन्त।
अनन्त नाथ जी ने धर्म जिनेश्वर।
शान्ति करो श्री सन्त ॥ मैंने.॥ २।
कुन्थु नाथ प्रभु करुणा के सागर।
अर नाथ जगदीश।
मल्लि नाथ जी ने मुनि सुव्रत जी।
नित्य नमाऊं शीश ॥ मैंने.॥ ३।
इक्वीसवां नमिनाथ निरूपम।
रिष्ट नेमी जग धार।
तोरण से प्रभु पाछा फिरिया।
शिव रमणी भरतार ॥ मैंने.॥ ४॥

पारस पारस सरीखा प्रभु जी ।
लावारिस के नाथ ।
वर्धमान शासन के स्वामी ।
प्रणमूं जोड़ी हाथ ।। मैंने. ।। ५ ।।
तुम विन पायो दुःख अनन्तो ।
जनम–मरण जंजाल ।
'त्रिलोक ऋषि' कहे जिम तिम करीने ।
तारो दीन दयाल ।। मैंने. ।। ६ ।।

मैं तो उन्हीं संतों का हूं दास

मैं तो उन्हीं सन्तों का हूं दास, जिन्होंने मन मार लिया ।। टेर ।।
मन मारा और तन वस कीना, भ्रम किये सब दूर ।
वाहिर से वो दीसे नाहिं, भीतर से चमके थारे नूर ।। १ ।।
काम क्रोध मद लोभ तजी ने, मेटी जग की त्रास ।
बलिहारी उन संतन की जो, प्रकट भये पर काज ।। २ ।।
आपा मार जगत में वैठे, नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं, साधु कहो चाहे राम ।। ३ ।।
रूखा सूखा भोजन खावे, षट रस व्यन्जन त्याग ।
नव वाड़ से ब्रह्मचर्य पाले, सांई कहे वैराग्य ।। ४ ।।
स्यादवाद वाणी बरसावे, नहीं झगड़े का काम ।
तीर्थंकर के मार्ग चाले, साधु कहो वीतराग ।। ५ ।।
आध्यात्मिक है जीवन जिनको आत्म–शुद्धि का ज्ञान ।
प्रपन्चों से दूर रहे रे, निशदिन ध्यावे शुभ ध्यान ।। ६ ।।
पंच महाव्रत पाले स्वामी, सम–दृष्टि गुणवान ।
ऐसे गुरु के दर्शन 'माधव', पाये पद निर्वाण ।। ७ ।।

मोहे काहे न पार उतारा

(तर्ज— मेरी प्यारी बहिनिया·······)

तेरी मुक्ति नगरिया की, ढूंढूं डगरिया,
तू ने लाखों को भव से उवारा,
मोहे काहे न पार उतारा ।। ध्र

मन मन्दिर में विठाऊं दिन रैना ।
रूप तिहारा निहारेंगे ये नयना ॥
सदियों का साथ है ये दूर नहीं रहना ।
अब तो भव से लगा देना पारा ॥ १ ॥
तन मन धन मेरा सब कुछ तू ही है ।
जीवन का स्वामी जहां में एक तू ही है ॥
नैया को तिराने वाला तूही एक तू ही है ।
ओ दुनिया के तारन हारा ॥ २ ॥
निश दिन महर नजर हो तुम्हारी ।
चरण कमल में जाऊं वलिहारी ॥
विनती जो नाथ मेरी तूने न स्वीकारी ।
नेम जाये कहाँ दुखियारा ॥ ३ ॥

महावीर के वो भक्त कहाते

भगवान महावीर के, वो भक्त कहाते ।
करे जान को कुर्बान, दया धर्म दिपाते ॥टेर॥
हंस-हंस के आपदाओं का, जो करते सामना ।
इस लोक की परलोक की, नहीं दिल में कामना ।
करते हैं इकरार उसे पूर्ण निभाते ॥ भग० ॥ १ ॥
जिनराज अरिहन्त को ही देव मानते ।
मन्त्रों में सर्व श्रेष्ठ नवकार जानते ।
भैंरू भवानी पीर को, नहीं शीश झुकाते।।भग.॥ २ ॥
रहते सदा जो कनक कामिनी से दूर हैं ।
वैराग्य त्याग से करे कर्म चूर हैं ।
ऐसे गुरु की शरण में, सब पाप नसाते ।।भग.॥ ३ ॥
है धर्म सत्य जिसमें, दया दान की मानता ।
सम्यक्त्व ज्ञान युक्त क्रिया, भाव की प्रधानता ।
पाखण्ड के परपंच में, हरगिज न फंसाते।।भग.॥ ४ ॥
इतिहास कामदेव का, रग रग में भरा हो ।
फिर तत्त्व क्रिया का ज्ञान पूर्ण करा हो ।
हां धर्म के उत्थान में, तन धन को लुटाते ।।भग.॥ ५ ॥

है वर्धमान शहर, वीर वर्धमान का।
श्री संघ लाभ ले रहा ज्ञान ध्यान का।
कहता है 'मुनि कृष्ण' मुझे वीर सुहाते ॥भग॥ ६॥

महावीर प्रभु की जय बोलो

महावीर प्रभु की जय वोलो, अपने कर्मों के मल धोलो ॥टेर॥
प्रभु ने जो वाणी फरमायी, इह भव पर भव है सुखदायी।
सव वाणी में हैं अनमोलो, महावीर प्रभु की जय बोलो ॥ १ ॥
नर से नारायण वन जाता, अविचल शाश्वत साता पाता।
सव जन श्रद्धा से अपनालो, महावीर प्रभु की जय बोलो ॥ २ ॥
पंचम आरे में भाग्य खिला, ऐसी वाणी का योग मिला।
'रतन' सब अमृत पीलो, महावीर प्रभु की जय बोलो ॥ ३ ॥

महावीर तुम्हारे चरणों में

हम विनय सुनाने आये हैं, महावीर तुम्हारे चरणों में।
मन सुमन चढ़ाने आये हैं, महावीर तुम्हारे चरणों में ॥टेर॥
तुम ज्योतिपुंज तुम दयानिधि, हम दीन हीन संसारी हैं।
दुःख पीड़ित हम हैं पड़े हुए, महावीर तुम्हारे चरणों में ॥ १ ॥
जब डूब गया जग हिंसा में तुमने आ उसे उबारा था।
वापिस आओ जग कहता है, महावीर तुम्हारे चरणों में ॥ २ ॥
यह भव्य वाटिका उजड़ रही, पापों की नदियां बहती हैं।
है पाप विनाशक शक्ति सदा, महावीर तुम्हारे चरणों में ॥ ३ ॥
संदेश तुम्हारे अमर सदा, कहे 'कुमुद' उन्हें अपनायेंगे।
शत कोटि नमन शत कोटि नमन, महावीर तुम्हारे चरणों में ॥४॥

मनवा बड़ा भोला भाला

(तर्ज— कभी खोले ना तिजोरी का ताला······)

कभी खोवो ना जीवन मिला आला, हां हां तेरा मनवा बड़ा भोला भाला।
कब पायेगा धर्म उजियाला, हां हां तेरा मनवा बड़ा भोला भाला।
गुन गुना, गुन गुना, गुन गुना··························
मानव जीवन चंगा, हीरों से भी मंहगा है,
इसका मिलना मुश्किल है, मत रहना मन गाफिल है।

आओ थोड़ा गौर करो, जीवन को कुछ और करो,
ज्योति नई जगाना है, जीवन धन्य बनाना है।
दुर्व्यसनों का त्याग करो, सदाचार से लाग करो,
खुल जायेगा तेरे दिल का ताला...... हाँ हाँ तेरा मन. ॥ १ ॥
परनारी से प्यार करे, अपना जीवन छार करे,
मद्य मांस जो खाता है, खुद को धूल मिलाता है।
सट्टा का जिसको चस्का, बिगड़ा हाल सदा उसका,
जुआ जिसको प्यारा है, वह तो रंक विचारा है।
खोकर सब कुछ रोता है, कोई ना साथी होता है,
निकल जाता है उसका दिवाला.........हाँ हाँ तेरा मन. ॥ २ ॥
भंग रंग सब करती है, बीड़ी कैंसर करती है,
गांजा मूर्खों का साथी, बुझ जाती जीवन वाती।
अरे चाय भी सबकी दुश्मन है, निर्बल करती तन-मन है,
नशा न कर धन थैली का, दुःखमय नर्क सहेली का।
इससे पुण्य कमा जाओ, ये सब शिक्षा अपनाओ,
छाये जीवन में फिर तो उजाला..........हाँ हाँ तेरा मन. ॥ ३ ॥

यह पर्व पर्युषण आया

यह पर्व पर्युषण आया, सब जग में आनन्द छाया रे ॥ टेर ॥
यह विषय कषाय घटाने, यह आत्म गुण विकसाने।
जिनवाणी का बल लाया रे ॥ यह. ॥ १ ॥
यह जीव रुले चहुं गति में, ये पाप करण की रति में।
निज गुण सम्पद को खोया रे ॥ यह. ॥ २ ॥
तुम छोड़ प्रमाद मनाओ, नित धर्म–ध्यान रम जाओ।
लो भव–भव दुःख मिटाया रे ॥ यह. ॥ ३ ॥
तप जप से कर्म खपाओ, दे दान द्रव्य फल पाओ।
ममता त्यागो सुख पाओ रे ॥ यह. ॥ ४ ॥
मूरख नर जन्म गमावे, निंदा विकथा मन भावे।
इनसे ही गोता खाये रे ॥ यह. ॥ ५ ॥
जो दान शील अराधें, तप द्वादश भेदे साधें।
शुद्ध मन जीवन सरसाया रे ॥ यह. ॥ ६ ॥

वेला तेला और अठाइयां, संवर पौषध करे भाया ।
शुद्ध पालो शील सवाया रे ॥ यह० ॥ ७ ॥
तुम विषय कषाय घटाओ, मन मलिन भाव मत लाओ ।
निंदा विकथा तज माया रे ॥ यह० ॥ ८ ॥
कोई आलस में दिन खोवे, शतरंज तास रमे या सोवे ।
पिक्चर में समय गमाया रे ॥ यह० ॥ ९ ॥
संयम की शिक्षा लेना, जीवों की जयणा करना ।
जो जैन धर्म तुम पाया रे ॥ यह० ॥ १० ॥
जन–जन का मन हरषाया, बालक गण भी हुलसाया ।
आत्म शुद्धि हित आया रे ॥ यह० ॥ ११ ॥
समता से मन को जोड़ो, ममता का बन्धन तोड़ो ।
है सार ज्ञात का पाया रे ॥ यह० ॥ १२ ॥
सुरपति भी स्वर्ग से आवे हर्षित हो जिन गुण गावे ।
जन–जन को अभय दिलाया रे ॥ यह० ॥ १३ ॥
'गज मुनि' निज मन समझावे, यह सोयी शक्ति जगावे ।
अनुभव रस पान कराया रे ॥ यह० ॥ १४ ॥

मैं हूं उस नगरी का भूप

मैं हूं उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप ॥ टेर ॥
तारा–मण्डल की न गति है, जहाँ न पहुंचे सूर ।
जग मग ज्योति सदा जगती है. दीसे यह जग कूप ॥मैं. ॥ १ ॥
मैं नहीं श्याम–गौर वर्णी हूं, मैं न सुरूप कुरूप ।
नाहिं लम्बा–बौना भी मैं हूं, मेरा अविचल रूप ॥ मैं. ॥ २ ॥
अस्थि मांस मज्जा नहिं मेरे, मैं नहिं धातु रूप ।
हाथ पैर सिर आदि अंग में, मेरा नहीं स्वरूप । मैं. । ३ ॥
दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप ।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप । मैं. । ४ ॥
श्रद्धा नगरो बास हमारा, चिन्मय कोष अनूप ।
निराबाध सुख में झूलूं मैं, सत्–चित्–आनन्द रूप ॥ मैं. ॥ ५ ॥
शक्ति का भण्डार भरा है अमल अचल मम रूप ।
मेरी शक्ति के सम्मुख नहिं देख सके अरि भूप ॥ मैं. ॥
मैं न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप ।
'गजेन्द्र' निज पद को पहचानो, सौ भूपों का भूप ॥ मैं. ॥

यदि भला किसी का कर न सको

यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना
अमृत न पिलाने को हो घर में तो जहर पिलाते भी डरना ॥
यदि सत्य मधुर न बोल सको तो झूठ कठिन भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो ॥
बोलो तो ! पहले तुम तोलो फिर मुख ताल खोला करना।
यदि घर न किसी का बान्ध सको तो झौंपड़ियां न जला देना ॥
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो खार नमक न लगा देना।
यदि दीपक ! बनकर जल न सको तो अन्धकार भी मत करना ॥
यदि फूल नहीं बन सकते तो कांटे बन कर न बिखर जाना।
मानव बन कर सहला न सको तो दिल भी किसी का दुखाना ना।
यदि देव नहीं बन सकते तो दानव बन कर भी मत मरना
'लाभ' अगर भगवान नहीं तो कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो और कभी न तुम हैवान बनो
यदि सदाचार ! अपना न सको तो पापों में पग मत धरना।

यहां के महल और मन्दिर

यहां के महल और मन्दिर न बिस्तर काम आयेंगे।
ए मिस्टर ये मदर तेरी, न फादर काम आयेंगे ॥ १ ॥
नहीं वहां काम आयेंगे, तेरे बंगले ये फूलवारी।
नहीं वहां हीरा और मोती, जवाहिर काम आयेंगे ॥ २
हजारों दोस्त हैं तो क्या, यहीं तक की मोहब्बत है।
मिनिस्टर सारे भारत के, तेरे नहीं काम आयेंगे ॥ ३
वहां पर लोक में नहीं काम, आते जज बैरिस्टर।
सजा के सामने देखो, न लीडर काम आयेंगे ॥ ४
आपको जानते सब हैं, मुलाकातें बहुत गहरी।
सुपारस के वहां लेटर न, उनके काम आयेंगे ॥ ५
सवारी बैठने की भी, वहां कुछ और ही होगी।
जहाजें रेल या साईकल, न मोटर काम आयेगी ॥ ६

यह मीठा प्रेम का प्याला

(तर्ज—पंजाबी—हूण नाम जपन दो वेला)

यह मीठा प्रेम का प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला ।
यह सतसंग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला ।। टेर ।
प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला ।
प्रेम की फेरो माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला ।। १ ।।
प्रेम विना प्रभु भी नहीं मिलते, मन के कष्ट कभी नहीं टलते ।
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला ।। २ ।।
प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म—मरण का दुःख मिटावे ।
कटे कर्म जंजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला ।। ३ ।।
प्रेमी सबके कष्ट मिटावे लाखों से दुराचार छुड़ावे ।
प्रेम में हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला ।। ४ ।।
मुक्ति का सुख प्रेमी पावे, नर्कों में हरगिज नहीं जावे ।
प्रेम का भोजन आला, कोई करेगा किस्मत वाला ।। ५ ।।
गुरु श्री पृथ्वीचन्दजी हमारे, अमृत प्रेम पिलाने वाले ।
प्रेम का पंथ निराला, कोई चलेगा किस्मत वाला ।। ६ ।।

यदि आत्मोन्नति अभिलाषा हो तो

(तर्ज—दिल लुटने वाले जादूगर)

यदि आत्मोन्नति अभिलाषा हो तो, सामायिक आराधन हो ।। टेर ।।
यदि देह बढ़े, परिवार बढ़े, धन्य धान्य बढ़े, सुख भोग बढ़े ।
इनसे संसारोन्नति होती पर, आत्मा का उत्थान न हो ।। १ ।।
संसार स्वर्ग—सा देख चुके साक्षात् स्वर्ग भी भोग चुके ।
अब अमर मोक्ष सुख पाना हो तो, धर्म प्रति आकर्षण हो ।। २ ।।
सब लोक में धर्म ही ऐसा है, जो आत्मोन्नति कर सकता ।
यदि साधु धर्म सामर्थ्य नहीं तो, गृहस्थ धर्म अनुपालन हो ।। ३ ।।
श्रावक के कुल बारह व्रत हैं, जिसमें से सामायिक नववां है ।
यदि पूरे बारह बन न सके तो, नववां व्रत ही धारण हो ।। ४ ।।
हिंसा असत्य चोरी मैथुन, और परिग्रह ये दुर्गति कारण ।
यदि जीवन भर छोड़ न पाओ तो, एक मुहूर्त निवारण हो ।। ५ ।।
हिंसादिक पाप अठारह हैं, सावद्य योग कहलाते हैं ।
सावद्य योग तज संवर धर, शुभ योगों का संचालन हो ।। ६

पाप न करना न कराना है, मन वचन काया शुद्ध रखना है।
जो करे न उनका वचनों से या, काया से अनुमोदन हो ॥७॥
प्रातः संध्या सामायिक हो व्याख्यान में भी सामायिक हो।
कम से कम एक मुहूर्त समय का, नियम सदा ही धारण हो ॥८॥
सद्ज्ञान बढ़े श्रद्धान बढ़े, चारित्र बढ़े तप वीर्य बढ़े।
स्वाध्याय प्रमुख तब ऐसी करो, जिससे सामायिक पावन हो ॥९॥
सामायिक सब का भय हरती सबके प्रति अनुकम्पा भरती।
उनतीस शेष घड़ियों में भी, अति तीव्र भाव से पाप न हो ॥१०॥
वे धन्य-धन्य मुनि महासती हैं जो यावज्जीवन दीक्षित हैं।
यदि आजीवन दीक्षा न बने तो, एक घड़ी साधुपन हो ॥११॥
केवल कहते 'पारस' सुन रे, सबमें सामायिक रस भर रे।
जिससे सब गुण की रक्षक इस, सामायिक का संरक्षण हो ।१२

यह कहानी है

(तर्ज— निर्बल से लड़ाई बलवान की)

महा क्रोधी से लड़ाई महा-धीर की।
यह कहानी है श्रमण महावीर की ॥ ध्रुव ॥
अष्ट कर्मों को मिटाने, आत्म ज्योति को जगाने,
भगवान वर्द्धमान तप कर रहे।
कभी जंगल उद्यान, कभी शून्य शमशान,
शान्त एकान्त जगह में ध्यान कर रहे।
मन अमल विमल, तन मेरू सा अचल,
नहीं परवाह करे दुःख पीर की ॥ १ ॥
राजगृह के निकट, चण्ड कौशिक विकट,
एक नाग रहे नित्य फुफकारता।
उससे डरे पशु पंछी, डरे नर नारी पन्थी,
नहीं किसी भी शक्ति से वह हारता ॥
सर्प देता है व्यथा, जानी प्रभु ने कथा,
चले समझाने गति ले समीर की ॥ २ ॥
वह नाग अति काला, विषधर मतवाला,
देख वाम्बी पे प्रभु को खड़े जल गया।
उसने फन फैलाया, झूम-झूम लहराया,
कई बार ऊंचा धरती से उछल गया ॥

तेज आँखों से निहार डस लिया उस वार,
पीड़ा हुई जैसे बुझे हुए तीर की ।। ३ ।।
दीनबन्धु मुस्कराये – ध्यान खोल फरमाये,
बोले नागराज शान्त ! शान्त !! शान्त हो !!!
क्रोध त्याग दो सुजान, क्षमामृत करो पान,
मत जीवन बिगाड़ो पथ भ्रान्त हो ।।
सुन प्रभु के उद्गार, किया नाग ने उद्धार,
'केवल मुनि' क्षमा धारी, हिम नीर की ।।४।।

युवकों को आह्वान

(तर्ज— संगठन की वीणा बजने दो ......)

नवयुवको आगे आ जाओ– २
स्वाध्याय का बिगुल बजा जाओ ।। नवयुवको .... ।। टेर ।।
स्वाध्याय हमारा जीवन है, स्वाध्याय परम पावन धन है ।
सद्ज्ञान की ज्योति जगा जाओ ।। नवयुवको .... ।। १ ।।
जन–जन को ज्ञान सिखाना है, जिन मारग को चमकाना है ।
महावीर के स्वर गुंजा जाओ ।। नवयुवको .... ।। २ ।।
सामायिक और स्वाध्याय करो, सद्ग्रन्थों का अभ्यास करो ।
कुछ अपनी शक्ति दिखा जाओ ।। नवयुवको .... ।। ३ ।।
मिल गये हमें गुरुवर ज्ञानी, अमृत सम जिनकी है वाणी ।
कुछ ज्ञान किरण इनसे पाओ ।। नवयुवको .... ।। ४ ।।
यह शृङ्गार माँ के नन्दन हैं, पिता मोडीलाल कुल चन्दन हैं ।
श्री चरणों में आ झुक जाओ ।। नवयुवको .... ।। ५ ।।
तुम जैन जाति के बालक हो, जिन आज्ञा के प्रतिपालक हो ।
'गोविन्द' ज्ञान गुण गा जाओ ।। नवयुवको .... ।। ६ ।।

रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

मिलता है सच्चा सुख, केवल भगवान तुम्हारे चरणों में ।
विनती है यही दिन–दिन हर पल,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे बैरी सारा संसार बने,
मेरा जीवन मुझ पर भार बने ।

चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
संकट ने मुझको घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर दिल नहीं डग–मग मेरा हो, रहे ध्यान.............. ।
अग्नि में चाहे जलना हो,
चाहे कांटों पर ही चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान.............................. ।
जीह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
बस काम ये आठों याद—
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।

रे मन ! मूरख जनम गंवायो

रे मन ! मूरख जनम गंवायो ।
करि अभिमान विषय-रस राच्यो श्याम सरन नहीं आयो ।। १ ।।
यह संसार फूल सेमर को सुन्दर देखि भुलायो ।
चाखन लाग्यो रूई गई उड़ि, हाथ कछु नहिं आयो ।। २ ।।
कहा भयो अबके मन सोचे, पहिले नाहिं कमायो ।
कहत 'सुरेश' भगवंत भजन बिनु सिर धुनि-धुनि पछितायो ।। ३ ।।

रे मन ! भज मन दीनदयाल

रे मन ! भज मन दीनदयाल ।
जाके नाम लेत इक छिन में, कटे कोटी अघ जाल।। टेर ।।
परम ब्रह्म परमेश्वर स्वामी, देखे होत निहाल ।
सुमरन करत परम सुख पावत, सेवत भाजे काल ।। १ ।।
इन्द्र फनिंद चक्कधर गावें, जाको नाम रसाल ।
जाको नाम ज्ञान परगासे, नाशै मिथ्या – जाल ।। २ ।।
जाके नाम समान नहीं कछु, ऊरध मध्य पाताल ।
सोई नाम जपो नित 'द्यानल', छोड़ विषय विकराल ।। ३ ।।

卐

राम कहो रहमान कहो

राम कहो रहमान कहो कोऊ, कान्ह कहो महादेव री,
पारसनाथ कहो, कोऊ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव री ।। टेर ।.
भाजन – भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री ।
तैसे खण्ड कल्पनारोपित, आप अखण्ड सरूप री ।। १ ।।
जिनपद रमे राम सो कहिये, रहिम कहे रहमान री ।
कर्षै करम कान्ह सो कहिये, महादेव निर्वाण री ।। २ ।।
परसे रूप पारस सो कहिये, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री ।
इह विधि साधो आप आनन्दघन, चेतनमय निकर्म री ।। ३ ।।

रे चेतन पोते तू पापी पर ना छिद्र चितारे क्यूं?

रे चेतन पोते तू पापी पर ना छिद्र चितारे क्यूं ?
निरमल होय कर्म कर्दम सूं, निज गुण अंब नितारे तू ।। १ ।।
सम्यक् दृष्टि नाम धरावे, सेवे पाप अटारे तू ।
नरक निगोढ़ थकी किम छूटे, जो पर हियो न ठारे तू ।। २ ।।
जिम–तिम करने शोभा अपणी या जग मांहि दिखावे तू ।
प्रकट कहाय धर्म को धोरी, अन्तर भर्यो विकारे तू ।। ३ ।।
परमेश्वर साखी घट–घट को, जांकी शरम न धारे तू ।
कुम्भीपाक नरक में पड़सी, अन्तर सल न निवारे तू ।। ४ ।।
पर निंदा अघ पिंड भरीजे आगम साख संभारे तू ।
'विनयचंद' कर आतम निंदा, भव–भव दुष्कृत टारे तू ।। ५ ।।

रोज शाम को जीवन खाता

रोज शाम को जीवन खाता खोलो करो विचार ।
श्रावक यह तेरा आचार ।
मोक्ष–मार्ग में चरण बढ़ाये, कितने दो या चार ?
करले बारम्बार विचार ।। टेर ।।
जो शुभ निश्चय किये सवेरे कितने पूर्ण हुए वे तेरे ?
विघ्न देखकर घबराया या, डट कर रहा तैयार ।।करले.।। १ ।।
कितने कार्य किये पुण्यों के ? कितने कार्य किये पापों के?
देख तोलकर पुण्य–पाप को, किधर है कितना भार।करले.। २ ।

कितने अवगुण त्यागे तूने ? कितने सद्गुण धारे तूने ।
तूं तूं मैं मैं व्यर्थ लगाकर, अथवा की तकरार ।।करले.।। ३ ।।
कितना संग किया गुणियों का, कितना लाभ लिया मुनियों का?
या खेल तमाशे ठट्ठे–हंसी में, मस्त रहा बेकार ।।करले. ।। ४ ।।
मानव जीवन सफल बनाले, इस नर तन से लाभ उठाले ।
लक्ष चौरासी योनि में यह, मिले न वारम्बार ।।करले. ।। ५ ।।
संवर करले तप आदर ले, पुण्य कमाले पाप खपाले ।
सज्जन कहते 'लाभ' सुन रे, यह जीवन दिन चार ।।करले.।। ६ ।।

रे जीवा जिन–धर्म कीजिये

रे जीवा जिन–धर्म कीजिये, धर्म है चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, यह जग में तंत सार ।।रे जी०।। १ ।।
वर्ष दिवस रे पारणे, आदेश्वर जी ने आहार ।
इखु रस प्रतिलाभियो, श्री श्रेयांस कुमार ।। रे जी० ।। २ ।।
गज भव सुसलो राखियो, कीधी करुणा अपार ।
श्रेणिक नृप घर अवतारियो, अंगज मेघ कुमार ।।रे जी०।। ३ ।।
चम्पा पोल उगाड़िया, चालणी काढ़्यो नीर ।
सती सुभद्रा यश लियो, ते तो शियल सुधीर ।। रे जी० ।। ४ ।।
तप करि काया सोसवी, अरस नीरस ले आहार ।
वीर जिनन्द बखाणियां, धन धन्नो अणगार ।। रे जी० ।। ५ ।।
अनित्य भावना भावता, धरता निर्मल ध्यान ।
भरत आरीसा रा भवन में, उपज्यो केवलज्ञान ।। रे जी० ।। ६ ।।
यो धर्म सुर तरु समो, यह छो निश्चल छाय ।
समय सुन्दर कहे सेवता, मोक्ष तणा फल पाय ।। रे जी०।। ७ ।।

राखी

(तर्ज— स्वप्न में क्या देखा ···)

ओ भाई ! प्रिय भाई !! आओ मैं राखी बांधूं ।
इन तारों में छुपा हुआ है, बहिन भाई का प्यार ।।ध्रुव.।।
प्रिय पीहर की याद दिलाने ।
बचपन की झांकी दिखलाने ।।
हरियाले सावन में आता ये सुन्दर त्यौहार··········।। १ ।।

भाई वहिन का रोना हंसना ।
पल में मिलना, पल में लड़ना ॥
आँखों में फिर रहा है मेरे, वह स्वर्णिम संसार .... ॥ २ ॥
राखी ने पत कई की राखी ।
भारत का इतिहास है साखी ॥
इने बान्ध करके शत्रु भी भूले गये तलवार .... ॥ ३ ॥
भारत माँ का बन्धन खोले ।
वहिनों की रक्षा का व्रत ले ।
उसके हाथों में सजला है "केवल" ये उपहार .... ॥ ४ ॥

रुपये का गाना

(तर्ज— मेरा जूता है जापानी ......)

रुपया गा रहा है गाना, मैं हूं पापों का खजाना ।
मेरे पीछे क्यों संसार, फिर भी हो रहा दिवाना ? ॥ध्रुव॥
कठपुतलो के माफिक जग को, मैं दिन-रात नचाता-२
चाहूं जिससे चाहे जैसा, नीच काम करवाता- २
चाहे राजा हो चाहे रानी, मैं तो मारता निशाना ॥मेरे.॥ १ ॥
विष दिलवाकर वैद्यों से मैं, रोगी को मरवाता- २
न्यायाधीशों के दिल से, मैं न्यायनीति भुलवाता- २
होता सच्चों पर जुर्माना, बनता झूठों का मनमाना ॥मेरे.॥ २ ॥
प्रेम बिकाता - नेम बिकाता, और प्यारी सन्तानें- २
ज्ञान बिकाता-शील बिकाता और जगत की शानें- २
कैसा ही हो भले जमाना, मैं तो करता अपना जाना॥मेरे.॥ ३ ॥
अब तक मैं नहीं हुआ किसी का और कभी नहीं होता-२
फिर भी नाहक मेरे पीछे पड़ा जगत यह रोता- २
'धन मुनि' तुम इसको समझाना रास्ता समता का दिखलाना ॥मेरे.॥४॥

लाखों को पार लगाया है

लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ।
पतितों को पकड़ उठाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥टेर॥
लो मुक्ति अर्जुन पाता है. परदेशी भी तिर जाता है ।
पापों से उन्हें छुड़ाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ १ ॥

अधमों का भी उद्धार किया, भव-भव का बन्धन काट दिया।
सिंहों को शान्त बनाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ २॥
बन गये कई राजा साधु, संसार का वैभव ठुकरा कर।
निर्वेद का पाठ पढ़ाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ ३॥
'केवल मुनि' ज्ञान के दीप जगे, अज्ञान अन्धेरा बीत गया।
मोह का पर्दा खिसकाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने ॥ ४॥

ले संग खरची रे

ले संग खरची रे, परभव की खरची, लीधां सरसी रे ॥ टेर ॥
कूड़ कपट से धन्धो करसी, माल तिजोरियां भरसी रे।
सुन्दर महल मालियां छोड़ी, जाणो पड़सी रे ॥ले संग. ॥ १ ॥
आगे धन्धों पाछो धन्धों, धन्धों कर-कर मरसी रे।
धर्म बिना परभव में आगे, फोड़ा पड़सी रे ॥ले संग. ॥ २॥
चार कोस ग्रामान्तर खातिर, खरची लेय निकलसी रे।
नया शहर है दूर नहीं, मनिआडर मिलसी रे। ले संग. ॥ ३॥
यौवन की थने छांक चढ़ी, बुढ़ापा आय उतरसी रे।
इस तन की तो होसी खाक, कहां तक तू निरखसी रे। ले संग. ॥ ४ ॥
घर की नारी हांडी फोड़ने, पाछी घर में भड़सी रे।
जला मसाणा मांय थने, फिर कुटुम्ब बिछड़सी रे ॥ले संग. ॥ ५॥
लख चौरासी घाटी करड़ी, कैसे पार उतरसी रे।
रति सीख लहीं लागे थारी, छाती बजरसी रे ॥ ले संग. ॥ ६॥
साल गुण्यासी हातोद गांव में, जिनवाणी है वरसी रे।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, धरम सूं तिरसी रे ॥ले संग. ॥ ७॥

लेवो जन्म सुधार

(तर्ज – होवे धर्म प्रचार..........)

लेवो जन्म सुधार मानव भव पायो, हां लेवो.......... ॥ टेर ॥
क्रोध मान को दूर निवारो, माया लोभ से करो किनारो।
छोड़ो तृष्णा अपार, मानव भव पायो ॥ लेवो जन्म. ॥ १ ॥
राग-द्वेष संसार वढ़ाते, मन की शान्ति दूर हटाते।
बन्धे कर्म दुःख पाय, मानव भव पायो ॥ लेवो जन्म. ॥ २ ॥

ईर्ष्या मन का खूब जलाती, विनय भावना दूर हटाती ।
देवे नरक में डार, मानव भव पायो ।। लेवो जन्म. ।। ३ ।।

सीमित जीवन अपना बनाओ, परिग्रह मनसे दूर हटाओ ।
समता लेवो धार, मानव भव पायो ।। लेवो जन्म. ।। ४ ।।

विश्व मैत्री को अपनाओ, विश्व कुटुम्ब भावना भाओ ।
नाना गुरु समझाया, मानव भव पायो ।। लेवो जन्म. ।। ५ ।।

वांछित पूरे विविध परे

वांछित पूरे विविध परे, श्री जिन शासन सार ।
निश्चय श्री नवकार नित, जपता जय जय कार ।। १ ।।
अड़सठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ।
वीतराग स्वयं मुख वेद, पंच परमेष्ठि प्रधान ।। २ ।।
एकज अक्षर एकज चित्ते, सुमर्या सम्पत्ति थाय ।
संचित सागर सातना, पातक दूर पलाय ।। ३ ।।
सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु भाषित सार ।
भवियां मन शुद्ध से जपिये नवकार ।। ४ ।।

वेला तो आई तोरण की

ब तो घुढ़ला पर घूमे थारों बींद, वेला तो आयी तोरण की ।। टेर ।।
चम चम चमके केश सुनहरा, इन्द्रिया छोड़ी कार ।
नेण न दीखे कान न सुने, ना मुखड़ा सूं पड़ि रही लार ।। १ ।।
तड़–तड़ बोले तन की कड़िया रग–रग रोग अपार ।
थर–थर धूजे अंग आज तो, लकड़ी उठावे सारो भार ।। २ ।।
रंग महल में मौज मांडला, पड़चा पोल में जाय ।
कौड़ी न छोड़ी पास में रे, अब कुण पूछे थारी सार ।। ३ ।।
विषय भोग में इन्द्रिया पोखी, नहीं राखी प्रभु साख ।
जब हंसो उड़ जावसी रे, जल बल होसी सारी राख ।। ४ ।।
धर्म कर्म नहीं कीनो बन्दा, रख्यो बुढ़ापा तांय ।
मूरख सोचे काल की रे, पल में तो प्रलय हो जाय ।। ५ ।।
स्वास खांस और हाय–हाय में, तप जप होवे नांय ।
मुख से प्रभु को नाम न निकले, मन की रह जासी मन मांय ।। ६ ।।

दान-पुण्य का भाव हुआ तो परवश हो गया आज ।
कलम चली जद कुछ नहीं कीनो, अब नहीं देवे कोई साज ।। ७
माया की मस्ती में झूल्यो, नहीं परख्यो संसार ।
खेत चिड़कला चुग गया रे, हाथां सूं बाजी गयो हार ।। ८
लख चौरासी घुमता रे, नर तन लियो जोय ।
बिजली के झलके मोतिड़ो, पोय सके तो लीजे पोय ।। ९
पाप – पुण्य संग जासी थारे, ले ले खर्ची लार ।
चेत सके तो चेत दीवाना, अब तो पाहुणा दिन चार ।। १०
काल सिरहाणे घूम रह्यो ज्यूं, तोरण आयो बींद ।
जाग–जाग ओ 'जीत' कैसे, सूतो है सुख भर नींद ।। ११

वीरा म्हारा गज थकी हेठो उतर रे

वीरा म्हारा गज थकी हेठो उतर रे,
गज चढ्या केवल नहीं होसी बंधव मांहरा गज थकी हेठो उतर रे
राज तणां लोभियो भरत–बाहुबलि रे,
जूझे मूठ कटारी मारवा, बाहुबलि प्रति बूझ रे ।। वीरा.
ब्राह्मी सुन्दरी इम भाखे रे,
'ऋषभ जिनेश्वर' मोकली, मोकली बाहुबलि तुम पासे रे ।।वीरा.
लोच करी संजम लीनो आयो बलि अभिमान रे,
'लघु बन्धव वंदूं नहीं' काउसग्ग रह्या शुभ ध्यान रे ।.वीरा.
वर्ष दिवस का उसग्ग रह्या बेलड़ियां लिपटाणी रे,
पंखेरू माला मांडिया, शीत ताप बहु सहणो रे ।। वीरा. ।
साध्वी वचन सुणि करि, चमक्या चित्त मझा रे,
"हय गय पैदल रथ तज्या, पण चढ्यो अहंकारो रे ।। वीरा. ।
वैराग्य मन में धारियो हूं तो तजूं अभिमानो रे",
चरण उठायो वांदवां, पाम्यो केवल ज्ञानो रे ।। वीरा. ।
पहुंच्या है केवलो परिखदा, बाहुबलि मुनिराजो रे,
अजर अमर पदवी लही 'समयसुन्दर' वंदे पायो रे ।। वीरा. ।

वीर जिनेश्वर गौतम ने कहे

वीर जिनेश्वर गौतम ने कहे, संवर करता रे सहु जन सुख लहे
सुख लहे संवर कहे जिनवर, जीव हिंसा टालिये ।
सूक्ष्म बादर त्रस अरु स्थावर सर्व प्राणी पालिये ।।

मन वचन काया धरी समता, ममता कछू नहीं आणिये।
सुण वच्छ गोयम वीर जपे प्रथम संवर जाणिये ॥ १ ॥
बीजे संवर जिनवर इम कहे सांचा बोल्यां रे सभी को सुख लहे।
सुख लहे सांचे सहस्त्र सगले, सतवचन सम्भालिये।
जाणी हिंसा हो जीव केरी, तेह भाषा टालिये॥
असत्य टाली सत्य आगम, मन्त्र नवकार भाखिये।
सुण वच्छ गोयम! वीर जपे जीभ जतन करि राखिये॥ २॥
तीजे संवर घर बाहर सही अदत्त परायो रे लेता गुण नहीं।
गुण नहीं अदत्त लेतां दूर परायो परिहरो।
जिण राज डंडे लोक भडे, इसो भंडण कई करो॥
इसो जाणी मन विवेक आणि लिखियो लाभे आपणो।
सुण वच्छ गोयम वीर जपे नहीं लीजे पर थापणो॥ ३ ॥
चौथे संवर चौथो व्रत आदरो शियल सगलो अंग अलंकारो।
अलंकारो अंगे शियल सगले, रंग राचे यह सही।
जग मांही जोतां यह जालम अवर ओपमा को नहीं॥
इसो जाणी मन विवेक आणि रखे नार पराई निरखो नेण सूं।
सुण वच्छ गोयम वीर जपे कछु न कहिये वेण सूं॥ ४ ॥
पाँचवें संवर परिग्रह परिहरो, भवियण जीवड़ारी ममता मत करो।
मत करो ममता दिन रात रुलता, जोय तमासो यह वड़ो।
मणि माणक कंचन क्रोड़ हुए तो तृप्त न हुए जीवड़ो॥
जिमजिम लाभ पामे लोभ वधे सुणो भवियण अति घणो।
सुण वच्छ गोयम वीर जपे तृष्णा हेठी परिहरो॥ ५ ॥
छठे संवर छठो व्रत धरो रात्रि भोजन भवियण परिहरो।
परिहरो भोजन रेण केरो प्रत्यक्ष पातक यह बड़ो।
संसार रुलसी दुःख सहसी सुख टलसी देहनो॥
इसो जाणी समणीक श्रावक सघला मूल गुण व्रत आदरो।
सुण वच्छ गोयम वीर जपे शिव रमणी वेगी वरो॥ ६ ॥

विवेकी आत्मा रे

विवेकी आत्मा रे—२, अरे तू अव तो निर्मल हो जा।
गुरु सेवा की गंगा इन में, पाप मैल को धोजा।
भारी हो रहा वहुत दिनों से, हल्का करले वोझा॥ १

ज्ञान रूप दर्पण के अन्दर, नित आतम को धोजा ।
बार-बार सतुगुरु समझावे, ऐब दोष सब खो जा ।। २ ।।
मुक्ति का मेवा चखे तो, ममता दही विलो जा ।
जो अब मौका चूक गया तो खुले नर्क में रो जा ।। ३ ।।
अमृत फल की इच्छा होय तो, बीज धर्म का बोजा ।
कर नेकी का काम बदी से, अब तो दूर चला जा ।। ४ ।।
सत्य धर्म की सेज बिछी है, सोना हो तो सो जा ।
कहे 'मुनि नन्दलाल' तणां शिष्य, मिले मोक्ष की मोजां ।। ५ ।।

विहरमान बीस नमूं

विहरमान बीस नमूं ।। टेर ।।

सीमंधर पहला नमूं युग मंदर देव ।
बाहुजी स्वामी तीसरा, सुबाहुजी री सेवा ।विहर.।।१।।
सुजात स्वामी पांचवां, स्वयं प्रभुजी जाण ।
ऋषभानन्दन सातवां, अनंत वीरजी बखाण ।।विहर.।।२।।
सूर प्रभु नवमां नमूं, दसवाँ श्री रे विशाल ।
वज्राधर चन्द्रानन नमूं, हूं नमूं त्रिकाल ।। विहर.।।३।।
चन्द्र बाहु स्वामी तेरहवाँ, चवदवाँ श्री रे भुजंग ।
ईश्वर नेमीश्वर नमूं राता धरम-सुरंग ।। विहर.।।४।।
बीरसेण स्वामी सतरवां, महाभद्र जी जाण ।।
देवायश उगणिसवां, अजितवीरजी बखाण ।।विहर.।।५।।
ए बीसे जिनराज जी, महा विदेह क्षेत्र मंझार ।
जयवन्ता विचरे सदा, बन्दूं बारम्बार ।।विहर.।।६।।
चौथो जी आरो शाश्वतो, जठे रहे जिनराज ।
ऋषि अर्जुन इम विनवे, सारे आतम काज ।।विहर.।।७।।

वीर जिनेश्वर सोई दुनिया

वीर जिनेश्वर सोई दुनिया जगाई तूने ।
ज्ञान की मधुर सुरीली, वंशी बजाई तूने ।। १ ।।
भारत की नैया डोली, मृत्यु आ सिर पर बोली ।
स्वर्ग से आकर भगवन् पार लगाई तूने ।। २ ।।

पशुओं पर छुरियां चलती, रक्त की नदियां बहती ।
करुणा के सागर करुणा गंगा बहाई तूने ॥ ३ ॥
देवों की करना पूजा, बस काम था और न दूजा ।
मानव की अटल प्रतिष्ठा जग में जताई तूने ॥ ४ ॥
पन्थों का झूठा झगड़ा, जनता का मानस बिगड़ा ।
भेद सहिष्णुता की रखी सच्चाई तूने ॥ ॥
पाप का पंक धोना, नर से नारायण होना ।
'अमर' अमर, पद की राह दिखाई तूने ॥ ६ ॥

वो दिन कब होसी

मैं करसूं धर्म विचार, वो दिन कब होसी ।
म्हारो सफल होवे अवतार, वो दिन कब होसी ॥ टेर ॥
देवगुरु का भक्त कहाऊं, पच्चखु पाप अठार ॥ वो दिन.॥ १ ॥
सम्यक् ज्ञान क्रिया का साधन, साधूं भली प्रकार ॥ ,, ॥ २ ॥
मोह मत्सरता मन से मोड़ूं, कुमता की ललकार ॥ ,, ॥ ३ ॥
देश जाति निज धर्म निभावन, झेलूं कष्ट अपार ॥ ,, ॥ ४ ॥
हंस-हंस कर बलिदान हो जाऊं, पर न तजूं निजकार॥ ,, ॥ ५ ॥
मैत्री भाव बढ़ाऊं सबसे, तज कर वैर विकार ॥ ,, ॥ ६ ॥
आज्ञा धर्म आराधन करके, लूं नर भव को सार ॥ ,, ॥ ७ ॥
भक्ति भाव बड़ों का रखूं. विनय धर्म उरधार ॥ ,, ॥ ८ ॥
हिंसा झूठ चोरी को त्यागूं, पालूं शुद्ध ब्रह्मचार ॥ ,, ॥ ९ ॥
ममता तज समता भजूं, बनूं शुद्ध अणगार ॥ ,, ॥१०॥
प्राण हमारा जब ही निकले, रटतो मुख नवकार ॥ ,, ॥११॥
फूले फले भावना मेरी, कृपा करो करतार ॥ ,, ॥१२॥

वो दिन धन्य होसी

(कोरो काजलियो……)

वो दिन धन्य होसी, जद करस्यूं धर्म विचार ॥ टेर ॥
एक जीव के कारणे, कियो आरम्भ वेशुमार ॥ वो० ॥
परिग्रह की सीमा नहीं, कई दिन-दिन बढ़े अपार ॥ ,, ॥
धर्म-ध्यान निपजे नहीं, नहीं कीनो पर उपकार ॥ ,, ॥
आरम्भ परिग्रह छाड़ने, निवृत होसूं जिण वार ॥ ,, ॥

भव-भव में भटकता फिर्यो, कोई चौरासी मंझार ॥ वो० ॥
साधु या श्रावक पणो, नहीं कीनों अंगीकार ॥ „ ॥
ब्रह्मचर्य व्रत पालसूं, कोई संयम सत्तरे प्रकार ॥ „ ॥
पंच महाव्रत धार के, कोई बण सूं जद अणगार ॥ „ ॥
अन्त संथारो धार सूं, अट्ठारह पाप परिहार ॥ „ ॥
अरिहंत सिद्ध साधु केवली, ए चारों शरण धार ॥ „ ॥
सब ही जीव स्वभाव सूं, कोई खमसूं वारम्बार ॥ „ ॥
शुद्ध भावे पण्डित मरण, कोई 'करस्यूं' देह विसार ॥ „ ॥
तीन मनोरथ ए कह्या, जो नित चिन्ते नरनार ॥ „ ॥
इण भव पर-भव जीव के, कोई खर्चो बांधो लार ॥ „ ॥
'जीतमल' की विनती, कोई सुणजो जगदाधार ॥ „ ॥
तीन मनोरथ पूरजो, म्हांरे होसी मंगलाचार ॥ „ ॥

बन्दूं इग्यारे गणधार

श्री इन्द्रभूतिजी रो लीजे नाम तो मन वांछित सीझे काम ।
मोटा लब्धितणा भण्डार, बन्दूं इग्यारे गणधार ॥ १ ॥
अग्निभूति गौतमजी रा भाई, वीरजी ने दीठा समता आई ।
ऋद्धि त्यागी लीयो संजम भार ॥ वन्दूं .... ॥ २ ॥
वायुभूति मोटा मुनि राय, ऐ तीनो ही सग्गा भ्राता ।
पांच-पांच से निकलिया लार ॥ बन्दूं .... ॥ ३ ॥
विगत स्वामी चौथा जाण, भजन किया होवे अमर विमान ।
देवलोक मां सुखरा भणकार ॥ बन्दूं .... ॥ ४ ॥
स्वामी सुधर्मा वीरजी रे पाट, जन्म-मरण सेवक रा काट ।
मुझने आपतणो आधार ॥ बन्दूं .... ॥ ५ ॥
मंडी पुत्र ने मोरी पूत, मुक्ति जावणरा कर दिया सूत ।
त्रिविधे त्याग्या पाप अठार ॥ बन्दूं .... ॥ ६ ॥
अंकपित्त ने अचल भ्रात, वीरजी रे बचने रया जरात ।
चतुद पूरवना भण्डार ॥ वन्दूं .... ॥ ७ ॥
मेतारज ने श्री प्रभास मोक्ष नगर में कर दियो वास ।
जपता होवे जै जै कार ॥ बन्दूं .... ॥ ८ ॥
ए इग्यारे उत्तम जात, चम्मालीसे निकलिया साथ ।
ज्यां कर दिना खेवा पार ॥ बन्दूं .... ॥ ९ ॥

इण नामे सहू आश फले, दोषी दुश्मन दूरा टले।
ऋद्ध सिद्ध पामे सुख सार ॥ वन्दू.................॥ १० ॥
इण नामे सब नाशे पाप, नित्य रो जपीये भवणीया जाय।
चित चोखे हिरदा में धार ॥ वन्दू.................॥ ११ ॥
सम्वत् अठारे तयालिसे जाण, पूज्य जयमलजी री अमृत वाण।
चौमासो स्तवन कियो पीपाड़ ॥ वन्दू...........॥ १२ ॥
आषाढ़ सुद सातम रे दिन, गणधरजी ने गाया एक मन।
आसकरण जी भणे अगणार ॥ वन्दू.........॥ १३ ॥

वन्दे वीरम्

जवां से कहो हर घड़ी, वन्दे वीरम्।
लगाती है सुख की, झड़ी वन्दे वीरम् ॥
झुकाया ज्यों अर्जुन, सुदर्शन के आगे।
हटाती है विपता, पड़ी वन्दे वीरम् ॥
ये आधी व व्याधी, अपाधी को जड़ से।
मिटाने में कामिल जड़ी वन्दे वीरम् ॥
तेरे तन-भवन का जो है द्वार-मुखड़ा।
रहे रक्षिका बन खड़ी वन्दे वीरम् ॥
जगे ऐसी किस्मत रहोगे जी! विस्मित।
अनोखी है जादू-छड़ी वंदे वीरम् ॥
रहेगा खुशी में यहां भी — वहां भी।
जिसे होगी प्यारी, बड़ी वंदे वीरम् ॥
अरे दुनिया वालों! हृदय पे सजालो।
समझ मोतियों की लड़ी वंदे वीरम् ॥
यही कामना है यही भावना है।
रहे लव पे चन्दन चढ़ा वंदे वीरम् ॥

विनय धर्म

(तर्ज—जिया बेकरार है.......)

विनय धर्म आचार है, मानव का श्रृङ्गार है।
विनय भाव से तुच्छ भी बन जाता सरदार है ॥ ध्रुव.।
पंखा पानी झूला झूलकर, फिर ऊंचा उठ जाए जी।
जो जितना नीचा झुकता है, उतना आदर पाये हो ॥ १ ॥

आम्र डाल तू सुन्दर फल ये, बोल कहां से लाई जी।
मानो हंस कर बोली मैना, झुक कर सम्पति पाई है ॥ २।
आर्शीवाद स्नेह मिलता है, विनय सभी को प्यारा हो।
अर्जुन को जय मिली विनय से, और दुर्योधन हारा हो ॥ ३।
'मुनि केवल' पूजेंगे तुमको, आदर मान मिलेगा जो।
जिन शासन का तुम्हारे मन में अगर फैलेगा हो ॥ ४।

विनय थकी सुख

विनय थकी सुख संपजे सुण जीवड़ला।
कोई विनय सुख नो मूल सुण-सुण जीवड़ला ॥ टेर ॥
समझी विनय स्वरूप ने सुण जीवड़ला।
कोई तज आचरण प्रतिकूल सुण-सुण जीवड़ला।
अश्व गज नर-नारी में सुण जीवड़ला।
कोई देव देवी लो जोय सुण-सुण जीवड़ला ॥विनय…॥ १
सुखीया ते हीज जाणिये सुण जीवड़ला।
कोई विनय वन्त जो होय सुण-सुण जीवड़ला ॥
नात जात गच्छादि में सुण जीवड़ला।
कोई विनय जहाँ नहीं होय सुण-सुण जीवड़ला ॥
तिहां उन्नतिनि आस ने सुण जीवड़ला।
कोई सज्जन करो किम कोय, सुण-सुण जीवड़ला ।विनय.॥

वीरों का काम

धर्म पर डट जाना है वीरों का काम ॥ टेर ॥
धर्म पर डट गये महावीर, ठोकी ग्वाला ने कानों में कील,
ध्यान में डटे रहना है वीरों का काम……॥ १।
धर्म पर डट गये श्री पारसनाथ, बचाया जिन्होंने जलता नाग,
मन्त्र से तिरा देना है वीरों का काम……॥ २ ॥
धर्म जब गौतम जी को भाया, जिन्होंने घर घर अलख जगाया,
जैन का पाठ पढ़ा देना वीरों का काम……॥ ३ ॥
धर्म पर डट गये सेठ सुदर्शन, सूली का हुक्म दिया जब राजन,
सूली पर चढ़ जाना है वीरों का काम……॥ ४ ॥

र्म पर चन्दनबाला नार, घर-घर बिक सहे कष्ट अपार;
शील को नहीं तजना है वीरों का काम........॥ ५ ॥
र्म पर जम्बू राज कुंवार, त्याग दी जिन्होंने आठों नार,
चोरों को चेले बना लेना है वीरों का काम........॥ ६ ॥
र्म पर डट गये हरिशचन्द्र दानी, जिन्होंने कीना भेष मसानी;
सत्य पर डटे रहना है वीरों का काम........॥ ७ ॥
र्म के खातिर अब मुनिराज, जी चलते नंगे पैरों आज,
सूखे टुकड़े भी चबा लेना है वीरों का काम........॥ ८ ॥
ाग अब जाग ओ जैन समाज, सजाले 'जीत' धर्म के साज;
वक्त पै शीस कटा देना है वीरों का काम........॥ ९ ॥

विदाई गीत

(तर्ज— जब तुम ही चले परदेश....)

ह शिविर ज्ञान का धाम, क्रिया का स्थान ।
छूट रहा प्यारा बह रही है अश्रु धारा ॥ टेर ॥
हां ऐसे गुरुवर पाये हैं, जो हम सबके मन भाये हैं ।
हाँ छूट रहे वे सब ही अरणगारा ॥ बह रही है....॥ १ ॥
न मन से शिक्षरण देते थे, जिन-धर्म का मर्म बताते थे ।
हाँ छूट रही वह मन हर अमृत धारा ॥बह रही....॥ २ ॥
ामायिक मय दिन जाता था, जब जप तप हो जाता था ।
हाँ छूट रहा वह अवसर अति प्यारा ॥बह रही....॥ ३ ॥
हाँ दुर्गुरण मिटते जाते थे, और सद्गुरण बढ़ते जाते थे ।
हाँ छूट रहा उन्नति, समय हमारा ॥बह रही है....॥ ४ ॥
जो अब तक कभी न पाया था, वह यहाँ आकर सब ही पाया ।
यह याद रहेगा जीवन भर, उपकारा । बह रही है....॥ ५ ॥
वे दिन फिर से कब आयेंगे जब ऐसा अवसर पायेंगे ।
है पड़े बीच में बेरी, मास ग्यारा ॥ बह रही है....॥ ६ ॥
यहाँ हमने जो कुछ देखा है सीखा है जो समझा है ।
खुद पालेंगे और करेंगे जग में प्रचारा॥बह रही है..॥ ७ ॥
अब एक प्रार्थना सब सुनना, यह शिविर योजना दृढ़ करना ।
जिससे होगा धर्म का खूब प्रचारा ॥बह रही है....॥ ८ ॥
"पारस" से ये केवल कहते जो प्रवचन प्रभावना करते ।
वे पाते हैं तीर्थंकर पद श्रेयकारा ॥ वह रही है....॥ ९ ॥

शान्तिनाथ को कीजे जाप

शान्तिनाथ को कीजे जाप, करोड़ भवां रा काटे पाप ।
शान्तिनाथ जी मोटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥
दुःख दारिद्र सब जावे दूर, सुख संपति होवे भरपूर ।
ठग फाँसी-गर जावे भाग, बलतो होवे शीतल आग ॥ २ ॥
राजलोक माँ कीर्ति घणी, शान्ति जिनेश्वर माथे धणी ।
जो ध्यावे प्रभुजी को ध्यान, राजा देवे अधिको मान ॥ ३ ॥
गड़ गुबड़ पीड़ा मिट जाय, दोषी दुश्मन लागे पाँय ।
सघलो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकित काटो कर्म ॥ ४ ॥
सुणो प्रभु मोरी अरदास, हूं सेवक तुम पूरो आस ।
मुझ मन चिंतित कारज करो, चिंता आरति विघ्न हरो॥ ५ ॥
मेटो म्हारा आल जंजाल, प्रभु मुझने तूं नयन निहाल ।
आपनी कीर्ति ठामोठाम; सुधारो प्रभुजी म्हारो काम ॥ ६ ॥
जो नित-नित प्रभुजी ने रटे, मोती बंधा फूला कटे ।
वेप लावण दोनों झड़ जाय, विष औषध कट जावे छांय ॥ ७ ॥
प्रभु नाम से आँख निर्मल थाय, धुन्ध पटल जाला कट जाय ।
कमलो पीलो जल-जल झरे, शान्ति जिनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥
गरमी व्याधि मिटावे रोग सज्जन मित्र नो मिले संयोग ।
ऐसा देव न दीखे और, नहीं चाले दुश्मन का जोर ॥ ९ ॥
लुटेरा सब जावे नाश, दुर्जन फीटा होवे प्रस ।
शान्तिनाथ नी कीर्ति घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवन धणी ॥ १० ॥
अरज करूं छूं जोड़ी हाथ, आप सूं नहीं कोई छानी बात ।
देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप ॥ ११ ॥
मुझ मन चिंतित सरिये काज, राखो प्रभुजी म्हारा लाज ।
तुम सम जगमां नाहीं कोय, तुम भजवा थी शाता होय ॥ १२ ॥
तुम पास चले नहीं मृगी रोग ताव तेज रो नाको तोड़ ।
मरी मिटाई कीधी प्रभु संत, तुम गुण नो नहीं अन्त ॥ १३ ॥
तुमने सुमरे साधु-सती, तुमने सुमरे जोगी जती ।
काटो संकट राखो मान, अविचल पदनूं आपो स्थान ॥ १४ ॥
संवत अठारे चोराणुं जाण, देश मालवो अधिक बखाण ।
शहर जावरा चातुरमास, हूं प्रभु तुम चरणाँ रो दास ॥ १५ ॥
ऋषि 'रुगनाथ' जी कयो छन्द, काटो प्रभुजी मारी बाट ।
मुझ आरती चिन्ता सभी काट ॥ १६ ॥

शीतल जिनवर करु प्रणाम

शीतल जिनवर करूं प्रणाम, सोलह सती रा लेसूं नाम ।
ब्राह्मी चन्दना राजमति, द्रौपदी कोशल्या मृगावती ॥ १ ॥
सुलसा सीता सुभद्रा जाण. शिवा कुन्ती शील गुण खाण ।
नल-घरणी दमयन्ति सती. चेलना प्रभावती पद्मावती ॥ २ ॥
शील तणी सुहावे सिरी, ऋषभ देव नी धीया सुन्दरी ।
सोलह सतियाँ शील गुणभरी भवियण प्रणामो भावे करी ॥ ३ ॥
ये समरियाँ सब संकट टले मन चिन्तित मनोरथ फले ।
इण नामे सब सीझे काज, लहिये मुक्ति पुरी नो राज ॥ ४ ॥
भूत प्रेत इण नाम टले, ऋद्धि सिद्धि घर आई मिले ।
इण नामे सहू होय जगीश, ये सतियाँ सुमरो निश दीश ॥ ५ ॥

शील सुखदाई रे

शील सुखदाई रे—२ कई पाल शील गया मुगत के माँही रे ॥ टेर ॥
राजमति संयम लेकर गई, गिरी गुफा के माँही रे ।
राख्यो शील मुनि को प्रति बोधी, मोक्ष सिधाई रे ॥शील""॥ १ ॥
काम अन्ध-रावण सीता को ले गयो लंका माँही रे ।
पूरण राख्यो शील लेई जस, सुर पद पाई रे ॥ शील"" ॥ २ ॥
पद्मनाम नृप सुर साधन करे. द्रौपदी को मंगवाई रे ।
चतुराई से राख्यो शील, हरि लायो जाई रे ॥ शील"" ॥ ३ ॥
सुभद्रा की सासू सिर पे दीनो कलंक चढ़ाई रे ।
दूर किया सूर कलंक, जगत में सुयश पाई रे ॥ शील"" ॥ ४ ॥
दुरगति टले मिले सुख साता, इसमें संशय नाई रे ।
'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य दिल्ली में जोड़ बनाई रे ॥शील""॥ ५ ॥

शुद्ध मन भावो रे

शुद्ध मन भावो रे या खास भावना मोक्ष ले जावे रे ॥ टेर ॥
प्रथम भाणे बैठ भावना, श्रावक शुद्ध मन भावे रे ।
चित्त-वित्त पातर सधु मिलिया संसार घटावे रे ॥शुद्ध""॥ १ ॥
दान, शील, तप, तीनो जानो भाव विना ये सूना रे ।
दया बिना ज्यूं मनुष जमारो भात अलूणा रो रे ॥ शुद्ध""

स्वर्ग पांचवे गयो मृगलो, मुक्ति मरुदेवी जावे रे ।
भाव बिना व्यापार वीच, कुण लाभ उठावे रे ।।शुद्ध·······।। ३ ।।
अनित्य भावना भाई भरतजी अशरण अनाथी भाई रे ।
संसार भावना शालिभद्रजी, एकान्त नमि राई रे ।।शुद्ध·······।। ४ ।।
अन्य भावना मृगापुत्र जी, अशुचि सनत कुमारो रे ।
समुद्र पाल आश्रव और संवर हरिकेशी अरणगारो रे ।।शुद्ध·······।। ५ ।।
अर्जुनमाली भाई निर्जरा, शिवराज लोक स्वरूप रे ।
बोधी दुर्लभ ऋषभदेव, के पुत्रा भाई रे ।।शुद्ध·······।। ६ ।।
धर्मरुचि महाराज भावना, धर्म तणी पहचानी रे ।
जीरण सेठ की महिमा, सुर नर मुनि वखाणी रे ।।शुद्ध·······।। ७ ।।
उगणीसे चमोत्तर आखा तीज, कृष्णगढ़ के मांई रे ।
गुरु हीरालाल प्रसादे, 'चौथमल' जोड़ वनाई रे ।।शुद्ध·······।। ८ ।।

शिक्षा हितकारी

(तर्ज— होवे धर्म·······)

है उत्तम जन आचार, सुनलो नर—नारी ।
तू धार सके तो धार शिक्षा हितकारी ।। टेर ।।
जुआ खेलना बुरा व्यसन है, धन छीजे दुःख भोगे तन है ।
हारे राजकोष सब धन है, पाण्डव हारी नार ।।शिक्षा ।। १ ।।
नल भूपति ने राज गंवाया, दमयन्ती संग अति दुःख पाया ।
बड़े बड़ों का मान विलाया, जाने सब संसार ।।शिक्षा. ।। २ ।।
चोर दण्ड पाते नित देखो, राज समाज में निंदा देखो ।
रहता नहीं भरोसा देखो, करे न कोई इतबार ।।शिक्षा. ।। ३ ।।
वेश्या और परस्त्री त्यागो, रावण कुल में हुओ अभागो ।
सीता को लेकर वह भागो, हुआ सकल संहार ।।शिक्षा.।। ४ ।।
लंपट तन धन का वल खोवे, सुख की नींद कभी नहीं सोवे ।
फल भुगतन की वेला रोवे, त्याग करो नर-नार ।।शिक्षा.।। ५ ।।
मद्य मांस नहीं खाणो पीणो, दुर्व्यसनों से दूर ही रहणो ।
नशो भूलकर भी नहीं करणो, वुद्धि विगाड़न हार।।शिक्षा.।। ६ ।।
प्याली पी कई जन्म विगाड़े, गली—गली में पड़त निहाले ।
कुत्ते भी आकर मुंह चाटे, हंसे वाल गोपाल ।।शिक्षा.।। ७ ।।

बीड़ी और तमाखू छोड़ो, केन्सर से मत नाता जोड़ो।
धन जन का है नाश करोड़ों, मन से दो दुत्कार।।शिक्षा.।। ८ ।।
जैन–धर्म का सार यही है, दुर्व्यसनों से लाभ नहीं है।
व्यसन बिगाड़े जन्म सही है, होते जन बेकार।।शिक्षा.।। ९ ।।

शिक्षा सुखदायी

(तर्ज— होवे धर्म प्रचार······)

तुम सुनो सभी नर–नार, शिक्षा सुखदाई।
यह करती जन्म सुधार, शिक्षा ······ ।। टेर ।।
तत्वातत्त्व पिछाणे जासे, पुण्य पाप को जाने जासे।
सबको खुद सम जाने जासे, सुखी बने संसार।।शिक्षा।। १ ।।
पढ़कर झूठ वचन जो छोड़े, गाली से मन को नहीं जोड़े।
भाँग तमाखू मद तन तोड़े, तजे विज्ञ नर-नार।।शिक्षा ।। २ ।।
दुर्व्यसनों के पास न जावे, तन धन इज्जत खूब बचावे।
पर धन पर नहीं चित्त लुभावे, ज्ञान पढ़े का सार।।शिक्षा ।।३।।
चोरी कभी न करना चाहे, धोखा दे नहीं नम्बर पावे।
सादा जीवन मन को भावे, हरे ज्ञान कुविचार ।।शिक्षा ।।४।।
आप्त जनों का आदर करना, सबसे मैत्री भाव बढ़ाना।
शिक्षा से सुविचार फैलाना, यही ज्ञान सुखकार ।।शिक्षा ।।५।।
धर्म जाति का(द्वेष)गर्व न करना, बन्धु भाव से वैर मिटाना।
तोड़ फोड़ हिंसा नहीं करना, ज्ञान बढ़ावे प्यार ।।शिक्षा ।।६।।

शतत: शीश झुकाना

(तर्ज— उड़ते पंछी नील गगन में······)

उड़ते पंछी नील गगन में, गाते एक तराना,
जीओ हमारे नाना।
इनके पावन चरण कमल में, नित उठ शीश झुकाना,
शतत: शीश झुकाना
कुल दीपक प्रगटे दांता में पितु मोडी मन भाया,
एक सिंहनी शृंगारा ने, वीर पुत्र है जाया,
कोहिनूर हीरे की कीमत, जौहरी करते नाना ।।जीओ

एक तरफ है इन्द्रमुनि जी, बीच में पूज्य विराजें,
कंवर सुवक्ता आदि सन्तगण, गुरुवर संग में राजें,
समोशरण सा ठाठ लगा है, दृश्य अनूठा माना ।।जीओ हमारे. ।। २ ।।
संघ शिरोमणि गुरुवर नाना, पुन्य उदय से पाये,
दर्शन अरु व्याख्यान श्रवण कर, जन मानस विकसाये,
इसी तरह भक्तों को फिर भी वचनामृत दे जाना ।।जीओ हमारे.।। ३ ।।
मुख मण्डल की शोभा भारी ब्रह्म तेज झलकाता,
महाव्रतो का पहने चोला, फिर भी मन मुस्काता,
ज्ञान मशाल लिये फिरते हो, सत्य ज्ञान दर्शाना ।।जीओ हमारे.।। ४ ।।
पूर्ण यशस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी वक्ता भारी,
वीतराग वाणी का झरना, बहता श्रेयस्कारी,
श्रोतागण सुन गद्-गद् होते, कहते नहीं विसराना ।।जीओ हमारे.।।५।।
धन्य हुआ भारत यहां की जनता है आभारी,
जगमग चमके जैन सितारा, सकल विश्व में भारी,
'धर्मपाल' चरणों का सेवक, इसे भूल न जाना ।।जीओ हमारे.।। ६।।

संत समागम कीजे

सन्त समागम कीजे रे भवियां, सन्त समागम कीजे ।
दुकृत हरन चरन धर मस्तक, परम विनय सांचीजे ।।सन्त.।। १ ।।
चंद चकोर ज्यूं आनन निरखी, नयनामृत भर लीजे ।
सुख साधन की गिरा सुधा सम उमग-उमग रस पीजे ।।सन्त.।। २ ।।
सूत्र अर्थ कूं स्वाति बूंद ज्यूं, चातक जेम ग्रहीजे ।
पुद्गल रो परपंच समझ के, आतम रूप लखीजे ।। सन्त. ।। ३ ।।
किंचित् वित्त री प्रापत हुयां, बदन कमल विकसीजे ।
अखय खजाना ज्ञान देत तसु, गुण निधि केम तरीजे ।।सन्त ।। ४ ।।
लोह अचेतन चुम्बक संगे, कहो केहवो बिलमीजे ।
तूं चेतन सेवे नहिं तारक, किसो उलंभो दीजे ।। सन्त. ।। ५ ।।
परदेसी राजा गुरु भेटी, छोड़ मिथ्या धर्म भीजे ।
क्रोध कियो नहिं निज तिय पे ज्यों, समकित रंग रंगीजे।।सन्त.।। ६ ।।
' लाभ ' कहे निस्तार चहे तो, विषय कषाय तजीजे ।
संकट सकल टलें भव संचित, सिद्ध स्वरूप थईजे ।। सन्त. ।। ७ ।।

卐

सिद्ध श्री परमात्मा

सिद्ध श्री परमात्मा अरिगंजन अरिहंत ।
इष्ट देव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥
अनन्त चौबीसी जिन नमूं, सिद्ध अनंता कोड़ ।
वर्तमान जिनवर सभी, केवली दो कोड़ी नव कोड़॥ २ ॥
गणधरादिक सर्व साधूजी, समकित व्रत गुणधार ।
यथा योग्य वंदन करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥ ३ ॥
पंच परमेष्ठी देव को भजन पूर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सभी शिव सुख मंगल थान ॥ ४ ॥
हूं अपराधी अनादि को, जनम-जनम गुनाह किया भरपूर के ।
लूटिया प्राण छः काय ना, सेविया पाप अठारह क्रूर के ॥ ५ ॥

साता कीजो जी श्री शान्तिनाथ प्रभु

साता कीजो जी श्री शान्तिनाथ प्रभु ।
शिव-सुख दीजो जी, साता कीजो जी ॥ टेर ॥
शान्तिनाथ है नाम आपको, सब ने साताकारी जी ।
तीन भुवन में चावा प्रभुजी, मृगी निवारीजी ॥ साता. ॥ १ ॥
आप सरीखा देव जगत में, और नजर नहीं आवे जी।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावे जी ॥ साता. ॥ २ ॥
शान्तिनाथ मन मांही जपता, चाहे सो फल पावे जी ।
ताव तेज रो, दुःख-दालिदर, सब मिट जावे जी ॥ साता.॥ ३ ॥
विश्वसेन राजाजी के नन्दन, अचला देवी जाया जी ।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, घणा सुहाया जी ॥ साता. ॥ ४ ॥

सुमरो मन्त्र भलो नवकार

सुमरो मन्त्र भलो नवकार, ये छे चौदह पूर्व नो सार ।
एहनी महिमा नो नहीं पार एहनो अर्थ अनन्त अपार ॥ १ ॥
सुख मां सुमरो, दुःख मां सुमरो, सुमरो दिन ने रात ।
जीवंता सुमरो, मरतां सुमरो, सुमरो सौ संगात ॥ २
योगी सुमरे, भोगी सूमरे, सुमरे राजा रंक
देवा सुमरे दानव सुमरे, सुमरे सौ [illegible]

अड़सठ अक्षर एहना जाणो, अड़सठ तीरथ सार ।
आठ सम्पदा दायी परमाणो, अष्ट सिद्धि दातार ॥४॥
नव पद एहना, नव निधि आपे, भवोभव ना दुःख कापे ।
'चन्द' वचन श्री हृदय व्यापे, परमातम पद आपे ॥५॥

सच्चा भक्त बन जाऊं

सच्चा भक्त बन जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ॥ टेर ॥
क्रोध निकट नहीं आने देऊं, शस्त्र अचूक क्षमा का लेऊं ।
दूर ही मार भगाऊं भगवान तुम्हारा अब मैं ।।सच्चा.।।१।।
सन्त गुणीजन सब मिल जावे, मद मत्सर नहीं मनमें आवे ।
सादर शीस झुकाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं।।सच्चा.।।२।।
सत्य शंख का नाद बजा के, उथल-पुथल की क्रांति मचा के ।
सोता जगत जगाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं।।सच्चा.।।३।।
न्याय मार्ग से मुख नहीं मोड़ूं, स्वीकृत प्रण को मैं नहीं छोड़ूं ।
कर्तव्य पथ पर बलि जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं।।सच्चा.।।४।
प्राणी मात्र को अपना भाई, चाहूं सबकी नित्य भलाई ।
सेवा ही मन्त्र बनाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं. ।। सच्चा. ।।५।।
ऊंच नीच का भेद न मानूं, गुण पूजा का महत्व पहचानूं ।
व्यक्ति न व्योम चढ़ाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ।।सच्चा. ।।६।।
करुणा निधिवर! करुणा कीजे, आत्मिक बल कुछ ऐसा दीजे ।
'अमर' अमर हो जाऊं, भगवान तुम्हारा अब मैं ।। सच्चा. ।।७।।

सांभल हो सुरता ! सूरां ने लागे वचन ज्यूं ताजणा

सांभल हो सुरता ! सूरां ने लागे वचन ज्यूं ताजणा ।
कायर ने लागे नही कोय, सांभल हो सूरता ।। टेर ।।
नगरी तो राजगृही ना वासिया, सेठ धन्नाजी जग में सार ।
पूर्व पुण्य से वहु रिधी पामिया, आठ नारियों रा भरतार ।। १ ।।
एक दिन धन्ना जी वैठा पाटिये, स्नान करे तिणवार ।
आठों नारियां मिली प्रेम सूं. कूड़ रही जल धार ।। २ ।
सुभद्रा नारी चौथी तेहनी, मन में हुई रे दिलगीर ।
आंसू तो निकले तेहना नैना सूं, संजम लेवे मुझ वीर ।। ३ ।

म धरी नै धन्ना जी पूछिया, कामरण क्यूं हुई हो उदास ।
का मत राखो थें मुझ आगले, कारण तो कहोनी विमास ॥ ४ ॥
ामरण कहे यूं कन्तां म्हारा, वीरा ने चढ़ियो वैराग ।
क-एक नारी नित की परिहरे, संयम लेना की रही है लाग ॥ ५ ॥
न्ना जी कहे तू भोली बावली, कायर दीसे है थारो वीर ।
ंजम लेणो जद मन में धारियो तो, फिर किम करणी ढील॥ ६ ॥
ुभद्रा नारी कहे यूं कन्त ने, मुख से बणावो फोगट बात ।
ण सब ने छाँड़ी बाजो सूरमा, जद जाणूंला थांरी बात ॥ ७ ॥
त्खिण धन्ना जो उठ कर बोलिया, कामण रहिजो अब दूर ।
ंजम लेवाँगा इण अवसरे, जद मैं बाजांगा जग में सूर ॥ ८ ॥
कर जोड़ी ने सुन्दर वीनवे, हांसी रे वश कड़वा बोल ।
ाची री साँची न कीजे साहिब, हिवड़े विमासी बायर खोल ॥ ९ ॥
ंजम लेणो तो साहिबा सोहिलो, ममता मारी ने समता धार ।
ावीस परीसा सहणाँ दोहिला, संजम खाँड़े री धार ॥१०॥
ाँव उबराणाँ पिउजी चालणो, दोरो छे पाद विहार ।
घर-घर फिरणो सायब गोचरी, नीरस मिलसी आहार ॥११॥
सियाले में हो पिऊजी सी पड़े, उनाले बाजे लूआँ वाय ।
चौमासे में मैला कापड़ा, ओ दुःख सह्यो न जाय ॥१२॥
उत्तर पडुत्तर हुवा अतिघणा, आया साला के घर उच्छाव ।
दोनों मिल साथे संजम आदराँ कायर उतरो नी नीचे आव ॥१३॥
साला बहनोई संजम आदर्यो वीर जिनंदजी रे पास ।
शालिभद्र सर्वार्थ सिद्ध गया, धन्ना जी शिवपुर वास ॥१४॥
सम्वत उगणीसे इगसठ साल, में कीनो गढ़ चित्तौड़ चौमास ।
मुनि नंदलाल तणा शिष्य गाविया, वंछित फलेगी सब आस ॥१५॥

सुने री मैंने निर्बल के बल राम

सुने री मैंने निर्बल के बल राम ।
पिछली साख भरूं सन्तन की, अड़े संवारे काम ॥ध्रुव.॥
जब लग गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरयो नहिं काम ।
निर्बल ह्वै बलराम पुकार्यो आये आधे नाम ॥ १ ॥
द्रुपद सुता निर्बल भई ता दिन गहलाये निज धाम ।
दुःशासन की भुजा थकित भई वसन रूप भये श्याम ॥ २ ॥

अप-बल, तप-बल और बाहु-बल चौथा है बल-दाम ।
सूर किशोर कृपा से राम बल, हारे को हरि नाम ॥ ३ ॥

सेवो सिद्ध सदा जयकार

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मंगलाचार ॥ टेर ॥
अज, अविनाशी, अगम, अगोचर अमल, अचल अविकार ।
अन्तरयामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भण्डार ॥सेवो.॥ १ ॥
कर पणट्ठ कम्मट्ठ अट्ठ-गुण, युक्त मुक्त संसार ।
पायो पद परमेष्ठी तास पद, वन्दो वारम्वार ॥ सेवो.॥ २ ॥
सिद्ध प्रभु को सुमिरण जग में, सकल सिद्धि दातार ।
मनवाञ्छित पूरण सुरतरु सम, चिन्ता चूरण हार ॥सेवो. ॥ ३ ॥
जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मंझार ।
तीर्थंकर भी प्रणमे उनको, जब होवें अणगार ॥ सेवो. ॥ ४ ॥
सूर्योदय के समय भक्तियुत, स्थिर चित दृढ़ता धार ।
जपे 'सिद्ध' यह जाप तास घर. होवे ऋद्धि अपार ॥सेवो. ॥ ५ ॥
सिद्ध स्तुति यह पढ़े भाव से, प्रति दिन जो नर-नारी ।
सो दिव-शिव-सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार ॥सेवो.॥ ६ ॥
'माधव मुनि' कहे सकल संघ में, बढ़े हमेशा प्यार ।
विद्या विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ॥ सेवो. ॥ ७ ॥

संयम सुखकारी जिन आज्ञा अनुसार

संयम सुखकारी, जिन आज्ञा अनुसार, धन्य जो पाले नर-नार ॥टेर
संयम सुखकारी आनन्दकारी धन्य जाऊं मैं बलिहार ॥ १
कर्मरज ने शीघ्र हटावे आतम ना गुण सब प्रगटावे ।
जन्म-मरण ना दुःख मिटावे, होवे परम कल्याण॥संयम.॥ २
संयम ना गुण प्रभु खुद गावे, हलु कर्मी जीवाँ मन भावे ।
हुलस भाव से उठ अपनावे. मोह ममता को मार ॥संयम.॥ ३
परम औषधि संयम जाणो तीन लोक नो सार पिछाणो ।
शुद्ध समझ हृदय में आणो, अनुपम सुख की खान। संयम.॥ ४
तजे रिद्ध संयम अनुरागे, जिन आज्ञा ने राखे आगे ।
निश दिन संयम में चित लागे, धन्य-धन्य वे अणगार संयम.॥ ५
काम कषाय को तजे हुलसाई, निंदा विकथा दे छिटकाई ।
तप संयम में लीन सदा ही, धन्य जेहनो अवतार ॥संयम.॥ ६

समझो चेतन जी अपना रूप

समझो चेतन जी अपना रूप, यो अवसर मत हारो ॥ टेर ॥
ज्ञान दरस मय रूप तिहारो अस्ति मांस मय देह न थारो ।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो ॥ समझो. ॥ १ ॥
पोपट ज्यूं पिंजर बंधायो मोह कर्म वश स्वांग बनायो ।
रूप धरे है अन पार, अब तो करो किनारो॥समझो.॥ २ ॥
तन धन के नहिं तुम हो स्वामी, ये सब पुद्‌गल पिंड हैं नामी ।
सद्-चिद् गुण भंडार, तू जग देखन हारो । समझो. ॥ ३ ॥
भटकत-भटकत नर तन पायो पुण्य उदय सब योग सवायो ।
ज्ञान की ज्योति जगाय, भ्रमतम दूर निवारो ।समझो. ॥ ४ ॥
पुण्य पाप का तू है कर्त्ता सुख दुःख फल का भी तू भोक्ता ।
तू ही छेदनहार, ज्ञान से तत्त्व विचारो । समझो. ॥ ५ ।
कर्म काट कर मुक्ति मिलावे, चेतन निज पद को तब पावे ।
मुक्ति के मार्ग चार, जानकर दिल में धारो। समझो. ॥ ६ ॥
सागर में जलधार समावे, त्यूं शिव पद में ज्योति मिलावे ।
होवे 'लाभ' तेरा उद्धार अचल है निज अधिकारो।समझो.॥ ७ ॥

साधो मन का मान त्यागो

साधो मन का मान त्यागो ।
काम क्रोध संगत दुर्जन की, ताते अहनिस भागो ॥ ध्रुव. ॥
सुख दुःख दोनों सम करि जाने, और मान अपमाना ।
हर्ष शोक ते रहे अतीता, तिन जग तत्त्व पिछाना ॥साधो. । १ ॥
अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागे खोजे पद निरवाना ।
जन 'नानक' यह खेल कठिन है, कोऊ गुरु-मुख जाना । साधो.॥ २ ॥

संग से पुष्प को चन्द्र मिले

संग से पुष्प को चन्द्र मिले, अरु संग से लोहा स्वर्ण कहावे ।
संग से पंडित मूर्ख बने, अरु संग से शुद्र अमर-पद पावे ॥ १ ॥
संग से काष्ट के लोह तरे, तन को सत्संग हि पार लगावे ।
संग से सन्त को स्वर्ग मिले, अरु संग कुसंग से नरक में जावे ॥ २ ॥

★

सिद्धां जैसो जीव है

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय ।
कर्म मैल को आंतरो, बूझे विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान ।
दो मिलकर वहु रूप है, विछड़्या पद निरवाण ॥ २ ॥
जीव करम भिन्न-भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय ।
ज्ञानातम वैराग्य से, धीरज ध्यान लगाय ॥ ३ ॥
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण ।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुद्गल पिंड में, अलख अमूरति देव ।
फिरे सहज भव चक्र में, यह अनादि की टेव ॥ ५ ॥
फूल अतर घी दूध में, तिल में तेल छिपाय ।
यूं चेतन जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय ॥ ६ ॥
जो जो पुद्गल की दशा, ते निज माने हंस ।
यो ही भरम विभाव ते, बढ़े करम को वंश ॥ ७ ॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषे, सूर्य छिप्यो घन मांय ।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांय ॥ ८ ॥
ज्यों बंदर मदिरा पीयाँ, बिच्छू डंकित गात ।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यों कर्मों का उत्पात ॥ ९ ॥
कर्म संग जीव मूढ़ है, पावे नाना रूप ।
कर्म रूप मल के टले, चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥
शुद्ध चेतन उज्ज्वल देख रह्यो कर्म मल छाय ।
तप संयम से धोवताँ, ज्ञान ज्योति बढ़ जाय ॥ ११ ॥
ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन–श्रद्धा रूप ।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपण सरूप ॥ १२ ॥
कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चाँदी रूप ।
निर्मल ज्योति प्रगट भयाँ केवल ज्ञान अनूप ॥ १३ ॥
मूसी पावक सोहगी, फूकां तणो उपाय ।
राम चरण चारु मिल्यां, मैल कनक को जाय ॥ १४ ॥
कर्म रूप वादल मिटे, प्रगटे चेतन चंद ।
ज्ञान रूप गुण चांदनी, निर्मल ज्योति अमंद ॥ १५ ॥

राग द्वेष दो बीज से, कर्म बंध की व्याध ।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध ॥ १६ ॥
अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कछू होत ।
पुण्य छतां पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥ १७ ॥
कल्प वृक्ष चिंतामणि, इस भव में सुखकार ।
ज्ञान वृद्धि इन से अधिक, भव दुःख भंजनहार ॥ १८ ॥
राई मात्र घट वध नहीं, देख्या केवल ज्ञान ।
यह निश्चित कर जान के, तजिये परथम ध्यान ॥ १६ ॥
दूजा कूं कभी न चिंतिये, कर्म बंध बहु दोष ।
तीजा चौथा ध्याय के, करिये मन सन्तोष ॥ २० ॥
गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वंछा नांय ।
वर्तमान वर्ते सदा, सौ ज्ञानी जग मांय । २१ ॥
अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
अन्तर्गत न्यारो रहे, ज्यों धाय खिलावे बाल ॥ २२ ॥
सुख दुःख दोनूं बसत हैं, ज्ञानी के घट मांय ।
गिरि सर दीसे दर्पण में, भार भींजवो नाँय ॥ २३ ॥
जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय ।
ममता समता भाव से, करम बंध खय होय ॥ २४ ॥
बांध्या सोही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव ।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित चाव ॥ २५ ॥
बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्या न छुड़ाय ।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ॥ ५६ ॥
पथ कुपथ घट वध करी रोग हानि वृद्धि थाय ।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जग में पाय । २७ ॥
सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवर कूं, तो अपने हणे न कोय ॥ २८ ॥
ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष ।
इनकूं कभी न छांड़िये, श्रद्धा शील सन्तोष ॥ २६ ॥
सुख मत छोड़ो हो नरां, लक्ष्मी चौगुनी होय ।
सुख दुःख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ॥ ३० ॥
गोधन गज धन रतनधन, कंचन खान सुखान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान ॥ ३१ ।

शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ॥ ३२ ॥
शीले सर्प न आभड़े, शीले शीतल आग ।
शीले अरिकरि केसरी, भय जावे सब भाग ॥ ३३ ॥
शील रतन के पारखी, मीठा बोले बैन ।
सब जग से ऊंचा रहे, जो नीचा राखे नैन ॥ ३४ ॥
तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दुःख ।
कर्म रोग पातक झड़े, देखत वां का मुख ॥ ३५ ॥

स्वाध्याय का आनन्द लेने दो

स्वाध्याय का आनन्द लेनें दो, मोहे ज्ञान की ज्योति जगाने दो ॥टेर
आचार्य हमारे हैं भारी, जन-जन को हैं आनन्दकारी ।
नित मंगल दर्शन करने दो ॥ स्वाध्याय का·······॥ १ ॥
स्वाध्याय का मार्ग बताया है, जनता का मन हर्षाया है ।
सन्मति पथ को अपनाने दो ॥ स्वाध्याय का·······॥ २ ॥
स्वाध्याय अनन्तर तप भारी महिमा जिसकी अपरमपारी ।
मोहे अनन्तर तप को करने दो॥ स्वाध्याय का ······॥ ३ ॥
स्वाध्याय ज्ञान का साधन है, धारेगा वह ज्ञानी जन है ।
अन्धकार को दूर हटाने दो । स्वाध्याय का·······॥ ४ ॥
स्वाध्यायी बन सेवा देवें, पर्यूषन का लावा लेवे ।
मोहे आठ दिवस तो जाने दो । स्वाध्याय का·······॥ ५ ॥
आचार्य देव उपकार करो स्वाध्यायियों को तैयार करो ।
जिन शासन शान बढ़ाने को । स्वाध्याय का·······॥ ६ ॥
आसोज सुदी बारस दिन है, स्वाध्याय शिविर अंतिम दिन है ।
उसमें भगवन्त शिक्षा दो ॥ स्वाध्याय का······· ॥ ७ ॥

सब नर धारो रे यह क्षमा

(तर्ज— कोरो काजलियो)

सब नर धारो रे यह क्षमा मोक्ष दातार ॥ टेर ॥
महिमा उपसम की प्रभु, या वरनीं सूत्र मंझार ॥ १ ॥
जिन शासन को मूल है, है तप संयम को सार ॥ २ ॥

कर कर के क्षमा कई, तिर गये समुद्र संसार ।। ३ ।।
खंदक मुनि क्षमा करी जब लीनी खाल उतार ।। ४ ।।
धन्य धन्य मेतारज मुनि, जाने सह्यो परीषह अपार ।। ५ ।।
गज सुक मुनि खीरा धरिया, मुनि सही अगन की झाल।। ६ ।।
सूरी कंथा निज कंथ ने, दिया जहर विस डार ।। ७ ।।
क्षमा करी ने सुर हुओ, यह पहले स्वर्ग मंझार ।। ८ ।।
'चौथमल' कहे क्षमा करो हो जावे भव जल पार ।। ९ ।।

स्वाध्याय करो

धर ध्यान धरो नर नारो वरो, स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो । टेर।।
खाना हम नित ही खाते हैं, सोना भो नियमित चाहते हैं ।
अखबार रोज पढ़ जाते हैं, स्वाध्याय से क्यों घबराते हैं ।
इसका तो तनिक विचार करो । स्वा. ।। १ ।।
चन्दा बिन रजनी कारो है, जल के बिन सूखी क्यारी है ।
बिन ज्ञान के दशा हमारो है ज्यों अक बिना बिन्द सारी है ।
जीवन का तनिक सुधार करो ।। स्वा. ।। २ ।।
वीर प्रभु की वाणी है सर्व सुखों की खानी है ।
इसे पढ़नो और पढ़ानो है, स्वाध्याय को यही निशानी है ।
घर – घर इसका प्रचार करो ।। स्वा. ।। ३ ।।
सद् ज्ञानाभ्यास बढ़ाने से श्रद्धा को शुद्ध जमाने से ।
चरित्र बल चमकाने से अनराज त्रिवेणी नहाने से ।
भव–भव के तुम संताप हरो ।। स्वा. ।। ४ ।।

समझ मन मेरा रे

समझ मन मेरा रे समझ मन मेरा रे ।
थारो धारियो नहीं, पार पड़ेला रे ।। टेर ।।
तू चाहे मैं बनूं अरबपति, करके धन सब भेला रे ।
जगत सेठ की पदवी ले लूं सबके पहला रे ।। १ ।।
हीरा पन्ना मणि माणिक का पहनूं कण्ठी भेला रे ।
मोटर बग्गी बीच बैठकर करूं मैं सेलां रे ।। २ ।।
नित्य खाऊं मैं माल मसाला, नारंगी और केला रे ।
नया मूंग की खीचड़ी में, घी का रेला रे ।। ३ ।।

सोना में त्रिया को जड़ दूं, जब मन खूब भरेला रे।
लेन देन में करूं विलायत तब तुन्द भरेला रे ॥ ४ ॥
पूर्व पुन्य थे नहीं कमाया, कैसे आश फलेला रे।
'चौथमल' उपदेश सुनावे, दे दे हेला रे ॥ ५ ॥

स्वाध्याय करो

जिनराज भजो सब दोष तजो, अब सूत्रों का स्वाध्याय करो।
मन के अज्ञान को दूर करो, स्वाध्याय करो-२ ॥ टेर ॥
जिनराज की निर्दूषण वाणी, सब सन्तों ने उत्तम जानी।
तत्वार्थ श्रवण कर ज्ञान करो, स्वाध्याय करो-२ ॥ १ ॥
स्वाध्याय सुगुरु की वाणी है, स्वाध्याय ही आत्म कहानी है।
स्वाध्याय से दूर प्रमाद करो, स्वाध्याय करो-२ ॥ २ ॥
स्वाध्याय प्रभु के चरणों में, पहुंचाने का साधन जानो।
स्वाध्याय मित्र, स्वाध्याय गुरु, स्वाध्याय करो-२ ॥ ३ ॥
मत खेल, कूद, निद्रा, विकथा में, जीवन धन बर्बाद करो।
सद्ग्रन्थ पढ़ो, सत्संग करो, स्वाध्याय करो-२ ॥ ४ ॥
मन-रंजन नॉविल पढ़ते हो, यात्रा विवरण भी सुनते हो।
पर-निज स्वरूप ओलखने को, स्वाध्याय करो-२ ॥ ५ ॥
स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।
घर-घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो-२ ॥ ६ ॥
जिन शासन की रक्षा करना, स्वाध्याय-प्रेम जन-मन भरना।
'गज मुनि' के अनुभव कर देखा, स्वाध्याय करो-२ ॥ ७ ॥

सामायिक साधन करलो

जीवन उन्नत करना चाहो तो, सामायिक साधन करलो।
आकुलता से बचना चाहो तो ।। सामायिक……॥ टेर ॥
तन धन परिजन सब सुपने हैं, नश्वर जग में नहीं अपने हैं।
अविनाशी सद् गुण पाना हो तो ।।सामायिक……॥ १ ॥
चैतन निज घर को भूल रहा, पर धन माया में भूल रहा।
सद्चिद् आनन्द को पाना हो तो ।। सामायिक……॥ २ ॥
विषयों में निज गुण मत भूलो, अब काम क्रोध में मत भूलो।
समता के सर में नहाना हो तो ।। सामायिक……॥ ३ ॥

न पुष्टि हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ ध्यान भला।
आध्यात्मिक बल पाना हो, तो ।। सामायिक.......।। ४ ।।
ब जग जीवों में बन्धु भाव, अपनालो तज कर वैर भाव ।
सब जन के हित में सख मानो तो ।।सामायिक.....।। ५ ।।
निर्व्यसनी हो प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो ।
संसार में पूजा पाना हो तो ।। सामायिक.......।। ६ ।।
ाधक सामायिक संघ बने, सब जन सुनीति के भक्त बनें ।
मर-लोक में स्वर्ग बसाना हो तो ।।सामायिक.......।। ७ ।।

साधना के उच्च शिखरों पर

ाधना के उच्च शिखरों पर, विजय अभियान हो अब ।। टेर ।।
लक्ष्य पहला साधना है, सत्य की आराधना है ।
रूढ़ चर्या की अपेक्षा, सत्य का संधान हो अब ।। १ ।।
शैल से उन्नत बनें हम, सिन्धु से गहरे बनें हम ।
सूर्य से गति प्रेरणा लें, अविश्रम गतिमान हों अब ।। २ ।।
शास्त्र से आलोक पायें, हम न केवल गीत गायें ।
बैठ कर गहरे समुन्दर, आत्म अनुसंधान हो अब ।। ३ ।।
शोध होती आत्म व्रत से, सबक ले पश्चिम जगत से ।
भूल कर अस्तित्व अपना, हम स्वयं भगवान हों अब ।। ४ ।।
प्रेम का हो दीप कर में, हो अटल विश्वास मन में ।
जो छिपी है शक्तियां उन से निकट पहिचान हो अब ।। ५ ।।

साधु जैन का

साधु जैन का मुखड़ा रे ऊपर, मुखपति बांधे रे ।। टेर ।।
पांच महाव्रत पाले मुनिश्वर, टाले दोषण सारा रे ।
सब जीवां ने साताकारी, वे गुरु हमारा रे ।।साधु.।।१।।
सियाला में ठण्ड पड़े पण, धुनी नहीं जलावे रे ।
कारण अग्नि जीवां ने, वे नहीं सतावे रे ।। साधु. ।।२।।
उनाला में वीजना सूं, वायरो नहीं लेवे रे ।
वायु कायरा जीव बली, मच्छर मर जावे रे ।।साधु. ।।३।।
हेटे तो आकाश ऊपर पवन ऊपरे पाणी रे ।
पानी रे ऊपर है पृथ्वी, सांची मानी रे ।। साधु. ।।४

तुलसी के नहीं फेरा खावे, पत्तो पण नहीं तोड़े रे।
गऊ बन्धन में पड़ियो पीछे, अन्न जल छोड़े रे ।।साधु.।। ५
रात पड़िया अन्न जल रो खेरो मुंडा में नहीं नाखे रे।
सूई जतरो पण धातु वे पास न राखे रे ।। साधु. ।। ६
लिलोती रे भेला साधु, भूल पड़िया नहीं होवे रे।
विषय वश होय नार के सामा नहीं जावे रे ।। साधु. ।। ७
भांग तमाखू गांजा रे तो, नेड़ा त्रे नहीं जावे रे।
तन्दुरा परमुख काई वाजा नहीं बजावे रे ।। साधु. ।। ८
पहर रात गया के पीछे, ध्यान व शयन लगावे रे।
पर गाय वजाय नहीं वे करते रात जगावे रे ।।साधु.।। ६
पग उबराने चाले साधु, करड़ाई नहीं करता रे।
पर उपकार के कारण से दुनिया में फिरता रे ।।साधु.।।१०
हाथी घोड़ा रेल मोटर की नहीं करे सवारी रे।
दूर-दूर देशावर देखे पांव विहारी रे ।। साधु. ।।११
बोली तो नहीं बोले ऐसी, खटके जैसी खारी रे।
अमृत बोली बोले माने, मौज मजारी रे ।। साधु. ।।१२
गृहस्थी के घर नेतियोड़ा, जीमन ने नहीं जावे रे।
रूखी-सूखी लाय ने स्थानक में खावे रे ।। साधु. ।।१३
होलो चौमासो नानण में दोय ठाणा सूं आया रे।
'नाथू' शिष्य चौथु पंचाणवें स्तवन बनाया रे ।।साधु.।।१४

साधु श्रावक करे प्रणाम

जय जिनवर, जय तीर्थंकर, जय चौबीसी भगवान।
साधु श्रावक करे प्रणाम-२।
आप तिरे औरों को तारे, भरत क्षेत्र भगवान।
साधु श्रावक करे प्रणाम-२ ।। टेर ।।
ऋषभ देव का कीर्तन करते, अजितनाथ को वन्दन करते।
सम्भवनाथ का नाम सुमरते अभिनन्दन को चित्त में धरते।
जय सुमति, जय पद्म प्रभु जय चौबीसी भगवान ।। साधु. ।। १ ।।
सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते, चन्द्र प्रभु को वन्दन करते।
सुविधिनाथ का नाम सुमरते, शीतल प्रभु को चित्त में धरते।
जय श्रेयांस, जय वासुपूज्य, जय चौबीसी भगवान ।। साधु. ।। २ ।।

विमलनाथ का कीर्तन करते, अनन्तनाथ को वन्दन करते ।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शान्तिनाथ को चित्त में धरते ।
जय कुन्थु, जय अरहनाथ, जय चौवीसी भगवान ।। साधु. ।। ३ ।।
मल्लीनाथ का कीर्तन करते, मुनिसुव्रत को वन्दन करते ।
नमिनाथ का नाम सुमरते, अरिष्ठनेमि को चित्त में धरते ।
जय पारस जय महावीर, जय चौबीसी भगवान । साधु. ।। ४ ।।
अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते, विहरमान को वन्दन करते ।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते ।
'केवल' शिष्य विनय करता, जय चौबीसी भगवान ।।साधु. ।। ५ ।।

सांभल हो गौतम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो

सांभल हो गौतम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो ।। टेर ।।
मोटा तो नगर होसी गामड़ा, गांवड़ा होसी रे मसान ।
ऊंचा तो कुलरा छोरा–छोकरी दीसेला दास समान ।। १ ।।
राजा तो होसी जम सारखा, लालची होसी प्रधान ।
ऊंचा तो कुलनी रे नारियां लाज शरम देसी छोड़ ।। २ ।।
पुत्र पिता नो कहणो न पालसी, शिष्य गुरु अविनीत ।
ऊंचा कुलरी केई नारियां, दीखेली वैश्या समान ।। ३ ।।
मिथ्याती शूरा वहुत पुजावसी एक धर्म तणो भेद ।
देव का दर्शन दुर्लभ पामसी, विद्या वहु जासी विच्छेद ।। ४ ।।
ब्राह्मण हो होसी धन का लोभिया हिंसा में कहसी वहु धर्म ।
कई मिथ्याती होसी मानवी, मुश्किल निकलेला ज्यांरा भ्रम ।। ५ ।।
वंश अनारज सुखिया होवसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक ।
काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक होसी थोक ।। ६ ।।
धरती में सरसाई थोड़ी होवसी आउखो पावेला पूरा नाय ।
चौमासा लायक क्षेत्र साधु ने, थोड़ा मिलेला भरत मांय ।। ७ ।।
साधु श्रावक की पड़िमा विच्छेद जावसी, शिष्य गुरुरा अविनीत।
गुरु चेला ने थोड़ा पढ़ावसी, मुश्किल निभेली ज्यांरी प्रीत ।। ८ ।।
कुमाणस कलेशी घणा होवसी, अल्प होवसी न्यायवन्त ।
हिन्दू राजा नीचा वाजसी, म्लेच्छ होवसी वलवन्त । ९ ।।
नीच कुलरा राजा वाजसी, करसी खोटा–खोटा न्याय ।
ज्यांरे घर में लोहो लावसी, सो धनवन्त कहाय ।।१०।।

संवत उगणीसे वर्ष इकसठे, चित्तोड़गढ़ कियो चौमास ।
गरु नन्दलाल तणे शिष्य जोड़िया, अल्प कियो री समास ॥११॥

सुख कारण भवियण

सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार ।
जिन शासन आगम, चौदह पूर्व नो सार ॥ १ ॥
इण मन्त्र नी महिमा, कहतां न लहिये पार ।
सुरतरु जिम चिंतित, वांछित फल दातार ॥ २ ॥
सुर दानव मानव, सेवा करे कर जोड़ ।
भू मण्डल विचरे, तारे भवियण कोड़ ॥ ३ ॥
सुर छन्दे विलसे, अतिशय जास अनन्त ।
पद पहले नमिये, अरिगंजन अरिहन्त ॥ ४ ॥
जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भगवन्त ।
पंचम गति पहुंचे अष्ट करम करी अन्त ॥ ५ ॥
कल अकल स्वरूपी, पंचानन्तक देह ।
जिनवर पाय प्रणमुं, बीजे पद वली एह ॥ ६ ॥
गच्छ भार धुरन्धर, सुन्दर शशिहर शोभ ।
करे सारण वारण, गुण छतिसे थोभ ॥ ७ ॥
श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जिम गंभोर ।
तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर ॥ ८ ॥
श्रुतधर गुण आगार, सूत्र भणावे सार ।
तप विधि संयोगे, भाखे अर्थ विचार ॥ ९ ॥
मुनिवर गुण युक्ता, कहिये ते उवभाय ।
पद चौथे नमिये अह निश तेना पाय ॥ १० ॥
पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार ।
तपसी गुण – धारी, वारे विषय विकार ॥ ११ ॥
त्रस थावर पीहर, लोक मांहि जे साध ।
त्रिविधे ते प्रणमूं, परमारथ जिण लाध ॥ १२ ॥
अरि करि हरि सायन, डायन भूत बेताल ।
सब पाप पणासे, वरते मंगल माल ॥ १३ ॥
इण सुमरियां संकट दूर टले तत्काल ।
इम जंपे जिन प्रभ, सूरी शिष्य रसाल ॥ १४ ॥

१६१

सुना आपने नहीं कभी क्या

सुना आपने नहीं कभी क्या, वचन श्री गुरु ज्ञानी का ।
तरने को संसार सदा 'स्वाध्याय' करे जिनवाणी का ।। टेर ।।

पढ़ा स्वयं को जाय जिससे स्वाध्याय कहलाता है ।
कैसा है स्वाध्याय पता न, जिससे अपना पाता है ।
समकित-ज्योति जगाकर जो कि, सन्मार्ग दिखलाता है ।
ग्रन्थ वही स्वाध्याय के बस, लायक माना जाता है ।
उलटे राह चलाए जो क्या, पढ़ना कथा-कहानी का ।। १ ।।

यह तो सर्व विदित है तप से, कर्म सभी कट जाते हैं ।
'वीर प्रभु' स्वाध्याय को आभ्यन्तर तप बतलाते हैं ।
नर पुंगव जो इसको आलस, तज करके अपनाते हैं ।
सुर दुर्लभ इस जीवन को बस, वे ही सफल बनाते हैं ।
बाकी का तो जनम अरे ! है केवल कौड़ी कानी का ।। २ ।।

ज्ञान-शून्य तो मानव जग में, जीवन व्यर्थ गंवाता है ।
आत्म का - परमात्म का न, पता उसे कुछ पाता है ।
चौरासी के चक्कर में फंस, कष्ट अनेक उठाता है ।
अन्त कभी भी कष्टों का न, उस के फिर तो आता है ।
दुःख का ही बस बनता सागर, जीवन उस अज्ञानी का ।। ३ ।।

राग-द्वेष का लेश नहीं है देखो तो 'जिनवाणी' को ।
पार तभी भवजल से पल में, करती है ये प्राणी को ।
एक बार भी देखा जिसने, श्रद्धा से कल्याणी को ।
पावन परम बनाया उसने, अपनी इस जिन्दगानी को ।
पग-पग पर ही परम लाभ है, काम भला क्या हानि का ।। ४ ।।

जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन की कली खिलायेगा ।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन को शान्त बनायेगा ।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन का तमस् मिटायेगा ।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, सारे कष्ट भगायेगा ।
जिनवाणी स्वाध्याय अतः कर्तव्य प्रथम है प्राणी का ।। ५

जिनवाणी-स्वाध्याय से, ही आप स्वयं को जानेंगे ।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, [illegible]
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, [illegible]

जिनवाणी—स्वाध्याय से ही, न्याय वचन को मानेंगे।
बैठेंगे कभी न विलौना, भर करके फिर पानी का ॥ ६ ॥
नियम अतः स्वाध्याय करने का अय बन्धो! करियेगा।
तरने के शुभ पथ पे अपने, कदम मुस्तैदी धरियेगा।
सफल मनोरथ आप बनेंगे, नहीं जरा भी डरियेगा।
काल अनादि के दुःख संकट, सारे अपने हरियेगा।
कठिन नहीं सुलझाना कुछ भी 'चन्दन' उलझी तानी का ॥ ७ ॥

सुदर्शन श्रावक पूरण प्रिय धर्मी

सुदर्शन श्रावक पूरण प्रिय धर्मी, श्री महावीर नो ॥ टेर ॥
राजगृह का बाग में सरे, वीर विचरता आया।
सुनी बात सुदर्शन श्रावक, हृदय हर्ष भराया।
ले आज्ञा नित मात तात की, तुरन्त वंदना आये रे ॥ १ ॥
देवाधिष्ठ कोप्यो थको स तिण, अवसर अर्जुन माली।
नगर में चहुं फेर फिरेस वो, कर में मुद्गल झाली।
बीत गया छः मास हणे नित, छः छः पुरुष एक नारी रे ॥ २ ॥
ते तिणने रस्ता में मिलियो, देख रह्या नर नारी।
सागारी अनशन कर लीनो, मन में निश्चय धारी।
कुछ नहीं चाल्यो जोर देवता, निकल गयो तिण वारी रे ॥ ३ ॥
अनशन पार लार लेई अर्जुन, आया बाग में चाली।
वीर वांदन वाणी सुन संयम, लीनो अर्जुन माली।
छः महिने में मोक्ष गये, सब जनम-मरण दुःख टाली रे ॥ ४ ॥
ऐसा श्रावक होय गुरु की सदा भक्ति मन भावे।
कभी कष्ट व्यापे नहीं सरे, जग मांही जस पावे।
महामुनि 'नन्दलाल' तणां शिष्य, जोड़ करी इम गावे रे ॥ ५ ॥

सुनो वीर की वाणी

(तर्ज — पंजाबी)

सुनो वीर की वाणी रे भाइयो, सुनो वीर की वाणी।
धर्म अहिंसा मुख्य बताया, सब धर्मों का राजा।
बेगुनाह कोई जीव मारना, महा पाप — बतलाया।

चींटी से हाथी तक जितने, दिखते तुम्हें जिनावर ।
सभी चाहते सुख से रहना, आत्मा एक बराबर ।
पेड़ वनस्पति पानी आदि सब में जोव निशानी ।
इसी लिए तो बतलाया है, पीओ छान कर पानी ।
कोई मैं झूठ बोलिया, कोइना, भई कोइना—२ ।। १ ।।

झूठ बरावर पाप न जग में, झूठा ठोकर खाता ।
घर बाहर और राज्य सभा में, कहीं न आदर पाता ।
झूठ बोलने वाले का, विश्वास न कोई लाये ।
झूठ बोलना छोड़ो रे भाई, प्राण भले हो जाये ।
कोई में झूठ बोलिया ………?।। २ ।।

चोरी करने वाले लुच्चे, डाकू चोर कहलाते ।
नाम न लेता कोई उनका, नाम से सब घबराते ।
बहुतेरे चोरी करते, ऊपर से गिर मर जाते ।
बड़े बड़े चोरों को देखो, हार अन्त में मानी ।
चोरी करना बहुत बुरा है, सुनो ध्यान से प्राणी ।
कोई मैं झूठ बोलिया……… ? ।। ३ ।।

जूवे—बाज की सुनो कहानी, मत चित लाके भाई ।
द्रौपदी नारी पाण्डव हारी, शरम जरा नहीं आई ।
जूवे—बाज उचक्के पर, एतबार न करता कोई ।
घर वाले भूखे मरते, घर की हुई तबाई ।
इस पापी चाण्डाल जूए से अपनी जान बचानी ।
कोई मैं झूठ वोलिया……… ? ।। ४ ।

पर की माता बहिनों को, न बुरी नजर से देखो ।
काम वासना कभी न लाओ, माता बहिन सम जानो ।
इसलिए रावण को देखा, अपनी जान गंवाई ।
मान प्रतिष्ठा धन सम्पति, सव यूंही लुटवाई ।
उच्च भावना रक्खो हर दम, निर्मल हो जिन्दगानी ।
कोई मैं झूठ वोलिया……… ? ।। ५ ।।

इन दुर्व्यसनों को रे भाई शुद्ध मन से तुम त्यागो ।
ऐसे दुष्ट पापों से भाइयों, दूर—दूर सब भागो ।
यह अनमोल मनुष्य जन्म, ए वन्दे तूने पाया ।

महावीर के फरमानों का, सब ने मिल गुण गाया ।
महावीर के फरमानों को सब ने शान बढ़ानी ।
कोई मैं झूठ बोलिया………? ॥ ६ ॥

सुनो वीर की वाणी रे भाइयो, सुनो वीर की वाणी ।

सुनलो जैनों कान लगा कर

(तर्ज— आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं)

सुनलो जैनों कान लगाकर, वाणी तारणहार की ।
छोड़ो क्रोध लोभ मद माया, गतियां नरक द्वार की ।
हित की बात है–२ ॥ ध्रुव ॥

क्रोध–गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता ।
तेज चला जाता आँखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता ।
अकल न जाने कहां जाती है ? ज्ञान और गंवार की ॥सुनलो.॥
मान–मानी के सब शत्रु बनते, कोई मित्र नहीं बनता है ।
कोई उसकी बात न माने, साथ न कोई देता है ।
फिर भी कहता हम हैं चौड़े, संकड़ी राह बाजार की ॥सुनलो.॥
माया–औरों के लिए जाल बिछाता, मगर वही उसमें फंसता ।
औरों के लिए खड्डा खोदे मगर वही उसमें गिरता ।
सच कहता हूं जगमें माया, जननी दुःख अपार की ॥सुनलो.॥
लोभ–पूज्य पिता से लड़ता लोभी, भाई की हत्या करता ।
केवल नश्वर धन के खातीर, दुनियां में दंगा करता ।
लोभ पाप का बाप न करता, परवा अत्याचार की ॥सुनलो.॥
इनको त्यागेंगे वे भविजन, भव–भव में सुख पायेंगे ।
जन्म जरा और मरण मिटा कर, शिवनगरी में जायेंगे ।
'पारस' कहता सुनलो जैनों गुरु केवल अणगार की॥सुनलो.॥

सुखी न मिलियो एक भी

मैं तो ढूंढ्यो रे सहु जग मांय सुखी न मिलियो एक भी ॥ ध्रुव ॥
हाट हवेली भरिया खजाना, भोगण वालो नाय ।
मोटा–मोटा देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय ॥ सुखी. ॥ १ ॥

पइसो पाया नाम कमायो, करे सवाई बात ।
कंवर साब कपूतां जनम्या, बापूजी रोवे दिन रात ।। सुखी.।। २ ।।
पदमण मिली दयालु कहीं पर, सेठ ने लावो लेय ।
मिली कर्कसा नार कर्म सूं, खावे न खावण देय ।। सुखी.।। ३ ।।
छप्पर पलंग है महल मालिया, जाली झरोखादार ।
विना कंत के झूरे कामनी खारा लागे रे घरबार ।। सुखी.।। ४ ।।
करी कमायी लक्ष्मी पायी, बंगला मोटर कार ।
विना नार के लागे अलूणा, छोड़ गई रे मझधार ।।सुखी.।। ५ ।।

संवत्सरी आया पर्व महान्

धन्य – धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इन्सान ।
संवत्सरी आया पर्व महान् ।
राग – द्वेष को त्याग के सारे, गावो प्रभु का गान ।
संवत्सरी आया पर्व महान् ।। टेर ।।
गुरु चरणों में सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके ।
रगड़े–झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ बनाके ।
प्राणी मात्र से मिल कर सारे, मांगो क्षमा का दान ।। १ ।।
यही पर्व उद्धार करेगा, नव जीवन संचार करेगा ।
जो जन इसको प्यार करेगा, उसके सब सन्ताप हरेगा ।
इसी पर्व से मिलेगा तुझको, मुक्ति का वरदान ।। २ ।।
भेद भाव को दूर निवारो जागो वीरों उठो विचारो ।
जीती बाजी व्यर्थ न हारो, मिल कर आज प्रतिज्ञा धारो ।
जैन धर्म का तन – मन – धन से, करेंगे हम उत्थान ।। ३ ।।
पापों के सब बन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोड़ो ।
विषयों से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोड़ो ।
'चन्द्रभूषण' जियो जीने दो, यही वीर फरमान ।। ४ ।।

सांचो वीर प्रभु

सांचो वीर प्रभु को नाम, और काई काम न आवे लो ।। टेर ।।
मात–पिता और कुटुम्ब कबीलो संग नहीं जावे लो ।
मुट्ठी बांध आयो नर, खाली हाथां जावे लो ।। सांचो. ।। १ ।।
आया जहां से आया नग्न, और नग्न ही जावे लो ।
धन दौलत रह जाय, मिट्टी में तू मिल जावे लो ।।सांचो.।। २ ।।

प्राण पखेरू उड़े पछे, कोई पास न आवे लो।
सब ही धरया रह जाय, पाप पुण्य संग में जावे लो ॥साँचो.॥ ३ ॥
अच्छा कर्म कर पार उतर, वरना पछतावे लो।
कर्म किया जैसा मानव, वैसा फल पावे लो ॥ साँचो. ॥ ४ ॥
अगर सुध मन से वीर प्रभु को, ध्यान जो ध्यावे लो।
जनम–मरण मिट जाय, 'जीतमल' मुक्ति पावे लो ॥ साँचो.॥ ५ ॥

सत्संग में नित आया करो

(तर्ज— जोत से जोत जगाते चलो)

सत्संग में नित्य आया करो।
ज्ञान का दीप जलाया करो।
मौका सुनहरी मिला तुमको,
कुछ तो लाभ उठाया करो ॥टेर॥
सत्संग–जैसा इस जगती में नहीं तीरथ कोई दूजा।
सत्संग–ज्योति है जीवन की सत्संग उत्तम पूजा।
उत्तम पूजा रचाया करो……… ॥ १ ॥
कौन देश से आये हो तुम और कहाँ है जाना।
मंजिल को जो नहीं पहचाने, राही नहीं वो दीवाना।
मंजिल का पता लगाया करो………॥ २ ॥
कौन है अपना कौन बेगाना, इतना भी भेद न जाना।
झूठी काया झूठी माया, इस पर मत इतराना।
मन अपना समझाया करो……… ॥ ३ ॥

सम्यग् दर्शन

सम्यग्–दर्शन पालो प्राणी, सद्‌गुरु मिल गये ज्ञानी हैं।
मिथ्या तिमिर मिटाले झटपट तिरने की यह निशानी है ॥टेर॥
स्वार्थ भाव को दूर हटा, परमार्थ का परिचय करले।
वैभव भाव भुलाने वाला, वीतरागता चित धरले।
भक्ति नाम से राग – रंग में, फंसते वो अज्ञानी हैं ॥ १ ॥
तन धन जन नहीं चाहिये मुझको, नहीं वैभव की इच्छा है।
परमार्थ स्तुति करते, यह सब मांगें मिथ्या हैं।
चाहती हूं बस क्षायिक समकित, मिले तो महरबानी है ॥ २ ॥

तन की निरोगता के हेतु कुपथ्य वर्जन करता है ।
कुदर्शन और पतित जनों से, अतीव दूर तू रहता है ।
सम्यग्–दर्शन शुद्ध रहेगा, कहती है यूं जिनवाणी है ।। ३ ।।
जैसी प्रभु की निर्मल आत्मा, वैसा ही यह जीव बने ।
कर पुरुषार्थ कर्म काट लूं, नहीं काम के थोथे चने ।
परमार्थ सेवा है तारक, जानो दुनिया फानी है ।। ४ ।।
जो मेरा सच्चा नहीं होता, जो सच्चा सो मेरा ।
स्याद्वाद सिद्धान्त को समझो, छोड़ो तेरा मेरा ।
पच्चीस मिथ्यात्व का त्याग कर, समकित रत्न मिलेगा ।। ५ ।।
दोहा—तीन रत्न का करे आराधना, आगे कदम बढ़ाये ।
'भंवर' समरथ का ध्यान धरेगा तू भी सिद्ध बनेगा ।।

संवत्सरी

(तर्ज—जय बोलो महावीर स्वामी की………)

संवत्सरी आज मनायेंगे, जीवन को शुद्ध बनायेंगे ।। टेर ।।
यह धर्म त्यौहार कहाया है, जनगण के मन भाया है ।
श्रद्धा के पुष्प चढ़ायेंगे ।।संवत्सरी. ।। १ ।।
सब द्वेष क्लेश मिटा देना, एक प्रेम की धारा बहा देना ।
जिनवर के यश गुण गायेंगे ।।संवत्सरी. ।। २ ।।
पूज्य नाना गुरुवर प्यारे हैं, भाग्योदय यहां पधारें हैं ।
'उम्मेद' कहे सेवा साधेंगे ।। संवत्सरी. ।। ३ ।।

हे प्रभो आनन्द दाता

हे प्रभो आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये ।। १ ।।
लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ।। २ ।।
प्रेम से हम गुरुजनों की, नित्य ही सेवा करें ।
सत्य बोलें, झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।। ३ ।।
निंदा किसी की हम किसी से भूलकर भी ना करें ।
धैर्य बुद्धि मन लगाकर वीर गुण गाया करें ।। ४ ।।

ऐसा अनुग्रह और कृपा हम पर हो परमात्मा ।
हो प्रजा सब संसार की शासक सभी धर्मात्मा।। ५ ।।
हे प्रभो ! यह प्रार्थना है आपसे मंजूर करें ।
सब सुखी संसार हो यह भावना रग रग में भरें।। ६ ।।

हिवे राणी पदमावती (आलोयणा)

हिवे राणी पद्मावती, जीव राशि खिमावे ।
जाण पणुं जग में भलुं इण वेला जो आवे ।। १ ।।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहन्तो नी साख ।
जे मैं जीव विराधिया, चौरासी लाख···· ।। ते० ।। २ ।।
सात लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेऊ तणा, साते वली वाय···· ।। ते० ।। ३ ।।
दस लाख प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधारण ।
बे–ती चौरिन्द्रिय जीव नी, बे बे लाख विचार ।।ते. ।। ४ ।।
देवता तिर्यञ्च नारकी, चार – चार प्रकाशी ।
चौदह लाख मनुष्य ना, ये लाख चौरासी ।। ते० ।। ५ ।।
इण भव पर–भव सेविया, जो पाप अठार ।
त्रिविध–त्रिविध करि परिहरूं दुर्गति ना दातार ।।ते. ।। ६ ।।
हिंसा क्रोधी जीव नो, बोल्या मृषावाद ।
दोष अदत्तादान ना, मैथुन उन्माद ।। ते० ।। ७ ।।
परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ।
मान माया लोभ मैं किया, वली राग न द्वेष ।।ते०।। ८ ।।
कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूड़ा कलंक ।
निन्दा कीधी पार की, रति अरति निःशंक ।। ते० ।। ९ ।।
चाडी कीधी पार की, कीधो थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो ।। ते० ।। १० ।।
खटीक ने भवे मैं किया, जीव ना वध घात ।
चिड़ीमार भवे चिड़कला, मार्या दिन ने रात ।।ते. ।। ११ ।।
काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मन्त्र कठोर ।
जीव अनेक जिवह किया, कीधा पाप अघोर ।।ते० ।। १२ ।।
माछी ने भवे माछला, झाल्या जल वास ।
धीवर भील कोली भवे, मग पाड़्या पास ।। ते० ।। १३ ।।

कोटवाल ने भवे मैं किया, आकरा कर दण्ड ।
बन्दीवान मराविया, कोरड़ा छड़ी दण्ड ।। ते० ।। १४ ।।
परमाधामी ने भवे, दीधा नारकी दुःख ।
छेदन भेदन वेदना, ताड़न अति तिक्ख ।। ते० ।। १५ ।।
कुम्भार ने भवे मैं घणा, नोमाह पचाव्या ।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिण्ड भराव्या । ते० ।। १६ ।।
हाली-भवे हल खेड़िया, फोड़या पृथ्वी ना पेट ।
सूड़ निनाण किया घणा, दीधी बलदां चपेट ।।ते०।। १७ ।।
माली भवे रूंख रोपिया, नाना विध वृक्ष ।
मूल पत्र फल लता, फूल लाग्या पाप अलक्ष ।। ते०।। १८ ।।
अधोवाई या ने भवे, भरिया अधिका भार ।
पीठी पूठे कीड़ा पड्या दया नाणी लिगार ।। ते० ।। १९ ।।
छीपा ने भवे छेतरया कीधा रांगण पास ।
अग्नि आरंभ किया घणा, धातुवाद अभ्यास ।।ते० । २० ।।
शूर पणे रण जूझता, मारया माणस वृन्द ।
मदिरा मांस माखण भख्या खाधा मूलने कन्द ।।ते० ।। २१ ।।
खाण खणावी धातुनी सर पाणी उलीच्या ।
आरम्भ कीधा अति घणा. पोते पापज संच्या ।।ते० ।। २२ ।।
अङ्गार कर्म किया वली, वन में दव दीधा ।
कसम खाधी वीतराग नी, कूड़ा दोषज दीधा ।।ते० ।। २३ ।।
बिल्ली भवे उन्दर गिल्या, गिलोरो हत्यारी ।
मूढ़ गंवार तणे भवे, मैं जूं लीखा मारी ।। ते० ।। २४ ।।
भड़भूंजा तणे भवे, एकेन्द्रिय जीव ।
जुवा चणा गेहूं सेकिया, पाड़ंता रीव ।। ते० ।। २५ ।।
खांड़न पीसण गारना, आरम्भ अनेक ।
रांधण इंधण अग्नि ना, कीधा पाप उद्वेग ।। ते० ।। २६ ।।
विकथा चार कीधी वली, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पड़ाविया, रोवन विष वाद ।। ते० ।। २७ ।।
साधु अने श्रावक तणा, व्रत लेई ने भांग्या ।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ।। ते० ।। २८ ।।
सांप विच्छू सिंह चीतरा, सिकरा ने समली (चील) ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ।। ते० ।। २९ ।।

सुवावड़ी दूषण घणा वली गर्भ गलाव्या ।
जीवाणी ढोली घणी, शील व्रत भंजाव्या ॥ ते० ॥ ३० ॥
भव अनन्ता भमता थकां, कीधो परिग्रह सम्वन्ध ।
त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, तिणसुं प्रतिवन्ध॥ते०॥ ३१ ॥
भव अनन्त भ्रमता थकां कीधो कुटुम्ब सम्वन्ध ।
त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, तिणसुं प्रतिवन्ध॥ते०॥ ३२ ॥
इण विध इह भव पर भवे, कीधा पाप अखत्र ।
त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र॥ते०॥ ३३ ॥
इण विध यह आराधना, भावे करसे जेह ।
समय 'सुन्दर' कहे पाप थी, वली छूट से तेह ॥ते०॥ ३४ ॥

हम भूल गये हैं जिनको

(तर्ज— ए मेरे वतन के लोगों)

'जिन धर्म के प्यारे लोगों, ये सुनलो अमर कहानी'
हम भूल गये हैं जिनको, जरा याद करो कुर्बानी ॥ टेर ॥
वो सेठ सुदर्शन जिनको, रानी ने कलंक लगाया ।
शूली पर चढ़कर जिसने, महामन्त्र का ध्यान लगाया ।
शूली का बना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी ॥हम. ॥ १ ॥
बारह वर्ष अंजना की, प्रीतम से हुई जुदाई ।
इक पल प्रीतम का पाया, तूफान की आंधी आई ।
घर छोड़ जंगल में भटकी, है आज वो अमर कहानी॥हम. ॥ २ ॥
विजय सेठ विजया सेठानी, नई उमर थी नई जवानी ।
ब्रह्मचर्य जीवन दोनों के कैसे बीती जिन्दगानी ।
क्या प्रेम था पति-पत्नी का, देवों ने महिमा बखानी ॥हम. ॥ ३ ॥
राजा ने बलि चढ़ाने, ब्राह्मण का लाल खरीदा ।
वो अमर कुमार नन्हासा, जल्लाद ने खंजर खींचा ।
नवकार का ध्यान लगाते, वो धरती थर-थर कांपी ॥हम ॥ ४ ॥
सत्यवादी हरिश्चन्द्र राजा, एक पल में बने भिखारी ।
मरघट में बिक गया राजा और बिक गयी तारा रानी ।
वो अटल रहे थे सत्य पर, फिर हो गई सब आसानी । हम. ॥ ५ ॥
१. राजा की दो बेटी, सुर सुन्दरी मैना प्यारी ।

मैना पे क्रुद्ध हो राजा, कोढ़ी संग कर दी शादी ।
पति संग तप किया था उसने, हो गयी काया सुहानी ।।हम.।। ६ ।।
वाहुवली थे भरत के भाई, आपस में लड़ी लड़ाई ।
वाहुवली ने जीत लिया था, पर लाज भाई की आई ।
तज वैभव बन गये योगी, वो वीर थे स्वाभिमानी ।।हम. ।। ७ ।।
भारत माँ तेरी धरती है, आज यह कितनी प्यारी ।
महापुरुष हुए हैं जितने, है वन्दना सबको हमारी ।
'लक्ष्मी' हर दम गुण गाये, युवक मंडल सिरनामी ।।हम. ।। ८ ।।

हां, आज संवत्सरी आई

सब पर्वों का ताज, पुण्य दिन आज संवत्सरी आई ।
सब जन लो हर्ष मनाई ।। टेर ।।
चौरासी लाख जीव योनी से जो वैर किया मन-वच-तन से ।
भूलो वह और लो, मैत्री भाव बसाई ।। हाँ आज. ।। १ ।।
जो जान-बूझ कर पाप किया या अनजाने अतिचार हुआ ।
लो दण्ड और दो मिच्छामि दुक्कडं भाई ।।हाँ आज.।। २ ।।
अरिहन्त सिद्ध आचार्य श्री, पाठक मुनिवर महासतियां जी ।
श्रावक-श्राविका इन, सबसे लेवो खमाई ।।हाँ आज. ।। ३ ।।
जो खमता और खमाता है, वह प्राणी आराधक बनता है ।
आराधक की होती है, गति सुखदाई ।। हाँ आज. ।। ४ ।।
यह पर्व नित्य नहीं आता है, पाले वह मुक्ति पाता है ।
केवल कहते 'पारस'', अपना नरभाई ।। हाँ आज. ।। ५ ।।

होते होते हैं साधु ऐसे

होते होते हैं साधु ऐसे, जैन मुनि जग मांय ।। टेर ।।
कनक कामनी के हैं त्यागी, रजनी में नहीं खाय ।
अरे कच्चे जल को कभी न पीते, अग्नि छूते नाय ।। १ ।।
पंखा करे न करे सवारी, चलते जीव बचाय ।
मधुकरि सी चर्या जिनकी, सब जीवन सुखदाय । २ ।।
ऊंच नीच सहे वचन जगत के क्षमा भाव मन लाय ।
आशीर्वाद शाप नहीं देते, नशा पत्ता नहीं खाय ।। ३ ।।
मुंह पर सदा मुंहपत्ती राखे, सच्चा ज्ञान सुनाय ।
त्यागी तपस्वी मुनिराजों के, चरणों शीश नमाय ।। ४

होवे धर्म प्रचार

होवे धर्म प्रचार — प्यारे भारत में ॥ टेर ॥
ईर्षा करे न कोई भाई, दिल में सब के हो नरमाई ।
सरल बने नर-नार — प्यारे भारत में ॥ १ ॥
जुआ मांस शराब व चोरी, दूर हो जग में रिश्वत खोरी ।
न खेले कोई शिकार — प्यारे भारत में ॥ २ ॥
मुनी गुणी-जन जितने आवें, सारे उनसे लाभ उठावें ।
लेवें जनम सुधार — प्यारे भारत में ॥ ३ ॥
तज कर निन्दा झूठ लड़ाई, गले मिलें सब भाई-भाई ।
वहे प्रेम की धार — प्यारे भारत में ॥ ४ ॥
मुख से कोई न देवे गाली, बोली बोले इज्जत वाली ।
मीठी और रसदार — प्यारे भारत में ॥ ५ ॥
महावीर के बनें पुजारी, सत्य अहिंसा दया के धारी ।
मन्त्र जपें नवकार — प्यारे भारत में ॥ ६ ॥
धर्म का झण्डा फहरे फर-फर, नाम प्रभु का गूंजे घर-घर ।
होवे जय - जयकार - प्यारे भारत में ॥ ७ ॥
'चन्दन' और कहे क्या ज्यादा, वेश व भोजन सब हो सादा ।
सादा हो घर-बार — प्यारे भारत में ॥ ८ ॥

श्री आदि जिनंद, समरस कंद, अजित जिनंद, भज प्राणी

श्री आदि जिनंद, समरस कंद, अजित जिनंद भज प्राणी ।
संभव जग त्राता, शिव मग दाता, दो सुख साता हित आणी ॥ १
अभिनन्दन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित सेवा रिपु घाता ।
चौबीस जिनराया मन वच काया प्रणमूं पाया हो साता ॥ २
श्री पदम सुपासं ससिगुण रासं, सुविधि सुवासं, हितकारी ।
श्री शीतल स्वामी, अंतरयामी शिवगति गामी, उपकारी ॥ ३
श्रेयांस दयाला, परम कृपाला भविजन व्हाला, जग त्राता ।
वासुपूज्य सुखदं, विमल अनन्त, धर्म श्री शांति सुखकारी ॥ ४
कुन्थु अरनाथ, तज जग साथं, मल्लि सुवास जगधारी ।
मुनि सुव्रत सुनमि आत्मा ने दमी दुर्मति ने वमी दुःखहर्ता ॥ ५
रिष्टनेमी वड़ाई, नार न व्याही, तोरण जाई छिटकाई ।
[illegible] नागिन तांई दिया बचाई, पारस सांई सुखदाई ॥ ६

जय जय वर्धमान गुण निधि खानं, त्रिजग भानं शुद्ध ज्ञाता ।
संसार का फंदा दूर निकंदा, धर्म का छंदा जिन लीना ॥ ७ ॥
प्रभु केवल पाया धर्म सुनाया, भवि समझाया, मुनि कीना ।
कहे 'रिख तिलोकं', सदा तस धोकं, दो सुख थोकं चित चाया ॥ ८ ॥

श्री जिनेश्वरदेव की दृढ़ भक्ति मेरे पास हो

श्री जिनेश्वर देव की दृढ़ भक्ति मेरे पास हो ।
जिन प्ररूपित तत्त्व पर, मेरा अटल विश्वास हो ॥ १ ॥
त्याग मय जीवन बनाया, त्याग कर संसार को ।
ऐसे गुरुओं की चरण, सेवा का नित अभ्यास हो ॥ २ ॥
मद्य मांस शिकार जुवा, चोरी पर-नारी विषय ।
स्वप्न में भी इनके सेवन, की नहीं अभिलाष हो ॥ ३ ॥
सत्य सेवा तप क्षमा, सन्तोष उच्च विचार हो ।
व्याप्त इस जीवन के, उपवन में सदैव सुवास हो ॥ ४ ॥
धर्ममय आजीविका हो, मधुरतम व्यवहार हो ।
आचरण की शुद्धता से, पूर्ण आत्म विकास हो ॥ ५ ॥
वीतरागों का बताया मार्ग ही सन्मार्ग हो ।
इसमें चलने में लगा प्रत्येक श्वासोच्छवास हो ॥ ६ ॥

श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन

श्री ऋषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन ।
सुमति, पदम, सुपारस, मन रंजन ।
चन्द्र प्रभुजी ने सेवो ।
सुविधिनाथ, शीतल, गुण गाऊं ।
श्री श्रेयांस, वासुपूज्य जी ने ध्याऊं ।
विमल, सुनिर्मल देवो ॥ १ ॥
अनन्त, धरम, श्री शान्ति जिनेश्वर ।
कुन्थुनाथ अति ही अलवेसर ।
वन्दूं श्री अरनाथो ।
मल्लिनाथ, मुनि सुव्रत स्वामी ।
नमि, नेमी, पारस हितकामी ।
मिलियो मुगति नो साथो ॥ २

चौबीसवां श्री वीर जिनेश्वर ।
पर उपकारी प्रभु श्री परमेश्वर ।
पहुंचा पद निरवाणी ।
ए चौबीसां रा नित गुण गावे ।
दुःख दारिद्र ज्यांरा दूर पलावे ।
वरते क्रोड कल्याण ॥ ३ ॥

पुण्य जोगे मानव भव लाधो ।
चौबीसे जिनवर जी आराधो ।
लावो लेवोजी तुम लेवो ।
ए चौबीसा भजो सिर नामी ।
मोटा प्रभु साहिब अन्तर्यामी ।
श्री मुक्ति तणा दातारो ॥ ४ ॥

श्री जिनवर मुझ करो कल्याण

श्री नेमीश्वर सम्भव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम ।
अनन्त सुव्रत नमीनाथ सुजाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
अजितनाथ चन्द्रा प्रभु धीर आदीश्वर सुपार्श्व गम्भीर ।
विमलनाथ विमल जग जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
मल्लिनाथ जिन मंगल-रूप, धनुष पचीस सुन्दर शुभ रूप ।
श्री अरहनाथ नमूं वर्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
सुमति पदम प्रभु अवसंत वासुपूज्य शीतल श्रेयांस ।
कुन्थु पार्श्व अभिनन्दन भाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
इण परे जिनवर सम्भारिये, दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये ।
पच्चीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
इण भणतां दुःख नावे कदा जो निज पासे राखो सदा ।
धरिये पंचतणूं मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।
श्री जिनवर नामे वांछित मिले, मन-वांछित सहु आशा फले ।
धर्म सिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।

श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो सदा जय हो

(श्री गणेशाचार्य जी)

श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो सदा जय हो ।। टेर ।।
पतित पावन जिनेश्वर की सदा जय हो सदा जय हो ।। १ ।।
तुम्हीं हो देव देवन के, तुम्हीं हो पीर पैगम्बर ।
तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु, सदा जय हो सदा जय हो ।।श्री महा. ।। २ ।।
तुम्हारे ज्ञान खजाने की, महिमा बहुत भारी है ।
लुटाने से बढ़े हरदम, सदा जय हो सदा जय हो । श्री महा. । ३ ।।
तुम्हारी ध्यान मुद्रा से, अलौकिक शान्ति झरती है ।
सिंह भी गोद पर सोते, सदा जय हो सदा जय हो । श्री महा. ।। ४ ।।
तुम्हारा नाम लेने से, जागती वीरता भारी ।
हटाने कर्म लश्कर को, सदा जय हो सदा जय हो ।। श्री महा. ।। ५ ।।
तुम्हारा संघ सदा जय हो, मुनि मोतीलाल सदा जय हो ।
जवाहरलाल पूज्य गुरुराज सदा जय हो सदा जय हो ।।श्री महा. ।। ६ ।।

श्री महावीर भगवान

श्री महावीर भगवान तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री वर्धमान भगवान तुमको लाखों प्रणाम ।। टेर ।।
तत्त्व अहिंसा का बतलाया विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ाया ।
हिंसा-पाप को मार भगाया, जैन धर्म उद्धारी । तुमको. ।। १ ।।
माता-पिता की भक्ति सिखाकर, भ्रात प्रेम का पाठ पढ़ाया ।
नीचजमों को उच्च बनाकर जग समता विस्तारी । तुमको. ।। २ ।।
स्याद्वाद सिद्धान्त बताया मिथ्या मत पाखण्ड हटाया ।
शुद्ध मार्ग ऐसा बतलाया, मिले मोक्ष सुखकारी । तुमको. ।। ३ ।।
राज-पाट सुख सम्पति तजकर चार सहस्र संग संयम लेकर ।
तप में अपना जीवन देकर तीर्थंकर पद धारी । तुमको. ।। ४ ।।
श्रेयङ्कर का है यह कहना महावीर शिक्षा सिर धरना ।
जीवन को संयममय करना, मिले मुक्ति सुखकारी ।।तुमको. । ५ ।।

श्री अभिनन्दननाथ स्तवन

श्री अभिनन्दन दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन जोग जी।
आशा पूरो चिन्ता चूरो, आपो सुख आरोग जी ।। श्री. ।। १ ।।
'संवर' राय 'सिधारथ' राणी, तेहनो आतम जात जी।
प्राण प्यारो साहिब सांचो, तूहीं मात ने तात जी ।।श्री. ।। २ ।।
कईयक सेव करे शंकर की, कईयक भजे मुरार जी।
गणपति सूर्य उमा कई सुमरे, हूं सुमरूं अविकार जी।।श्री.।। ३ ।।
देव कृपा सूं पामें लक्ष्मी सो इण भव को सुख जी।
तू तूंठा इन भव पर में, कदी न व्यापै दुःख जी ।।श्री. ।। ४ ।।
जदपि इन्द्र नरेन्द्र निवाजे, तदपि करत निहाल जी।
तू पूजनीक नरेन्द्र इन्द्र को दीनदयाल कृपाल जी ।।श्री. ।। ५ ।।
जब लग आवागमन न छूटे, तब लग ए अरदास जी।
सम्पति सहित ज्ञान समकित गुण, पाऊं दृढ़ विश्वास जी।।श्री.।।६।।
अधम उद्धारन विरुद तिहारो, जावो इण संसार जी।
लाज 'विनयचन्द्र' की अब तोने भवनिधि पार उतारजी।।श्री.।।७।।

श्री जिन मुझ ने पार उतारो

श्री जिन मुझ ने पार उतारो, प्रभु मैं चाकर चरणां रो ।।टेर।।
ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, निरंजन निराकारो।
सुमति पद्म सुपारस चंदा प्रभु, मेटया है विषय विकारो ।।श्रीजिन.।।१
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, मुक्ति तणा दातारो।
विमल अनंत धर्म शांति, साताकारी संसारो ।। श्रीजिन. ।। २ ।
कुन्थु अरह मल्लि मुनि सुव्रत जी, निवर्त्या संसारो।
नमिनाथ नेम पारस महावीर जी, शासन रा सिरदारो ।।श्रीजिन.।। ३ ।
ग्यारह गणधर वीस विहरमान, सर्व साधु अणगारो।
अनंत चौवीसी ने नित-नित वंदूं, कर दिया खेवा पारो ।।श्रीजिन.।। ४ ।
अधम उधारण विरुद सुणि प्रभु. शरणो लियो चरणा रो।
अधम उधारण परम पदारथ, अजर अमर अविकार ।। श्रीजिन. ।। ५ ।
राग द्वेष कर्म बीज महाबलियो, बालि कीनो सर्व चारो।
केवलज्ञान ने केवल दर्शन, निज गुण लीना धारो ।। श्रीजिन. ।। ६ ।
दान शील तप भावना भावो, दया धर्म तत्त्व सारो।
'जचंद' ऋषि इण पर विनवे प्रभु, मारो करो निस्तारो।।श्रीजिन.।।७

श्रावक रत्न बनने की भावना

(तर्ज — ओ दूर जाने वाले..........)

मुझको जिनेन्द्र ऐसा, श्रावक रतन बनाना ।
मैं हूं शरण तुम्हारी आशा सफल बनाना । टेर ।।
हो ज्ञान की पिपासा, गहरी समुद्र जैसी ।
तुंगियापुरी के श्रावक तत्त्व रसिक बनाना ।। १ ।। भगवती २, ५.
जिनमत के आगमों में, कोविद बनूं त्वरा से ।
मर्मज्ञ सार ज्ञाता 'पालित' मुझे बनाना । २ ।। उत्तरा–२१
सिद्धान्त ज्ञान पाकर श्री संघ को सिखाऊं ।
चर्चा सभा चलाऊं, 'ऋषि भद्रजी' बनाना ।। ३ ।। भगवती ११, १२
पर वादियों की तर्कें, सुनकर न पाऊं संशय ।
दूं युक्ति–युक्त उत्तर, 'मद्रुक' मुझे बनाना ।। ४ ।। भगवती ८, १७
पर वादियों को पूछूं, सिद्धान्त की वे बातें ।
जिन धर्म में वे आवें 'पिंगल' मुझे बनाना ।। ५ ।। भगवती २, १
कर जैन धर्म सिद्धि, जैनी बनाऊं नूतन ।
वह बुद्धि हो कला हो, 'सुबुद्धि' जो बनाना ।। ६ ।। ज्ञाता. १२
जिनमत प्रचार के हित, शक्ति लगादूं अपनी ।
जितनी भी मुझ में होवे 'अम्बड' मुझे बनाना।। ७ । ओपपातिक
या मैं अधर्मियों को, ला संत के चरण में ।
धर्मी, व्रती बनाऊं, 'चितसारथी' बनाना ।। ८ ।। राजप्रश्नीय

२. दर्शन आराधना

जिन देव को हृदय से पल भर नहीं विसारूं ।
भक्ति परम हो उन पर 'कोणिक मुझे बनाना ।। ९ ।। औपपातिक
सन्तों के दर्शनों की जिनवाणी के श्रवण की ।
रहे लालसाएं उत्कृष्ट "नन्दन" मुझे बनाना ।।१०।। ज्ञाता १३.
गुरु की उपासना में तन मन सभी भुला दूं ।
बाधा न एक देखूं, "सुदर्शन" मुझे बनाना ।।११।। अन्त. ६, ३.
जिनसे मिला है धर्म, उपकार उनका मानूं ।
गुण गान नित्य गाऊं, "श्रेणिक" मुझे बनाना ।।१२।। उत्तरा. २०
सन्तों की वैयावृत्य, कल्पानुसार उनके ।
तत्पर रह करूं मैं, "मण्डुक" मुझे बनाना ।।१३ । ज्ञाता. ५

करूं संघ की मैं सेवा, आगे रहू सभी से ।
चातुर्य भी हो पूरा, 'श्री पुष्कली' बनाना ॥१४॥ भगवती
श्रद्धा हो ऐसी सुदृढ़, मिले देव और दानव ।
किंचित डिगा न पावें, 'अरणिक' मुझे बनाना ॥१५॥ ज्ञाता.
यदि धर्म को न समझूं, तो भी रक्खू मैं दृढ़ता ।
'बालक सखा' वरुण का अनुकरण कर बनाना ॥१६॥ भगवती
जो न्याय मार्ग पर हो, उनको शरण सदा दूं ।
चाहे हो युद्ध भयंकर, 'चेटक' मुझे बनाना ॥१७॥ निरया.

३. चारित्र आराधना

जैसी हो शक्ति सुविधा, धारूं सभी व्रतों को ।
किन्तु रहूं न वंचित, 'शकडाल' जी बनाना ॥१८॥ उपासक.
जग के प्रपंच में भी, धर्म क्रिया आराधूं ।
रक्खूं विरक्त जीवन, 'कार्तिक' मुझे बनाना ॥१९॥ भग. १८.
करूं पर्व दिन सफल सब, पौषध दयाधि व्रत से ।
सबको भी प्रेरणा दूं, 'श्री शंखजी' बनाना ॥२०॥ भग. १२,
धारे हुए व्रतों में मेरु सी आये दृढ़ता ।
उपसर्ग सर्व जीतूं, 'श्री कामदेव' बनाना ॥२१॥ उपासक. ८
जीवन भले ही जाये, व्रत को करूं न खंडित ।
'अम्बड़ के शिष्य' जैसा, व्रत निष्ठ जिन बनाना ॥२२॥ ओपपाति
कभी गिर पडूं धरम से, ज्यों ही निमित्त पाऊं ।
उत्थान वेग से हो, 'सोमिल' मुझे बनाना ॥२३॥ पुष्पिका.
व्रत से, धरम से डिगते, प्राणी को स्थिर बनाऊं ।
मुनि भी क्यों न हो वह, 'श्री पुण्डरीक' बनाना ॥२४॥ ज्ञाता. १
जो रुक रहे हैं व्रत से, उत्साह सहाय देकर ।
जिन धर्म मैं बढ़ाऊं 'श्री कृष्ण' जी बनाना ॥२५॥ अन्तगढ़
नियति का वाद तजकर, पुरुषार्थ वादी होऊं ।
और अन्य को बनाऊं, 'कुण्डकोलिक' बनाना ॥२६॥ उपासक ६

४. तप आराधना

तन की हटा के ममता, तपमय बनाऊं जीवन ।
एकान्तरादि तप से, तपसी 'वरुण' बनाना ॥२७॥ भग ७.
वह पुण्य दिन भी आये, सब छोड़कर गृहस्थी ।
तगा करूं आराधन, 'आनन्द' जी बनाना ॥२८॥ उपासक

जब अन्त काल देखूं, करूं मोह सबका तजकर।
संलेखना संथारा 'सिद्धार्थ' जी बनाना ॥२६॥ आचारांग १५
परिणाम हो विशुद्ध, रहे चित्त में समाधि।
कैसी भी हों स्थितियां, 'प्रदेशी' जी बनाना ॥३०॥ राजप्रश्नीय.
पर दोष को न देखूं, निज दोष को निहारूं।
ले दण्ड शुद्ध होऊं, 'श्री महाशतक' बनाना ॥३१॥ उपासक ८.
'केवल' कहे रे पारस! तू अपनी जीवनी में।
ऐसे वरिष्ठ श्रावक, पुरुषार्थ कर बनाना ॥३२॥
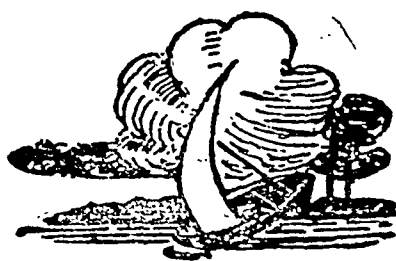
विविध

सात कुव्यसनों का निषेध

जुआ खेलना, मांस, मद, वैश्या – व्यसन शिकार ।
चोरी पर – रमणी – रमण, सातों नरक द्वार ।।

१. जुआ— शर्त लगा कर ताश आदि खेलना, का व अन्य पदार्थों का सट्टा व रेस का भी सट्टा एक प्रका जुआ है । यदि सर्वथा त्याग न कर सके तो परिमाण अवश्य चाहिये ।

२. मांस— भक्षण करना, अण्डे, मछली आदि प्रयोग करना ।

३. मदिरा पान— करना, भंग, गांजा चरस, तम्बाखू आदि का सेवन करना ।

४. वैश्या गमन – करना ।

५. शिकार खेलना अथवा बिना अपराध किसी भी त्रस प्राणी को संकल्प पूर्वक मारना, घातक हमला या वार करना।

६. चोरी -- करना या बिना दी हुई वस्तु लेना अथवा

७. पर-स्त्री गमन – करना ।

नोट— ये सातों नरक के द्वार हैं । प्रत्येक साधक व्यक्ति को इन सातों ही कुव्यसनों का जीवन भर के लिए त्याग कर देना चाहिये । इनका त्याग करने से प्राणिमात्र के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है अन्यथा नहीं । जीवन को उन्नत बनाने व चरित्र निर्माण के लिए निर्व्यसनी होना आवश्यक है । ये सातों व्यसन दुर्गति के कारण व अधर्म को बढ़ाने वाले हैं । अतः व्रती बनने वालों को इन कुव्यसनों का पहले त्याग करना आवश्यक है ।

श्रावक के तीन मनोरथ

१—परिग्रह अल्प करने की भावना— पहले मनोरथ में श्रावक जी ऐसा चिन्तन करते हैं, कि हे जिनेश्वर देव ! कब मैं आरम्भ और परिग्रह को थोड़ा-बहुत घटाऊंगा, वह दिन मेरे लिए धन्य और पर-कल्याणकारी होगा।

२.—सर्व विरती की भावना— दूसरे मनोरथ में श्रावक जी ऐसा चिन्तन करते हैं कि-हे जिनेश्वर देव ! कब मैं गृहवास का त्याग करके और अठारह पापस्थान का त्याग करके दीक्षा लूंगा— वह दिन मेरे लिए धन्य और परम-कल्याणकारी होगा।

३-पण्डित मरण की भावना— तीसरे मनोरथ में श्रावक जी ऐसा चिन्तन करते हैं कि-हे जिनेश्वर देव ! कब मैं चारों ही आहार का त्याग करके, अठारह पापस्थानों का त्याग करके और भूतकाल की भूलों की आलोचना, निन्दा, गृहि-प्रतिक्रमण करके निःशल्य होकर सभी जीवों को क्षमा कर, चार शरण लेता हुआ पण्डित मरण से मरूंगा-वह दिन मेरे लिए धन्य होगा - परम कल्याणकारी होगा।

चौदह नियम

(१) सचित—जीव सहित वस्तु अर्थात् कच्चा पानी, फूल, फल, मूल, बीज आदि कोई भी सचित वस्तु छेदन-भेदन होकर तथा अग्नि आदि का शस्त्र पाकर अचित न हुई हो उसका परिमाण करना।

(२) द्रव्य— रोटी, दाल, भात आदि द्रव्य का परिमाण करना।

(३) विगय—दूध, दही, घी, तेल आदि।

(४) उपानह-जूते, चप्पल आदि।

(५) ताम्बूल-मुखवास, पान, सुपारी।

(६) वस्त्र— पहनने, ओढ़ने के सब कपड़े।

(७) कुसुम—सूंघने की वस्तु फूल, इतर आदि।

(८) वाहन—घोड़ा, हाथी, जहाज, मोटर आदि।

(९) शयन—पलंग, खाट, बिछौने आदि।

(१०) विलेपन— चन्दन, तेल, उबटन आदि ।
(११) ब्रह्मचर्य — मैथुन का त्याग ।
(१२) दिशा — ऊंची, नीची, तिरछी दिशा ।
(१३) स्थान— स्थान का परिमाण ।
(१४) भत्त - मिष्ठान्न आदि भोजन ।

उपरोक्त चौदह नियमों की प्रतिदिन मर्यादा करनी चाहिये

संवाद

खण्ड

सुन सजनी सच कह कथनी

(तर्ज— मेरा मन डोले मेरा तन····)

धन्ना— सुन सजनी सच कह कथनी, तेरा मुखड़ा आज उदास रे ।
क्यों बहती आंसू धार है ॥
शालीभद्र सा जिसका भाई, उसके भाग्य सवाये–२ ।
फिर भी अचरज होता मुझको, नयन नीर क्यों आये ।
हो सजनी नयन नीर क्यों आये ।
कह सजनी सच कह कथनी, तेरा मुखड़ा आज उदास रे ।
क्यों बहती आंसू धार है ॥१॥

सुभद्रा— भैया ने वैराग्य रंग में काम भोग बिसराया–२ ।
नित प्रति इक भाभी छिटकाता, योग उसे मन भाया ।
हो स्वामी योग उसे मन भाया ।
समझाया, समझ न पाया सुन स्वामी आज उदास रे यूं ।
यह बहती आंसू धार है ॥२॥

धन्ना— कायर सुनरी तेरा भाई, इक–इक नारी छोड़े–२ ।
सिंहनी जाया शूर वीर तो, एक साथ मुंह मोड़े ।
हो सजनी एक साथ मुंह मोड़े ।
जो करना, धीरे करना, है यह तो अबला रीत री ।
यह पुरुषों की है रीत नहीं ॥३॥

सुभद्रा— कह दिखलाना सरल है स्वामी, उसमें जोर न आये–२ ।
वह जननी का सच्चा जाया, जो करके दिखलाये ।
हो स्वामी जो करके दिखलाये ।
धन जन को इस बन्धन को, सब त्याग के संयम धारना ।
कोई बच्चों का है खेल नहीं ॥४॥

धन्ना— ठीक समय पर तू ने सजनी, सोता सिंह जगाया–२ ।
ले आज बतादूं मेरी मां ने, कैसा दूध पिलाया ।
हो मुझको कैसा दूध पिलाया ।
नारी को दुनियादारी को यह, चला मैं ठोकर मार के ।
अब संयम पाल दिखाऊंगा ॥५॥

सुभद्रा– स्वामी! स्वामी ! कहां जाते हो? हंसी को सांच न मानो–२।
फिर से ऐसा नहीं कहूंगी, मानो, मानो, मानो ।
हो स्वामी एक बार बस मानो ।

यह तेरी चरणों की चेरी, इसे करदो, क्षमा प्रदान रे।
तुम यों मत छोड़ चले जाओ ॥६॥

धन्ना— वचन बाण का घायल शूरा, लौट कभी न आये–२।
चाहे हो बलिदान प्राण का, अपनी टेक निभाये।
हो भगिनी अपनी टेक निभाये।
जाऊंगा, बस अब जाऊंगा, मैं कठिन तपस्या धार के।
मुक्ति महल हो जाऊंगा ॥७॥

कवि— प्रण पालक अहो शूर शिरोमणि धन्य है धन्ना तुमको–२।
इतिहास तुम्हारा पढ़–पढ़ होता गर्व हमारे दिल को।
हो धन्ना ! गर्व हमारे दिल को।
जय रमणी ! धन तेरी जननी! जिसने जना है तुझसा पूत रे।
"पारस" तेरा गुण गाए ॥८॥

संवाद—मुनि स्थूलिभद्र एवं कोशा नगर वधू

(तर्ज - मेरी छोटी सी है नाव तोरे······)

कोशा - आओ–आओ मेरे सिर मौर मेरे कलेजे की कोर,
आज हर्ष हिलोर, स्वागत करूं दिल खोल के ॥ टेर ॥

स्थूलिभद्र–तजो मोह के विचार, करो आतम उद्धार,
तेरा होवे बेड़ा पार, जीवन मिलाओ क्यों धूल में ॥ध्रुव॥

कोशा प्रीत पहले की क्यों छिटकाई,
क्यों यह निःरसता अपनाई।
कहो मेरे प्यारे नाथ जोडूं तुम्हें दोनों हाथ,
श्री चरणों में नाथ स्वागत करूं दिल खोल के ॥ १ ॥

स्थूलि०—कोशा, पहले था मैं अज्ञानी,
नहीं जीवन की कीमत जानी।
पड़ विषय विकार, खोया जीवन का सार,
खोई घड़ियां बेकार, जीवन मिलाओ क्यों धूल में ॥ २ ॥

कोशा— नाथ फूल सी देह तुम्हारी,
क्यों यह तप की चले दुधारी।
क्यों यह लिया दुःख मोल, त्यागा सुख अनमोल,
जरा देखो आँखें खोल, स्वागत करूं दिल खोल के ॥ ३ ॥

स्थूलि० -कोशा, आत्मा का नहीं कोई साथी,
भव सागर में यह दुःख पाती।
सेवे विषय विकार, बढ़े कर्मों का भार।
पड़े नर्कों में मार जीवन मिलाओ .... ॥ ४ ॥

कोशा - स्वामी भूल गये, वो रंग-रेलियां,
खिल जाती थी, दिल की कलियां।
छोड़ो-छोड़ो यह वैराग स्वामी मुझको न त्याग,
मेरी चरणों में लाग, स्वागत करूं............ ॥ ५ ॥

स्थूलि० -कोशा मोह का चश्मा हटाओ,
तप संयम से प्रीति लगाओ।
मिले शान्ति अपार, पाएं अमृत की धार,
अब जन्म सुधार, जीवन मिलाओ............ ॥ ६ ॥

कोशा- स्वामी मुश्किल है संयम पालना।
जैसे खाण्डे की धार पर चलना।
तजो यह मुनि वेश, देखो आनन्द विशेष,
मेटो परिषह क्लेश, स्वागत करूं............ ॥ ७ ॥

स्थूलि० -भोग क्षण भर है, आनन्द दायी,
फिर घोर दुःखों की खाई।
होता फिर पश्चाताप, पल्ले पड़ता है पाप,
होता उससे संताप, जीवन मिलाओ............ ॥ ८ ॥

कोशा - स्वामी सत्य है आपका कहना,
मुझे पहनाया धर्म का गहना।
पाप बुद्धि को निवार, किया भारी उपकार,
ठहरो यहां माह चार, स्वागत करूं............ ॥ ९ ॥

स्थूलि० -कोशा, बारह व्रतों को धारे,
भव सागर से हुई है किनारे।

कवि - स्थूलिभद्र मुनिराज, तारण तिरण जहाज,
'कुमुद मुनि' के सिरताज, जीवन लगाओ धर्म-ध्यान में॥ १०॥

卐

संवाद- जम्बू व माता

(तर्ज— वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया………)

माता— रूप निरूपम गुण भण्डारी, वैरागी जम्बू प्यारा,
देवों को भी वल्लभ लगते, सबकी आँखों का तारा ।।टेर।।
जम्बू— सुन उपदेश सुधर्मा गुरु का, संसार हलाहल खारा है।
क्षण भर भी तो सुख नहीं जग में, कांटों का ही भारा है।
क्षण लाखिणी जाय हमारा, माता संयम सुखकारा ॥ १ ॥
माता— एकाकी है लाल हमारा, दीक्षा कैसे लेता है,
छोटा था, मैं मोटो कियो, अब क्यों तू छिटकाता है,
कैसे आज्ञा देऊं वाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥ २ ॥
जम्बू— मोह जाल में फंस कर माता, मेरा-तेरा क्या करती,
सिहनी के आने पर हिरणी, बच्चे छोड़ चली जाती,
संसार शरण नहीं देने वाला, माता संयम हितकारी ॥ ३
माता— आठ रम्भा, कनक कम्भा, हूबहू देवांगना,
बिलख रही है, तेरे बिन ये, चतुर तेरी अर्धांगना,
तेरा विरह सहूं किम बाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥ ४
जम्बू— मीठे-मीठे काम भोग ये, कंटक सम दुखदायी हैं,
नारी नागिन नरक की वारि, महा भयंकर दुखदायी है,
ब्रह्मचर्य सुख देने वाला, माता संयम सुखकारी ॥
माता— बहु तीक्ष्ण तलवार धार पर, चलना कोई खेल नहीं,
चने चबाना लोहे के जम्बू, बच्चों का कोई खेल नहीं,
आज्ञा किस विध देऊं बाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥
जम्बू— पूर्ण बने वैरागी पुरुष को, दुष्कर कोई काम नहीं,
सिंह सम बन जो संयम पाले, आनन्द का कोई पार नहीं
अनन्त शक्ति जगाने वाला, माता संयम सुखकारी ।
माता— केश लोच दुखदायी जम्बू, दुखदायी पैदल चलना,
बावीस परिषहों को सहकर, सिंह सम संयम में चलना
आज्ञा कैसे देऊं बाला, वैरागी जम्बू प्यारा
जम्बू— गर्म-गर्म शीशा पिलवाया, घोर दुःखों को पाया था
लक्कड़ सम करवत से चीरा, नरकों में कहराया था,
संयम दुःख छुड़ाने वाला, माता संयम सुखकारी

— बकरा बन कर कटा छुरी से, महावेदना पाया था,
मछली के भव में चूल्हे पर, बुरी तरह पकवाया था,
धर्म ही मुझे बचाने वाला माता संयम सुखकारी ॥१०॥

कर टुकड़े तीक्ष्ण तलवारों से, कुंभी में पक पाया था,
लोहा कूटे जिम मुझको कूटा, घाणी में भी पीला था,
पाप दुःखों को देने वाला, माता संयम सुखकारी ॥११॥

जप तप संयम कड़वी औषध, पण परमानन्द देता है,
लोच आदि तो दुःख नहीं माता, पाप कर्म दुःख देता है,
कर्म फन्द छुड़ाने वाला, माता संयम सुखकारी ॥१२॥

— बड़ा गजब वैराग्य तुम्हारा, संसार खरा खर खारा है,
बाल-ब्रह्मचारी वैरागी, अनुपम त्याग तुम्हारा है,
हम भी संयम लेंगे बाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥१३॥

— पंचसत और सतावीस, संयम जिनने धारा है,
अहो अहो ये भव्य अनगारा महिमा अपरम्पारा है,
तिरने और तिराने वाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥१४॥
सुव्रतधारी ज्ञान भण्डारी, गुरु आज्ञा के धारी थे,
उत्कृष्ट संयम पालन करके, मोक्ष गये उपकारी हैं,
बाबू गुण को गाने वाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥१५॥
संयम को हम सब धारेंगे, सिंह सम कदम बढ़ायेंगे,
जैन धर्म की विजय पताका, संयम पाल फहरायेंगे,
संयम हमें तिराने वाला, वैरागी जम्बू प्यारा ॥१६॥

संवाद— नेम-राजुल

ल — तोरण पर आ-मत छिटकाओ,
राजुल की अर्जी पे ध्यान लगाओ।
नेम पिया म्हारे हिवड़े में बसिया,
हिवड़े में बसिया, ने नेणा में बसिया।
तन मन धन बलिहारी साँवरिया,
नेम पिया म्हारे हिवड़ में बसिया ॥ टेर ॥

— राजुल यों मत शोक मनाओ,
मोह का पर्दा दूर हटाओ।

मुक्ति रा सुख म्हारे हिवड़े में वसिया,
हिवड़े में वसिया, ने नेणा में वसिया।
जन्म मरण रा सब दुःख टलिया,
मक्ति रा सुख म्हारे हिवड़े में वसिया।

राजुल— प्यारो संजम तो क्यूं वर बन आया,
आया तो अब क्यूं मन पलटाया, नेम पिया......॥ १

नेम— प्यारो संजम, पर मन मार आया,
थाने भी साथे लेवाने आया, मुक्ति रा......॥ २

राजल— नेम पिया मत छोड़ पधारो,
म्हारे हिया में चाले कटारो, नेम पिया......॥ ३

नेम— नौ भव की है प्रीत विचारो,
अन्त में निश्चय होत किनारो, मुक्ति रा.....॥ ४

राजल अलसी का फूल सी कोमल काया,
यौवन बसन्त मौसम विकसाया, नेम पिया...॥ ५

नेम— इन्द्र धनुष ज्यूं काया रो रंग है,
बसन्त मौसम के पतझड़ संग है, मुक्ति रा...॥ ६

राजुल—फूल सी देह और संयम शूली,
सोचो पिया, नहीं बात मामूली, नेम पिया...॥ ७

नेम भोली राजुल भोली बात करे है,
कायर नर कष्टा सूं डरे है, मुक्ति रा......॥ ८

राजुल—तुम बिन साजन जीवन सुनो,
खाणो रहणो पीणो सब ही अलूणो, नेम पिया. ॥ ९

नेम— छोड़ो राजुल यह सब संसारी,
चाले साथे संयम सुखकारी, मुक्ति रा ......॥१०

राजुल—यौवन में घर–बार वसाओ,
आवे बुढ़ापो तो जोग रमाओ, नेम पिया...॥११

नेम - काल री गति रो कुण पार पावे,
बुढ़ापो शायद आवे, न आवे, मुक्ति रा.......॥१२

राजुल- वंश रो अंश सपूत सलूणो,
गोद खिलाय बिन जीवन सूनो, नेम पिया ...॥१३

नेम— जीव अकेलो, नहीं कोई साथी,
स्वार्थ रा सब न्याति जाति, मुक्ति रा.......॥१४

राजुल — कुछ न सूझे पिया मार्ग दिखाओ,
राजुल को बेड़ो पार लगाओ, नेम पिया ....॥१५॥
नेम — द्रव्य भाव संयम धारण करलो,
राग द्वेष छोड़ो मुक्ति ने वरलो मुक्ति रा....॥१६॥
राजुल — धन्य-धन्य प्रभुजी मैं जाऊं बलिहारी,
डूबती नैया आप उबारी, मुक्ति रा ......॥१७॥
दोनों - नेम राजुल गिरनार पधारे
ले संयम, सब कारज सारे, मुक्ति रा.......॥१८॥

संवाद- छोटा एवं बड़ा भाई

छोटा भाई — म्हारा प्यारा मोटू जी, म्हारा प्यारा साथी जी ।
दया दान और तप करवाने चालां स्थानक जी ॥
बड़ा भाई — म्हारा प्यारा छोटू जी, अकल रा थारणे टोटा जी ।
धर्म-ध्यान में कांई धरियो है मौज करालाँ जी ॥
भोला भाई धर्म-कर्म का क्यों तू जाल बिछावे ।
यहां नहीं कोई, जो तेरी बातों में आजावे ॥
छोटा भाई — पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से यह नर भव है पाया ।
नरक और तिर्यञ्च गति में भटक-भटक कर आया ॥
बड़ा भाई — स्वर्ग-नर्क जो दिखते नहीं हैं, उन्हें सत्य तुम मानो ।
दीख रहे जो आँखों आगे झूठा उनको जानो ॥
छोटा० — क्यों धन पर इठलाता भाई धन का कौन ठिकाना ।
छोड़ यहीं पर धन और वैभव हम सबको है जाना ॥
मात-पिता दो दिन के साथी, स्वारथ का है नाता ।
मरने पर फिर तुम्हीं बताओ, कौन साथ में आता ॥
बड़ा० — माना जग है झूठा सारा पर जीवन है अनमोल ।
व्रत उपवास में तन क्यों देते हो तुम घोल ॥
छोटा० — ज्यों सोना अग्नि में तप कर निर्मल है हो जाता ।
त्यों तप की अग्नि में सारा कर्म मैल धुल जाता ॥
बड़ा० — तप की बात कही जो तुमने सत्य समझ में आई ।
पर यह दया-दान में कैसे मुक्ति है बतलाई ॥
छोटा० — हम जैसे हैं प्राण सभी के, सुख इच्छुक है प्राणी ।
परम अहिंसा परम धर्म है, यों कहते हैं ज्ञानी ॥

संवाद—सम्यक्त्वी एवं मिथ्यात्वी

म्यक्त्वी–अरे नर व्यर्थ ही में क्यों, जन्म अनमोल खोता है।
थ्यात्वी– करें क्या तुम कहो, कैसे यह जीवन सार्थक होता है।
म्यक्त्वी–तोड़ मिथ्यात्व की कारा, जरा समकित समझ प्यारे।
सत्य समकित मिटा देता, जन्म-जन्मान्तर गोता है॥ १॥
अरे नर व्यर्थ ही में क्यों जन्म अनमोल खोता है।
थ्यात्वी–समकित-समकित कहते हो, यह समकित कौनसी चिड़िया।
जरा तुम साफ समझा दो, यह कैसे पाप धोता है॥ २॥
करें क्या ....

म्यक्त्वी– सच्चे देव गुरु अरु धर्म, धारण करना समकित है।
यही समकित सदा जीवन में मुक्ति बीज बोता है।अरे.......

थ्यात्वी–क्या है देव गुरु अरु धर्म, प्रेम से समझा दो भैया।
कि जिनको पाए बिन जीव व्यर्थ ही जीवन खोता है॥
करें क्या ....

म्य०— राग अरु द्वेष अरि जीते, वही अरिहन्त पावन है।
देव उनको धारण करिये, मिटा देते भव गोता है॥ अरे.......

थ्या०– और गुरु कौन से माने, गुरु के रूप कई दीखते।
सत्य स्वरूप समझाओ, गरु जो ज्योति जोता है॥ करें.......

म्य०— कनक और कामिनी त्यागे, पांच महाव्रत सदा पाले।
श्वेत पट मुखपति, ओगा युक्त, तिरन तारण गुरु होता है। अरे...

थ्या०– धर्म अरु पंथ लाखों हैं कौन सच्चा व मिथ्या है।
सच्चा धर्म समझाओ, जो अन्तर मैल धोता है॥ करें......

म्य० — अहिंसा, सत्य, अरु अस्तेय, शुभ ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
धर्म अनेकान्त-मय पावन, पाप का ताप खोता है॥ अरे.......

मिथ्या०– धन्य है आपने सुन्दर बताई समकित की बातें।
आत्म स्वरूप भी क्या है, बिना उसके सब थोथा है॥ करें.......

म्य०— है चेतन अनुभव पूर्ण, ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता।
अनन्तज्ञान, दर्शन, सुख अरु शुभ वीर्य होता है

ाध्या०- तो फिर कर्म भी क्या हैं, जो संसार रचते हैं।
शक्ति का पुंज यह चेतन, कहो क्यों खाए गोता है ।।करें.......

म्य०- बुद्धि चेतन को, जड़ भंग ज्यों पथ भ्रष्ट करती है।
यों ही कर्म अचेतन, दु:खों के बीज बोता है ।। अरे०.......

ाध्या०- बड़ा ही सुन्दर समझाया, हुआ तत्त्व दिग्दर्शन।
समझ में आ गया कैसे यह जीवन पावन होता है ।। करें.......

नों- सदा जय सत्य, श्री जिन-धर्म, सम्यग् दर्शन की हो।
'कुमुद मुनि' भव-भव के बंधन सदा जिन धर्म खोता है।

संवाद— दीक्षा

हिन- छोटी-छोटी उमर थांरी, दीक्षा कांई धारो ओ।
उमर ढलिया सूं दीक्षा धारजो ।। १ ।।

ाई- काल रो भरोसो नहीं, सुण म्हारी बेन हो।
दीक्षा लेई ने कर्म तोड़ सूं ।। २ ।।

हिन- खावण-पिवण री बेला, आईज थारी भाई हो।
उमर ढलिया सूं दीक्षा धारजो ।। ३ ।।

ाई- खूब खाया, खूब पिया, धाप नहीं आई हो।
दीक्षा लेई ने कर्म तोड़ सूं ।। ४ ।।

हिन- ब्याव रचाओ भैया, भावज घर लाओ हो ।।उमर....।। ५ ।।
ाई- मोह कर्म सूं जीव, भव-भव भटके हो। दीक्षा.... ।। ६ ।।
हिन- नन्हो सो भतीजो म्हारे आंगण मांही रमसी हो।.उमर.।।७।।
ाई- छोटा-छोटा छोरा बच्छरा, स्वार्थी यो संसार हो ।।दीक्षा.।। ८ ।।
हिन- बेन सासरिया में वीरा री बाट जोवे हो ।। उमर....।। ९ ।।
ाई- छोटकियो वीरो थांरी आस सारी पूरे हो ।। दीक्षा.... ।।१०।।
हिन- धन-दौलत, मालिया, थांरे तांई पड़िया हो ।।उमर.... ।।११।।
ाई- हाट, हवेली, धन, साथे नहीं चाले हो ।। दीक्षा.... ।।१२।।
हिन- भरी है जवानी थांरी, खाण्डे धार चालनो ।। उमर.... ।।१३।।
ाई- कायर तो कांपे बेन, शूरा संयम धारे हो ।। दीक्षा.... ।।१४।।

संवाद—सम्यक्त्वी एवं मिथ्यात्वी

सम्यक्त्वी–अरे नर व्यर्थ ही में क्यों, जन्म अनमोल खोता है।
मिथ्यात्वी– करें क्या तुम कहो, कैसे यह जीवन सार्थक होता है।
सम्यक्त्वी–तोड़ मिथ्यात्व की कारा, जरा समकित समझ प्यारे।
सत्य समकित मिटा देता, जन्म-जन्मान्तर गोता है॥ १॥
अरे नर व्यर्थ ही में क्यों जन्म अनमोल खोता है।
मिथ्यात्वी–समकित-समकित कहते हो, यह समकित कौनसी चिड़िया।
जरा तुम साफ समझा दो, यह कैसे पाप धोता है॥ २॥
करें क्या ....

सम्यक्त्वी– सच्चे देव गुरु अरु धर्म, धारण करना समकित है।
यही समकित सदा जीवन में मुक्ति बीज बोता है।अरे.......

मिथ्यात्वी-क्या है देव गुरु अरु धर्म, प्रेम से समझा दो भैया।
कि जिनको पाए बिन जीव व्यर्थ ही जीवन खोता है॥
करें क्या ....

सम्य०— राग अरु द्वेष अरि जीते, वही अरिहन्त पावन है।
देव उनको धारण करिये, मिटा देते भव गोता है॥ अरे.......

मिथ्या०– और गुरु कौन से माने, गुरु के रूप कई दीखते।
सत्य स्वरूप समझाओ, गरु जो ज्योति जोता है॥ करें.......

सम्य०— कनक और कामिनी त्यागे, पांच महाव्रत सदा पाले।
श्वेत पट मुखपति, ओगा युक्त तिरन तारण गुरु होता है। अरे....

मिथ्या०– धर्म अरु पंथ लाखों हैं कौन सच्चा व मिथ्या है।
सच्चा धर्म समझाओ, जो अन्तर मैल धोता है॥ करें......

सम्य० — अहिंसा, सत्य, अरु अस्तेय, शुभ ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
धर्म अनेकान्त-मय पावन, पाप का ताप खोता है॥ अरे.......

मिथ्या०– धन्य है आपने सुन्दर बताई समकित की बातें।
आत्म स्वरूप भी क्या है, बिना उसके सब थोथा है॥ करें.......

०— है चेतन अनुभव पूर्ण, ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता।
अनन्तज्ञान, दर्शन, सुख अरु शुभ वीर्य होता है॥ अरे०.......

मिथ्या०– तो फिर कर्म भी क्या हैं, जो संसार रचते हैं।
शक्ति का पुंज यह चेतन, कहो क्यों खाए गोता है ।।करें.......

सम्य०– बुद्धि चेतन को, जड़ भंग ज्यों पथ भ्रष्ट करती है।
यों ही कर्म अचेतन, दुःखों के बीज बोता है ।। अरे०.......

मिथ्या०– बड़ा ही सुन्दर समझाया, हुआ तत्त्व दिग्दर्शन।
समझ में आ गया कैसे यह जीवन पावन होता है ।। करें.......

दोनों– सदा जय सत्य, श्री जिन–धर्म, सम्यग् दर्शन की हो।
'कुमुद मुनि' भव–भव के बंधन सदा जिन धर्म खोता है।

संवाद— दीक्षा

बहिन— छोटी–छोटी उमर थांरी, दीक्षा कांई धारो ओ।
उमर ढलिया सूं दीक्षा धारजो ।। १ ।।

भाई— काल रो भरोसो नहीं, सुण म्हारी बेन हो।
दीक्षा लेई ने कर्म तोड़ सूं ।। २ ।।

बहिन— खावण–पिवण री बेला, आईज थारी भाई हो।
उमर ढलिया सूं दीक्षा धारजो ।। ३ ।।

भाई— खूब खाया, खूब पिया. धाप नहीं आई हो।
दीक्षा लेई ने कर्म तोड़ सूं ।। ४ ।।

बहिन— ब्याव रचाओ भैया, भावज घर लाओ हो ।।उमर.....।। ५ ।।

भाई— मोह कर्म सूं जीव, भव–भव भटके हो। दीक्षा.... ।। ६ ।।

बहिन—नन्हो सो भतीजो म्हारे आंगण मांही रमसी हो ।।उमर..।।७।।

भाई—छोटा–छोटा छोरा बच्छरा, स्वार्थी यो संसार हो ।।दीक्षा.।। ८ ।।

बहिन— वेन सासरिया में वीरा री वाट जोवे हो ।। उमर.....।। ९ ।।

भाई – छोटकियो वीरो थांरी आस सारी पूरे हो ।। दीक्षा.... ।।१०।।

बहिन – धन–दौलत, मालिया, थांरे तांई पड़िया हो ।।उमर.... ।।११।।

भाई – हाट, हवेली, धन, साथे नहीं चाले हो ।। दीक्षा.... ।।१२।।

बहिन – भरी है जवानी थांरी, खाण्डे धार चालनो ।। उमर.... ।।१३।।

भाई— कायर तो कांपे वेन, शूरा संयम धारे हो ।। दीक्षा.... ।।१४।।

बहिन— घर मांहो रै वी वीरा, श्रावक व्रत पाल जो ।।उमर···· ।।१५।।

भाई—अधूरी तो धर्म करणी, श्रावक पणे में जाणू हो ।।दीक्षा····।।१६।।

बहिन— रुको–रुको वीरा, नहीं तो मैं भी लेसूं हो दीक्षा ।
बेन भाई री जोड़ी चमक सी ।। दीक्षा ··· ।।१७।।

भाई— अच्छी–अच्छी बात बेन म्हारे हिये लाग़ी हो ।
थे भी चालो, संयम लेवसां ।। दीक्षा ··· ।।१८।।

दोनों— सिंह पणे संयम लेसी, सिंह पणे पालसी ।
जिन शासन चमकावसी ।। दीक्षा···· ।।१९।।

चारित्र सुहावणो धारे, नव कोटी हो ।
भव–भव रा बन्धन काटसां, अजर–अमर पद पावसी ।
दीक्षा लेई ने कर्म तोड़ सूं ।।२०।।

वन्दन – मन्त्र

हे सद्‌गुरु अब चरणों में शीश नमायें,
जय क्षमा श्रमण! हम सब अपराध खमावें ॥ध्रुव॥
निर-बाध चल रही क्या संयम की यात्रा ?'
क्या आत्म-भान की बढ़ती रहती मात्रा ?'
हम भी स्वरूप में अपना हृदय रमायें ॥
जय क्षमा श्रमण० ॥ १ ॥

श्री चरण–शरण में प्रतिक्रमण करना है।
मन वचन काय का सारा मल हरना है ॥
कल्याण मार्ग में श्रद्धा शुद्ध जमायें ॥
जय क्षमा श्रमण० ॥ २ ॥

यह वीतराग का धर्म उदार हमारा,
जो सब जीवों का एक समान सहारा।
इसके पालन में तनिक क समय गमायें,
जय क्षमा श्रमण० ॥ ३ ॥

हैं आप महाव्रत समिति–गुप्ति के धारी,
सन्तुष्ट जितेन्द्रिय शुद्धाचार बिचारी।
इन परम पवित्र गुणों में आप समायें,
जय क्षमा श्रमण० ॥ ४ ॥

हे क्रोध मान छल लोभ सदा दुखदाई,
इनके वश में हो कर्म जाल फैलाई,
नर–जन्म पाय अब सच्चा अर्थ कमायें,
जय क्षमा श्रमण० ॥ ५ ॥

हमने भव–भव में जीव अनेक सताये,
धर्मार्ति क्रान्त मिथ्या उपचार लगाये,
निज निन्दा कर अब विषवत विषय घमाये,
जय क्षमा श्रमण० ॥ ६ ॥

पर भावों में रस ले निज भाव भुलाया;
ममता में सूरज–चन्द चित्त भरमाया।
अब अचल जीव को भव-भव नहीं भमायें,
जय क्षमा श्रमण० ॥ ७ ॥

हे सद्‌गुरु अब चरणों में शीश नमायें,
जय क्षमा श्रमण हम सब अपराध खमायें ॥

अन्दर की छबी

छबी अन्दर की देखी जिसने, वह फिर बाहिर को क्या देखे ।
अक्षय पर आँखें हैं जिसकी वह क्षण भगुंर को क्या देखे ।।
छबी अच्छी लगती बाहर की जब तक अन्दर की नहीं देखी ।
पर की अच्छी लगती जब तक, तब तक निज घर की नहीं देखी।।
जिसने चिन्मय घर को देखा है, वह पत्थर घर को क्या देखे ।
घर–घर से चीजें मांग–माँग, तू कब तक काम चलायेगा ।
अपनी चीजों से तुष्ट हुआ, वह कहां मांगने जायेगा ।
कज कोरा खिले जिस मधुबन में वह फिर मधुबन में क्या देखे ।।
कार्यों पर मोहित होता क्यूं, चन्दन कारण पहचान जरा ।
तैयार वृक्ष खुद ही होंगे, बीजों का कर विज्ञान जरा ।
पद्मन्दह को देखा जिसने, वह छिल्लर सर को क्या देखे ।।

प्रार्थना

दीनबन्धु ! ज्ञान सूरज का उजाला कीजिये ।
दूर यह अज्ञान का सारा अन्धेरा कीजिये ।। टेर ।।
छा रही काली घटायें पाप की चारों तरफ ।
धर्म की वायु से कलिमल दूर सारा कीजिये ।। १ ।।
देश को बरबाद करती है, अविद्या पापिनी ।
दुःखहारी मूल से, संहार इसका कीजिये ।। २ ।।
रूढ़ियों को ही धर्म बस, मानते हैं आज–कल ।
नाश जल्दी अब अमर इस मान्यता का कीजिये ।। ३ ।।

"नाना गुरु तुम शान हो"

(तर्ज— बच्चों तुम तकदीर हो)

नाना गुरु तुम शान हो, अष्ठम पाट महान की ।
श्रीलाल वरदान की, गणेश के अरमान की ।। नाना. ।। टेर ।।
समता रस बरसाने वाले, शांत सुधाकर निर्झर हो ।
वचनों में माधुर्य मनोहर मानो पियूष के घट हो ।
तुम ज्योति – तुम ज्योति हो, नव पंचम युग में ।
अष्टम पाट महान की ।। नाना० ।। १ ।।

तुम ब्रह्म तेज के आकार हो, तुम क्षमाशील पद्माकर हो।
मेरु सम चरित्र तेज है, ज्ञान-पुञ्ज नव भास्कर हो।
तुम नाना-तुम नाना वादों के पथ - दर्शक नानादर्श।
महान की ।। नाना गुरु० ।। २ ।।

कन्दर्प सर्प को दूर हटाने में, तुम हो द्विजी धारी।
भारत भू पर फैल रहा है इसीलिए तव यश भारी।
हे योग - हे योगी गायें गाथा कहां तेरी इस
मधु शान की ।। नाना गुरु० ।। ३ ।।

मोडीलाल जी तात आपके, रत्न कुक्षी मां शृङ्गारी।
जीवन के कण-कण में भर दिया, मानों जिसने मधुवारी।
हम तेरी-हम तेरी गुण गरिमा का प्रभुवर गान नहीं।
सकते गान जी ।। नाना गुरु० ।। ४ ।।

आये हैं हम शरण तुम्हारे, जीवन सफल बना देना।
संयम का सम्बल दे हमको, भव से पार लगा देना।
यह शान्ति - यह शान्ति रहे चरणाम्बु प्यासा।
कर दो इसे निहाल जी ।। नाना गुरु० ।। ५ ।।

अब मेरो समकित सावन आयो

अव मेरो समकित सावन आयो ।। टेर ।।
वीति कुरीति मिथ्या मति-ग्रीष्म पावस सहज सुहायो।
अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरती घटाघन छायो।
वोले विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ।। १ ।।
गुरु धुनि गरज सुनत सुख उपजे, मोर सुमन विहसायो।
साधक भाव अंकुर उठें वहु जित नित हरस सवायो ।। २ ।।
भूल धूल कहि मूल न सूझत, समरस जल भर लायो।
भूधर को निकसे अब वाहर, निज निचुर घर पायो ।। ३ ।।

नाना पूज्यवर के गुण गाले

नाना पूज्यवर के गुण गाले हृदय कमल में इन्हें विठाले,
जीवन के कण-कण को सजाले गुरु गुण गाले रे-ओ गुरु गुण.।
इनकी वाणी है गम्भीर, गरजे शेर सम वनवीर।
वरसे ज्ञान का मधु नीर, गुरु गुण गाले रे-ओ० ।। १ ।।

काटी वासना की जाल, धारा ब्रह्मचर्य विशाल ।
इनका तेज है कमाल, गुरु गुण गाले रे—ओ० ॥ २ ॥

नाना नाम है गुण धाम, जिसमें छिपा विश्व महान् ।
यह है अनेकान्त की शान, गुरु गुण गाले रे—ओ० ॥ ३ ॥

मोडीलालजी के जनक दूलारे, शृंगार मां के नयन सितारे,
"शान्ति" रस बरसाने वाले, गुरु गुण गाले रे—ओ० ॥ ४ ॥

हम सब आये शरण तुम्हारे, अब तो करदो भव से किनारे,
मेरी नैया के रखवारे, गुरु गुण गाले रे—ओ० ॥ ५ ॥

श्री मुनि सुव्रत स्वामी जी

मुनि सुव्रत मन मोयु मारो शरण हवे छे तमारो रे,
प्रातः समय हूं ज्यांरे जागूं नाम समरूं छे तमारो रे,
आप भरोसो आ जगमा छे, तारो तो घणो सारो रे ॥मुनि.॥ १ ॥

चूं चूं चूं चूं चिड़िया बोले, भजन करे छे तमारो रे,
मूर्ख मनुष्य प्रमोद पड़ियो रह्यो नाम जपे नहीं तारो रे,
शोरथता बहु शोर सुनि हूं कोई हंसे कोई रोवे न्यारा,
सुखिया सोवे दुखिया रोवे, अकल गति ये विचारो रे ॥ २ ॥

खलक खेल बन्यो नाटक नो, कुटुम्ब कबोलो सारो रे,
ज्यां सुधी स्वार्थ त्यां सुधी सर्व, अन्त समय छे न्यारो रे,
माया जाल तणी जोई जाणी, जगत लगे सोई खारो रे,
'मन' सुखे इम जाणी प्रभुजी शरण गृहिये थारो रे ॥ ३ ॥

गुरु – वन्दना

(तर्ज — पितु मातु सहायक स्वामी सखा····)

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, सादर शीश नवाते हम,
तन – मन अर्पण कर चरणों में श्रद्धा के पुष्प चढ़ाते हम ॥ टेर ॥

तुम शृंगार मां के जाये हो, और मोडीलाल कुल आये हो,
जन-जन के मन को भाये हो, श्रीसंघ के नैना समाये हो ।
प्रभु दर्शन देकर पार करो, चरणों में शीश नमाते हम ॥ १ ॥

तुम पूज्य गणेशो के पट्टधर, जन-मानस के तुम नायक हो,

तुम शान्ति क्रांति के दाता हो, प्रभु पतितों के उद्धारक हो।
ओ वीर प्रभु के सेनानी, चरणों में शीश नमाते हम ॥ २ ॥

तुम अहिंसा के प्रचारक हो, और सत्यव्रत के धारक हो,
तुम अस्तेय-व्रत पलवाते हो, और ब्रह्मचर्य के रक्षक हो।
प्रभु भक्त वत्सल दया करो, चरणों में शीश नमाते हम ॥ ३ ॥

तुम युग-प्रवर्तक युग संचालक और युगाधार युग नायक हो,
तुम युग रक्षक हो श्रमण श्रेष्ठ, आचार पलावन हारे हो।
प्रभु "मदन" शरण में आने को चरणों में शीश झुकाता है। ४ ॥

पूज्य श्री जी के प्रति

जो सकल संघ शिरोमणि, जिन जग के उज्ज्वल भानु हैं।
लिता जन्म दांता ग्राम में, जो श्रमण वर्ग के प्राण हैं ॥ १ ॥

जिनके अगम्य ज्ञान से, दिव्य दमकता भाल है।
गादी हुक्म की पाट अष्टम, पूज्य श्री नाना लाल हैं ॥ २ ॥

बाल-ब्रह्मचारी यतीश्वर, गुण छत्तीस के धार हैं।
वाणी मनोहर धैर्य-धारी, सौम्य रूप सुखकार हैं ॥ ३ ॥

तत्त्व-वेत्ता हेतु लक्षण, ज्ञाता नय प्रमाण हैं।
इन वर्तमान आचार्य को, मेरे अनेक प्रणाम हैं ॥ ४ ॥

आचार्य प्रवर तुम्हें वन्दन हमारा है,
इन चरणों में शत नमन हमारा है।
नई पीढ़ियों के लिये आप ध्रुव तारा हैं,
आपकी तरफ चला कारवां हमारा है ॥

महामन्त्र - महिमा

श्री चवदह पूर्व को सार, जपो नवकार, को नित्य उठ ध्यान,
एकचित से ध्यान लगाना ॥ टेर ॥

नमो अरिहन्ताणं जयकारी है, और चौंतीस अतिशय धारी,
श्री सिद्धाणं से सिद्ध हो कारज पाना ॥ १ ॥

नमो आयरियाणं विराज रहे, जिन शासन के सिरताज रहे;
नमो उवज्झायाणं के गुण को नित उठ गाना ॥ २ ॥

नमो लोए सव्व साहूणं है भारी, सूरत नित लागे मोहनगारी,
इन पंच पदों के चरणों शीश झुकाना ।। ३ ।।

नवकार मन्त्र में है शक्ति शुद्ध मन से जो नर करे भक्ति,
तो आवागमन से वेड़ा पार हो जाना ।। ४ ।।

सूली का सिंहासन बना दिया और कुष्टादिक को हटा दिया,
हाँ सर्प के बदले पुष्पहार बन जाना ।। ५ ।।

नवकार मन्त्र का ध्यान धरो, और आतम का उत्थान करो,
कहे "मोहन मुनि" ये भजन भदेसर गाना ।। ६ ।।

अब मेरा समकित रवि मुस्काया

अब मेरा समकित रवि मुस्काया ।
आतम गगन की प्राचि दिशा में, ज्ञानालोक भराया ।
बीत गई मिथ्यामति रजनी, भागा अज्ञान अन्धेरा ।
सम्यग्-दर्शन लाली छिटकी, ज्ञान प्रभासंग लाया ।।अब…।।

डाल-डाल पर पक्ष चहके, चिड़िया गाती प्रभाती ।
आत्मिक अनुभव मुखर हुआ है, अन्तर गीत सुहाया ।
प्रकृति वृत्ति का अणु-अणु हर्षित सुमति कली मुस्काती ।
मन मधुकर गंजारव करता, प्रभु पद पंकज पाया ।।अब…।।
उदयाचल के उत्तुंग शिखर पर, रूप अनूप लखाया ।
आतम प्रभु के दर्शन पाकर, मनु तनु धन्य बनाया ।
अगम अगोचर अजर-अमर मैं अक्षय सुख की निधि हूं ।
अनन्त "शांति" है अपने भीतर, आज उसे लख पाया ।।अब…।।

श्री नानेश गुरुनत्वा स्मृत्वा पंच परमेष्ठिकम् ।
सद्धर्मबोध शिक्षायें, धर्म देशना दीयते ।।

योऽस्ति ज्ञानेव महार्णवे रूपः ।
यो ऽस्तिदर्शनेन विमल स्वरूपः ।
तं देव तुल्यं (नाना) नाम धेयं ।
चरणार वृन्दौ शिर सा नमामि ।

संस्कृत

खण्ड

अष्टाचार्य-गुणाष्टकम्

१ आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म. सा.

शास्त्राणां विधि पूर्वकं मुनिजनाः कुर्वन्ति नो स्वक्रियाम्,
ज्ञात्वा, जीवन-सर्जने परिषहं संसह्य शास्त्रे रतः ।
तत्वानां मथनेन सर्व-सुखदं वोधं नरेभ्यो दधौ,
ज्ञानेना चरणेन-योग-निरतो-वन्दे च हुक्मि-गुरुम् ।।

हिन्दी काव्य—

शास्त्रों की विधि भाव से मुनिजनों की पालना थी नहीं,
आत्मा के सुविकास में परिषहों को साम्यता से सहा ।
शास्त्राभ्यास विमर्श से मधु-सुधा सुज्ञान पूरा दिया,
हुक्मी-भानु सुवोध आचरण से दीपे धरा में सदा ।।

भावार्थ— मुनिजन शास्त्रों की विधि के अनुसार अपनी क्रियाएं (आचरण) नहीं करते थे । ऐसा जानकर जीवन निर्माण में परिषहों को सहनकर, शास्त्र पठन में रत हुवे और तत्वों के अभ्यास से प्राणियों को सुखद उपदेश फरमाया । इस प्रकार ज्ञान और आचरण से योग में निरत हुक्मी गुरुवर को नमस्कार करते हैं ।

२ आचार्य श्री शिवलाल जी म. सा.

वैषम्येण चराचरं सविपदं दृष्ट्वा मनो नो रतम्,
पापात् दूरगतः सराग निलयं हित्वा व्यधात् मुण्डनम् ।
आचार्यश्च गुणान्वितः सुतपसा संसार मोहं जहा-
नोजं मकरालये च विमलो वन्दे शिवं कोविदम् ।।

हिन्दी काव्य—

संसार स्थिति का विचार करके आसक्ति से दूर हो,
पापों से सुविरक्त हो, विषमता को त्याग के चित्त से।
हो आचार्य सुधी – सुधीर तप से निष्पाप हो, भाव से,
ज्यों इंदीवर सिंधु में शिव-गणी दीपे सुधी लोक में ।।

भावार्थ – चराचर लोक को विषमता से दुःखी देखकर संसार में जिनका मन लीन नहीं हुवा । पाप से दूर हो, तप के द्वारा राज समूह का नाश कर मुण्डन किया तथा आचार्य के गुणोंयुक्त सु' सम्यक् ज्ञान सहित (३३ वर्ष पर्यन्त एकान्तर की) पारणा रूप तपश्चर्या के द्वारा संसार मोह का नाश किया । इस प्रकार समुद्र में कमल के समान विचक्षण शिवाचार्य को नमस्कार करते हैं ।

३ आचार्य श्री उदयसागर जी म. सा.

दुखानां शमनादमुं गणि वरं वैराग्य भावैर्युतम्,
भव्यानां हृदयाङ्गणात् शशिसमं मिथ्यातमो नाशकम् ।
शान्तं – दान्त – विशुद्ध – भाव – भरितं रत्नत्रयाराधक–
आचार्योदय – सागरं गुण निधिं वन्दामहे सादरम् ।।

हिन्दी काव्य—

दुःखों का कर नाश संयम व्रती वैराग्य संपृक्त थे,
भव्यों के हृदयान्तरिक्ष पथ से मिथ्यातमो को हरा ।
जो संशुद्ध – विशुद्ध भाव युत थे, रत्नत्रयाराधक–
आचार्योदय सागराख्य गुरु को है वन्दना प्रेम से ।।

भावार्थ – ये गणिवर दुःखों का शमन करने वाले, वैराग्य भाग से युक्त हुए जो रत्नत्रय के आराधक शान्त–दान्त और विशुद्ध भाव से युक्त थे तथा शशि (चन्द्रमा) के समान होकर भव्यों के हृदयाङ्गण से मिथ्यात्व के अन्धकार का नाश किया । ऐसे गुणों के निधि और मनुष्यों से पूजित आचार्य श्री उदयसागर जी महाराज को वन्दन करते हैं ।

❀❀

४ आचार्य श्री चौथमल जी म. सा.

तत्वानां परिशीलने प्रति पलं यत्नेन नित्यं रतः;
जीवानां परिरक्षणे भगवतो वाण्याः प्रचारं दधौ ।
गांभीर्येण महार्णवं बहुजनैः पूज्यं च संयामकं,
तीर्थानां सुविकासकं जन – जनेष्वाचार्यं चौथं नुमः ॥

हिन्दी काव्य –

तत्त्वों के सुविचार से सुयत हो सोचा सदा बुद्धि से,
तीर्थेश ध्वनि को किया प्रकट यों रक्षा हुई सत्व की ।
गम्भीराब्धि समान सर्वजन के संयामक श्रेष्ठ थे,
जो थे तीर्थ विकास–कारक महान श्री चौथ को वन्दना ॥

भावार्थ— जो दमनशील, तत्त्वों के परिशीलन में यत्न से नित्यरत हुवे तथा जीवों के परिपालन में भगवान की वाणी का प्रचार किया । गम्भीरता से महार्णव के तुल्य बहुजनों से पूज्य, संयमी एवं साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका रूप चतुर्विध संघ के सुविकासक, आचार्य श्री चौथमल जी म. सा. को नमस्कार करते हैं ।

५ आचार्य श्री श्रीलाल जी म. सा.

मोहासक्त नराहि भौतिक – सुखे सत्यं लभन्ते ऽसुखम्,
तत् दृष्ट्वापरिवार जन्य – वनिता सम्बन्धकं त्रोटितम् ।
सत्कर्मावरणं सुबोध तपसा जीवात् क्षिपन्तं सदा,
सत्याचौर्य महाव्रतैश्च लसितं श्रीलाल सुरिं नुमः ॥

हिन्दी काव्य –

रागों में रत जीव निश्चय सदा पाता महा–दुःख को,
ऐसा जान शुभाङ्गना गृहजनों से स्नेह को तोड़ के ।
कर्मो के पट को सुबोध तप से फेंका सभी जीव से,
सत्याचौर्य–यमादि से चमकते श्रीलाल जी को नमें ॥

भावार्थ – मोह से आसक्त मनुष्य निश्चय ही भौतिक में दुःख को ही प्राप्त करता है । जिन्हें देखकर परिवार एवं

जन्य-स्नेह को तोड़ दिया तथा कर्म के आवरण को सुज्ञान तपश्चर्या द्वारा दूर करते हुवे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह रूप महाव्रतों से सुशोभित श्री श्रीलाल सूरीश्वर को नमस्कार करते हैं।

६ आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा.

ब्रह्माण्डे धन धान्य वैभव युते श्री थांदला ग्राम के,
माणिक्येषु च हीरकं द्युतियुतं ज्योतिर्धरं साधुषु।
शास्त्रस्याध्ययनं मनोवचनकै योगेन संपादितम्,
तं सर्वाच्र्य – जवाहरं – यतिवरं भावेन भक्तया नुमः ॥

हिन्दी काव्य–

ग्रामों में शुभ थांदला निगम में प्राणी सभी थे सुखी,
हीरों में द्युतियुक्त हीर चमके ज्योतिर्धर श्रेष्ठ ही।
शास्त्रों का सुविचार देह वच से सम्पन्न था योग से;
भावों से भर के जवाहर वाणी को प्रेम से वन्दना ॥

भावार्थ– संसार में प्रसिद्ध धन – धान्य से परिपूर्ण थांदला ग्राम में साधुओं में ज्योतिर्धर माणिक्यों में चमकते हुए हीरे जिन्होंने शास्त्रों के अध्ययन को मन, वचन, काया रूप योग से सम्पादित किया। ऐसे सभी के अर्चनीय यतिवर जवाहर गणी को भक्ति भाव से नमस्कार करते हैं।

७ आचार्य श्री गणेशलाल जी म. सा.

गार्हस्थ्ये च महातमो विलसितं शीर्षे सदा भ्राम्यति,
ज्ञात्वा – वीर – जवाहरेण विरतं संपादितं जीवनम्।
स्वाध्याये निरतं प्रशस्त मनसा मग्नं समाधौ ध्रुवम्,
भाषायस्य सुकोमला सुललिता वन्दे गणेशं गुरुम् ॥

हिन्दी काव्य –

जीवों के मन में सदा विकच है अज्ञान का चक्र ही,
रागों से मन को जवाहर-गणी से बोध पा छोड़ के।
शास्त्रों में रत हो प्रशस्त मन से पाये समाधि ध्रुवं,
भाषा है, जिसकी सुकोमल सुधा वन्दे गणेश प्रभु ॥

भावार्थ – गृहस्थ जीवन में फैला हुआ अज्ञान रूप घनांधकार मस्तिष्क में सदा घूमता है । ऐसा जानकर कषाय रूपी शत्रुओं का मर्दन करने में वीर जवाहराचार्य से बोध पाकर जीवन को विरक्त बनाया । ऐसे प्रशस्त मन को स्वाध्याय में निरत किये हुवे, निश्चित समाधि में लीन सुन्दर-ललित भाषा के प्रयोक्ता श्री गणेश-गणिवर को प्रसन्नता से नमस्कार करते हैं ।

८ आचार्य श्री नानालाल जी म. सा.

संसारे संरतां कुधर्म मननेनोन्मत्त मातंगवत्,
जीवानां हृदिभावितं मदमपा – चक्रे सुरूपेण च ।
धर्मस्यापि समस्त जीवनिवहे येन प्रचारः कृतः,
पापानां विनिवार कं तमुदितं नानेष देवं नुमः ॥

हिन्दी काव्य—

उन्मत्त द्विप के समान नर ही संसार में है बहु,
विक्षेपोयुत भूरि पाशविकता से दूर पूरा किया ।
धर्मों का करके प्रचार जग में सन्तोष भू को दिया,
पापों का कर नाश निस्पृह गणी नानेश को वन्दना ॥

भावार्थ— कुधर्म मनन से उन्मत्त हाथी के समान विचरते हुए जीवों के हृदय में भावित मद को सम्यक्तया दूर किया तथा समस्त प्राणी वर्ग में धर्म का पूर्ण प्रचार किया । इस प्रकार पापों का निवारण करने वाले उदय को प्राप्त उन नानेश देव को वन्दन करते हैं ।

प्रशस्ति—

इत्थं भक्त्या गुणानां हृदय कमलके शान्त भावं सुखेन,
संरक्ष्यार्य प्रभावं सकल गुण – गणाद्यर्चनं यः करोति ।
ज्ञान श्रद्धा चरित्रं त्रिषु मणि निलयं प्राप्यमुक्तेः सुमार्गं,
निर्बाधं तस्य लब्धं भवति सुखमयं साधु ज्ञानेन्द्र भावः ॥

हिन्दी काव्य—

ऐसी पूजा गुणों से हृदय कमल में भग नी ...
आचार्यों की प्रभा को सफल गुणों को न ...

ज्ञान श्रद्धा क्रिया ही शुभ मणित्रय को जान निर्बाध मुक्ति,
वे ही पाते खुशी से निरुपम सुख को 'ज्ञान' के भाव ये ही ।।

भावार्थ — इस प्रकार जो आचार्यों के गुणों के शांत भाव एवं प्रभाव को सुख से हृदय कमल में स्थापित करके सम्पूर्ण गुण-गणों की अर्चना (भक्ति) करता है । वही ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप त्रिरत्न को प्राप्त करके निर्बाध मुक्ति पथ को प्राप्त करता है । यही साधु "ज्ञानेन्द्र" का भाव है ।

अस्माकं त्रिदशो – रिहन्सु विरतो रागेन द्वेषेन च,
अस्माकं महिमण्डले मुनिजनाः स्वाचार युक्तो गुरुः ।
अस्माकं शुचियुक्त शास्त्र-महिमा दीप्तः धरा प्रान्त रे,
अस्माकं सुदया ऽ परिग्रह युतो धर्मोपदेशो मुदा ।।

भावार्थ — राग-द्वेष से रहित ही हमारे देव हैं । महिमण्डल में विचरण करने वाले आगम प्रणीत आचार से युक्त ही हमारे गुरु हैं । हमारे आगम यथार्थवाद गुणयुक्त और पृथ्वी तल पर दीप्त हैं । अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह-युक्त ही हमारा धर्म है ।

नानेश – गुणाष्टकम्

सम्यग् विनेता मुनि मण्डलस्य ।
ध्याता विशिष्ट स्सततं क्रियावान् ।।
रत्नत्र्योद् भाषित रम्य शीलो ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ।। १ ।।

ज्ञानेन पूर्णं तपसा च दीप्तं ।
शीलेन भान्तं यशसा सुवृद्धम् ।।
क्षान्त्या द्युवेतं मुनिमद्वितीय ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ।। २ ।।

तेजीस्वनीं लोचन लोभनीयाम् ।
चन्द्रोज्वला माकृती माननस्य ।।
दृष्ट्वा वुधा, रम्य गिरास्तुवन्ति ।।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ।। ३ ।।

विश्वव्यापिनी कर्णं सुलोभनीया ।
पापौघ हन्त्री विमला च दिव्या ॥
वाचा – यदीया जनमोद कर्तृ ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ॥ ४ ॥

तंभिक्षु मुख्यं तपसा विभान्तं ।
ज्ञान प्रदीप जगदर्चनीयं ॥
कल्याण रूपं विबुधं वरेण्यं ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ॥ ५ ॥

शास्त्राण्य धीतान्य खिलानियेन ।
अंगान्युपंगानि च संश्रुतानि ॥
मूलानि छेदान्यपर श्रुतानि ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ॥ ६ ॥

विद्यासु धर्म्यासु यशस्करीषु ।
विद्वान्वरिष्ठो भुवने त्वमेव ॥
मान्यम्मुनीशं यमिनां वरेण्यम् ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ॥ ७ ॥

कीर्तिस्त्वदीया तु मुनीन्द्र नाथ ।
सर्वायं भूमौ प्रथितास्ति शुभ्रा ॥
यामेव विश्रुत्य सुरास्तुवन्ति ।
नानाभिधंतं गणिनं प्रणौमि ॥ ८ ॥

प्रशस्ति पाठ–आकारि भक्त्या मुनि किंकरेण ।
जिज्ञासुनेदं गुण कीर्तनन्ते ॥
शान्त्याख्य लालेन पदाब्जयोस्ते ।
श्लोकस्य पुष्पाणि समर्पितानि ॥ ९ ॥

❀ ❀ ❀

सौम्यं मनोहर विशाल पवित्र गात्रम् ।
ऊर्ज्जस्वलं हरित चन्द्र मसोऽपि कान्तिम् ॥
योगीन्द्रनाथ मिवयस्य विभाति रूपम् ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ १ ॥
उद्दाम मोह करिराज कठोर सिंहम् ।
कामादि वर्ग दलने नितरां प्रवीरम् ॥

मिथ्यात्व मोह तमसो हरणोंऽशुमालीम् ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ २ ॥

मन्येत्वमेव भुवने किलदेव देवः ।
सद्धर्म देशक वरो मतियान् वरिष्ठ ॥
संविन्नि हन्ति खलुयस्य मदान्ध कारम् ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ ३ ॥

सोम्याद् विधोरिवच कान्त मुखान्निसृत्य ।
भाषा प्रणाशयति नुर्जड़तां त्वादीया ॥
सम्यक् स्तुवन्ति प्रतिवादि जना जिताश्च ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ ४ ॥

विद्या विवाद सहिता प्रतिपक्ष दक्षा ।
स्तब्धा भवन्ति भवतां पटुतां विलोक्य ॥
श्रुत्वा गुणांश्च ननु ते विबुधा स्तुवन्ति ।
नानेश इत्यभिहित गणिनं प्रणौमि ॥ ५ ॥

कर्म प्रवाह हरणे सततं सुवीरा ।
सिद्धान्त वाच्य परिपूर्ण गुणान्विता या ॥
त्वय्येव भाति विरतिर्विकला कलंका ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ ६ ॥

त्वामेव शुद्ध मति–मान्महितश्च भक्त्या ।
ध्यात्वा जदाति सकलं कृत पूर्व पापम् ॥
प्राप्नोति धौव्य मचलं धुहि पदंच शीलम् ।
नानेश इत्यभिहितं गणिनं प्रणौमि ॥ ७ ॥

तुभ्यं नमो निरतिचार चरित्र राशे ।
तुभ्यं नमो विगत दोष विशिष्ट योगीन् ॥
तुभ्यं नमो मुनि गणेषु गणि प्रविर ।
तुभ्यं नमोऽवनि तले विदुषां वरेण्य ॥ ८ ॥

प्रशस्ति पाठ–नाना गुणान्वितमिदंहि गुणाष्टकञ्च ।
अल्प श्रुतेन सरलै, रुचिरै सुशब्दै ।
शान्त्याख्यलाल, मुनिना रचितं सुभक्त्या ।
यः संपठेत् कित लभेत सुखं वरिष्ठम् ॥ ९ ॥
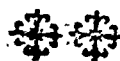
नवकार स्तवन

नम्रामरेश्वर – किरीट – निविष्टशोरण,
रत्नप्रभा – पटल पाटली ताङ्घ्रिपीठाः ।
तीर्थेश्वराः शिवपुरी – पथसार्थ वाहा,
निः शेषवस्तु परमार्थ विदो जयन्ति ॥ १ ॥
लोकाग्रभाग भवना भवभीति – मुक्ता,
ज्ञानावलोकित – समस्त पदार्थसार्थाः ।
स्वाभाविक स्थिरविशिष्ट सुखैः समृद्धाः,
सिद्धा विलीनघन कर्ममला जयन्ति ॥ २ ॥
आचार पंचक समाचरण–प्रवीणाः,
सर्वज्ञ शासन – धुरैकधुरंधरा ये ।
ते सूरयो दमितदुर्दमवादि वृन्दा,
विश्वोपकार – करणप्रवणा जयन्ति ॥ ३ ॥
सूत्रं यतीनति पटु–स्फुट–युक्तियुक्त,
युक्ति प्रमाण–नयभंगगमैर्ग भीरम् ।
ये पाठयन्ति वरसूरिपदस्य योग्यास्,
ते वाचकाश्चतुर चारू–गिरो जयन्ति ॥ ४ ॥
सिद्धांगनासुखसमागम – बद्धवाच्छाः,
संसार – सागर समुत्तरणैक–चित्ताः ।
ज्ञानादिभूषण – विभूषित – देहभागा,
रागादिधातरतयो यतयो जयन्ति ॥ ५ ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ नमः पार्श्वनाथाम् विश्व–चिन्ता मणीयते ।
ह्रीं धरणेन्द्र वैराटचा – पद्मादेवी – युतायते ॥ १ ॥
शान्ति – दृष्टि – महापुष्टि धृतिकीर्तिविधायिने ।
ॐ ह्रीं द्विड्व्याला वेताला–सर्वाधिव्याधिनाशिने ॥ २ ॥
जया जिताख्या विजयाख्याऽपर पराजितयान्वितः ।
दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षैर् विद्यादेवी भिरन्वितः ॥ ३ ॥
ॐ असिआउसाय नमस् तत्र त्रैलोक्यानाथताम् ।
चतुः षष्टि – सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्र चामरैः ॥ ४ ॥
श्री शंखेश्वर मण्डन पार्श्वजिन! प्रणत कल्पतरु कल्प ।
चूरय दुष्टव्रातं पूरय मे वाञ्छितं नाथ ॥ ५ ॥

मंगल पाठ

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
आचार्या जिनशासनोन्नति कराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्न-त्रयाराधकाः,
पञ्चतै परमैष्ठिनः प्रतिदिन कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ।
वीरा तीर्थ मिदं प्रवृत्तमत्तुलं, वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री धृतिकीर्ति कान्ति निचयो भी वीर! भद्रं दिश ॥ २ ॥

ब्राह्मी चन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी,
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता, सुभद्रा शिवा ।
कुन्ती, शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रभावत्यपि,
पद्मावत्यपि सुन्दरिर्दिन मुखें कुर्वन्तु वो मगंलम् ॥ ३ ॥

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमप्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राधाः जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥ ४ ॥
सर्वमंगलः – मांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥ ५ ॥

अर्हन्तो ज्ञान–भाजः सुरवर महिताः, सिद्धी सौधस्थ-सिद्धाः ।
पंचाचार प्रवीणाः प्रगुण गणधराः पाठकाश्चागमानाम् ॥
लोके लोकेश वन्द्याः, सकल यतिवराः साधु धर्माभिलीनाः ।
पंचाप्येते सदाप्ताः विदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥ ६ ॥

संसार–दावानल-दाह–नीरं, सम्मोह–धूलीहरणे समीरम् ।
माया-रसा-दारण-सार-सीरं, नमामि वीरं गिरिसार धीरम् ॥७॥

भावावनाम – सुर – दानव – मानवेन,
चूला विलोल – कमलावलि – मालितानि ॥
सम्पूरिता भिनत – लोक समिहीतानि ।
कामं नमामि जिनराज पदानि तानी ॥ ८ ॥

तज्जयति परं ज्योतिः, समं समस्तैरनन्त – पर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला, प्रतिफलति पदार्थ–मालिका यत्र ॥ ९ ॥
मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म–भूभृताम् ॥
ज्ञातारं विश्व तत्वानां, वन्दे तद्गुण लब्धये ॥ १० ॥

दिक् – कालाद्यनवच्छिन्ना अनन्त – चिन्मात्र – मूर्तये ।
स्वानु – भूत्येक – मानाय, नमः शान्ताय तेजसे ॥ ११ ॥

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तेर शुचिः ॥ १२ ॥

नमः समय साराय, स्वानु – भूत्या चकासते ।
चिन्स्वभावाय भावाय, सर्व – भावान्तर च्छिदे ॥ १३ ॥

अनन्त – धर्मणस्तत्वं पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः ।
अनेकान्तमयी मूर्तिरं नित्यमेव प्रकाशताम् ॥ १४ ॥

नमः श्री वर्द्धमानाय निर्द्धूत्त – कलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकानां यद् विद्या दर्पणायते ॥ १५ ॥

भवबीजाकुंर – जनना, रागाद्यांः क्षयमुपागता यस्य ।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥ १६ ॥

तव पादौ मम हृदये, मम हृदये तव पदद्वये लीनम ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्, यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥ १७ ॥

शास्त्राभ्यासो जिन – पतिनुतिः संगतिः सर्वदाऽऽर्यै। ।
सत्साधुनं गुण – गुण कथा, दोष वोद च मौनम ॥ १८ ॥

सर्वस्यापि प्रिय हितवचो, भावना चात्मतत्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भव भवे, यावदेतेऽपवर्गः ॥ १९ ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः परिहित निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २० ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुख भाग् भवेतु ॥ २१ ॥

श्रूयतां धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥ २२ ॥

अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनद्वयम ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम् ॥ २३ ॥

विरम विरम संगान्मुचं मुचं प्रपंचम् ।
विसृज विसृज मोहं, विद्धि विद्धि स्वतत्त्वम् ॥
कलय कलय वृत्तं, पश्य पश्य स्वरूपम् ।
कुरु कुरु पुरुषार्थं निर्वृतानन्द – हेतोः ॥ २४ ॥

अतुलसुखनिधानं ज्ञान विज्ञानबीजम् ।
विलयगतकलंकं शान्तविश्वप्रचारम् ॥
गलितसकलशंकं विश्वरूपं विशालम् ।
भज विगत विकारं स्वात्मनात्मानमेव ॥ २५ ॥

यदि विषय पिशाची निर्गता देहगेहात् ।
सपदि यदि विशीर्णो मोहनिद्रातिरेकः ॥
यदि युवतिकरंके निर्ममत्वं मे प्रपन्नो ।
झटिति ननु विदेहि ब्रह्मवीथिविहारम् ॥ २६ ॥

मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णां, कुरु सद्बुद्धि मनसि वितृष्णाम् ।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम ॥ २७ ॥

अर्थ मनर्थं भावय नित्यं नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम ।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ॥ २८ ॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम् ।
आत्म ज्ञान विहीना मूढ़ाः, ते पच्यन्ते नरक निगूढ़ाः ॥ २९ ॥

नलिनीदलगतसलिलं तरलं, तद्वज्जीवितमतिशय चपलम् ।
विद्धि व्याध्यभिमान–ग्रस्तं, लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ३० ॥

श्री चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

आदौ नेमिजिनं नौमि, सम्भव सुविधि तथा ।
धर्मनाथं महादेवं, शान्तिं शान्तिकर सदा ॥ १ ॥

अनन्त सुव्रत भक्त्या, नेमिनाथ जिनोत्तमम् ।
अजित जितकन्दर्प चन्द्र चन्द्र – समप्रभम् ॥ २ ॥

आदिनाथं तथा देवं, सुपार्श्वं विमल जिनम् ।
मल्लिनाथ गुणोपेत, धनुषां पंच – विंशतिम् ॥ ३ ॥

अरनाथं महावीरं, सुमतिं च जगदगुरुम् ।
श्री पदमप्रभनामान, वासुपूज्य सुरैर्नतम ॥ ४ ॥

शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांस श्रेयसे सदा ।
कुन्थुनाथं च वामेयं, तथाभिनन्दन जिनम् ॥ ५ ॥

जिनांना नामभिर्वद्धः पचषष्टि – समुद्भवः ।
यन्त्रोऽयं राजेत यत्र, तत्र सौख्यं निरन्तरम् ॥ ६ ॥

यस्मिन् गृहे सदाभक्त्या, यन्त्रोऽयं धृयते बुधैः ।
भूत - प्रेत - पिशाचादेर् - भयं तत्र न विद्यते ।। ७ ।।

सकलगुणनिधान यन्त्रमेन विशुद्ध ।
हृदय - कमल कोषे धीमतां ध्येयरुपम् ।।
जय तिलक गुरु - श्री - सूरिराजस्य शिस्यो ।
वदति सुख निदानं मोक्ष लक्ष्मी निवासम् ।। ८ ।।

महावीराष्टक स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावारिचदचितः ।
समं भान्ति ध्रोव्य–व्यय–जनि लसन्तोऽन्तरहिताः ।।
जगत् साक्षी मार्ग - प्रकटनपरो भानुरिव योः ।
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः ।। १ ।।
अताम्रं यच्चक्षुः कमल - युगल स्पन्दरहित,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तरमपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमलाः,
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः ।। २ ।।
नमन्नाकेन्द्राली –मुकुट - मणि - भा - जाल–जटिलं,
लसत्पादाम्भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्वाला - शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः ।। ३ ।।
यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुण–गुण–समृद्धः सुखनिधि ।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाणं किमु तदा ?
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः । ४ ।।
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर, ज्ञान निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर - सिद्धार्थ तनयः ।
अजन्माऽपि श्रीमान विगत–भवरागोऽद्भु तगतिर्,
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः ।। ५ ।।
यदोया वाग्गंगा विविध नय कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानींमायेषा बुधजन - मरालैः परिचिता,
महावीर स्वामी नयन - पथ - गामी भवतु नः ।। ६ ।।

अनिर्वारोद्रेकेरस त्रिभुवनजयी कामसुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द – प्रशमपदराज्याय स जिनः,
महावीर स्वामी नयन–पथ–गामी भवतु नः ॥ ७ ॥

महामोहातंक – प्रशमनपराऽऽकस्मिक – भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदितमहिमा मङ्गल – करः।
शरण्यः साधूनां भव – भय – भृतामुत्तमगणो,
महावीर स्वामी नयन–पथ–गामी भवतु नः ॥ ८ ॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं,
भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि,
स याति परमां गतिम् ॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

किं कर्पूर–मयं सुधारसमयं किं चन्द्ररौचिर्मयं,
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलीमयम्।
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं,
शुक्लध्यान – मयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम् ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्,
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन्।
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन्,
श्री चिन्तामणि – पार्श्वसंभवयशो हंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कमेभ कुम्भेसृणिः,
मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः।
दाने देवमणिर्नतोत्तमजन श्रेणिः कृपा – सारिणीः,
विश्वानन्द सुधा घृणिर् भवभिदे श्री पार्श्वचिन्तामणिः ॥ ३ ॥

श्री चिन्तामणि पार्श्व विश्व जनता संजीवनस्त्वं मया,
दृष्टस्तात! ततः श्रियः समभवन्नाश क्रमा चक्रिणाम्।
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहु विधं सिद्धं मनोवांछितं,
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन भयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

यस्य प्रौढ़तम – प्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगण्,
जंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्ध विध्वंसक्ः ।
नित्योद्द्योतपदं समस्त कमलाकेलीग्रहं राजते,
स श्री पार्श्व जिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम् ।५॥

विश्व व्यापितमो हिनस्ति तरणिर्वालोऽपि कल्पांकुरो,
दारिद्रयाणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्ने कणः ।
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो,
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगती-कष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

श्री चिन्तामणि मन्त्रमों कृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितम्,
श्री मर्हन नमिऊणपासकलितं त्रैलोक्य – वश्यावहम् ।
द्वेधाभूत विषापहं विषहरं श्रेयः प्रभावा श्रयं,
सोल्लासं वसंहाकितं जिनफुलिगानन्ददं देहिनाम् ॥ ७ ॥

ह्रीं श्रीकारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो,
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणि संज्ञकम् ।
भाले वामभुजे च नाभिकरयोरं भूयो भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर यान्त्यहो ।८॥

नो रोगा नैव शोका, न कलह कलना, नारि मारि प्रचारा ।
नैवाधिर्नासमाधिर न च दर-दुरिते, दुष्ट-दारिद्रता नो ॥
नो शाकिन्यो ग्रहा नो, न हरि-करि-गणा व्याल वेताल-जालाः।
जायन्ते पार्श्व चिन्तामणि नति वशतः प्राणिनां भक्ति भाजाम्॥९॥

जोवणि द्रुम धेनु कुम्भमाणयस्तस्यागणे रिंगिणो,
देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ।
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी,
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यौ ध्यायति ॥ १० ॥

इति – जिनपतिः – पार्श्वः पार्श्वं पश्वर्ख्ययक्षः
प्रदलित दुरितौघः प्रीणित – प्राणिसार्थः ।
त्रिभुवन जन वाञ्छादान – चिन्तामणीकः,
शिवपद – तरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

श्री भक्तामर स्तोत्र

(आचार्य श्री मानतुंग)

भक्तामर – प्रणत – मौलिमणि – प्रभाणा–
मुद्द्योतकं दलित – पाप – तमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा—
वालम्बन भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकल – वाङ्मयतत्त्व वोधा–
दुद्भूतबुद्धिपटुभि : सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रित्तयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ ॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ ।
स्तोतुं समुद्यत – मतिर्विगतत्रपोऽहम्,
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दु बिम्ब–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्क कान्तान्,
कस्तेक्षमः सुरगुरुप्रति मोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्त – काल – पवनोद्धत – नक्रचक्रं,
कोवा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीशं !
कर्तुं स्तवं विगत शक्ति रपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

अल्प श्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र – चारु – कलिकानिकरै हेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसंतति – सन्निवद्धं,
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीर भाजाम् ।
आक्रान्त – लोकमलिनी लमशेष माशु,
सूर्यांशुभिन्निमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफल - द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त - दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्टवा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापित स्त्रिभुवनैक - ललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जित जगत्-त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डल - शशाङ्ककलाकलाप —
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्—
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम् ।

कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलित कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जित – तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर निरुद्ध महाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वंशशांक बिम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा ?
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ॥ १९ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ! ॥ २१ ॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस –
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ २३ ॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर मनन्तम्नङ्ग केतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमने कमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित् ! बुद्धि–बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय शङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वाराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि–शोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै–
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्त – विविधाश्रय – जातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥

उच्चैर शोक तरु संश्रित मुन्मयूख,
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर – पार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता – वितानं,
तुङ्गोदयाद्रि शिरसीव सहस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुन्दावदात – चल चामर–चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क – शुचिनिर्झर – वारिधार –
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्क कान्त,
मुच्चैः स्थितं स्थगित भानुकर–प्रतापम् ।
मुक्ताफल – प्रकर जाल – विवृद्ध शोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

गम्भीरताररवपूरित – दिग्विभाग–
स्त्रैलोक्यलोक – शुभसङ्गम – भूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजय घोषरग – घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मन्दार – सुन्दर – नमेरू – सुपारिजात –
सन्तानकादिकुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दु शुभमन्द – मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुम्भत्प्रभावलय – भूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद् – दिवाकर – निरन्तर भूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम् ॥ ३४ ॥

स्वर्गापवर्गगममार्ग – विमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्वकथनैक – पटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व–
भाषास्वभाव –परिरगाम गुणैः प्रयोज्यः ॥ ३५ ॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कज – पुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिर भूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतोग्रह – गरगस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३७ ॥

श्च्योतन्मदाविल विलोल कपोल मूल–
मत्त – भ्रमद भ्रमरनाद विवृद्ध कोपम् ।
एरावताभमिभमुद्ध तमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥

भिन्नेभकुम्भ गलदुज्जवल – शोणिताक्त—
मुक्ताफल प्रकर – भूषित – भूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचल संश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पान्तकाल – पवनोद्धत – वह्नि कल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघसुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणं समदकोकिल – कण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क,
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥

वल्गत्तुरङ्ग गज – गर्जित – भीमनाद—
माजौ वलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकर मयूख – शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशुभिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुन्ताग्रभिन्नगज – शोणितवारिवाह—
वेगावतार – तरणातुरयोध – भीमे ।
युद्धे जयं विजित दुर्जय जेयपक्षा –
स्त्वत्पाद – पङ्कजवना श्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभित भीषणनक्रचक्र,
पाटीन पीठ भय दोल्वण वाड़वाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्ग शिखरस्थित यानपात्रा—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥

उद्भूत भीषण जलोदर – भारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः ।
त्वत्पाद – पङ्कजरजोऽमृत दिग्ध देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥

आपाद - कण्ठ मुरु शृंखल –वेष्टिताङ्गा,
गाढ़ं बृहन्निगड़कोटि निघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत बन्धभया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेन्द्र – मृगराजदावानलाहि,
संग्रामवारिधि महोदर बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्र स्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया विविधवर्ण विचित्रपुष्पाम ।
धत्ते जनो य इह कंठगता मजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समपैति लक्ष्मी: ॥ ४८ ॥

श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र

(आचार्य श्री सिद्धसेन)

कल्याण – मन्दिर मुदारमवद्य – भेदि,
भीताभय प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि पद्मम् ।
संसार सागर निमज्जदशेष – जन्तु—
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

यस्य स्वयं सुर – गुरुर्गरिमाम्बुराशे:,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय – धूमकेतोस्—
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप—
मस्मादृशा: कथमधीश ! भवन्त्यधीशा: ।
धृष्टोऽपि कौशिक – शिशुर्यदिवा दिवान्धो,
रूपं प्ररुपयति किं किल धर्मरश्मे: ? ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयस: प्रकटोऽपि यस्मान्—
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशि: ? ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य – गुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निज बाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशे: ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !

वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।

जाता तदेवमसमीक्षित – कारितेयं,

जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,

नामाऽपि पाति भवतो–भवतो जगन्ति ।

तीव्रातपोपहत – पान्थ – जनान् निदाघे,

प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,

जन्तोः क्षणेन निविड़ा अपि कर्म बन्धाः ।

सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—

मभ्यागते वनशिखण्डिनी चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !

रोद्रै रुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

गो – स्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रे,

चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,

त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।

यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून—

मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

यस्मिन् हर – प्रभृतयोऽपि हत प्रभावाः,

सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।

विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,

पीतं न किं तदपि दुर्धर – वाड़वेन ? । ११ ॥

स्वामिन्ननल्प गरिमाणमपि प्रपन्नास्,

त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ?

जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन्,

चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,

ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म–चौराः ।

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,

नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप –
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज – कोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य —
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानला – दुपलभावमपास्य लोके,
चामिकरत्वम चिरादिव धातु भेदाः ॥ १५ ॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृत मित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष–विकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरिहरा दिधियाप्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृहते विविध वर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥

धर्मोपदेश समये सविधानुभावा —
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतो समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ् मुखवृन्तमेव,
विष्वाक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।
त्वाद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि वन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गभीर हृदयो दधि सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मदसंगभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि–पुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्ध–भावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीर – गिरमुज्ज्वलहेमरत्न—
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश—
चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छता तवशितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोक तरुर्बभूव !
सांनिध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भोः प्रमादमवधुय भजध्वमेन—
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलाप – कलितोल्लसितातपत्र—
व्याजात् त्रिधा धततनु – ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरित – जगत्त्रय – पिण्डितेन,
कान्ति – प्रताप – यशसामिव संचयेन ।
माणिक्य हेम रजतप्रविनिर्मितेन,
साल त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यस्त्रजो जिन ! नमत् त्रिदशाधिपाना–
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत् तारयस्य सुमतो निज प्रष्ठ लग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिव – निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृति रप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञान त्वयि स्फुरति विश्व विकाशहेतु ॥ ३० ॥

प्राग्भार-संभृत नभांसि रजांसि रोषा—
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायाऽपि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जित घनौघमदभ्र भीमं,
भ्रश्यत तड़िन्मुसलमांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तपथ दुस्तर वारि दध्रे,
तैनेव तस्य जिन! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

ध्वास्तोर्ध्वकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड—
प्रालम्बभृद्-भयद्-वक्त्रविनिर्यदग्निः,
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्या भवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसन्ध्य—
माराधयन्ति विधिवद् विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्षमल-देहदेशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपार-भववारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्र मंत्रे,
किं वा विपद् विषधरी सविधं समेति? ॥ ३५ ॥

जन्मांतरेऽपि तव पादयुगम् न देव।
मन्ये मया महितमीहितदान-दक्षम।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतन महं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबंध-गतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसी मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःख पात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव शून्याः ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ ! दुखिजन वत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्य पुण्य वसते ! वशिनां ! वरेण्य ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन - तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य—
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पाद्-पङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद भुवन पावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥

देवेन्द्र वन्द्य ! विदिताखिल वस्तुसार !
संसार-तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ !
त्रायस्व देव ! करुणाहृद मा पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककंचु किताङ्ग - भागाः ।
त्वद्बिम्ब निर्मल - मुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥

जननयनकुमुद चन्द्र !
प्रभास्वराः स्वर्ग - सम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया,
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥

卐

श्री रत्नाकर पंचविंशतिका

(आलोचना)

श्रेयः श्रियां मङ्गल – केलिसद्म ।
नरेन्द्र – देवेन्द्र नताङ्घ्रिपद्म ।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशय – प्रधान ।
चिरं जय ज्ञान – कला निधान ॥ १ ॥

जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ।
दुर्वार – संसार – विकार – वैद्य ।
श्री वीतराग ! त्वयि मुग्धभावाद् ।
विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किंचित ॥ २ ॥

किं बाललीला कलितो न बालः
पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ?
तथा यथार्थं कथयामि नाथ ।
निजाशयं शानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

दत्तं न दानं, परिशीलितं च
न शालि शीलं, न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्,
विभो ! मया भ्रान्तमहो ! मुधैव ॥ ४ ॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो,
दुष्टेन लोभाख्यं – महोरगेण ।
ग्रस्तो ऽभिमानाजगरेण माया – जालेन
बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम ? ॥ ५ ॥

हिन्दी अनुवाद –

शुभकेलि के, आनन्द के, धन के मनोहर धाम हो,
नरनाथ से सुरनाथ से पूजित चरण गत काम हो ।
सर्वज्ञ हो, सर्वोच्च हो सब से सदा संसार में,
प्रज्ञा कला के सिन्धु हो, आदर्श हो आचार में ॥
संसार – दुःख के वेद्य हो, त्रैलोक्य के आधार हो,
जयश्रीश ? रत्नाकर प्रभो ? अनुपम कृपा–अवतार हो ।

गतराश ! हो विज्ञप्ति मेरी मुग्ध की सुन लीजिए,
क्योंकि प्रभो ! तुम विज्ञ हो, मुझको अभयवर दीजिए ॥
माता – पिता के सामने बोली सुना कर तोतली,
करता नहीं क्या अज्ञ बालक बाल्य-वश लीलावती?
अपने हृदय के हाल को वैसे यथोचित रीति से –
मैं सच्चरित्र भी हूं नहीं, मैंने नहीं तप भी किया ॥
शुभ भावना मेरी हुई अब तक न इस संसार में,
मैं घूमता हूं व्यर्थ ही भ्रम से भवोदधि – धार में ॥
क्रोधाग्नि में रात–दिन हा ! जल रहा हूं हे प्रभो !
मैं लोभ नामक सांप से काटा गया हूं हे विभो !
अभिमान के खल ग्राह से अज्ञानवश मैं ग्रस्त हूं,
किस भांति हों स्मृत आप माया–जाल में मैं ग्रस्त हूं ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह,
लोकेऽपि लोकेश ? सुख न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म,
जिनेश ! जज्ञे भव – पूरणाय ॥ ६ ॥
मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !
त्वदास्यपीयूष मयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोर—
मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥
त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं,
रत्नत्रयं भूरिभव – भ्रमेण ।
प्रमाद – निद्रावशतो गतं तत्,
कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि ! ॥ ८ ॥
वैराग्य – रङ्गः पर – वञ्चनाय,
धर्मोपदेशो जन – रञ्जनाय ।
वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्
कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ॥ ९ ॥
परापवादेन मुखं सदोषं,
नेत्रं परस्त्रीजन – विक्षणेन ।

चेतः परापाय - विचिन्त नेन,
कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम् ? ॥१०॥
विडम्बितं यत् स्मर - घस्मरार्ति-
दशावशात् स्वं विषयांध लेन ।
प्रकाशितं तद् भवतो ह्रियैव,
सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥

हिन्दी अनुवाद

लोकेश ! पर-हित भी किया मैंने न दोनों लोक में,
सुख लेश भी फिर क्यों मुझे हो, चीखता हूं शोक में ॥
मुझ तुल्य ही नर-नारियों का जन्म जगत में व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर ! वह भवों की पूर्णता के अर्थ है ॥
प्रभु ! आपने निज मुख-सुधा का दान यद्यपि दे दिया,
यह ठीक है, पर चित्त ने उसका न कुछ भी फल लिया ।
आनन्द - रस में डूब कर सद्वृत्त वह होता नहीं,
है वज्र-सा मेरा हृदय, कारण बड़ा बस है यही ॥
रत्नत्रयी दुष्प्राप्य है, प्रभु से उसे मैंने लिया,
बहुकाल तक बहुबार जब जग का भ्रमण मैंने किया ॥
हा ! खो गया वह भी अलस, मैं नींद में सोता रहा ।
अब बोलिए उसके लिए रोऊं प्रभो ! किसके यहां ?
संसार ठगने के लिये वैराग्य को धारण किया ।
जग को रिझाने के लिये उपदेश धर्मों का दिया ।
झगड़ा मचाने के लिये मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी उड़ाई, हे प्रभो ! अपनी हंसी ॥
पर दोष को कह जीभ मेरी है सदा दूषित हुई,
लख कर पराई नारियां हा ! आंख भी दूषित हुई ।
मन भी मलिन है सोच कर पर की बुराई हे प्रभो !
किस भांति होगी लोक में मेरी भलाई हे विभो ।
मैंने वढ़ाई निज विवशता, हो अवस्था के वशी,
भक्षक रतीश्वर से हुई उत्पन्न जो दुःख राक्षसी ।
हा ! आपके सम्मुख उसे अति लाज से प्रकटित किया,
सर्वज्ञ ! हो सब जानते स्वयमेव संसृति की क्रिया ॥

ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः – परमेष्ठिमंत्रः,
कुशास्त्रवाक्यैर् निहतागमोक्तिः ।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेव सङ्गा—
दवाञ्छि ही नाथ ! मति भ्रमो मे ॥ १२ ॥

विमुच्य दृग् लक्ष्यगतं भवन्तं,
ध्याता मया मूढ़धिया हृदन्तः ।
कटाक्ष – वक्षोज – गभीर – नाभि—
कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥

लोलेक्षणावक्त्र निरीक्षणेन,
यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्धसिद्धान्त – पयोधिमध्ये,
धौतोऽप्यगात् तारक ! कारणं किम् ॥ १४ ॥

अंगं न चंगं न गणो गुणानां,
न निर्मलः कोऽपि कला विलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च काऽपि,
तथाऽप्यहंकार – कदर्थि तोऽहम् ॥ १५ ॥

आयुर्गलत्याशु न पाप बुद्धिर्,
गत वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्य – विधौ न धर्मे,
स्वामिन् ! महा मोह–विडम्बना मे ॥ १६ ॥

नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं,
मया विटानां कटुगीर पीयम् ।
नाधारि कर्णे त्वयि केवलार्के,
परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिग्माम् ॥ १७ ॥

हिन्दी अनुवाद—

अन्यान्य मंत्रों से परम परमेष्टि मन्त्र हटा दिया,
सच्छास्त्र वाक्यों को कुशास्त्रों से दबा मैंने दिया ।
विधि उदय को करने वृथा, मैंने कुदेवाश्रय लिया,
हे नाथ ! यों भ्रमवश अहित, मैंने नहीं क्या-क्या किया ॥
हा तज दिया मैंने प्रभो ! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
आराधना की मूढ़तावश मूढ़ लोगों की

वामांगियों के कुच कटाक्षों पर सदा मरता रहा,
उन के विलासों का हृदय में ध्यान मैं धरता रहा ।।
लखकर चपल दृग युवतियों के मुख मनोहर रसमयी,
मम मन पटल पर राग-भावों की मलिनता बस गई।
वह शास्त्र विधि के शुद्ध जल से, भी न क्यों धोई गई,
बतलाइये प्रभु आप हो, मम बुद्धि तो खोई गई ।।
मुझमें न अपने अंग के सौंदर्य का आभास है,
मुझमें न गुण-गण है विमल, मुझमें न कला-विलास है।
प्रभुता न मुझ में स्वप्न की भी है चमकती देखिये,
तो भी भरा हूं गर्व से मैं मूढ़ हो किसके लिये ।।
हा ! नित्य घटती आयु है पर-पाप मति घटती नहीं,
आई बुढ़ौती पर विषय अरु वासना हटती नहीं।
मैं यत्न करता हूं दवा में. धर्म में करता नहीं,
दुर्मोह-महिमा से ग्रसित हूं, नाथ ! बच सकता नहीं ।।
अघ पुण्य को जग, आत्म को मैंने कभी माना नहीं,
हा ! आप आगे हैं खड़े सर्वज्ञ रवि यद्यपि यहीं।
तो भी खलों के वाक्य को मैंने सुना कानों वृथा,
धिक्कार मुझको है गया, मम जन्म ही मानो वृथा ।।

न देव पूजा न च पात्र पूजा,
न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः।
लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं,
कृतं मयारण्य - विलापतुल्यम् ।। १८ ।।

चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु -
कल्पद्रुम - चिन्तामणिषु स्पृहार्तिः।
न जैन - धर्मे स्फुटशर्मदेऽपि,
जिनेश ! मे पश्य विमूढ़ भावम् ।। १९ ।।

सद्भोग - लीला न च रोगकीला,
धनागमो नो निधनागमश्च।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते,
व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन । २० ।।

स्थितं न साधो हृदि साधुवृत्तात्,
परोपकारान्न योशोर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादि – कृत्यं,
मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥
वैराग्यरङ्गो न गुरुदितेष ।
न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
नाऽध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव,
तार्यः कथंकार मयं भवाब्धिः ? ॥ २२ ॥

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य—
मागामि जन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदिदृशोऽहं मम तेन नष्टा,
भूताद् भवद् भावि – भवत्रयीश ॥ २ः ॥

हिन्दी अनुवाद

सत्पात्र – पूजन देव – पूजन कुछ नहीं मैंने किया,
मुनि धर्म श्रावक धर्म, भी विधिवत् नहीं पालन किया ।
नर-जन्म पाकर भी वृथा ही, मैं उसे खोता रहा,
मानो अकेला घोर वन में व्यर्थ ही रोता रहा ॥

प्रत्यक्ष सुखकर जैन मत में, प्रीति मेरी थी नहीं,
जिन नाथ ! मेरी देखिये, है मूढ़ता भारी यही ।
हा ! कामधेनु कल्पद्रुमादिक, के यहां रहते हुए,
मैंने गंवाया जन्म को, धिक् लाख दुःख सहते हुए ॥

मैंने न रोका रोग–दुःख, संभोग – सुख देखा किया,
मन में न माना मृत्यु-भव, धन-लाभ का लेखा किया ।
हा ! मैं अधम पुद्गल सुखों का, ध्यान नित करता रहा,
पर नरक – कारागर से, मन में न मैं डरता रहा ॥
सद्वृत्ति से मन में न मैंने, साधुता हा ! साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी, मैंने नहीं कुछ अर्जिता ।
चउतीर्थ के उद्धार आदिक, कार्य कर पाया नहीं,
नर–जन्म पारस–तुल्य निज, मैंने गंवाया व्यर्थ ही ॥
शास्त्रोक–विधि वैराग्य भी, करना मुझे आता नहीं,
खल–वाक्य भी गत क्रोध हो सहना मुझे आता नहीं

अध्यात्म – विद्या है न मुझमें, है न कोई सत्कला,
फिर देव ! कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला ।।
सत्कर्म पहले जन्म में, मैंने किया कोई नहीं,
आशा नहीं जन्मान्य में, उसको करूंगा मैं कहीं ।
इस भांति का यदि हूं जिनेश्वर ! क्यों न मुझको कष्ट हो !
संसार में फिर जन्म मेरे, त्रिविध कैसे नष्ट हो ? ।।

किं वा मुधाऽहं बहुधाभुक्—
पूज्यं ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयतम् !
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप—
निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ।। २४ ।।

दीनोद्धार – धुरंधरस्त्वद परो,
नास्ते मदन्यः कृपा—
पात्रं नाऽत्र जने जिनेश्वर ! तथा—
ऽप्येतां न याचे श्रियम् ।
किंत्वर्हन्निदमेव – केवलमहो,
सद्बोधि – रत्नं – शिवं ।
श्री रत्नाकर – मंगलैकनिलय ?
श्रेयस्करं प्रार्थये ।। २५ ।।

हिन्दी अनुवाद—

हे पूज्य ! अपने चरित्र को, बहुभांति गाऊं क्या वृथा ।
कुछ भी नहीं तुझसे छिपी है पापमय मेरी कथा ।
क्योंकि त्रिजग के रूप हो तुम, ईश हो सर्वज्ञ हो,
पथ के प्रदर्शक हो तुम्हीं, मम चित्त में मर्मज्ञ हो ।।
दीनोद्धारक धीर आप – सा अन्य नहीं है,
कृपा – पात्र भी नाथ ! न मुझसा अपर कहीं है ।
तो भी मांगू नहीं धान्य धन कभी भूल कर,
अर्हन् ! केवल बोधिरत्न दें मुझे मङ्गल – कर ।।
श्री रत्नाकर गुण–गान यह दुरित दुःख सब के हरे,
अब एक यही है प्रार्थना मंगल – मय जग को करे ।।

श्री परमात्म–द्वात्रिंशिका

(आचार्य अमितगति)

सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थ्य भावं विपरीत–वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ॥ १ ॥

शरीरतः कर्तुमनन्तशक्ति, विभिन्नमात्मानमपास्त दोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टि, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः॥ २ ॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताशेः ममत्व बुद्धेः सममनो मेऽस्तु सदाऽपि नाथ ॥ ३ ॥

मुनीश ! लीनाविव कीलिताविव,
स्थिरौ निखाताविव बिम्बताविव ।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा,
तमो धुनानौ हृदि दीपकाविव ॥ ४ ॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव ! देहिनः
प्रमादतः संचरता यतस्ततः ।
क्षता विभिन्न मलिता निपीड़िता,
ममास्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥ ५ ॥

विमुक्ति–मार्ग प्रतिकूल–वर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।
चारित्र–शुद्धेर्यदकारि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं विभो ॥ ६ ॥

विनिन्दनालोचन–गर्हणै रहं. मनोवचः काय-कषाय निर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःख कारणं भिषग् विषं मंत्र गुणैरिवाखिलम् ॥७॥

अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं स्वचरित्र-कर्मणः ।
व्यधा मनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥ ८ ॥

क्षतिं मनः शुद्धिविधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शीलवृत्तेर्विलंघनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ॥ ९ ॥

यदर्थ मात्रा–पद–वाक्यहीनं मया प्रमादाद् यदि किंचनोक्तम् ।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी, सरस्वती केवल–बोधलब्धिम् ॥१०॥

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः ।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने त्वां वन्द्यमानस्य ममास्तु देवि ॥११॥

यः स्मर्यते सर्व – मुनीन्द्र-वृन्दैर, यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेद–पुराण शास्त्रै स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१

यो दर्शन-ज्ञान-सुखस्वभावः, समस्त संसार-विकार-बाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्म-संज्ञः, स देव देवो हृदये ममास्ताम् ।। १३ ।।

निषूदते यो भवदुःखजालं, निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
योऽन्तर्गतो योगि-निरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।। १४ ।।

विमुक्ति मार्ग-प्रतिपादको यो, यो जन्म-मृत्युव्यसनाद् व्यतीतः ।
त्रिलोकलोको सकलोऽकलंकः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।। १५ ।।

क्रोडीकृताशेष-शरीरि-वर्गा, रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः ।
निरान्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।। १६ ।।

यो व्यापको विश्वजनीन-वृत्तिः, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।। १७ ।।

न स्पृश्यते कर्म कलंकदोषैर् यो ध्वान्त संघैरिव तिग्मरश्मिः ।
निरंजनं नित्यमनेकमेकं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।। १८ ।।

विभासते यत्र मरीचिमाली, न विद्यमाने भुवनावभासि ।
स्वात्मस्थितं बोधमय-प्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।। १९ ।।

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् ।
शुद्धं शिवं शान्त मनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।। २० ।।

येन क्षता मन्मथ मान-मूर्छा विषाद निद्रा भयशोक चिन्ताः ।
क्षय्योऽनलेनेव तरु-प्रपंचस्, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।। २१ ।।

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः ।
यतो निरस्ताक्ष-कषायविद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ।। २२ ।।

न संस्तरो भद्र ! समाधि-साधन न लोक पूजा न च सघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतोभवानिशं, विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ।। २३ ।।

न संति बाह्या मम केचनार्था भवामि तेषां न कदाचनाऽहम् ।
इत्थंविनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदात्वं भव भद्र! मुक्त्यै ।। २४ ।।

आत्मानमात्मन्यवलोक्यमानस्, त्वं दर्शनज्ञान मयो विशुद्धः ।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् ।। २५ ।।

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगमस्वभावः ।
वहिर्भवाः सन्ति परे समस्ता, न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ।। २६ ।।

यस्यास्ति नैक्यं वपुषाऽपि सार्धं, तस्यास्ति किं पुत्र-कलत्र-मित्रः? ।
पृथक् कृते चर्मणि रोम कूपाः, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीर-मध्ये ।। २७ ।।

संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ॥ २८ ॥

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं–संसार–कान्तार–निपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्म तत्त्वे ॥ २९ ॥

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ ३० ॥

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोऽपि कस्याऽपि ददाति किंचन ।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः, परो ददातीति विमुंच शेमुषीम् ॥ ३१ ॥

यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।
शाश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्ति निकेतं विभववरं ते ॥ ३२ ॥

श्री ऋषभदेव स्तोत्र

आदि जिनं वंदे गुणसदनं, सदनन्तामल – बोधं रे !
बोधकता–गुणविस्तृत्त कीर्ति, कीर्तित–पथम विरोधं रे ॥आदि. ॥ १ ॥
रोधरहित – विस्फुरदुपयोग, योगं दधतमभंगं रे ।
भंग नय व्रज – पेशलवाचं वाचंयम – सुख – संगं रे ॥ आदि ॥ २ ॥
संगत पद – शुचि – वचन तरंगं, रंगं जगति ददानं रे ।
दान – सुरद्रुम – मंजुलहृदयं, हृदयंगम–गुण–भानं रे ॥ आदि. ॥ ३ ॥
भानन्दित – सुर – नर – पुन्नागं, नागर–मानस–हंस रे ।
हंसगति पंचम – गति वासं, वासव – विहिताशंसे रे ॥ आदि. ॥ ४ ॥
शसन्तं नयवचनमनवनं, नव मंगल – दातारं रे ।
तारस्वरमघघन पवमानं, मान – सुभट – जेतारं रे ॥ आदि. ॥ ५ ॥
इत्थं स्तुतः प्रथम तीर्थपतिः प्रमोदात्,
श्री मद् – यशोविजय – वाचक पुंगवेन ।
श्री पुण्डरीक – गिरिराज – विराजमानो,
मानोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि ॥ ६ ॥

सोलह सती स्तोत्र

आदौ सती सुभद्रा च, पातु पश्चातु सुन्दरी,
ततश्चन्दनबाला च, सुलसा च मृगावती ॥ १ ॥
राजीमती ततश्चूला, दमयन्ती ततः परम् ,
पद्मावती शिवा सीता, ब्राह्मी पुनश्च द्रौपदी ॥ २ ॥

कौशल्या च ततः कुन्ती, प्रभावती सतीवरा,
सतीनामांक – यंत्रोऽयं, चतुस्त्रिंशत् समुद् भवः ॥ ३ ॥

यस्य पार्श्वे सदा यन्त्रो, वर्तते तस्य साम्प्रतम्,
भूरि निद्रा न चायाति, नायान्ति भूत प्रेतकाः ॥ ४ ॥

ध्वजायां नृपतेर्यस्य, यन्त्रोऽयं वर्तते सदा,
तस्य शत्रुभय नास्ति, संग्रामेऽस्य जय सदा ॥ ५ ॥

गृह द्वारे सदा यस्य, यन्त्रोऽयं ध्रियते वरः;
कार्मणादिकतन्त्रैश्च, न स्यात् तस्य् पराभवः ॥ ६ ॥

स्तोत्रं सतीनां सुगुरु प्रसादात्, कृतं मयोद्योत–मृगाधिपेन ।
यः स्तोत्रमेतत् पठति प्रभाते, स प्राप्नुते शं सततं मनुष्यः ॥ ७ ॥

श्री परमानन्द–पंचविंशतिका

परमानन्द – संयुक्तं, निर्विकारं निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, निज – देहे व्यवस्थितम् ॥ १ ॥

अनन्तसुख – सम्पन्नं, ज्ञानामृत – पयोधरम् ।
अनन्तवीर्य – सम्पन्नं, दर्शनं परमात्मनः ॥ २ ॥

निर्विकारं निराधारं, सर्व संग विवर्जितम् ।
परमानन्द – सम्पन्न, शुद्धचैतन्य – लक्षणम् ॥ ३ ॥

उत्तमाऽध्यात्मचिन्ता च, मोह्–चिन्ता च मध्यमा ।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताऽधमाधमा ॥ ४ ॥

निर्विकल्प समुत्पन्नं, ज्ञानमेव सुधारसम् ।
विवेक मंजलिं कृत्वा, तं पिबन्ति तपस्विनः ॥ ५ ॥

सदानन्दमयं जीवं, यो जानाति स पण्डितः ।
स सेवते निजात्मानं, परमानन्द – कारणम् ॥ ६ ॥

नलिन्यां च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ।
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति सर्वदा ॥ ७ ॥

द्रव्य कर्म–विनिर्मुक्तं, भावकर्म – विवर्जितम् ।
नोकर्म – रहितं विद्धि, निश्चयेन चिदात्मनम् ॥ ८ ॥

अनंतब्रह्मणो रूपं, निजदेहे व्यवस्थितम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति जात्यन्धा इव भास्करम् ॥ ९ ॥

तद्ध्यानं क्रियते भव्यैर्, येन कर्म विलीयते ।
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, चित्-चमत्कारलक्षणम् ॥ १० ॥
चिदानंदमयं शुद्धं, निराकारं निरामयम् ।
अनत - सुखसम्पन्नं, सर्व संग विवर्जितम् ॥ ११ ॥
लोकमात्रप्रमाणो हि, निश्चये न हि संशयः ।
व्यवहारे देह मात्र, कथयन्ति मुनीश्वराः ॥ १२ ॥
यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, तत्क्षण गतविभ्रमः ।
स्वस्थचित्तं स्थिरीभूतं, निर्विकल्पं समाधिना ॥ १३ ॥
स एव परमं ब्रह्म, स एव जिनपुंगवः ।
स एव परमं तत्त्वं, स एव परमो गुरुः ॥ १४ ॥
स एव परमं ज्योति, स एव परमं तपः ।
स एव परमं ध्यानं, स एव परमात्मकम् ॥ १५ ॥
स एव सर्वकल्याणं, स एव सुखभजनम् ।
स एव शुद्धचिद्रूपं, स एव परमं शिवम् ॥ १६ ॥
स एव ज्ञानरूपो हि, स एवात्मा न चाऽपरः ।
स एव परमा शान्ति, स एव भवतारकः ॥ १७ ॥
स एव परमानन्दः, स एव सुखदायकः ।
स एव घन - चैतन्यं, स एव गुण-सागरः ॥ १८ ॥
परमाह्लाद - सम्पन्नं, राग - द्वेषविवर्जितम् :
सोऽहं तु देहमध्यस्थो, यो जानाति स पण्डितः ॥ १९ ॥
आकार - रहितं शुद्ध, स्वस्वरूपे व्यवस्थितम् ।
सिद्धमष्ट गुणोपेतं, निर्विकारं निरंजनम् ॥ २० ॥
तत्समं तु निजात्मानं, यो जानाति स पण्डितः ।
सहजानन्द - चैतन्यं, प्रकाशयति महीयसे ॥ २१ ॥
पाषाणेषु तथा हेमं, दुग्ध-मध्येयथा घृतम् ।
तिल-मध्ये यथा तैलं, देह - मध्ये तथा शिवः ॥ २२ ॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु, यो जानाति स पण्डितः ॥ २३ ॥
आनन्द - रूपं परमात्म तत्त्वं,
समस्त - संकल्पविकल्प - मुक्तम् ।

स्वभावलीना निवसन्ति नित्यं,
जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वम् ॥ २४ ॥
ये धर्मशीला मुनयः प्रधानास्,
ते दुःखहीना नियतं भवन्ति ।
संप्राप्य शीघ्रं परमात्मतत्त्वं,
व्रजन्ति मोक्षं क्षणमेकमध्ये ॥ २५ ॥

धर्म मंगल

(दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन)

धम्मो मंगल महिमानिलो, धर्म - समो नहिं कोय ।
धर्म - थकी नमे देवता, धर्म शिव सुख होय ॥ ध० ॥ १ ॥
जीव-दया नित पालिये, सजम सतरह प्रकार ।
बारा भेद तप तपे, धर्मतणो यह सार ॥ ध० ॥ २ ॥
जिम तरुवर ने फूलड़ो, भमरो रस लेवा जाय ।
तिम सन्तोषे आतमा, फूल ने पीड़ा नहिं थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥
इण विध जावे गोचरी, बेहरे ! सूझतो आहार ।
ऊंच-नीच मध्यम कुले, धन - धन ते अणगार ॥ ध० ॥ ४ ॥
मुनिवर मधुकर-सम कहा, नहिं तृष्णा नहिं लोभ ।
लांध्यो भाड़ो देवे देहने, अण लांध्या सन्तोष ॥ ध० ॥ ५ ॥
अध्ययन पहले दुमपुप्फिये, सखरा अर्थ - विचार ।
पुण्यकलश - शिष्य जेतसी, धर्मे जय-जयकार ॥ ध० ॥ ६ ॥

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय ।
साधु जीवन जय जय, जिन-धर्म जय जय ॥ १ ॥
अरिहन्त मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल ।
साधु जीवन मंगल, जिन धर्म मंगल ॥ २ ॥
अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम ।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम ॥ ३ ॥
अरिहन्त शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं ।
साधु जीवन शरणं, जिनधर्म शरणं ॥ ४ ॥

ए चार शरण दुःख हरण जगत में,
और न शरण कोई होगा ।
जो भव्य प्राणी करे आराधना,
उनका अजर अमर पद होगा ॥ ५ ॥

अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करें ।
क्षमा भाव से शान्ति धर कर, मीठा ही व्यवहार करें ॥ १ ॥
सिद्ध प्रभु का शरणा लेकर, मान – बड़ाई दूर करें ।
विनीत भाव से छोटे बनकर, लघुता का व्यवहार करें ॥ २ ॥
आचार्य का शरणा लेकर, झूठ – कपट का त्याग करें ।
सीधा-सादा रहना अच्छा, जीवन सारे सरल बनें ॥ ३ ॥
उपाध्याय का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करें ।
मर्यादा से ज्यादा लक्ष्मी रख कर क्या कल्याण करें ॥ ४ ॥
मुनियों के चरणों में गिरकर. अपना कुछ उद्धार करें ।
मूल कषायों को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करें ॥ ५ ॥

आनन्द मङ्गल करूं आरती सन्त चरण की सेवा ।
शिव सुख कारण विघ्न निवारण पंच परमेष्टि देवा ॥

पहली आरती अरिहन्त देवा कर्म खपे तत्खेवा ।
चौसठ इन्द्र करे तुम सेवा, वाणी अमृत मेवा ॥आनंद. ॥ १ ॥
बीजी आरती सिद्ध निरंजन भंजन भव भय केरा ।
चिदानन्द चिद् रूप अखंडित मिटे भवोभव फेरा ॥आनंद.॥ २ ॥
तीजी आरती श्री आचारज छतीस गुण गलारी ।
संघ शिरोमणि सोहे दिनमणि देहित बोध अनेरा ॥आनंद.॥ ३ ॥
चौथी आरती उपाध्याय जी, भणे भणावे एवा ।
सूत्र अर्थ करे तत्खेवा, सेवा करे तस देवा ॥आनंद.॥ ४ ॥
पंचमी आरती सब साधुजी भारण्ड पेखी जेवा ।
महाव्रत पाले दूषण टाले अविचल शिव सुख लेवा॥आनंद. ॥५॥
भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्टि देवा ।
'विनयचंद' मुनि गुण गावे, लेवा शिव सुख मेवा॥आनंद.॥ ६ ॥

ॐ जय अरिहन्ताणं, प्रभु जय अरिहन्ताणं ।
भाव भक्ति से नित्य प्रति, प्रणमूं सिद्धाणं ।। ॐ जय. ।। १ ।

दर्शन ज्ञान अनन्ता, शक्ति के धारी ।। स्वामी० ।।
यथाख्यात समकित हे कर्म – शत्रु – हारी ।। ॐ जय. ।। २ ।

हे सर्वज्ञ ! सर्वदर्शी ! बल, सुख अनन्त पाये ।।स्वामी.।।
अगुरुलघु अमूरत अव्यय कहलाये ।। ॐ जय० ।। ३ ।

णमो आयरियाणं, छतीस गुण पालक ।। स्वामी. ।।
जैन – धर्म के नेता, संघ के संचालक ।। ॐ जय. ।। ४ ।

णमो उवज्झायाणं, चरण करण ज्ञाता ।। स्वामी. ।।
अङ्ग – उपांग पढ़ाते, ज्ञान दान दाता ।। ॐ जय. ।। ५ ।

णमो लोए सव्व साहूणं, ममता मद हारी ।। स्वामी. ।।
सत्य अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य धारी ।। ॐ जय. ।। ६ ।।

चौथमल कहे शुद्ध मन, जो नर ध्यान धरे ।।स्वामी.।।
पावन पंच – परमेष्टि, मंगलाचार करे ।। ॐ जय. ।। ७ ।।

जपो जपो नवकार, जांसे होवे मंगलाचार ।
महा – मन्त्र की महिमा है, अपरम्पार ।।
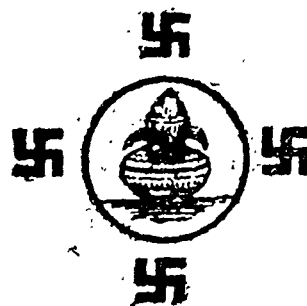
प्राकृत खण्ड

आवश्यक सूत्र

मांगलिक

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

चार शरणां, दुःख हरणा और न शरणा कोय,
जे भवि-प्राणी आदरे, ते अक्षय अमर पद होय ।

सूत्रकृतांगसूत्र

वीरत्थुई – षष्ठ अध्ययन

पुच्छिस्सुणं समणा माहणा य, अगारिणो य पर-तित्थिआ य ।
से केई – णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु – समिक्खयाए ॥ १ ॥

कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नाय – सुतस्स आसी ?
जाणासि णं भिक्खु ! जहातहेणं, अहासुतं बूहि जहा णिसंतं ॥ २ ॥

खेयन्नए से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी ।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥

उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्च – णिच्चेहि समिक्खपन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥

से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगन्धे धिइमं ठितप्पा ।
अणुत्तरे सव्वजंगसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥

से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंत – चक्खू ।
अणुत्तरं तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥ ६ ॥

अणुत्तंर धम्ममिणं जिणाणं, नेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि णं विसिट्ठे ॥ ७ ॥

से पन्नया अक्खय – सागरे वा, महोदही वावि अणंत – पारे ।
अणाइले वा चकसाई मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥ ८ ॥

से वीरिएणं पडिपुण्ण – वीरिए, सुदंसणे वाणग – सव्व – सेट्ठे ।
सुरालए वासि – मुदागरे से, विरायए णेग – गणोववेए ॥ ९ ॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडंग – वेजंयते ।
से जोयणे णव – णवते सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥

पुट्ठे णमे चिट्टइ भूमि–वट्ठिए, जं सूरिया अणु – परिवट्टयन्ति ।
से हेमबन्ने बहुनन्दणे य, जंसी रतिं वेदयंति महिंदा ॥११॥

से पव्वए सद्द – महप्पगासे, विरायति कंचण – मट्ठ - वण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्व - दुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे ॥१२॥

महीइ मज्झंमि ठिते णंगिदे पन्नायते सूरिय – सुद्ध – लेसे ।
एवं सिरीए उस भूरि – वण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

सुदंसणस्से व जसो गिरिस्स, पव्वुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
ऐतोवमे समणे नाय–पुत्ते जाती – जसो – दंसण – नाण सीले ॥१४॥

गिरीवरे वा निसहाययाणां, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जग – भूइ – पन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाई ।
सुसुक्क – सुक्कं अपगंड – सुक्कं, संखिदु – एगंतवदात – सुक्कं ॥१६॥

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेस – कम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥

रुक्खेसु णाते जह सामली वा, जसीं रतिं वेययति सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥

थणियं व सद्दाण अणुत्तेर उ, चन्दो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसुवा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदये वा रस – वेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥ २० ॥

हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं – सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, णिव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥

जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंद माहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंत – वक्के, इसोण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥

दाणाण सेट्ठं अभय – प्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम – बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
निव्वाण-सेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥

पुढोवमे धुणइ विगय – गेही न सण्णिहिं कुव्वति आसपन्ने ।
तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, अभयकरे वीर अणंत – चक्खू ॥ २५ ॥

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थ – दोसा ।
एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥

किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्व – वायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम – दीह – रायं ॥ २७ ॥

से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्ख – खयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय – सव्व – वारं ॥ २८ ॥

सोच्चा य धम्मं अरिहन्तभासियं, समाहितं अट्ठ – पदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥ २९ ॥

महामंगल

अरिहन्ता मज्झ मंगलं अरिहन्ता मज्झ देवया ।
अरिहन्ते कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥

सिद्धा य मज्झ मंगलं, सिद्धा य मज्झ देवया ।
सिद्धे य कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥

आयरिया मज्झ मंगलं, आयरिया मज्झ देवया ।
आयरिए कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥

उवज्झाए मज्झ मंगलं, उवज्झाए मज्झ देवया ।
उवज्झाए कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४

साहू य मज्झ मंगलं, साहू य मज्झ देवया ।
साहू य कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥

एए पंच मज्झ मंगलं, एए पंच मज्झ देवया ।
एए पंच कित्तइत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ६ ॥

श्री नवपद स्तुति

उप्पन्न – सन्नाण – महोदयाणं, सप्पाडिहेरासण – संठियाणं ।
सद्देसणाणंदिय – सज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

सिद्धाणमाणंदर मालयाणं, नमो नमोऽनंत चउक्कयाणं ।
सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं, नमो नमो सूर – समप्पहाणं ॥ २ ॥

सुत्तत्थ – वित्थारण – तपराणं, नमो नमो वायग – कुंजराणं ।
साहूण संसाहिय – संजमाणं, नमो नमो सुद्ध – दया – दमाणं ॥ ३ ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ।
अन्नाण – संमोह – तमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥

आराहियाखंडियसक्कियस्स, नमो नमो संजम – वीरियस्स ।
कम्मद्दु मोम्मूलण–कुञ्जरस्स, नमो नमो तिव्वत वोभरस्स ॥ ५ ॥

इय नव – पयसिद्धं, लद्धि विज्जा समिद्धं ।
पयडिय – सर – वग्गं, ह्रीं तिरेहा – समग्गं ॥

दिसवइ सुरसारं, खोणि – पीढावयारं ।
तिजय – विजय चक्कं, सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ६ ॥

मंगल पाठ

(श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी)

अरिहंत नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो वोहि – लाभाए ॥ १ ॥

अरिहंत – नमोक्कारो, सव्व – पाव – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं ॥ २ ॥

सिद्धाणं नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो वोहि लाभाए ॥ ३ ॥

सिद्धाणं नमोक्कारो, सव्व पाप – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, बीयं हवइ मंगलं ॥ ४ ॥

आयरिय – नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि लाभाय ॥ ५ ॥

आयरिए – नमोक्कारो सव्व – पाप – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, तइयं हवइ मंगलं ॥ ६ ॥

उवज्झाय – नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होई पुणो बोहि लाभाए ॥ ७ ॥

उवज्झाए – नमोक्कारो, सव्व – पाप – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, चउत्थं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥

साहूणं नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहि – लाभाए ॥ ९ ॥

साहूणं नमोक्कारो, सव्व – पाव – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पंचमं हवइ मंगलं ॥ १० ॥

एसो पचं नमोक्कारो, जीवं मोयइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो होइ पुणो बोहि लाभाए ॥ ११ ॥

एसो पंच नमोक्कारो, सव्व – पाप – प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १२ ॥

उपसर्गहर – स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहुस्वामी)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर – विसनिन्नासं, मंगल – कल्लाण – आवासं ॥ १ ॥

विसहर फुल्लिगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोगमारी – दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर – तिरिएसु वि, जीवा पावंति न दुक्ख – दोगच्चं ॥ ३

तुह सम्मत्ते लद्धे चिन्तामणि कप्प पाय वब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥

इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर – निब्भरेण हिएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं अमरतरु कामधेणु, चिंतामणि कामकुंभमाईए ।
सिरी पासनाह – सेवा, गयाण सव्वे वि दास त्तं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग सोग दोहग्गं ।
कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह दसंणेण समफलहेउ स्वाहा ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं नमिऊण पणवसहियं, माया बीएण धरण नागिंदं ।
सिरी काम राय कलियं, पासजिणंद नमंसामि ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर–विज्जामन्तेण झाण झाएज्जा ।
धरणेंद पउमादेवी, ॐ ह्रीं क्ष्मल्व्र्यूं स्वाहा ॥ ९ ॥
ॐ थुणे मि पास ॐ ह्रीं पणमामि परम भत्तीय ।
अट्ठक्खर धरणिंदो, पउमावइ पयडिया कित्ती ॥ १० ॥
ॐ नट्ठ – मयट्ठाणे, पणट्ठ – कम्मट्ठ – नट्ठसंसारे ।
परमट्ठ – निट्ठियट्ठे, अट्ठ गुणाधीसरं वन्दे ॥ ११ ॥

श्री महावीर स्तोत्र

(आचार्य श्री अभयदेव)

जइज्जा समणो भयवं, महावीरे जिणुत्तमे ।
लोगनाहे सयंबुद्धे, लोगंतिय विबोहिए ॥ १ ॥
वच्छरं दिण्णदाणोहे संपूरियजणासए ।
नाणत्तयसमाउत्ते, पुत्ते सिद्धत्थराइणो ॥ २ ॥
चिच्चा रज्जं च रट्ठं च, पुरं अन्तेउरं तहा ।
निक्खमित्ता अगाराओ पव्वइए अणगारियं । ३ ॥
परिसहाण नो भीए, भेरवाण खमाखमे ।
पंचहा समिए गुत्ते, बंभयारी अकिंचणे ॥ ४ ॥
निमम्मे निरहंकारे, अकोहे माणवज्जिए ।
अमाए लोभ निम्मुक्के, पसन्ते छिन्न – बन्धणे ॥ ५ ॥
पुक्खर व अलेवे य, संखो इव निरंजणे ।
जीये वा अप्पडिग्घाए, गयणं व निरासए ॥ ६ ॥
वाए वा अपडिवद्धे, कुम्मो वा गुत्तइन्दिए ।
विप्प मुक्को विहंगुव्व, खग्गिसिंगव्व एगगे ॥ ७ ॥
भारंडे वाऽपमत्ते य, वसहे वा जायथामए ।
कुंजरो इव सोंडीरे, सीहो वा दुद्धरिस्सए ॥ ८ ॥

सागरो इव गम्भीरे, चन्दो व सोमलेसए ।
सूरो वा दित्ततेउल्ले, हेमं वा जायरुवए ॥ ६ ॥
सव्वसंहे धरित्ति व्व, सायरिद्गु व्व सच्छहे ।
सुट्ठु हुयहुआस व्व, जलमाणे य तेयसा ॥१०॥
वासी चन्दणकप्पे य, समाणे लेट्ठुकंचणे ।
समे पूयावमाणेसु, समे मुक्खे भवे तहा ॥११॥
नाणेण दंसणेण च, चरित्तेणमणुत्तरे ।
आलएणं विहारेणं, मद्दवेणऽज्जवेण य ॥१२॥
लाघवेणं च खंतीए, गुत्ती मुत्ती – अणुत्तरे ।
संजमेणं तवेण च, संवरेणमणुत्तरे ॥१३॥
अणेग – गुणगणाइण्णे धम्म सुक्काण झायए ।
घाइक्खएण संजाए, अणन्तवर केवली ॥१४॥
वीयराए य निग्गन्थे, सव्वन्नु सव्वदंसणे ।
देविदं – दाणविंदेहि, निव्वत्तिय – महामहे ॥१५॥
सव्व भाषाणुगाए य, भासाए सव्वसंसए ।
जुगव सव्व जीवाणमं, छिंदिउं भितगोयरे ॥१६ ।
हिए सुहे य निस्सेस – कारए सव्वपाणिणं ।
महव्वयाणि पंच्चे व, पणवित्ता सभावणे ॥१७॥
संसार सायरे बुड्ड – जन्तु सन्ताणतारए ।
जाणव्व देसियं तित्थं संपत्तो पचमि गइ ॥१८॥
से सिवे अयले निच्चे, अरुए अयरामरे ।
कम्मप्पवंच निम्मुक्के, जयवीरे जए जिणे ॥१६॥
से जिणे वद्धमाणे य, महावीरे महायसे ।
असंखदुक्ख – खिण्णाणं अम्हाणं देउ निव्वुइं ॥२०॥
इय परमपमोआ संथुओ वीरनाहो,
परम पस मदाणा देउ तुल्लत्तणं मे ।
असमसुहदुहेसुं सग्गसिद्धी भवेसुं,
कणय – कयवरेसुं सत्तु मित्तेसु वावि ॥ २१ ॥
पयडी व सइ पहाणं, सीसेहिं जिणेसराण सुगुरुणं ।
वीर जिण–थवं एयं, पढ़उ कयं अभय सूरीहिं ॥२२॥

सुभाषित

अणासवा थूलवय कुशीला, पिंड पि चण्डं पकरेति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया पसायए ते हु दुरासंयपि ॥ १ ॥

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होई, अस्सि लोए परत्थ य ॥ २ ॥

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणिह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं ॥ ३ ॥

असंखयं जीविय मा पमायए जरोवणियस्स हु णत्थिताणं।
एयं वियाणाहि जणे पमत्ते कण्णू विहिंसा अजयागहिंत्ति ॥ ४ ॥

संसार मावन्न परस्स अट्ठा साहारणं जं च करेई कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले ण बन्धवा बन्धवयं उवेंति ॥ ५ ॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्तो इमंमि लोए अदुवा परत्था।
दीवप्पणट्ठे व अणन्त- मोहे णेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ६ ॥

सुत्तेसु आवी पडिबुद्ध-जीवी णवीससे पण्डिय आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं भारुण्ड पक्खो व चरऽप्पमत्तो ॥ ७ ॥

माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाय, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥ ८ ॥

अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भय वेराओ उवरए ॥ ९ ॥

बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाई वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥ १० ॥

विजहित्तु पुव्वसंजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेह करेहिं दोष पओसेहिं मुच्चए भिक्खु ॥ ११ ॥

दुपरिच्चया इमे कामा, णो सुजहा अधीर पुरिसेहिं ।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतरं वणिया व ॥ १२ ॥

जहा लाहा तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई ।
दो मास-कयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं ॥ १३ ॥

नो रक्खसीसू गिज्झेज्जा, गंड-वच्छासुऽणेग-चित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लन्ति जहा व दासेहिं ॥ १४ ॥

नारीसु नोव गिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठविज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥ १५ ॥

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्व पाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १६ ॥

एवं भव संसारे, संसरइ सुभासुभाहिं कम्मेहिं।
जीवो पमाय बहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १७ ॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १८ ॥

वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्ध मारिहई ॥ १९ ॥

समुद्दगम्भीर समा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पघंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो खवित्तु कम्मं गइमुत्तमंगया ॥ २० ॥

सक्खं खु दीसइ तवो विसेसो, न दीसई जाइ विसेसु कोई।
सोवागपुत्तं हरिएससाहूं, जस्सेरिस्सा इड्ढि महाणुभागा ॥ २१ ॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मे एहा संजम जोग सन्ती, होमं हुणामी इसिणं पसत्थं ॥ २२ ॥

धम्मे हरए बंभे सन्तितित्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे।
जहिंसिण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइ भूओ पजहामि दोसं ॥ २३ ॥

धम्मा रामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म सारही।
धम्मा रामे रते दन्ते, बम्भचेर समाहिए ॥ २४ ॥

देव दाणव गन्धव्वा जक्ख रक्खस किन्नरा।
बम्भयारिं नमं सन्ति, दुक्करं जे करन्ति तं ॥ २५ ॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं।
संसार सागरं घोरं, तर कन्ने लहुं लहुं ॥ २६ ॥

एगे जिए जिया पंच, पंच जिये जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥ २७ ॥

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥ २८ ॥

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवे वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरन्ति महेसिणो ॥

न वि मुण्डिएण समणो, ओंकारेण न बम्भणो ।
न मुणी रण्ण वासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥ ३० ॥

समयाए समणो होई, बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण य मुणी होई तवेण होइ तावसो ॥ ३१ ॥

कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३२ ॥

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमई संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ३३ ॥

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥ ३४ ॥

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करेंति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्त संसारी ॥ ३५ ॥

सारं दंसणनाणं सारं तव – नियम – सीलं ।
सारं जिणवर धम्मं, सारं संलेहणा – मरणं ॥ ३६ ॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण – संजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ३७ ॥

मज्जं विसय – कसाया निद्दा विगहा य पंचमी भणिया ।
एए पंच पमाया, जीवा पाडंति संसारे ॥ ३८ ॥

लब्भन्ति विमला भोए, लब्भन्ति सुरसंपया ।
लब्भन्ति पुत्त – मित्तं च, एगो धम्मो न लब्भई ॥ ३९ ॥

रागो य दोसो बिय कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ४० ॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हयो जस्स न किंचणाइं ॥४१॥

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परि सुज्झई ॥ ४२ ॥

खड्डुआ मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहाय मे ।
कल्लाणमणु – सासन्तो, पावदिट्ठि त्ति मन्नई ॥ ४३ ॥

★

समकित का स्वरूप एवं फल

अरहिन्तो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरूणो ।
जिणपण्णतं तत्तं इअ सम्मतं मए गहियं ॥ १ ॥

कुप्पवयण पांसीडी सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥ २ ॥

जीवाई नव पयत्थे जो जाणई तस्स होई सम्मतं ।
भावेण सद्दहन्ते अयाण माणेवि सम्मतं ॥ ३ ॥

सव्वाई जिणेसर भासिआई वयणाइं नन्नहा हुंति ।
एस बुद्धि जस्स भणे सम्मतं निच्चलं तस्स ॥ ४ ॥

अंत्तो मुहुत मितपि, फासियं हुज्ज जेहि सम्मतं ।
तेसि अवड्ढपुग्गल, परियट्ठो चेव संसारो ॥ ५ ॥

गहिऊण य सम्मतं सुणिम्मलं सुरगिरीव णिक्कपं ।
त झाणो झाइज्जइं, सावय ! दुक्खखयट्ठाए ॥ ६ ॥

ते धण्णा सुकयत्था ते सुरा तेवि पडियां मणुआ ।
सम्मतं सिद्धियरं सिविणे वि ण मइलियं जेहि ॥ ७ ॥

किं बहुणा भणिएण जे सिद्धा णखरा एगकाले ।
सिज्झिहहि जे भविया तं जाणह सम्मतं माहप्पं ॥ ८ ॥

सामायिक का स्वरूप एवं फल

जस्स सामणिओ कप्पा, संजमे णियमे तवे ।
तस्स सामाइयं होइ इइ केविलि भासियं ॥ १ ॥

जो समो सव्व भूएसु, तसेसु थावरेसु य ।
तस्स सामाइयं होइ, इइ केविलि भासियं ॥ २ ॥

मण-वय-तणुहिं करणे, काखणम्मि य सपावजोगाणं ।
जं खलु पच्चक्खाण तं सामाइयं मुहुत्ताई ॥ ३ ॥

सामाइयम्मि उ कए, समणो व्व सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेण बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ ४

जीवो पमायबहुलो बहुसो वि य बहुविहेसु अत्थेसु ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥

दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवण्णस्स खंडियं एगो ।
एगो पुण सामाइयं, करेइ ण पहुप्पए तस्स ॥ ६ ॥
सामाइयं कुणन्तो समभावं, सावओ य घडियदुग ।
आउं सुरेसु बंधइ, इत्तियमित्ताइं पलियाइं ॥ ७ ॥
बाणवई कोडीओ लक्खा गुणसट्ठि सहस्स पणवीसं ।
णवसय पणवीसाय संविहा अडभागपलियस्स जुयलं ॥ ८ ॥
तिव्वतवं तवमाणो जं न वि निट्ठवइ जम्म कोडीहिं ।
तं समभावियचित्तो, खवेइ कम्मे खणद्धेणं ॥ ९ ॥
जे वि गया मोक्खं जे वि य गच्छंति जे गमिस्संति ।
ते सव्वे सामाइयमाहप्पेणं मुणेयव्वं ॥ १० ॥

दस पच्चक्खाण सूत्र

१. नमोक्कार सहित (नवकारसी)

उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि ।

२. पोरिसी सूत्र (पोरसी)

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि ।

३. पुरिमड्ढ सूत्र (दो पोरसी)

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि । चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थऽणा भोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।

४. एगासरण सूत्र

एगासरणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउटण पसारणेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिया गारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि।

५. एगट्ठाणं सूत्र

एक्कासणं एगट्ठाणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणा भोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिया गारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणिया गारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिं-वत्तिया गारेणं वोसिरामि।

६. आयंबिल सूत्र

आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणा भोगेणं सहसागारेणं, लेवा-लेवेणं, उक्खि त्त विवेगेणं, गिहत्थ संसट्ठेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि।

७. अभत्तट्ठ सूत्र (उपवास)

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणा भोगेणं सहसा गारेणं, पारिट्ठावणि-यागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

८. दिवस चरिम सूत्र

दिवस चरिम पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसा गारेणं, महत्तरा गारेणं, सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि।

९. अभिग्गह सूत्र

अभिग्गहं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थाऽणा भोगेणं सहसा गारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि ।

१०. विगइय सूत्र

धिगइओ पच्चक्खामि, अन्नत्थाऽणा भोगेणं सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ संसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं परिट्ठावणिया गारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि ।'

सम्यक्त्व (समकित) सूत्र पाठ

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥
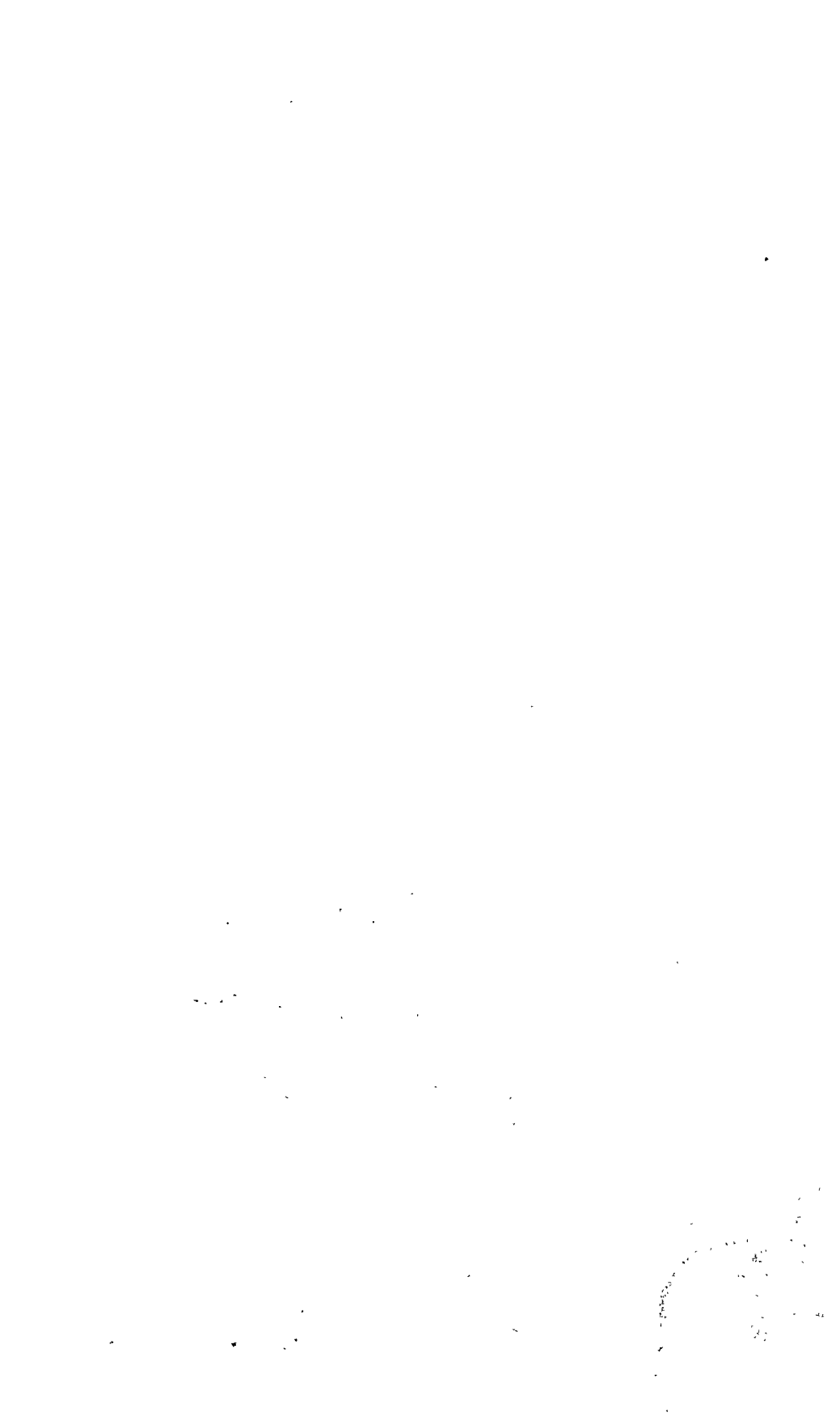
चरित्रवान् ही सम्मान का पात्र समझा जाता है, पूंजी उच्चपद हुकूमत या जायदाद नहीं।

—आचार्य श्री हस्ती

जीवन निर्माण के लिए स्वाध्याय के बिना ज्ञान की ज्योति नहीं जगती।

—आचार्य श्री हस्ती